826

28/08/1921

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(उकौथ) उकौता की दवा
रसौत दही में ताँबे के पात्र में
घोट के लगावे ||

A.B C d e f g h

दण्डी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
५, वाराणसी (काशी) उ०प्र०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमंडल शुद्ध होता है
शुम्बिका पात्र शुद्धि मन्त्रः ।

ॐ जलं स्मृति जापीन कमण्डलु गतंतुयत् ।
गंगा तोयसमं नित्यं जल पात्रं च शुद्ध्यति ॥

कमंडलु प्राप्त जो जल वह सब पापों को नाश देता है क्यों कि वह नित्य ही गंगाजल समान है और जल पात्र भी शुद्ध होजाता है

॥ सूर्य नारायण को जल देने का मंत्र ॥

एहि सूर्य्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

हे सूर्य्य हे सहस्त्रांशो । हे तेजो राशे जगत्पते मेरे ऊपर अनुकम्पा कीजिये हे दिवाकर, भक्ति से दिये हुए इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिये । इस मंत्र से ३ बार अर्घ्य देना चाहिये ॥

दंडी स्वामी
मौनी श्री ऊँकारेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
५, वाराणसी (काशी) उ०प्र०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGan

ॐ श्री गुरुदेवाय नमः   १

पेट के कीड़ों पर वायविडङ्ग का चूर्ण खिलावे
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Monday the 1st January 1973.

रा· पौष ११ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۲ ذی القعد ۲۵ دوشنبه
सोमवार १ जनवरी सन् १९७३ पौष कृ· १२ सं.२०२९
घ· १९।१६ अनुराधा ४६।२३ र· उ· ६।४७ र· अ· ५।१२
फ़· १३८० प्र· पूस १२ बंगला पौष १७ नेपाली १८ गते

१ नववर्षारम्भः, सोम प्रदोष १२ व्रत   ॐ नमः

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनी ॥
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ॥
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम् ॥

काशी की गंगा स्नान करने से जो क्रियमाण कर्म पाप सब नष्ट हो जाते है मगर प्रारब्ध कर्म बिना भोगे नहीं नाश होते हैं ॥

भिक्षा के समय मे ॐ मण्डलम् बनाने का संन्यासी के लिये है
मंत्र — ब्रह्माद्याश्च सुरा सर्वे वसिष्ठाद्या महर्षयः।

मण्डले नोपजीवन्ति ततः कुर्वीत मण्डलम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२

श्वेत प्रदर पर त्रिफला और गोखरूका चूर्ण शहदसे खाय
(धन का चन्द्र २३।२१) सोना चाँदी सम

Tuesday the 2nd January 1973.

रा. पौष १२ शक: १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی القعدہ ٢٥

मंगलवार २ जनवरी सन् १९७३ पौष कृ. १३ सं.२०२९

घ. २९।२ ज्येष्ठा २३।२१ र. उ. ६।४८ र. अ. ५।१६

नवाक्षर मंत्र प्र. पूस १३ बं. पौष १८ ने. १९ गते

ओं नमो भगवते [illegible] रात्रि १२ व्रत

दोहा- द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग॥

द्वादशाक्षर मंत्र है (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

नोट- दीक्षा मंत्र ब्रह्मचारी के लिए है गृहस्त के लिये नहीं है।

ॐ नमः शिवाय तत् पुरुषाय विद्महे
महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात् शिवाय नमः ॐ

भादों सुदी [illegible] सुबह ९ बजे पंचमी
सं. २०४२ में वर्ष ७४ मे गत होगा मेरा
७४ वर्ष होकर

काश्यां मरणान्मुक्तिः

ऋषियों ने सूतजी के द्वारा इस प्रकार उत्कृष्ट काशी सत्कथा
पर उन्हें साधुवाद देकर स्वयं काशी क्षेत्र के महात्म्य को
को देखने और उसके स्मरण द्वारा मुक्ति प्राप्त करने
वन्दे और प्रसन्न [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धातु क्षीणतापरतीखुर पानीमें घीसकर या सतगुर्चघीमें खाय
(धन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 3rd January 1973.

रा० पौष १३ शाके १८९४ ४ । ۳۹۱ ۱۸ ذيقعده ۱۳۹۲ هجري

बुधवार ३ जनवरी सन् १९७३ पौष कृ. १४ सं. २०२९
घ. २०।१२ मूल २९।२१ र. उ. ६।४८ र. अ. ५।१७
फ. १३८० अ. पूस १४ बं. पौष १९ ने. २० गते

— मनुष्य को सदा सुलभ है ॥ भगवतनिर्णय वर्णन

एक शंख — गृहे लिङ्ग द्वयं नार्च्यं गणेश त्रितयं
शंख द्वयं तथा सूर्यो नार्च्यो शक्ति त्रयं तथा ॥

अर्थ — घर मे एक ही शंख रखने का विधान है
दो शंख नहीं रखने चाहिये ॥

(आदित्य पुराण मे) —
आदित्य पुराण मे श्रीकृष्ण जी नारद से कहते है
शिव का निर्माल्य सैकड़ों चान्द्रायण से भी श्रेष्ठ है
इस लिये द्विजाति मात्र को चाहिये परम श्रद्धा के
साथ उसे खाय लोभ वस शिव निर्माल्य रखे नहीं
बल्कि इसे खा जाँय उसे पैर से न छूये और लांघे
भी नहीं ॥

शिव पादोदक की महिमा (इसकंध पुराण)
गंगा, पुष्कर, नरमदा, जमुना, गोदावरी, गोमती
द्वारिका प्रयाग, बद्रीनारायण, वाराणसी
[illegible] समुद्र, रेवा, सेतुबन्ध रामेश्वर, सरस्वती
[illegible] आदि ब्रह्माण्ड मे जितने तीर्थ हैं उन मे —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटे हुए घाव पर गन्धक का बारीक चूर्ण भरे
(धन का चन्द्र) अन्न धातु सस्ता

Thursday the 4th January 1973.

रा.पौ.ष १४ शकः १८९४ ४ ।३७२ ذوالقعدہ ۲۸ پنجشنبہ
गुरुवार ४ जनवरी सन् १९७३ पौष कृ. ३० सं. २०२९
घ. ३४।४२ पू. षा. ६०।० र. उ. ६।४८ र. अ. ५।१७
फ. १३८० प्र. पूस १५ बं. पौष २० ने. २१ गते

स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या ३०

इस्नान करने से जो फल होता है उससे हजारों और करोड़ों गुना अधिक पुण्य शिव पादोदक पीने से होता है ॥

(इस्कान्ध पुराण मे)

शिवजी कहते हैं हे ब्राह्मण सामने लाये हुये नैवेद्य को दर्शन करने से ही स्वीकार कर लेता हूँ और उसके रस को भक्त की जिह्वा से खाता हूँ ॥

(स्कन्द)

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । श्रीमद्भगवद्गीता
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत ॥ अ०
हे अर्जुन – काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकार के
नरक आत्मा का नाश करने वाले हैं अर्थात् अधोगति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथरी पर मूली के रस में मिश्री मिलाकर पिलावे
(मकर का चन्द्र २०।४२) सोना चाँदी सम

Friday the 5th January 1973.

रा॰ पौष १५ शकः १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی القعدہ ٢٩ ھجری
शुक्रवार ५ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ १ सं॰ २०२९
घ॰ ३८।११ पू॰ षा॰ ४।४० र॰ उ॰ ६।४८ र॰ अ॰ ५।१८
फ॰ १३८० प्र॰ पूस १६ बं॰ पौष २१ ने॰ २२ गते

नारद भगवान पारवतीजी को शिवप्राप्ति के लिये पंचाक्षर मंत्र दिया था उसका जप करो ॐ नमः शिवाय [illegible] पंचाक्षर [illegible] है शिवपुराण में पारवती नारद का संवाद [illegible] उन्होंने [illegible] अध्याय में

सन्यास के नियम

शान्ती पर्व अध्याय २४५ में—
अश्वस्तन विधाता स्यान्मुनिर्भावसमाहितः।

लघ्वाशी नियता हारः सकृदन्न निषेविता॥
अर्थ— वह दूसरे दिन के लिये अन्न का संग्रह न करे। चित्त वृत्तियों को एकाग्र कर के मौन भाव से रहे। हल्का और नियमानुकूल भोजन करे तथा दिन रात मे एक ही बार अन्न ग्रहण करे।

प्रजापति दक्ष की पुत्री संध्या नाम की कन्या को [illegible] उन्होंने भक्तवत्सल शिवजी का स्मरण कर ब्रह्म [illegible] परम [illegible] शिवजी को मन मे धारण कर उन्होंने [illegible] और सभी मनोरथ पूरे होंगे मंत्र यह है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५८

हड्डीके बुखारमें जीरेका चूर्ण मिश्री मिला पके दूधसे खाय
(मकर का चन्द्र) अन्न रसादि सस्ता

Saturday the 6th January 1973.

रा० पौष १६ शकः १८९४   ४ ١٣٩٢ ذی القعدہ ٣٠ شنبہ

शनिवार ६ जनवरी सन् १९७३ पौष शु० २ सं० २०२९

घ० ४०|३४ उ. षा. ८|२० र० उ. ६|४८ र० अ. ५|११

फ. १३८० प्र. पूस १७ बं. पौष २२ ने. २३ गते

शिव पुराण मे यह मंत्र शेष जो संध्या को दिया जाता है रुद्र संहिता सती खण्ड मे बाईसवे प्रसंग मे है ५ मे है ॥ (...)

(परमार्थ पद्यावली मे)

भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रम् वस्त्रं च जीर्णशतखण्डमलीनकन्था हा हा तथापि विषया परित्यजन्ति ॥

(यति धर्म संग्रह मे—)

कण पिण्याक तक्रं वा शाक मूल फलादि वा पक्वं वा प्यथवा पक्वं पचन्ननं (?) लोके यतिर्हि ॥ ५

आचारे त्रीणि कृच्छ्राणि प्राकृतान्येव शास्त्र अभ्यासाद् बुद्धि पूर्वं हि पाक दोषान्न मुच्यते ॥ ६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गला बैठनेपर काली मिर्च और बतासे की चासनी चाट 10

(कुम्भ का चन्द्र ४२।३७) सोना चाँदी सम

Sunday the 7th January 1973.

रा० पौष १७ शकः १८९४ । ۱۳۹۲ ذی الحجہ ۲ । ایک شنبہ

रविवार ७ जनवरी सन् १९७३ पौष शु० ३ सं० २०२९

घ० ४१।३८ श्रवण ११।५४ र० उ० ६।४१ र० अ० ५।२०

फ० १३८० प्र० पूस १८ बं० पौष २३ ने० २४ गते

(द्रव्य संग्रह मना) :–

पतत्य सौ ध्रुवं भिक्षुर्यस्य भिक्षोर्द्रव्यं भवेत्।
धी पूर्वं रेत उत्सर्गो द्रव्य संग्रह एव च ॥

(यतिधर्म निर्णयं)

शुष्क मन्न भुजेत वस्त्र रजतादि द्रव्यं तथा।
यो ददाति यतीनां तु दत्तारो नरकं व्रजेत् ॥

दोहा

नीरोगो वोपविष्टो वा रुग्णो वा विलुठन् भुवि।
मूर्छितो वा त्यजत्येव प्राणान् भ्रान्ति सर्वथा ॥

अर्थ– ज्ञानवान् रोगरहित है अथवा रोगवाला है और वो अथवा पृथिवी पर लोटता हो मूर्छित अथवा संतोष में प्राणों के त्यागकाल में इसको भ्रान्ति किसी तरह से भी नहीं होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८

छाती की सूजन पर बकरी के दूध से धोये
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 8th January 1973.

रा॰ पौष १८ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۲ ذی الحج ۲ ﺸﻮﻧﺒﻪ
सोमवार ८ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ ४ सं. २०२९
घ॰ ४१।२१ धनिष्ठा ·१३।४० र॰ उ. ६।४९ र॰ अ. ५।२०
फ. १३८० प्र. पूस १९ बं. पौष २४ ने. २५ गते

श्री गणेश ४ व्रत

तनुं त्यजति वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा
ज्ञानसम्प्राप्ति समये मुक्तोऽसौ विगताशयः

अर्थ—ज्ञानवान काशी में शरीर का त्याग करे अथवा चांडाल के घर में त्याग करे वह ज्ञान सम्प्राप्ति काल में ही मुक्त हो जाता है क्योंकि जिस की वासनायें सब नष्ट हो गई हैं, तिस तिस को काशी मगह बराबर ही है ॥ फिर इह वादी वाले ज्ञानी के लिये कर्म आदिकों का कर्तव्य भी न ही कहा है, जितना कर्तव्य है, सो सब अज्ञानियों के लिये ही कहा है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेशाव न होनेपर गोपीचन्दन पानीके साथ चाँदी पर लेप करे
(मीन का चन्द्र २८।२४) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 9th January 1973.

रा० पौष १९ शकः १८९४ ۴ ۱۳۹۲ ہجری ذی قعدہ ۳
मंगलवार ९ जनवरी सन् १९७३ पौष शु० ५ सं. २०२९
घ० ३९।५२ शतभिषा १४।१३ र० उ. ६।४९ र० अ. ५।२१
फ. १३८० प. पुस २० वं. पौष २५ गे. २६ मसे

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने प्रणतक्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ज्वर नाशक मंत्र ॥

ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः ।
नैवास्ति किञ्चित्कर्तव्यमस्ति चेन्न स तत्त्ववित् ॥

अर्थ — जो पुरुष ज्ञान रूपी अमृत कर के तृप्त है और कृत कृत है उसको किञ्चित् भी कर्तव्य नहीं है यदि वह अपने मे कर्तव्य को माने तब वह तत्त्ववित् नहीं है ॥

॥ गीता मे भी कहा है ॥

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥

अर्थ — जिस पुरुष की आत्मा मे ही प्रीति और अपने आत्मानंद करके ही जो तृप्त है आत्मा मे ही जो तुष्ट है तिसको कुछ भी कर्तव्य नहीं है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०

अंडवृद्धिपर उर्दके चनेकी रोटी बाँधकर रेड़पत्र गरमकर बाँधे
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 10th January 1973.

रा॰ पौष २० शकः १८९४ ۱۳۹۲ چہارشنبہ ۴ ذی الحجہ
बुधवार १० जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ ६ सं॰ २०२९
घ॰ ३७।१४ पू॰ भा॰ १३।२४ र॰ उ॰ ६।४१ र॰ अ॰ ५।२१
फ॰ १३८० प्र॰ पूस २१ बं॰ पौष २६ ने॰ २७ गते

॥ कपिलगीता मे कहा है ॥

इदं तीर्थ मिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसा जनाः ।
आत्मतीर्थं न जानन्ति कथं मोक्षः शृणु प्रिये ॥

अर्थ- महादेवजी पार्बती के प्रति कहते है हे पार्बती यह तीर्थ है वह तीर्थ है ऐसे जान कर अज्ञानी जीव भ्रमते फिरते है क्यो कि वह आत्म तीर्थ को नही जानते हैं ॥

॥ देवी भागवत मे कहा है ॥

मनो वाक्काय शुद्धानां राजंस्तीर्थं पदे पदे ।
तथा मलिन चित्तानां गंगापि कीकटाधिका

अर्थ- जिन पुरुषों के मन और वाणी आदिक शुद्ध हे राजन उनके पद२ मे तीर्थ निवास करते और मलिन चित्त हैं उनके लिये गंगा भी [illegible] देश के समान है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांता बढ़नेपर धूपवड़ा,गुल गरमकर लेपकर तमाखूके पत्त बाँधे
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Thursday the 11th January 1973.

रा० पौष २१ शकः १८९४ ٤ ١٣٩٢ ذی الحجہ ٥ پنجشنبہ
गुरुवार ११ जनवरी सन् १९७३ पौष शु० ७ सं. २०२९
घ० ३३।३७ उ. भा. ११।२४ र० उ. ६।४९ र० अ. ५।२२
फ० १३८० प्र. पूस २२ बं. पौष २७ ने. २८ गते

गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती

देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः ॥
त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥

अर्थ– यह जो देह है यही देव मंदिर है जो कि
इस देह में चेतन जीव है वही केवल शिव है
अज्ञानरुपी शिवनिर्माल्य का त्याग कर के सोऽहंभाव
करके तिसका पूजन करो ॥

अभेद दर्शनं ज्ञानं ध्यानं निर्विषयं मनः
स्नानं मनो मल त्यागः शौचमिन्द्रिय निग्रहः

अर्थ– आत्मा को सब मे एकरुप करके जो देखना है
इसी का नाम ज्ञान है और मन का विषयों से रहित
हो जाना ही ध्यान है मन के मल का त्याग करने
का ही नाम स्नान है इन्द्रियों निग्रह करने का
नाम शौच है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२

पोतेकी कौड़ीपर चक्रवड़की पत्ती काँजीमें पीसकरगरम लेपकरे

(मेष का चन्द्र ९।२१) अन्न धातु सम

Friday the 12th January 1973.

रा. पौष २२ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۲ ذى الحجه ۷ [illegible]

शुक्रवार १२ जनवरी सन् १९७३ पौष शु. ८ सं. २०२९

घ. २९।१ रेवती ९।२१ र. उ. ६।४९ र. अ. ५।२३

फ. १३८० प्र. पूस २३ वं. पौष २८ ने. २९ गते

लोहरी (पंजाब-जम्मू-काश्मीर)

नाक का देवता — [illegible]
पाणि अर्थात हाथों का देवता — इन्द्र है
पावों का देवता — विष्णु है
गुदा का देवता — मृत्यु
लिङ्ग का देवता — प्रजापति है
(प्रारब्ध कर्म किसको कहते हैं)
इस शरीर को उत्पन्न करके इस लोक
सुख दुखों को देने वाला जो कर्म है
तिस को प्रारब्ध कहते हैं। दूसरा
[illegible]
[illegible]
कहते हैं वे माता पिता धन्य है जिन्होंने [illegible] जन्म दिया
[illegible] पर्वत, वन और [illegible] धन्य है
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नासूर पर इमली का चीयाँ घिसकर लगावे
(मेष का चन्द्र) अन्न धातु सम

Saturday the 13th January 1973.

रा० पौष २३ शकः १८९४   ४ ۱۳۹۲ ذی الحجہ ۷ شنبه
शनिवार १३ जनवरी सन् १९७३ पौष शु० ९ सं.२०२९
घ० २४।४ अश्विनी ६।८   र० उ० ६।४१   र० अ० ५।२४
फ० १३८०   प्र. पूस २४   बं. पौष २९   ने. ३० गते

मकर का सूर्य २४।८

(प्रारब्ध कर्म वर्णन)
प्रारब्ध कर्म किमिति चेत् ।
इदं शरीर मुत्पाद्य, इह लोके एवं सुख दुःख आदि प्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगेन नष्टं भवति ॥

(अथ आगामी कर्म वर्णन)
ज्ञानोत्पत्त्यनंतरं ज्ञानि देहकृतं पुण्य पाप रूप कर्म यदस्ति तदा गामीत्य भिधीयते

अर्थात् - और जो सब पुरुष [illegible] पुण्य, पाप रूप कर्म करते हैं तिन को आगामी कर्म कहते हैं॥

(संचित कर्म वर्णन)
संचित कर्म किम् । अनंत कोटि जन्मनां बीज भूतं सत् यत्कर्म जातं पूर्वार्जितं तिष्ठति तत्संचितं ज्ञेयम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाखून उड़ने पर गरम पानी को धार दें
(वृष का चन्द्र १६।४४) सोना चाँदी महंगा

Sunday the 14th January 1973.

रा॰ पौ॰ष २४ शकः १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی الحج ٨ ایکشنبه
रविवार १४ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ १० सं॰ २०२९
घ॰ १८।२० भरणी ५।३।२५ र॰ उ॰ ६।४९ र॰ अ॰ ५।२४
फ॰ १३८० प्र॰ पूस २९ वं॰ माघ १ ने॰ १ गते

मकर संक्रान्ति (खिचड़ी) जन्य पुण्यकाल

अनेक करोड़ों जन्मों का बीजरूप हुआ
जो कर्म है पूर्व का किया हुआ शुभाशु-
रूप जो ऐसा जो स्थित है तिसको
संचित कर्म कहते हैं।।
और जो प्रारब्ध कर्म भोगने से
है नाश होते है कि भोग कर्म का शेष
जो गंगा में स्नान करने से सब नष्ट
हो जाते है मगर प्रारब्ध कर्म बिना
भोगे नहीं नाश होते।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री के दूध बढ़ाने में मुनक्का पीस घी मिलाकर पिलावे
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Monday the 15th January 1973.

रा॰ पौष २५ शक: १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی الحجہ ١ دوشنبہ
सोमवार १५ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ ११ सं. २०२९
घ॰ १२|४० रोहिणी २४|१ र॰ उ॰ ६|४१ र॰ अ॰ ५|२५
फ़॰ १३८० प्र॰ पूस २६ बं॰ माघ २ ने॰ २ गते

पुत्रदा एकादशी ११ व्रत सबका

चार पुरुष रास्ते से चले आते थे आगे रास्ते मे एक
रुपयों की थैली पडी थी चोरों ने मिल कर उठाली
एक बगीचे मे जा कर उन्होंने आपस मे बाटने की सलाह
ह की तब एक ने कहा भूख लगी है दो आदमी ग्राम मे
जाकर कुछ मिठाई ले आओ उस मिठाई को खाकर बाटो
तो सगुन भी हो जावेगा दो आदमी जब मिठाई लेने को गये
तब उन्होंने आपस मे सलाह की कि मिठाई मे बिष को
डाल कर ले चलो जिस से कि वह खाते ही मर जाँय और सब
धन को हम ही दोनो जने आपस मे बाँट लेवें इधर तो यह
बिष डाल कर मिठाई ले चले और उधर उन्होंने यह सलाह
की कि जब वह मिठाई ले कर आवें दूर से आये हुवों को
गोलियों से मार कर सब धन हम हीं दोनो आपस मे
बाँट लेवेंगे ज्यों ही वह दोनों मिठाई लिये हुये आते उनको
दिखाई पडे त्यों ही उन्होंने गोलियों को दागा वह दोनों मर गये
तब उन्होंने कहा मिठाई को खाकर बाटेंगे
दोनो ने मिठाई को खाया त्यों ही वह दोनो भी
मर गये वह मोहरें की थैली उसी तरह पड़ी रही देखिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६ दमे पर भारङ्गी और सुण्ठी का चूर्ण शहद में खावे
(मिथुन का चन्द्र २२।७) सोना चाँदी महंगा

Tuesday the 16th January 1973.

रा॰ पौष २६ शकः १८९४ ४ ।३९२ ذی الحج ۱۰ ۸۸۰۰۰

मंगलवार १६ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ १२ सं॰ २०२९

घ॰ ६।४० मृगशिरा ४०।४ र॰ उ॰ ६।४९ र॰ अ॰ ५।२६

फ॰ १३८० प्र॰ पूस २७ बं॰ माघ ३ ने॰ ३ गते

भौम प्रदोष १२ व्रत, बकरीद

हे चित्त वृते यह राज भी महाअनर्थों का कारण है
और दुःख का हेतु है प्रथम तो राजा को नित्य ही शत्रु
ओं से भय रहता है दूसरा चोरों से भय रहता है तीसरा
सम्बन्धियों से भय बना रहता है जो राज्य के लोभ से
कोई धोखा देकर मार न डाले फिर अपने पुत्र और भाई
यों से भय बना रहता है क्योंकि राज्य के लोभ से पुत्र
और भाई भी राजा को विष देकर मार डालते हैं जैसे
दुर्योधन ने विष दिया था और और भी बहुतों ने विष
देकर राजा को मार डाला है इन्हीं दुखों से राजाओं को
रात्रि में निद्रा भी ठीक नहीं आती है और न रात्रि में
पलङ्ग पर सोते हैं कैकेई ने पुत्र को राज्य के लोभ से
रामजी को बनबास करा दिया था सुग्रीव ने बालि
को मरवा दिया था कंस ने देवकी के पुत्रों की
हत्या कर डाली दुर्योधन ने राज्य के लोभ से
अपने बंस का ही उच्छेदन कर दिया और राजा
भी सैकड़ों अनर्थों कराता है जिस का फल
अन्त में राजा को नरक भोगना पड़ता है
शास्त्रों में राजा का अन्न खाना भी मना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संखिया के जहर पर कपूर खिलाकर घी दूध पिलावे
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Wednesday the 17th January 1973.

रा॰ पौ॰ष २७ शकः १८९४ ४ ।१३९२ ذی الحج ।। ۱۲ شنبه
बुधवार १७ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ १३ सं.२०२९
घ॰ ५८।३६ आर्द्रा ४६।१६ र॰ उ. ६।४१ र॰ अ. ५।२७
फ॰ १३८० प्र. पूस २८ बं. माघ ४ नें. ४ गते

मनुस्मृती मे लिखा है दस कसाई के अन्न खाने में
जितना दोष होता है उतना ही दोष एक कुम्हार के
अन्न खाने में होता है और १० कुम्हार के अन्न खाने
मे जितना दोष होता है उतना ही दोष शराब को जो बेचता
है उसके अन्न खाने मे होता है और कलवारों के याने
शराब के बेचने वालों के अन्न खाने मे ~~होता है और~~
जितना दोष होता है उतना ही दोष एक वेश्या के अन्न
खाने मे होता है और दस वेश्या के अन्न खाने में जितना
दोष होता है उतना ही दोष एक राजा के अन्न ख खाने
मे होता है क्योंकि राजा का द्रव्य अनेक प्रकार के
अधर्मों से मिश्रित होता है इसी से राज्य भी अनेक
अनर्थों का कारण है यदि राज्य अनेक अनर्थों
का कारण न होता तो बड़े राजा इसका त्याग क्यों
करते और त्याग उन्होंने किया है इस से साबित
है राज्य भी अनेक अनर्थों का हेतु है

०.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मक्ड़ी के जहर में अमचुर पानी में पीसकर लगावे
(कर्क का चन्द्र २९।४५) सोना चाँदी सस्ता

Thursday the 18th January 1973.

रा॰ पौष २८ शकः १८९४ ४ ।३१४ ذى الحجہ ۱۴ ۱۳۹۲ ھ
गुरुवार १८ जनवरी सन् १९७३ पौष शु॰ १५ सं.२०२९
घ॰ ४०।४५ पुनर्वसु ४३।३ र॰ उ. ६।३१ र॰ अ. ५।२८
फ..१३८० प्र. पूस २१ बं. माघ ५ ने. ५ गते

स्नानदान व्रत की पूर्णिमा

महीन भाव संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्म पत्र स्थितं वारि धत्ते मुक्ताफल श्रियम्।
अर्थ– महान पुरुषों का जो संग है वह किसकी
उन्नति को नहीं करता है कमल के पत्र पर स्थित
जल की बूँद भी मोती की शोभा को धारण करती

दोहा

जो हि जैसी सङ्गति करी, तैं तैसो फल लीन।
कदली सीप भुजंग मुख, एक बूँद गुण तीन।
जल त्रिविध निर्मल मधुर मधु करत ग्लानि को
पान किये देखे हुये हरष देत तिमि सन्त ॥

(सवैया)

ज्ञान बढ़ै गुनवान की सङ्गति, ध्यान बढ़ै तप
संग कीने। मोह बढ़ै परिवार की सङ्गत
लोभ बढ़ै धन में चित दीने
क्रोध बढ़ै नर मूढ़ की संगत, काम बढ़ै
... कीने बुद्धि विवेक विचार बढ़ै, कवि
... कीने ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नक्सोर फूटने पर दूध और आँवला पीस सिरमें लगावे
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 19th January 1973.

रा० पौष २९ शकः १८९४ ४ १३१४ ... १३ ...
शुक्रवार १९ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. १ सं.२०२९
घ. ४६।२९ पुष्य ४०।२१ र. उ. ६।४१ र. अ. ५।२९
फ. १६८० म. माह १ वं. माघ ६ ने. ६ गते

(दोहा)

तुलसी लोहा काठ संग, चलत फिरत जल माँहि।
बड़े न डूबन देत हैं, जाको पकड़ें बाँह॥
नीचहु उत्तम संग मिल, उत्तम ही है जाय।
गंग संग जल निन्दहू, गंगोदक के भाय॥
जाहि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास संग पान के, पहुँचे राजा पास॥
भले नरन के संग से, नीच ऊँच पद पाय।
जिमि त्रिलोचन का पुष्प संग, ईश शीश चढ़ि जाय॥

एक दिन बड़ी बरसा होती थी और सरदी के दिन थे एक नग्न साधु घूमते हुये नगर मे एक मकान के छज्जे के नीचे द्वार पर खड़े हो गये। वह मकान राजा की वेश्या का था। मकान के भीतर से एक लौंडी ने उस महात्मा को देख कर जा[illegible] [illegible] से कहा एक महात्मा नीचे से [illegible] हुये बाहर [illegible] से जाड़े को घर रहे हैं और [illegible] से चाल [illegible] हैं वेश्या ने लौंडी से कहा कि [illegible] इन को भीतर ले आई [illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

 भाँगके नशे पर दही के पानीमें कपूर मिलाकर पिलावे
(सिंह का चन्द्र ३८।४६) सोना चाँदी सस्ता
Saturday the 20th January 1973.
रा• पौष ३० शकः १८९४   شنبه ١٦ ذی الحجہ ١٣٩٢ ٤
शनिवार २० जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. २ सं.२०२९
घ• ४३।२३ श्लेषा ३८।४६ र• उ. ६।४१ र• अ. ५।२९
फ. १३८० प्र. माह २ वं. माघ ७ ने. ७ गते

बिछौने पर लिटा दिया और गर्म चाह पिलाई फिर सुन्दर भोजन कराया पश्चात् आप भोजन कर के पाँव दाबने लगी तब महात्मा ने उस वेश्या की तरफ एक निगाह से देखा मानो उसके हृदय में अमृत की धारा बरसा दी और सो गये वह वेश्या। रात भर उनके पैर को ही दबाती रही सबेरे वह सो गई महात्मा को जब नींद खुली उन्होंने भी रजाई को फेंक कर चल दिया कुछ देर के पीछे वेश्या की जो नींद खुली तब उसने लौंडी से पूछा महात्मा कहाँ को गये हैं लौंडी ने कहा वह जंगल को जा गये वह वेश्या भी नग्न ही घर से निकलकर नगर के बाहर एक वृक्ष के नीचे जाकर नीचे सिर करके बैठी रही राजा को खबर हुई राजा तिसके पास गये और उसको बुलाने लगे तब वेश्या ने कहा अब मैं वह भोगन नहीं जो कि तुम्हारे मैले को उठाती रही हूँ अब राजा ने नौकरों को हुक्म किया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल बढ़ानेको दूधमें तिल्लीका तेल और गोखरूका लेपकरे
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 21st January 1973.

रा॰ माघ १ शकः १८९४ ١٣٩٢ ذی الحجہ 10 ایک شنبہ

रविवार २१ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ॰ ३ सं॰ २०२९

घ॰ ४१।१२ मघा ३८।३ र॰ उ॰ ६।४१ र॰ अ॰ ५।३०

फ॰ १३८० प्र॰ माह ३ बं॰ माघ ८ ने॰ ८ गते

इसकी इच्छा हो वहाँ पर यह चली जाय कोई भी
इसको न रोके दूसरे दिन वह वेश्या वहाँ से चली गई।
हे चित्तवृत्ते महात्मा की नजर जिस पर पड़ जाय
वह भी कल्याण रूप हो जाता है इसी पर गुरु
नानक जी ने कहा है। नानक नदरी नदर
निहाल गुरु नानक जी कहते हैं महात्मा उनको
दृष्टि करके ही दूसरे को कृतार्थ कर देते हैं।।

छप्पय।

लियो नीम सत्संग भयो मलयागिर चंदन।
लोह पारस परस दरस दरसत है कुंदन।।
मिले सुरसरी नार सार निहचै सो गंगा।
मिश्री सों [illegible] तज्यो तहू के संगा।।
लोह तज्यो मिलि नौका मिले सारखी सकल सुन लीजिये।
[illegible] संगते साधु मिलि रामनाम रस पीजिये।।

चित्तवृत्ते — उपकार करने से चित्त की शुद्धि
दया का नाम ही उपकार है जिसमें दया
उपकार करेगा जिसमें ये ध्यान होगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीरके मस्से पर रसकपूर पानीमें पीसकर लेप करे
(कन्या का चन्द्र २३।५८) सोना चाँदी सम

Monday the 22nd January 1973.

रा॰ माघ २ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۱ ذی الحجہ ۱۵ [illegible]
सोमवार २२ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ॰ ४ सं.२०२९
घ॰ ४०।१३ पू. फा. ३८।२२ र॰ उ. ६।४८ र॰ अ. ५।२१
फ़. १३८० प्र. माह ४ बं. माघ ९ ने. ९ गते

संकष्टी श्री गणेश ४ व्रत

लोक मे भी दयालु पुरुष की कीर्ति होती है और दया हीन की निंदा होती है दया बिन सिद्ध कसाई ऐसा लोक कहते है दया चित्त की शुद्धि का मुख्य साधन है एवं तुम को दयालु पुरुष के दृष्टांत को सुनाते हैं ।।

एक नगर के बाहर एक मंदिर मे महात्मा रहते थे वह नित्य वेदान्त की कथा को कहते थे उनकी कथा मे एक क्षत्री जाता रहा परंतु गरीब था सडक के किनारे चमचा लगा बेचता था एक दिन उसने महात्मा से कहा महाराज हमने अन्वय व्यतिरेक करके देहादिकों से भिन्न आत्मा निश्चय कर लिया है और महावाक्यों करके अन्वय करके भी जीव ब्रह्मा का अभेद और निश्चय करते है फिर भी हम को उस आत्म सुख की प्रतीत नहीं होती तो इस मे क्या कारण है. महात्मा ने कहा कोई पाप पूर्व जन्म इस मे प्रतिबन्धक है वह पाप जब कि दूर हो [illegible]

[illegible]

[illegible] के पास प्याला गिर पडा उस ने [illegible]
मे पानी डाल दिया वह चमार होकर भी [illegible]
दिया वह कहकर चला गया उसी दिन से [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फुन्सी के घावपर गोलमिर्च पीपल पानी में घिसकर लगावे
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Tuesday the 23rd January 1973.

रा० माघ ३ शकः १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی الحجہ ١٧ سہ شنبہ
मंगलवार २३ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ.५ सं.२०२९
घ० ४०।३० उ. फा. ४०।१५ र. उ. ६।४८ र. अ. ५।३२
फ. १३८० प्र. माह ५ वं. माघ १० ने. १० गते

नेताजी जयन्ती

दिया है दया से सब प्रकार के पाप दूर हो जाते हैं
एक समय में नारद जी पृथ्वी पर पर्यटन करते
हुये बैकुण्ठ में जा निकले वहाँ पर भगवान को
अकेले बैठे हुए देखकर नारद जी ने भगवान से
कहा महाराज आप का बैकुण्ठ तो [illegible]
पड़ा है कोई भी पुरुष यहाँ पर [illegible]
क्या बैकुण्ठ में भी कोई आने की [illegible]
है यहाँ पर तो सर्व प्रकार का सुख है किसी प्रकार
का भी यहाँ पर दुःख नहीं है फिर क्यों बैकुण्ठ खाली
है भगवान ने कहा नारद जी यद्यपि सब प्रकार का
तब भी बैकुण्ठ में आने की इच्छा किसी को नहीं होती है
और हमारा भी मन अकेले नहीं लगता है दूसरा कोई हो
तब दो घड़ी तिससे बात चीत ही करें कोई सेवा करने
वाला नहीं है हम क्या करें मर्त्यलोक निवासी कोई
भी बैकुण्ठ में आने की इच्छा नहीं करते हैं नारद ने
कहा यह कैसी बात है बैकुण्ठ का तो नाम सुनते ही
सब लोग आप से आप चले आवेंगे भगवान ने
कहा अच्छा तुम जाकर दो चार आदमियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८

बाल तोड़ पर अलसी की पुल्टिस बाँधे
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Wednesday the 24th January 1973.
रा०माघ ४ शकः १८९४ ४ ।१३९٢ ذی الحجہ ١٨ چہارشنبہ
बुधवार २४ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. ६ सं. २०२९
घ. ४२।७ हस्त ४३।१४ र. उ. ६।४८ र. अ. ५।२२
फ. १३८० प्र. माह ६ बं. माघ ११ ने. ११ गते

देखा जायगा नारद जी बड़े उत्साह के साथ चले
और आकर एक बूढ़े से नारद ने कहा बाबा
बैकुण्ठ को चलोगे नारद जी की बात को सुन कर
वह बूढ़ा बहुत बिगड़ा और नारद से कहने लगा
अभागे तू ही बैकुण्ठ में जा जिसका न कोई आगे
न पीछे है मैं क्यों जाऊं मेरे पुत्र और पोते और
स्त्री धनादिक सब मौजूद हैं जो निपूता हो सो
बैकुण्ठ में जाय नारद जी चुप चाप वहां से चले
पड़े आगे एक और युवावस्था वाले से नारद जी
कहा बैकुण्ठ को चलोगे उसने नारद से कहा
बैकुण्ठ तो बूढ़ों के लिये बना है जो कि किसी
लायक न हो वह बैकुण्ठ में जाय वहां से थोड़ी
जाकर फिर एक पुरुष से नारद ने कहा बैकुण्ठ
जावोगे उसने कहा किसी लूले लंगड़े को खोजो
यहां पर तुम्हारी दाल नहीं गलेगी नारद जी ने
से मनुष्यों को बैकुण्ठ जाने के लिये कहा किन्तु
जाने के लिये कहा किसी ने कबूल न किया तब नारद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्तातिसार में इन्द्र जौ मोथा और अतीस का काढ़ा द
(तुला का चन्द्र १२।१७) सोना चाँदी सम
Thursday the 25th January 1973.
रा॰ माघ ५ शकः १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی الحجہ ١١ پنجشنبہ
गुरुवार २५ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. ७ सं. २०२९
घ. ४२।५५ चित्रा ४७।२१ र. उ. ६।४८ र. अ. ५।३३
फ. १३८० प्र. माह ७ वं. माघ १२ ने. १२ गते

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती

दुकान मे बैठे हुये देखा नारदजी ने अपने मन
मे विचार किया यह भगवान का भक्त दीखता है
यह अवश्य ही बैकुण्ठ को चलेगा और जो यह एक
भी चलन दे तब हमारी बात बन जाय क्यों कि हम
भगवान से कह आये हैं हम किसी को लावेगे और
भगवान की सेवा करते सो आराम मिल जाय
नारद जी तिस सेठ के पास मे जाकर बैठ गये और
सेठ जी ने सीताराम २ करके तिस सेठ को कान मे
नारद जी ने कहा सेठ जी तो संसार का सुख अपने
सब देख ही लिया है अब चलकर कुछ काल बैकुण्ठ
के सुख को भोगो सेठ ने कहा महाराज मेरी भी
यही सलाह है परन्तु अभी लड़का सयाना नहीं है
यह जरा सयाना हो जाय और दुकान के काम काज
को सँभाल ले तब चलूँगा आप कुछ दिन पीछे फिर
आना नारद जी चले गये और कुछ दिन पीछे
फिर उसके पास आये और उससे कहने लगे
अब तो तुम्हारा लड़का सयाना हो गया है अब चलो
सेठ ने कहा अभी इसके संतति नहीं हुई है इसके पुत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६ दाँत कुन्द होने पर गरम गरम मोटी रोटी खावे
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 26th January 1973.
रा॰ माघ ६ शकः १८९४ ४ ।३९१ ذی الحجہ ۲۰ جمعہ
शुक्रवार २६ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ॰ ८ सं॰ २०२९
घ॰ ४८।२३ स्वाती ४२।२४ र॰ उ॰ ६।४७ र॰ अ॰ ५।३४
फ॰ १३८० प्र॰ माह ८ वं॰ माघ १२ ने॰ १२ गते

गणतन्त्र दिवस, अष्टका

फिर कुछ काल के तिस सेठ से जाके कहने लगे अब तो चलो अब तो तुम्हारे पोता हो गया है सेठ ने कहा महाराज अभी इस की सादी नहीं है इसके विवाह को देख कर चलूगा नारद जी फिर कुछ काल के पीछे आये और सेठ के लिये पूछा कि सेठ कहाँ है तिसके लडके ने कहा बैठ मर गये नारद जी ध्यान लगा कर देखा तो सर्प बन कर अपने द्रव्य पर बैठे थे नारद जी ने कहा अब तो चलो उसने कहा अपने द्रव्य की करता है अभी लडका द्रव्य की रक्षा लायक नहीं है जब यह रक्षा लायक हो जायगा तब चलूँगा नारद कुछ दिन पीछे फिर गये तब वह कुत्ता बना द्वार पर बैठा था नारद जी ने कहा अब तो चलो तो तिसने कहा महाराज पता है अनजान है मैं द्वार पे बैठ कर चोर चकार की रक्षा करता हूँ नहीं तो घर में से माल को निकाल ले जायेंगे तब नारद ने सेठ की छोरी से कहा तुम दो बेकुण्ठ को चलो तिसने कहा महाराज अभी दो चार काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादी बवासीर में सधा नामक और मट्ठा पीवे २६
(वृश्चिक का चन्द्र ४२।४) सोना चाँदी तेज

Saturday the 27th January 1973.

रा॰ माघ ७ शक: १८९४   ٤ ١٣٩٢ ذى الحجة ٢١ شنبه

शनिवार २७ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. ९ सं. २०२९

घ. ५३।४० विशाखा ५८।२४ र. उ. ६।४७ र. अ. ५।३५

फ. १३८० प्र. साह ९ बं. माघ १४ ने. १४ गते

तब थोड़े दिनों के पीछे नारदजी गये तब वह
सेठानी मर कर कुतिया बनकर द्वार पर बैठी
हुई और कुत्तों से खराब हो रही थी नारदजी ने
कहा अब तो चलो उसने कहा अभी तो मैं इसी
जन्म में बड़ी सुखी हूँ फिर चलूँगी नारदजी
हार कर बैकुण्ठ में जा कर भगवान से कहने
लगे महाराज आपने सत्य कहा है संसारी
लोग ऐसी ममता में फँसे हैं जो कोई भी
बैकुण्ठ में आने की इच्छा को नहीं करता है
हे चित्तवृत्ते यह संसार असाररूप भी है
और अति मलिन भी है तब भी संसारिक लोक
ऐसी मोह ममता में फसे हैं जो इसके त्याग
की इच्छा को नहीं करते हैं ।।

दंडी स्वामी

मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ

मु० मुमुक्षु भवन अस्सी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८

खून के दस्तोंमें बेलका गूदा दूधमें मिलाकर पिलावे
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Sunday the 28th January 1973.

रा॰ माघ ८ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۲ ذی الحج ۲۲ ایکشنبہ
रविवार २८ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ॰१० सं॰२०२९
घ॰ २९।० अनुराधा ६०।० र॰ उ॰ ६।४७ र॰ अ॰ ५।३५
फ॰ १३८० प्र॰ माह १० वं॰ माघ १५ ने॰ १५ गते

लाला लाजपतराय जयन्ती

एक नगर मे एक बनिया रहता था बड़ा धनी था
वह नित्य यज्ञ मे अपने धन को खर्च करता था
जब कि सब धन बनियो का खर्च हो गया तब बनि
को खाने पीने से भी तंगी होने लगी तब। तिस की स्त्री
ने तिससे कहा तुम किसी राजा के पास जावो।
और एक यज्ञ के फल को बेच कर कुछ द्रव्य लाकर
अपना अच्छी तरह से गुजर करो जब कि बनियां ने
जाने की तयारी करी तब तिस की स्त्रीने चौ रोटी
मोटी २ रास्ते मे खाने के लिये तिस के कपड़े मे
दी बनियां तीसरे पहर जंगल मे एक कुएँ के कि
पहुचा और वहाँ पर बैठ कर सुस्ताने लगा तब देखता
क्या है वृक्ष की कोटर मे एक कुतिया ब्याई हुई
है चौ तिस के बच्चे है तिस को चूस रहे है और १
दिन की भूखी है क्यों कि तीन दिन से अंधा बरसात
हो रही थी बच्चों का [illegible] नहीं पाई कुतिया
और दुबला हो [illegible] थी अब [illegible]
[illegible] नहीं था बनियां ने एक एक [illegible]
तब दोनों [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रतौंधी में रीठा को पानी में घिसकर अंजन करे
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Monday the 29th January 1973.

रा॰ माघ ९ शकः १८९४ ४ ١٣٩٢ ذی الحجہ ٢٣ دوشنبه

सोमवार २९ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ.११ सं.२०२९

घ॰ ६०|० अनुराधा ५|३ र॰ उ. ६|५६ र॰ अ. ५|३६

फ. १३८० प्र. माह ११ वं. माघ १६ ने. १६ गते

और प्राण मुख्याय हुआ कुतिया जी गई तिसके
जीने से तिस के बच्चे भी जी गये बनिया दूसरे
दिन राजा के पास पहुंचा और एक यज्ञ के फल को
बेचने के लिये कहा राजा ने ज्योतिषी को बुलाकर
पूछा तुम प्रश्न देखो इसने कितने यज्ञ किये हैं
उन सब में किस यज्ञ का फल उत्तम है उसी को हम
खरीद करेंगे ज्योतिषी ने कहा जी कि इसने रास्ते
में कुतिया को रोटियां खिलाई है इससे नौ जीवों
के प्राण बचे हैं वही इस के सब यज्ञों में से उत्तम
यज्ञ है उसी के फल को यदि ~~[illegible]~~ यह बेचे
तब तुम खरीद कर लेओ राजा ने बनियां से कहा बनियां
ने कहा तिस यज्ञ के फल को मैं नहीं बेचूंगा और किसी
यज्ञ के फल को खरीदो तो बेचूंगा राजा ने और यज्ञ के
फल को न खरीदा और बनियां को कुछ रुपया देकर
[illegible] कर दिया है चित्त वृत्ते मनुष्य तो दया करते
[illegible] तर जीव भी दया करते हैं अब मनुष्य से
[illegible] जीवों की भी दया पर दृष्टान्त सुनो ;—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३०

दाँतोंकी कमजोरी परसैंधानमक और कडुआ तेलसे मंजनकरे
(धन का चन्द्र ११।२६) सोना चाँदी सम
Tuesday the 30th January 1973.
रा॰ माघ १० शकः १८९४ ४ ।۳۱۲ ذی الحجہ ۲۶ سنشنبہ
मंगलवार ३० जनवरी सन् १९७३ माघ कृ.११ सं.२०२९
घ. ४।२६ ज्येष्ठा ११।२६ र. उ. ६।४६ र. अ. ५।३७
फ. १३८० प्र. माह १२ बं. माघ १७ ने. १७ गते

षट्तिला ११ एकादशी व्रत सबका, शहीद दिवस

एक पंडित रास्ते मे चले जाते थे उन्होंने जंगल मे देखा कि मूसोंकी बड़ी भारी कतार चलीया है उनमे एक मूसा अन्धा था उसके मुख मे घास का तिनका पकड़ कर दूसरे मूसेने उसी तिनके को अपने मुखमे पकड़ा था तिसके २ अन्धा मूसा भी चलाजाता था अब देखिये मूसा आदिक जानवरोंमें भी उपकार करने की बुद्धि रहती है जो मनुष्य शरीर को धारण करके उप[कार] से हीन है वह जन्तुओं से भी बुरा है क्यों कि मनुष्य शरीर तो खास कर उपकार करने के लिये ही उत्पन्न हुआ है ॥

परोपकारः कर्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खटाई खाने से जवान मनुष्य की धातु फट जाती है 31

(बल का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Wednesday the 31st January 1973.

रा.माघ ११ शाक: १८९४ ४ چہارشنبہ ۲۵ ذی الحجہ ۱۳۹۲

बुधवार ३१ जनवरी सन् १९७३ माघ कृ. १२ सं. २०२९

घ. ९।३२ मूल १७।४६ र. उ. ६।४५ र. अ. ५।३८

फ. १३८० प्र. माह १३ बं. माघ १८ ने. १८ गते

प्रदोष १२ व्रत

धन करके और प्राणों करके भी परोपकार करना चाहिये क्योंकि परोपकार के बराबर कोई यज्ञ का भी पुण्य नहीं ॥

[परोपकारशून्यस्य धिङ् मनुष्यस्य जीवितम्
यावन्तः पशवस्तेषां चर्माप्युपकरिष्यति ॥

जो मनुष्य परोपकार से शून्य है तिस के जीने को भी धिक्कार है क्योंकि जितने पशु हैं उनके चर्म भी परोपकार करते हैं ॥

[आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः ।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

अपने लिये इस लोक में कौन मनुष्य नहीं जीता है परन्तु जो परोपकार के लिये जीता है वही जीता है दूसरा नहीं जीता है ॥

॥ दोहा ॥

... आपको, नदी न ... नीर ।
... के कारणे, संतन धरे शरीर ॥
... ॥ वाइक

३२ बवासीर पर हरें का चूर्ण गुड़में गोली बनाकर खिलावे
(मकर का चन्द्र ३९।२२) सोना चाँदी सम

Thursday the 1st February 1973.

रा• माघ १२ शकः १८९४ ।۱۳۹۲ ذی الحجہ ۲۷ پنجشنبہ
गुरुवार १ फरवरी सन् १९७३ माघ कृ. १३ सं. २०२९
घ• १३।२७ पू. षा. २३।१५ र. उ. ६।४५ र. अ. ५।३८
फ. १३८० प्र. माह १४ बं. माघ १९ ने. १९ गते

मास शिवरात्रि १३ व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन)

हे चित्तवृत्ते अमेरिका मे एक सेनापति कुछ सेनाके
लिये जाता था जंगल मे वह रास्ता को भूल गया
यद्यपि दो-चार घण्टे तक इधर उधर भ्रमण करता
परन्तु रास्ता तिसको न मिला ~~भूख~~ और सेना सब
भूख प्यास से भी बहुत घबड़ाई तिस जंगल मे एक
घास का छप्पर तिसने पति को दिखाई पड़ा तिस छप्पर मे
एक मनुष्य बैठा था तिससे सेनापति ने कहा हम
लोगों को भूख और प्यास लगी है उसने कहा हमारे साथ
तुम चलो वह आगे २ चला पीछे तिसके वह सेना सब चली
थोड़ी दूर जब गये तब अन्न का ढेर दिखाई पड़ा
सेनापति ने तिससे कहा यह दूसरे का है इसको मत
छुओ जब आगे थोड़ी दूर जब गये तब अन्न का
ढेर दिखाई पड़ा और पास ही पानी का तालाब
उसने कहा यह अपना है जितना आपको चाहिये
ले लीजिये और यह पानी का तालाब भी मौजूद है सेना
ति को जितने कुछ जल की जरूरत थी सो ले लिया
उसने कहा हमको अब तुम रास्ता बताओ
तब रास्ता भी उनको बता दिया वह सब से
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँतों के छेद पर चाँदी का चूर्ण मोम मिला दाँतोंमें भरे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 2nd February 1973.

रा॰ माघ १३ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۲ ذی الحجہ ۲۷ جمعہ
शुक्रवार २ फरवरी सन् १९७३ माघ कृ॰ १४ सं॰ २०२९
घ॰ १७।१८ उ॰ षा॰ २७।४३ र॰ उ॰ ६।४२ र॰ अ॰ ५।३९
फ॰ १३८० प्र॰ माह १९ वं॰ माघ २० ने॰ २० गते

२

भला करना इसका नाम उपकार है ॥
~~है~~।

बैराग्य का कारण गृहस्थाश्रम ही है क्योंकि जितने बड़े २ महात्मा हुये है जैसे रामचन्द्र जी वसिष्ठ जी आदिक सब को गृहस्थ आश्रम से ही बैराग्य हुआ है तत्पश्चात उन्होंने गृहस्थाश्रम त्याग कर दिया है बिना गृहस्थआश्रम के तो किसी की उत्पत्ति भी नहीं होती इस लिये गृहस्थआश्रम ही सब का मूल कारण है और ऐसा भी नियम नहीं है जो गृहस्थ आश्रम में ज्ञानी नहीं होता है क्यों कि जनकादिक सब गृहस्थाश्रम मे ही ज्ञानी हुये है ज्ञान का कारण बैराग्य है जिस को गृहस्थाश्रम मे भी सदैव काल बैराग्य और विचार बना रहता है उसके ज्ञानी होने मे कोई भी सन्देह नहीं है और संन्यास आश्रम मे भी जिस का पूर्ण बैराग्य बना उस के ज्ञानी होने मे भी कोई सन्देह नहीं है ... जो आत्मज्ञान के प्रति साधनता कही है वह ... आश्रम मे हो या गृहस्थाश्रम मे या वानप्रस्थ ... या संन्यासाश्रम मे हो बिना बैराग्य के ज्ञा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत किरकिराने पर नीलकण्ठ का पर गले में बाँधे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Saturday the 3rd February 1973.
रा॰ माघ १४ शकः १८९४ ٤ ١٣٩٢ ذی الحجہ ٢٨ شنبه
शनिवार ३ फरवरी सन् १९७३ माघ कृ. ३० सं. २०२९
घ. १९।३३ श्रवण ३१।४ र. उ. ६।४४ र. अ. ५।४०
फ. १३८० प्र. माह १६ बं. माघ २१ ने. २१ गते

मौनी अमावस्या ३०

मोक्ष नहीं होता है ऐसा बेद ने नियम कर दिया
है राजन् जो पुरुष गृहस्थाश्रम में अनासक्त होकर
उस में कमल की तरह रहता है उसके मुक्ति में
कोई भी सन्देह नहीं है इस में जनक जी के
दृष्टान्त को तुम्हारे प्रति सुनाते हैं।

जिस काल में व्यास जी ने सुकदेव जी को राजा
जनक जी के पास उपदेश लेने को भेजा है और
शुकदेव जी ने द्वार पर जाकर अपने आने की खबर
जनक जी को भेजी है तब जनक जी ने शुकदेव जी
को परीक्षा के लिये कहला भेजा अभी द्वार पर
ठहरो जनक जी का यह तात्पर्य था देखें इन को
क्रोध होता है या नहीं तीन दिन शुकदेव जी द्वार पर
खड़े ही रहे और उनको कुछ भी क्रोध न आया तब
जनक जी ने चौथे दिन शुकदेव जी को भीतर
बुलाया जब कि शुकदेव जी भीतर गये तब
कि जनक जी स्वर्ण के सिंहासन पर बि
सुन्दर २ स्त्रियें चरण दबा रही हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुँहके छालोंपर छोटी इलायची तथा फिटकिरीका चूर्ण छूड़े
(कुम्भ का चन्द्र २/६) सोना चाँदी सम

Sunday the 4th February 1973.

रा॰माघ १५ शकः १८९४ ایکشنبه ۲۱ ذی الحجہ ۱۳۹۲
रविवार ४ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ १ सं. २०२९
घ॰ २०/२७ धनिष्ठा ३३/८ र॰ उ॰ ६/४४ र॰ अ॰ ५/४०
फ॰ १३८० प्र॰ माह १७ बं॰ माघ २२ ने॰ २२ गते

मधुर गीतों को गायन कर रही हैं और अनेक प्रकार के भोग खान पानादिक चारों तरफ घेरे हैं बंदी गण स्तुति कर रहे हैं जनकजी की विभूति को देख कर शुकदेव जी के मन में घृणा उपजी यह तो भोगों मे अति आसक्त हैं यह कैसे ज्ञानी हो सकते हैं जो मेरे को पिता ने उपदेश लेने के लिये इनके पास भेजा है जनक जी शुकदेव जी के चित्त की बातों को जान गये तब जनक जी ने एक ऐसी माया रची जो मिथलापुर को आग लग गई और जब द्वार पर भी आ गई बाहर से दूत दौड़े आये और उन्होंने कहा। महाराज मिथलापुर मे आग लग गई है और जब द्वार पर आ गई है थोड़ी देर मे अन्दर भी आना चाहती है तब शुकदेव जी के चित्त मे फुरा बाहर द्वार पर तो हमारा भी दण्ड कमण्डल पड़ा है कहीं जल हो जाय जनक जी जान गये और तिसु काल मे ...जी ने इस आग वाले श्लोक को पढ़ा:-
...त्त मे वित्तं यन्मे नास्ति हो किञ्चन।
...प्रदाप्तायां न मे दह्यति किञ्चन॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३५

आवाज बन्द होने पर माखन मिश्री चाटे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 5th February 1973.

रा० माघ १६ शकः १८९४ ४ १३१३ ... १ ...
सोमवार ५ फरवरी सन् १९७३ माघ शु० २ सं. २०२९
घ० २०।१ शतभिषा ३३।५६ र. उ. ६।४३ र. अ. ५।४१
फ. १३८० प्र. माह १८ बं. माघ २३ ने. २३ गते

मोहर्रम १ हिजरी १३९३ प्रारम्भ

जनक जी जो कहते हैं मेरा जो आत्मरूपी वित्त जो धन है सो अनंत है अर्थात् तिस का अन्त कदापि नहीं हो सकता है इस मिथलापुर के दग्ध होने से मेरा क्या बिगड़ा किञ्चित भी दग्ध नहीं होता है ।।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति — ऋग्वेद से
उस एक ही परमात्मा को विद्वान लोग अनेक नामों से वर्णन करते हैं। ।। एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।।
उस एक ही अनेक रूपों में कल्पना की गई है।
सृष्टि स्थित्यन्त करणीं ब्रह्म विष्णु शिवाभिधाम् ।
स संज्ञा याति भगवानेक एक जनार्दन: । — विष्णु पुराण में
वह एक ही भगवान सृष्टि का उत्पादन पालन और संहार करता है उसी के ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाम हैं।
आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् । — ऐतरेय
यह आत्मा एक ही था। एक मेवा द्वितीयम् — ...
वह एक ही है दो नहीं — वह एकैव सा महाशक्तिस्तया ...
ततम् । वह एक ही महाँ शक्ति है उसी से यह सारा विश्व ...
...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौवा लटकने पर केशर गुलाब पीसकर कान में डाले
(मीन का चन्द्र १८।३९) सोना चाँदी सस्ता
Tuesday the 6th February 1973.
रा॰ माघ १७ शकः १८९४   ४ ۱۳۹۳ محرم ۲ سشنبه
मंगलवार ६ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ ३ सं॰ २०२९
घ॰ १८।२२ पू॰ भा॰ ३३।२३ र॰ उ॰ ६।४३ र॰ अ॰ ५।४२
फ॰ १३८० प्र॰ माह १९ बं॰ माघ २४ ने॰ २४ गते

(छान्दोग्य उपनिषद मे)

देवता न तो खाते है न पीते हैं केवल अमृत को देखकर तृप्त रहते हैं यों देवता सर्वव्यापी हैं पर उनका सर्वव्यापी निकटवर्ती निवास स्थान अपनी देह ही है इस मानव शरीर मे सभी देवता निवास करते हैं विभिन्न अंग प्रत्यङ्गों मे विभिन्न देव शक्तियों का निवास है इसलिये साधक को अपना शरीर एवं मन इस योग्य बनाना होता है कि वहाँ निवास करने वाली देव शक्तियाँ जागृत होकर अपनी सजातीय महाँ शक्ति को सूक्ष्म जगत मे से आकर्षित न कर सकें आहार विहार व्रत संयम उपवास ब्रह्मचर्य एवं विविध तपश्चर्याओं द्वारा शरीर में रहने वाली देव शक्तियों को शुद्ध करना भी अभीष्ट सिद्धि के लिये आवश्यक है एतरेयोपनिषद् मे कहा गया है :—

[ता एता देवत: सृष्टा अस्मिन महत्यर्णवे प्रापतंस्त मशनाया पिपासाभ्यामन्ववार्जत ता एन मब्रुवन्नायतनं न: ...नीहि यस्मिन प्रतिष्ठिता अन्न मदा मेति |

एतरेयो उपनिषद

...अग्नि आदि सब देवता उत्पन्न किये और ...र मे भेजा उनके भरवसे ... प्यास से युक्त ...

गले में काँटे हों तो लौंग मुँह में डालकर चूसे
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 7th February 1973.

रा. माघ १८ शकः १८९४ ४ ١٣٩٣ محرم ٣ ٤ فرو ردی ماه
बुधवार ७ फरवरी सन् १९७३ माघ शु. ४ सं. २०२९
घ. १३।१९ उ. भा. ३२।४ र. उ. ६।४२ र. अ. ५।४५
फ. १३८० प्र. माह २० बं. माघ २५ ने. २५ गते

वैनायकी श्री गणेश ४ व्रत

हमारे लिये स्थान की व्यवस्था कीजिये जहाँ रह कर हम अपना आहार प्राप्त कर सकें ।

ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन् सुकृतं बतेति पुरुषो वाव सुकृतम् । ता अब्रवीद्यथायतनं प्रविशतेति ॥
ऐतरेयोपनिषत

परमात्मा ने उनके लिये मनुष्य का शरीर उपस्थित किया तब देवताओं ने कहा बस हमारे लिये यह बहुत सुन्दर स्थान बन गया यह सचमुच ही बड़ी सुन्दर रचना है तब परमात्मा ने कहा अब तुम लोग अपने लिये इसमें उचित स्थान ढूंढ लो और उसी में प्रवेश कर जाओ ॥

अग्निर्वाग् भूत्वा मुखं प्राविशद्वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशदादित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशद्दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्नोषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं प्राविशंश्चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशन्मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशदापो रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशन्
ऐतरेयो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३८

दमा पर केसर और माउलउस्ल खाये
(मेष का चन्द्र २९।४९) सोना चाँदी सम
Thursday the 8th February 1973.
रा॰ माघे १९ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۳ محرم ۴ پنجشنبه
गुरुवार ८ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ ५ सं. २०२९
घ॰ ११।२६ रेवती २९।४९ र॰ उ. ६।४१ र॰ अ. ५।४३
फ. १३८० प्र. माह २१ बं. माघ २६ ने. २६ गत्ते

वसन्त पंचमी ५

अग्नि ने वाणी बन कर मुख में प्रवेश किया वायु प्राण बन कर नासिका में रहने लगा। सूर्य ने नेत्र ओं में स्थान ग्रहण किया। दिशा देवता ने कर्णेन्द्रिय बन कर कानों में वनस्पति देवता ने रोम बन कर त्वचा में, चन्द्रमा ने मन बन कर हृदय में यम ने अपान वायु बन कर नाभि में और वरुण देवता ने वीर्य बन कर शिश्नेन्द्रिय में प्रवेश किया ॥

तमशनायापिपासे अब्रूतामावाभ्यामभिप्रजानीहीति। ते अब्रवीदेतास्वेव वाँ देवतास्वाभजाम्येतासु भागिन्यौ करोमीति। तस्माद्यस्यै कस्यै च देवतायै हविर्गृह्यते भागिन्यावेवास्यामशनायापिपासे भवतः॥

— ऐतरेयोपनिषद्

तब भूख और प्यास परमात्मा से बोलीं - हमारे लिये भी स्थान दीजिये। उन्होंने उत्तर दिया तुम्हें इन देवताओं में प्रविष्ट किये देता हूँ। तुम्हें इन्हीं का भागीदार [illegible] हूँ। यह देवता तुम्हारे ही द्वारा अपना अपना [illegible] करेंगे। तुम दोनों उन्हीं की भागीदार रहो [illegible] निवास करने वाले देवताओं को भूख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वास के माध्यम से ही पोषण मिलता है। अर्थात
जैसे हम कुछ खाते पीते हैं उसी के अनुरूप देव शक्ति
सशक्त एवं दुर्बल होती हैं॥
सात्विक खान पान देवतत्वों को पुष्ट करता है और
तामसी तमोगुणी आहार करने से देवता दुर्बल हो जाते
यह देवता केवल मुख के द्वारा ही आहार नहीं लेते
वरन् प्रतेक इन्द्रिय के द्वारा उसकी उचित अनुचित
प्रकृयाओं के आधार पर वे देवता पुष्ट एवं असक्त
बनते है जो अपनी इन्द्रियों का दुरुपयोग करता
उनके द्वारा अनैतिक आचरण करता है अग्राह्य
को ग्रहण करता है तो शरीर बासी देवता असक्त हो
जाते हैं फिर विधि विधान एवं मन्त्र प्रकृया भी वैसा
फल नहीं देती जैसी शरीर में पुष्ट देव स्थित होने पर
दिया करती है इस लिये देव उपासकों को इन्द्रिय
संयमी सदाचारी होना और आहार विहार की शु
का भी भरपूर ध्यान रखना आवश्यक है
साधक यदि अपने शरीर देवताओं को परिपु
निरवास पूर्वक निश्चल विधि विधान से साध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वाँस पर धतूरे का पत्ता चिलम में रखकर पीये
(वृष का चन्द्र ३७।६) सोना चाँदी तेज

Saturday the 10th February 1973.

रा॰ माघ २१ शकः १८९४ ४ १३९३ محرم ٥ شنبه

शनिवार १० फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ ७ सं॰२०२९

घ॰ ५८।३३ भरणी २३।६ र॰ उ॰ ६।४० र॰ अ॰ ५।४५

फ॰ १३८० प्र॰ माह २३ बं॰ माघ २८ ने॰ २८ गते

रथ सप्तमी ७, अचला सप्तमी, भीष्माष्टमी

शुकदेवजी के अन्तः करण मे स्वतः ही ज्ञान उत्पन्न हुआ था पर उससे काम न चला इस सम्बन्ध मे महोपनिषद् अध्याय २ में इस प्रकार वर्णन मिलता है—

जात मात्रेण मुनिराडू यत्सत्यं तदवाप्तवान्।
तेनासौ स्वविवेकेन स्वयमेव महामनाः।
प्रविचार्य चिरं साधु स्वात्म निश्चय माप्तवान्।

उन शुकदेवजी को बिना गुरु के उपदेश के ही स्वतः आत्मज्ञान हुआ था उनकी वासनाएँ स्वतः निवृत्त हो गई थी परन्तु वह ज्ञान दृढ न होने के कारण उनके मन को शान्ति नहीं हुई उन्हें अपने ज्ञान में नहीं विश्वास हुआ इस लिये अपने पिता व्यासजी के आदेश से उन्हें जनक के पास ज्ञान ग्रहण करने जाना पड़ा। यह भी ध्यान रखने की बात है कि सत्पात्र श्रद्धालु और जिज्ञासी शिष्य ही गुरु कृपा का लाभ उठा सकता है जिस में [illegible] गुण नहीं उस ऊसर भूमि में किसी भी गुरु का [illegible] ज्ञान बीज नहीं जम सकता है गुरु के एक [illegible] प्रयत्न से भी शिष्य का कल्याण नहीं हो सकता [illegible] की श्रेष्ठता से गुरु शिष्य संयोग का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४९

खाँसी में इमली के पत्तके काढ़े में नमक छोड़कर पीवे
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Sunday the 11th February 1973.

रा॰ माघ २२ शकः १८९४ ४ ١٣٩٣ محرم V ایک شنبہ
रविवार ११ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ ९ सं. २०२९
घ॰ ४०|४४ कृत्तिका १९|६ र॰ उ. ६|४० र॰ अ. ५|४५
फ॰ १३८० प्र. माह २४ बं. माघ २९ ने. २९ गते

गुरुश्चेदुद्धरत्यज्ञमात्मीयात्पौरुषाद्दृते।
उष्ट्रं दान्तं बलीवर्दं तत्कस्मान्नोद्धरत्यसौ॥
-योगवाशिष्ठ में

यदि गुरु को किसी अविचारी और पुरुषार्थहीन का उद्धार कर सकते होते तो ऊँट हाथी बैल आदिक उद्धार क्यों न करते। !——इसी

दूसरा प्रसंग है :—

यत्र प्रविष्टा विषया: परेरिता
नदी प्रवाहा इव वारिराशौ।
लीनन्ति सन्मात्रतया न विक्रिया-
मुत्पादयन्त्येष यतिर्विमुक्त:।

अर्थ - समुद्र में मिल जाने पर जैसे नदी का प्रवा समुद्र रूप हो जाता है वैसे हो दूसरों के द्वारा प्रस्तुत किये विषय आत्म स्वरूप प्रतीत होने से जिसके चित्त में किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न नहीं करते वह यति श्रेष्ठ जीवन्मु...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलगम कड़ा होने पर इसबगोल और मिश्री फाँक कर दूधपीवे
(मिथुन का चन्द्र ४२|५५) सोना चाँदी तेज

Monday the 12th February 1973.

रा॰ माघ २३ शकः १८९४ ४ دوشنبه ۸ محرم ۱۳۹۳
सोमवार १२ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰१० सं.२०२९
घ॰ ४४|४९ रोहिणी १४|५५ र॰ उ॰ ६|३९ र॰ अ॰ ५|४६
फ॰ १३८० प्र॰ माह २५ बं॰ माघ ३० नेपाली १ गते

कुम्भ का सूर्य २२|११

आज कोई गुरु बनने के फिकर में है. क्योंकि इससे गुरु बनने वाले को शिष्य से पूजा सम्मान आदर दक्षिणा मिलते रहने से धन का लाभ भी होता है और अपने अहङ्कार की तृप्ति भी होती है इसलिये लोगों ने शिष्य मूड़ना कान फूंकना भी एक व्यवसाय बना लिया है पर वस्तुतः यह कार्य हर किसी का नहीं है जिस में इतना चरित्र तथा आत्मबल हो कि अपना ही नहीं शिष्य का भी कल्याण कर सके उसे ही यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लेने का साहस करना चाहिये। गुरु की योग्यता इस प्रकार की होनी चाहिये! —

मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः।
सर्वागमानां सारज्ञः सर्व शास्त्रार्थ तत्त्ववित्।
परोपकार निरतो जप पूजादि तत्परः।
अमोघ वचनः शान्तो वेद वेदार्थ पारगः।
योगमार्गानुसन्धायी देवता हृदयङ्गमः।
इत्यादि गुण सम्पन्नो गुरुरागम सम्मतः।

जो माता पिता से पैदा हो सदाचारी हो ... वाला हो इन्द्रियाँ जिसके वश में हों जो समस्त ... जानता हो परोपकारी हो ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

6.2 खुनकी कै पर अडूसे का स्वरस शहद मिलाकर चाटे
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Tuesday the 13th February 1973.

रा॰ माघ २४ शक: १८९४ ४ ।१३१३

मंगलवार १३ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ ११ सं. २०२९

घ॰ ३९।४ मृगशिरा १०।२० र॰ उ॰ ६।३८ र॰ अ॰ ५।४७

फ. १३८० प्र. माह २६ बंगला फाल्गुन १ ने. २ गते

जया ११ एकादशी व्रत सबका

जपपूजादि उपासनाओं में संलग्न हो जिसकी वाणी भ्रम से दूर हो शान्त हो वेद और वेदार्थ का पारदर्शी योग मार्ग में जिसकी प्रगति हो जो हृदय से देवता के समान हो इस प्रकार के गुण जिसके स्वभाव में हों वही शास्त्र सम्मत गुरु बनाने योग्य है ऐसे गुरु ही अपने द्वारा दीक्षित शिष्य का हित साधन कर सकते हैं

शास्त्रों मे दस श्रेणी के व्यक्तियों को गुरु कहा गया

उपाध्याय: पिता माता ज्येष्ठो भ्राता महीपति
मातुला श्वसुरश्चैव माता मह पितामहो ।
वर्ण ज्येष्ठ: पितृव्यश्च सर्वे ते गुरुव: स्मृता:

उपाध्याय, पिता-माता, बड़ा भाई, राजा, मामा श्वसुर, नाना, बाबा, ब्राह्मण ये दस गुरु कहे गये हैं

कौर्य० उत्तरा॰ १२।२६

मुमुक्षु भवन वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छातीके दर्दपर सौंठ अंडी और बारह सिंहाका र नः ना लेपकरे

(कर्क का चन्द्र ४९।२६) सोना चाँदी सस्ता ४८

Wednesday the 14th February 1973.

रा० माघ २५ शकः १८९४ ४ ।१३१३ [illegible]

बुधवार १४ फरवरी सन् १९७३ माघ शु० १२ सं.२०२९

घ० २३।४३ आर्द्रा ६।२९ र० उ० ६।२८ र० अ० ५।४७

फ० १३८० प्र० माह २७ बं० फाल्गुन २ ने० ३ गते

भीष्म द्वादशी १२, मुहर्रम

गुरुर्गरीयान् मातृतः पितृतश्चेति मे मतिः

शा० ५-८।१७

माता-पिता से भी गुरु का स्थान ऊँचा है।

क्योंकि –

मातापितरौ शरीरमेव काष्ठकुड्यादिसमं जनयतः
आचार्यस्तु सर्वपुरुषार्थक्षमं रूपं जनयति।
माता पिता तो लकड़ी के ढोल सरीखे इस देह को ही
जन्म देते हैं पर आचार्य सपुरुषार्थ भरे अध्यात्म रूप
को ही जन्म देता है।

अध्यात्म विद्या का प्रवेश द्वार गुरु दीक्षा है यों भाव
ना से भी किसी को गुरु माना जा सकता
पर दीक्षा का विशेष विज्ञान एवं महत्व है कोई स्त्री
चाहे भावना मन से भी किसी को पति मान सकती है
पर यदि विधिवत विवाह संस्कार के साथ देवताओं
और गुरुजनों की साक्षी में पति वरण किया जाय तो
का प्रभाव और महत्व दूसरा ही है गुरु दीक्षा का भी
विज्ञान है इस संस्कार के माध्यम से गुरु अपनी
की चिनगारी शिष्य के हृदय में स्थापित
करता है तो [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूनथूकने पर तीन-तीन तोला गुलकन्द सुबह शाम खावे
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Thursday the 15th February 1973.

रा॰ माघ २६ शकः १८९४ ४ ।
गुरुवार १५ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰ १३ सं॰ २०२९
घ॰ २८।५२ पुनर्वसु ३।३५ र॰ उ॰ ६।३७ र॰ अ॰ ५।४८
फ॰ १३८० प्र॰ माह २८ बं॰ फाल्गुन ३ ने॰ ४ गते

प्रदोष १३ व्रत

के रूप में प्रस्फुटित होती है साधन पथ के पथिक के लिये यह प्रक्रिया आवश्यक मानी गई है॥

दीक्षा बिना न मोक्षस्यात् प्राणिनां शिव शासनात् सा च न स्याद् बिनाचार्य मित्याचार्य परम्परा ॥

उपासना शतैनापि यो विना नैव सिद्ध्यति। तां दीक्षा माश्रयेद् यत्नात् श्रीगुरोर्मन्त्रसिद्धये

शिव जी के आवेश के कारण दीक्षा के बिना कि को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता आचार्य परम्परा के विरुद्ध दीक्षा भी सफल नहीं होती अनेकों प्रकार की उपासनायें हैं पर बिना दीक्षा के कोई सफल नहीं होती गुरु दीक्षा के द्वारा ही मोक्ष प्राप्त होता है ॥

चौ॰ - जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू ॥

जो लोग गुरु के चरण कमलों के अनुरागी हैं वे लोक में (लौकिक) भी और वेद मे (पारमार्थिक दृष्टि से भी बड़े भागी होते हैं पर आप (गुरु) का ऐसा स्नेह है, उस भरत के भाग्य को कह सकता है। अयोध्याकाण्ड में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान पके पर गाजर के स्वरसमें मिश्री मिला पिलावे
(सिंह का चन्द्र ५९।०) सोना चाँदी सम
Friday the 16th February 1973.
रा॰ माघ २७ शकः १८९४ ४ [illegible]
शुक्रवार १६ फरवरी सन् १९७३ माघ शु॰१४ सं॰२०२९
घ॰ २४।४८ पुष्य ५८।११ र॰ उ॰ ६।३६ . र॰ अ॰ ५।४८
फ॰ १३८० प्र॰ माह २९ बं॰ फाल्गुन ४ ने॰ ५ गते

चैत की पूर्णिमा १५

दिव्यज्ञानं यतो दद्यात्कुर्यात्पापस्य संक्षयम् ।
तस्माद्दीक्षेति सा प्रोक्ता मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः ॥
दीक्षा मूलं जपं सर्वं दीक्षा मूलं परं तपः ।
दीक्षामाश्रित्य निवसेद्यत्र कुत्राश्रमे वसन् ॥
देवि दीक्षा विहीनस्य न सिद्धिर्न च सद्गतिः ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत् ॥

जिससे दिव्यज्ञान प्राप्त होता है और पापोंका क्षय होता है इसलिये उसे दीक्षा कहते हैं जप का मूल दीक्षा है तप का मूल किसी भी आश्रम मे रहे दीक्षा ले कर रहे हे पारवती दीक्षा हीन को न सिद्धि मिलती है न सदगति इसलिये प्रयत्न पूर्वक दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये ॥

ते नराः पशवो लोके किं तेषां जीवने फलम् ।
यैर्न लब्धा हरेर्दीक्षा नार्चितो वा जनार्दनः ॥
—स्कन्द पुराण मे

वे मनुष्य पशु तुल्य हैं उनके जीवन में क्या लाभ [illegible] दीक्षा लेकर भगवान की उपासना नहीं की ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेहोशी पर छींक करावे रोगन काहू सीने पर मले
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Saturday the 17th February 1973.

रा० माघ २८ शकः १८९४   ४ ۱۳۹۳ محرم ۱۳ شنبه
शनिवार १७ फरवरी सन् १९७३ माघ शु० १५ सं० २०२९
घ० २१।३६ मघा ५८।३   र० उ० ६।३५   र० अ० ५।४९
फ० १३८०   प्र० माह ३०   बं० फाल्गुन ५   ने० ६ गते

स्नानदान की माघी पूर्णिमा, गुरुरविदास जयन्ती

दीक्षाग्नि दग्ध कर्मा सौ पाशाद्विच्छिन्न बन्धनः
गतस्तस्य कर्म बन्धो निर्जीवश्च शिवो भवेत्
— कुलार्णव में

दीक्षा की अग्नि में कर्म जल जाने से बन्धन कट जाते हैं और जीव शिवत्व को प्राप्त कर लेता है।

दीयते परमं ज्ञानं क्षीयते पाप पद्धतिः।
तेन दीक्षोच्यते मंत्रो स्वागमार्थ वलावलात्॥
— लघु कल्प सत्र में

जिससे परम ज्ञान दिया जाय और पाप प्रकृया नष्ट हो उसे शास्त्रों मे दीक्षा कहा गया है।

दिव्यं ज्ञानं यतो दद्यात् कुर्यात् पापक्षयं ततः।
तस्माद्दीक्षेति सा प्रोक्ता सर्व तंत्रस्य संमता॥
— विश्वसार मे

जिससे दिव्य ज्ञान दिया जाय और पाप क्षय हों उसे दीक्षा कहते हैं।

ददाति दिव्यं भावञ्चेत् क्षिणुयात
तेन दीक्षेति विख्याता मुनीभिः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५८

पाण्डुरोग पर अण्डी का तेल पिलावे
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Sunday the 18th February 1973.

रा॰ माघे २९ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۳ محرم ۱۴ ایک شنبہ
रविवार १८ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ॰ १ सं॰ २०२९
घ॰ ११।२८ पू॰ फा॰ २८।१५ र॰ उ॰ ६।३५ र॰ अ॰ ५।४९
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन १ वं॰ फाल्गुन ६ ने॰ ७ गते

जिसके द्वारा दिव्य भाव दिया जाय और पाप शृङ्खला टूटे उसे मुनियों ने दीक्षा कहा है।

रसेन्द्रेण यथा विद्धमयः सुवर्णतां व्रजेत्।
दीक्षा विद्धस्तथैवात्मा शिवत्वं लभते प्रिये॥

जिस प्रकार रसायन विधि से साधारण धातु स्वर्ण बन जाती है उसी प्रकार दीक्षा विधान से साधारण आत्मा भी शिवत्व को प्राप्त करती है।

अनीश्वरस्य मर्त्यस्य नास्ति त्राता यथा भुवि।
तथा दीक्षा विहीनस्य नेह स्वामी परत्र च॥
— दत्तात्रेय यामल

दीक्षा हीन मनुष्य का इस लोक और परलोक में कहीं कल्याण नहीं।

जिस प्रकार कछुवा अपने बच्चों का ध्यान मात्र से पोषण करता है उसी प्रकार गुरु भी अपनी मनः स्थिति से शिष्य की मनः स्थिति का पोषण करता है इसे वेध दीक्षा कहते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यास पर सौंफ का अर्क पिलावे
(कन्या का चन्द्र १४|३६) सोना चाँदी सस्ता
Monday the 19th February 1973.
रा० माघ ३० शकः १८९४ ४ ।٣١٣ محرم ١٥ دوشنبه
सोमवार १९ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ० २ सं० २०२९
घ० १८|२१ उ० फा० २९|४० र० उ० ६|३४ र० अ० ५|५०
फ० १३८० प्र० फग्गन २ बं० फाल्गुन ७ ने० ८ गते

(रामायण की बात) अरण्य काण्ड

दो० - विनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥
अत्रि मुनि ने इस प्रकार विनती कर के भगवान के और फिर सिर नवा कर हाथ जोड़ कर कहा हे नाथ मेरी बुद्धि आपके चरण कमलों को कभी न छोड़े ॥
चौ० — अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥
रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई। आसिष देइ निकट बैठाई॥
फिर परम शीलवती और विनम्र श्री सीताजी (अत्रिजी की पत्नी) अनुसुयाजी के चरण पकड़ कर उन से मिलीं ऋषि पत्नी के मन बड़ा सुख हुआ उन्होंने आशिष देकर सीता जी को पास बैठा ॥ दिब्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए ॥
कह रिषि बधू सरस मृदु बानी। नारि धर्म कछु ब्याज बखानी॥
और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र और आभूषण पहनाये जो नित्य नये निर्मल और सुहावने बने रहते हैं फिर ऋषि पत्नी उनके बहाने मधुर और कोमल बाणी से स्त्रियों के कुछ धर्म बखान करने लगीं ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी। मित प्रद सब सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि भर्ता बयदेही। अधम सो नारि जो ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैजे की प्यास पर सौंफ का काढ़ा पिलावे
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 20th February 1973.

रा॰ फाल्गुन १ शकः १८९४ ۱۳۹۳ محرم ۱۵ [illegible]
मंगलवार २० फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ. ३ सं. २०२९
घ॰ १८।५२ हस्त ६०।० र॰ उ॰ ६।३३ र॰ अ॰ ५।५१
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन ३ बं॰ फाल्गुन ८ ने॰ ९ गते

संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत

हे राजकुमारी, सुनिये, माता, पिता, भाई सभी हित करने वाले हैं परन्तु ये सब एक सीमा तक ही सुख देने वाले हैं परन्तु हे जानकी पति तो मोक्षरूप असीम सुख देने वाला है वह स्त्री अधम है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती ॥

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी ॥
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥३

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री – इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन ॥

ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥४

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा ॥

ऐसे भी पति का अपमान करने से स्त्री यमपुर मे भाँति भाँति के दुख पाती हैं शरीर वचन और मन से पति के चरणों मे प्रेम करना स्त्री के लिये बस यह एक ही धर्म है एक [illegible]त है और एक ही नियम है ॥५

[illegible]तिब्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान संत सब कहहीं ॥
[illegible] स बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

42

हाँथीपैरकी ऐंठनपर तारपीनका तेल और शराब मालिशकरे
(तुला का चन्द्र २४।२१) सोना चाँदी सम
Wednesday the 21st February 1973.
रा॰ फाल्गुन २ शकः १८९४ ४ ۱۳۱۳ محرم IV شنبه چهار
बुधवार २१ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ.४ खं.२०२९
घ. २०।२५ हस्त २।२४ र॰ उ. ६।२२ र॰ अ. ६।५१
फ. १ १० प्र. फग्गन ४ बं. फाल्गुन ९ ने. १० गते

जगत में चार प्रकार की पतिव्रताएँ हैं। वेद, पुराण और संत सब ऐसा कहते हैं कि उत्तम श्रेणी की पतिव्रता के मन में भाव बसा रहता है कि जगत में मेरे पति को छोड़कर दूसरा पुरुष स्वप्न में भी नहीं है ॥

मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ॥ धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ॥ मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराये पति को कैसे देखती है, जैसे वह अपना सगा भाई पिता या पुत्र हो (अर्थात् समान अवस्था वाले को वह भाई के रूप में देखती है बड़े को पिता के रूप में और छोटे को पुत्र के रूप में देखती है। जो धर्म को विचार कर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है वह निकिष्ट (निम्न श्रेणी की स्त्री है) ऐसा वेद कहते हैं ॥

बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई ॥ पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई ॥ और जो स्त्री मौका न मिलने से या भयवश पतिव्रता बनी रहती है, जगत में उसे अधम स्त्री जानना पति को धोखा देने वाली जो स्त्री पराये पति से रति करती है वह तो सौ कल्प

ऐंठन पर सरसों का तेल और अफीम गर्म कर लगावे
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 22nd February 1973.
रा॰ फाल्गुन ३ शकः १८९४ ४. ١٣٩٣ محرم ١٨ پنجشنبه
गुरुवार २२ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ.५ सं.२०२९
घ॰ २३।२३ चित्रा ६।१८ र॰ उ॰ ६।३१ र॰ अ॰ ५।५२
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन ५ बं॰ फाल्गुन १० ने॰ ११ गते

छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख समुझत तेहि सम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई॥
क्षण भर के सुख के लिये जो सौ करोड़ (असंख्य) जन्मों के दुःख को नहीं समझती उसके समान दुष्टा कौन होगी जो स्त्री छल छोड़ कर पातिव्रत धर्म को ग्रहण करती है वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाइ तरुनाई॥
किन्तु जो पति के प्रतिकूल चलती है वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है, वहीं जवानी पाकर (भरी जवानी में) विधवा हो जाती है॥
सो॰— सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय॥
... जन्म से ही अपवित्र है, किन्तु पति की सेवा करके वह ... सहज ही शुभ गति प्राप्त कर लेती है (पातिब्रत धर्म ...) ... ही आज भी तुलसी जी भगवान को प्रिय हैं और ... उनका यश गाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

53

पेट के दर्द पर तारपीन का तेल पेट पर मले
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 23rd February 1973.

रा० फाल्गुन ४ शकः १८९४

शुक्रवार २३ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ.६ सं.२०२९
घ. २७।२४ स्वाती ११।१९ र. उ. ६।३१ र. अ. ५।५३
फ. १३८० प्र. फग्गन ६ बं. फाल्गुन ११ ने. १२ गते

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।
तोहि प्रान प्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥
हे सीता सुनो तुम्हारा तो नाम ही ले ले कर स्त्रियाँ पति
ब्रत धर्म का पालन करेंगी तुम्हें तो श्रीरामजी प्राणों के
समान प्रिय हैं यह (पतिब्रत धर्म की) कथा तो मैंने संसार
के हित के लिये कही है ॥.
चौ० – सुनि जानकीं परम सुख पावा। सादर तासु चरन सि
नावा ॥ तब मुनि सन कह कृपानिधाना। आयसु होइ जाउँ
बन आना ॥
जानकी जी ने सुनकर परम सुख पाया और आदर पूर्वक
उनके चरणों में सिर नवाया। तब कृपा के खान श्रीराम
ने मुनि से कहा आज्ञा हो तो अब दूसरे बन में जाऊँ ॥
(दूसरा प्रसंग) है अब:— उत्तर काण्ड
सो० – बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बि
बिनु ॥
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भ
बिनु ॥ ८९

गुरु के बिना कहीं ज्ञान हो सकता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैजे की बेहोशी में हाथ-पैर गरम करे
(वृश्चिक का चन्द्र ०।४४) सोना चाँदी तेज

Saturday the 24th February 1973.

रा॰ फाल्गुन ५ शक १८९४   ٤ ١٣٩٣ محرم ٢٠ شنبه

शनिवार २४ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ. ७ सं. २०२९

घ॰ ३२।१२ विशाखा १७।१२ र॰ उ. ६।३० र॰ अ. ५।५३

फ॰ १३८० प्र. फग्गन ७ बं. फाल्गुन १२ ने. १३ गते

कि श्री हरि की भक्ति के बिना क्या सुख मिल सकता है ॥

कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ॥

हे तात स्वाभिक सन्तोष के बिना क्या कोई शान्ति प्राप्त सकता है चाहे करोड़ों उपाय कर के पच पच मरिये फिर भी क्या कभी जल के बिना नाव चल सकती है ॥

— उत्तर काण्ड में

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई ॥

संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥२

गुरु के बिना कोई भव सागर नहि तर सकता है चाहे वह ब्रह्मा जी और शंकर जी के समान ही क्यों न हो गरुण जी ने कहा हे तात मुझे संदेह रूपी सर्प ने डस लिया था और (और साँप के डसने पर जैसे विष चढ़ने की लहरें आती हैं वैसे ही) बहुत सी कुतर्क रूपी दुःख देने वाली लहरें आ रहीं थीं ॥ R:— उत्तर काण्ड में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

24

श्री जानकी जयन्ती

उत्तरकाण्ड

दो॰ — बिनु बिस्वास भगति नहि तेहि बिनु द्रवहिं न
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु ।। ८९ ।।
बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती भक्ति के बिना श्रीराम
जी पिघलते नहीं और श्रीरामचन्द्र जी की कृपा के बिना
जीव स्वप्न में शान्ति नहीं पाता ।। ८९ ।। क

सो॰ — अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुन्दर सुखद।।
हे धीर बुद्धि ऐसा विचारकर सम्पूर्ण कुतर्कों को और सन्देहों
को छोड़कर करुणा की खान सुन्दर और सुख देने वाले श्रीरघु
बीर का भजन कीजिये ।। ८९ ।। ख।

|| आरण्य काण्ड ||

सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होंहि बिषय अनु
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहुताई ।।
शिवजी कहते हे हे पारवती - सुनो वे लोग अभागे है जो
भगवान को छोड़कर विषयों से अनुराग करते हैं फिर दोनें
भाई सीता जी को खोजते फिरते हैं खोजते हुए आगे बढ़े
वे वन की सघनता देखते जाते हैं ।।

संकुल लता बिटप घन कानन। बहु खग मृग तहँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह सघन वन लताओं और वृक्षों से भरा है उसमे बहुत से पक्षी, मृग, हाथी और सिंह रहते हैं श्रीरामजी ने रास्ते मे आते हुए कबंध राक्षस को मार डाला उसने अपने शाप की सारी बात कही ॥

दुरबासा मोहि दीन्हीं सापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा।
सुनु गंधर्ब कहउँ मै तोही। मोहि न सुहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥

वह बोला दुर्बासा जी ने मुझे शाप दिया था अब प्रभु के चरणों को देखने से वह पाप मिट गया। (श्रीरामजी ने कहा) हे गन्धर्व सुनो मै तुम्हे कहता हूँ ब्राह्मण कुल से द्रोह करनेवाला मुझे नहीं सुहाता ॥

दो॰ — मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव ॥३३

मन वचन और कर्म से कपट छोड़ कर जो भूदेव ब्राह्मणों की सेवा करता है मुझ समेत ब्रह्मा, शिव आदि सब देवता उसके बश मे हो जाते हैं ॥३३॥

चौ॰ — सापत ताड़त परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना ॥

शाप देता, मारता हुआ और कठोर बचन कहता हुआ भी ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलोदर में सिरस की छाल का काढ़ा दे
(धन का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Tuesday the 27th February 1973.

रा॰ फाल्गुन ८ शकः १८९४ ४ ।फ़ाग़ ...

मंगलवार २७ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ॰ १० सं॰ २०२९
घ॰ ४७।२२ मूल ३६।२२ र॰ उ॰ ६।२७ र॰ अ॰ ५।५५
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन १० बं॰ फाल्गुन १५ ने॰ १६ गते

और गुण गणों से युक्त और ज्ञान में निपुण भी शूद्र पूजनीय नहीं है ॥

कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा॥
रघुपति-चरन कमल सिरु नाई। गयउ गगन आपनि गति पाई॥

श्रीरामजी ने अपना धर्म भागवत धर्म कहकर समझा अपने चरणों मे प्रेम देखकर वह उन के मन को भाया तदनन्तर श्रीरघुनाथजी के चरण कमलों मे सिर नवाकर वह अपनी गति (गन्धर्व का स्वरूप) पाकर आकाश मे चला गया ॥

ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥
सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए॥

उदार श्रीरामजी उसे गति देकर शबरीजी के आश्रम मे पधा... शबरीजी ने श्रीरामचन्द्रजी को घर मे आये देखा तब मुनि मतंगजी के वचनो को याद कर के उनका मन प्रसन्न हो गया

सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर ...
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहरेपन में घोंघा तेल में जलाकर कान में टपकावे
(मकर का चन्द्र ५८।२२) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 28th February 1973.

रा॰ फाल्गुन ९ शकः १८९४ ४ چہار شنبہ ۲۵ محرم ۱۳۹۳

बुधवार २८ फरवरी सन् १९७३ फाल्गुन कृ. ११ सं. २०२९

घ. ५२।९ पू. षा. ४२।११ र. उ. ६।२६ र. अ. ५।५५

फ. १३८० प्र. फग्गन ११ बं. फाल्गुन १६ ने. १७ गते

विजया ११ एकादशी व्रत सबका

कमल सदृश नेत्र और विशाल भुजावाले सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर बनमाला धारण किये हुए सुन्दर साँवले और गोरे दोनो भाइयों के चरणों मे शबरीजी लिपट पड़ीं ॥

प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा॥
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुन्दर आसन बैठारे॥

वे प्रेम मे मग्न हो गई मुख से वचन नहीं निकलता बार बार चरण कमलों में सिर नवा रही है फिर उन्होंने जल लेकर आदर पूर्वक दोनो भाइयों के चरण धोये और फिर उन्हें सुन्दर आसनों में बैठाया ॥

दो॰— कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ॥
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥३५॥

उन्होंने अत्यन्त रसीले और स्वादिष्ट कन्द, मूल और फल लाकर श्रीरामजी को दिये प्रभु ने बार बार प्रशंसा करके उन्हें खाये प्रेम सहित खाया

पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी। प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी॥
[illegible] बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँखके दर्दपर घीक्वारका रस सोते समय आँखसें टपकावे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Thursday the 1st March 1973.

रा॰फाल्गुन १० शाक:१८९४ ४.।३।३ ربيع ۲٥ ذوالحجه
गुरुवार १ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन कृ॰ १२ सं.२०२९
घ॰ ४४।२२ उ. षा. ४६।५४ र॰ उ. ६।२५ र॰ अ॰ ६।५६
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन १२ वं॰ फाल्गुन १७ ने॰ १८ गते

फिर वे हाथ जोड़कर आगे खड़ी होगई प्रभु को देख कर उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया (उन्होंने कहा) मै किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ मै नीच जाति की और अत्यन्त मूढबुद्धि हूँ ॥

अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मै मति मंद अघारी ॥

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥

जो अधम से अधम है स्त्रियाँ उनमे भी अत्यन्त अधम हैं और उन मे भी हे पापनाशन मै मन्दबुद्धि हूँ श्री रघुनाथजी ने कहा - हे भामिनि मेरी बात सुन मै तो केवल एक भक्ति ही का सम्बन्ध मानता हूँ ॥

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥ भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई धन बल कुटुम्ब गुण और चतुरता इन सब के होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है जैसे जल हीन बादल (शोभाहीन) दिखाई पड़ता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिटकिरी गुलाबजल छोड़नेसे आँखका दर्द दूर हो
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 2nd March 1973.
रा॰फाल्गुन ११ शकः १८९४ ४ १३९३ صفر ٢٥ ١٣٩٣
शुक्रवार २ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन कृ. १३ सं.२०२९
घ. ५७।३२ श्रवण ५०।३२ र. उ. ६।२४ र. अ. ६।२६
फ. १३८० प्र. फग्गन १३ बं. फाल्गुन १८ ने. १९ गते

प्रदोष १३ व्रत

नौधा भगति (भक्ति) कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥
मैं तुम्हसे प्रबन्धवनी नवधा भक्ति कहता हूँ तू सावधान होकर सुन और मन मे धारण कर पहिली भक्ति है संतों का सत संग दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग मे प्रेम ॥
दोहा- गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ॥
तीसरी भक्ति है अभिमानरहित होकर गुरु के चरणकमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करे ॥
चौ॰ मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा। निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
मेरे (राम) मन्त्र का जाप और मुझ मे दृढ़ विश्वास यह पाँचवीं भक्ति है जो वेदों मे प्रसिद्ध है छठी भक्ति है इन्द्रियों का निग्रह शील अच्छा सुभाव या चरित्र बहुत कार्यों से वैराग्य और निरन्तर संत पुरुषों के धर्म (आचरण मे लगे रहना ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६१

पित्त विकार में करेले की पत्ती का रस पिलावे
(कुम्भ का चन्द्र २१।४३) सोना चाँदी तेज

Saturday the 3rd March 1973.

रा॰फाल्गुन १२ शकः १८९४ ४ ١٣٩٣ محرم ٢٧ شنبه
शनिवार ३ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन कृ. १४ सं.२०२९
घ॰ ५८।११ धनिष्ठा ५२।५५ र॰ उ. ६।२३ र॰ अ. ६।५७
फ. १३८० प्र. फग्गन १४ बं. फाल्गुन १९ ने. २० गते

महा शिवरात्रि १४ व्रत

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मो तें संत अधिक कर लेखा ॥
आठवँ जथा लाभ संतोषा। सपनेहुँ नहि देखइ परदोषा॥
सातवीं भक्ति है जगत भर को सम भाव से मुझमें ओत प्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाय उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना ॥

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
नवीं भक्ति है सरलता और सब के साथ कपट रहित बर्ताव करना हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना इन नवों में से जिनके एक भी होती है वह स्त्री पुरुष जड़ चेतन कोई भी हो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर पर खटमल मलना बहुत गुणकारी है
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Sunday, the 4th March, 1973.

रा॰फाल्गुन १३ शक:१८९४ ४ ۱۳۹۳ محرم ۲۸ ایک شنبہ
रविवार ४ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन कृ॰ ३०, सं॰२०२९
घ॰ ५७।४१ शतभिषा ५३।३८ र॰उ॰ ६।२२ र॰ अ॰ ६।२७
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन १९-बं॰ फाल्गुन २० ने॰ २१ गते

स्नानदान की अमावस्या ३०

सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥
हे भामिनी मुझे वही अत्यन्त प्रिय है फिर तुझमें तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है वही आज तेरे लिये सुलभ हो गई है
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी॥
मेरे दरसन का परम अनुपम फल यह है कि जीव अपने सहज स्वरूप को प्राप्त हो जाता है हे भामिनी। जानकी की कुछ खबर जानता हो तो बता॥
पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा॥
सबरी ने कहा – हे रघुनाथ जी आप पंपा नामक सरोवर को जाइये जहाँ आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी हे देव हे रघुवीर वह सब हाल बतावेगा हे धीरबुद्धि आप सब जानते हुए भी मुझसे पूछते हैं॥
... प्रभु पद सिर नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरकाण्ड

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान।
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान॥

बिना द्वैत बुद्धि के क्रोध कैसा और बिना अज्ञान के क्या द्वैत बुद्धि हो सकती है माया के वश रहने वाला परिछिन्न जड़ जीव क्या ईश्वर के समान हो सकता है॥

चौ॰ कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें। तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें॥
पर द्रोही की होहिं निसंका। कामी पुनि कि रहहिं अकलंका॥

सब का हित चाहने से क्या कभी दुःख हो सकता है जिसके पास पारसमणि है उसके पास क्या दरिद्रता रह सकती है दूसरे से द्रोह करने वाले क्या निर्भय हो सकते हैं और कामी क्या कलङ्क रहित (बेदाग) रह सकते हैं॥ बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें। कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हें॥ काहु सुमति कि खल सँग जामी। सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी॥ ब्राह्मण का बुरा करने से क्या वंश रह सकता है स्वरूप की पहिचान (आत्मज्ञान) होने पर क्या (आसक्ति पूर्वक) कर्म हो सकते हैं दुष्टों के संग से क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धुन्धमें गरम प्रत्थर पर सिरका डालकर आँख बन्दकर सेके

(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 6th March 1973.

रा॰फाल्गुन १५ शक:१८९४ ४ ।३१३ محرم ٣٠ ١٣٩٣

मंगलवार ६ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. २ सं.२०२९

घ. ५३।१ उ. भा. ५२।३७ र. उ. ६।२१ र. अ. ६।२९

फ १३८० प्र. फग्गन १७ बं. फाल्गुन २२ ने. २३ गते

२ रामकृष्ण जयन्ती काशी रहस्य —

ऋषियों ने पुन: विशेष रूपसे काशी माहात्म्य के विषय में जानने के लिये सूत जी से अनुरोध किया सूतजी ने मिथ्या संसार से छुटकारे का उपाय काशी को छोड़ और कोई नहीं इस विषय को लेकर एक प्राचीन कारिणी कथा कही मगध देश मे बहुत बार विवाद करने वाला ब्राह्मणों को वाद में जीतने वाला एक [illegible] नामक ब्राह्मण रहता था [illegible] विद्वता के बलपर बहुत से ब्राह्मणों का तिरस्कार कर [illegible] सिद्धान्तों द्वारा एक [illegible] ही मार्ग अपनाया था एक दिन किसी ब्राह्मण को वाद में हराकर उसका वाद प्रहार से तिरस्कार तक उसने कर डाला एक दिन उसने भूख के मारे बहुत अन्न खाया वह इन्द्रिय लोलुप के कारण [illegible] से पीड़ित होकर परलोक गत हुआ मरने के बाद ब्रह्मराक्षस हुआ और बहेड़े के वृक्ष पर रहने लगा तबसे उसका नाम विप्रद्रोह (विप्रद्रोही) ब्रह्मराक्षस नाम होगया [illegible] उसने अपनी प्रकृति न छोड़ी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूजन बढ़नेपर दरियाई नारियल और पान पीसकर लगावे
(मेष का चन्द्र ५०।३४) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 7th March 1973.

रा· फाल्गुन १६ शकः १८९४ ४ ।۱۳۹۳ محرم ۳ | [illegible]
बुधवार ७ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ३ सं. २०२९
घ. ४९।११ रेवती ५०।३४ र· उ. ६।२० र· अ. ५।५९
फ. १३८० प्र. फग्गन १८ बं. फाल्गुन २३ ने. २४ गते

काशीरहस्य

जोल मोल कर ब्राह्मणों को बुलाकर यह
निर्णय रखा जाता था एक बार कोई पथिक
ब्राह्मण उस मार्ग से आ गया ब्रह्मराक्षस ने
उससे पूछा कि कौन विद्या पढ़े हो क्या
शास्त्रार्थ कर सकते हो ब्राह्मण ने शास्त्रसम
त्र ब्रह्मराक्षस को देख कुछ सोचा और अपने
यात्रा प्रसङ्ग का वर्णन किया आगे काशी
जाने का विचार है यह भी बताया कि इस जी
वन में काशीवास लाभ कर फिर कोई भी मेरे
लिये प्राप्त करने योग्य इष्ट वस्तु न रहेगी
ब्रह्मराक्षस भी काशी जाने को लालायित
हो गया अपना प्रस्ताव ज्यों ही उसने ब्राह्म
ण यात्री के सामने रक्खा उसका अपने पा
पापों से छुटकारा हो गया और काशी की
महिमा से ब्रह्मराक्षस को साथ ले वह ब्राह्मण
आगे चला रास्ते में पथिक ब्राह्मण ने उससे
सारी पूर्व जीवनों की बातें पूछी तो ब्रह्मरा
क्षस ने आद्योपान्त वृत्तान्त कह सुनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानकी भनभनाहटपर ब्रान्डीमें अफीम मिलाकर टपकावे
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Thursday the 8th March 1973.
रा० फाल्गुन १७ शकः १८९४ ४ । ३१३ ... २
गुरुवार ८ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ४ सं. २०२९
घ. ४४।३० अश्विनी ४७।३७ र. उ. ६।१९ र. अ. ६।०
फ. १३८० प्र. फग्गन १९ बं. फाल्गुन २४ ने. २५ गते

काशी रहस्य वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत
और इस काशीनाम के सुनाने का श्रेय उसे
देते हुए अपने निस्तार का उपाय पूछा ब्राह्मण
ने कहा। कि काशी की एक रेणु से मलिन पापी
लोग शुद्ध हो जाते हैं तुम्हें इस बज्र लेप पाप से
छुटकारा देने को बहुत रेणुकणों से स्नान कराया
जावेगा शोण को पार करने पर उन्हें कहीं से आये
हुए पाशुपत मिले और उनके साथ भगवान्
शङ्कर की पृथ्वी की मूर्धन्यभूत काशी को
देखा पथिक उस ब्रह्मराक्षस को बाहर ही छोड़
आनन्दकानन में जाकर स्नान कर शङ्कर का
ध्यान एवं भक्ति से पूजन कर भस्म की ढेर लेकर
ब्रह्मराक्षस के पास आया उसे उस पांशु की
रज से नहलाया और शुद्ध कर काशी में प्रवेश
किया दोनों ने मणिकर्णिका में स्नान कर
भगवान् शिव का दर्शन व पूजन किया और
शिवभक्ति में मग्न दोनों ही काशी में रहने लगे
अब तो उस ब्रह्मराक्षस का शरीर दिव्य हो गया
और ... दोनों ही ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औटा हुआ पानी अत्यन्त गुणकारी है
(वृष का चन्द्र २८।६) सोना चाँदी महंगा
Friday the 9th March 1973.
रा० फाल्गुन १८ शकः १८९४
शुक्रवार ९ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ५ सं. २०२९
घ. ३१।१३ भरणी ४४।५ र. उ. ६।१८ र. अ. ६।०
फ १३८० प्र. फग्गन २०. बं. फाल्गुन २५ ने. २६ गते

काशी रहस्य

पाप के भय से कभी नहीं दोहराया जाता भगवती काशी की कृपा से वह पाप द्वैतमय हो गया सच्छास्त्र सज्जन सङ्गति सद्बुद्धि और सदाचार इन पाँचों को करने से मृत्यु का डर नहीं रहता बस उस ब्रह्मराक्षस का पाँचे मुक्त क्षेत्र में परम पद का साधन हो गया काशी वास से विद्या सच्ची ब्रह्म विद्या द्वारा अमृतत्व लाभ का सार्थक अधिकारी हो जाता है आत्माराम तपःपूत महान भाव भी इसीलिये काशी सेवन करते है ॥

(द्रव्य देनेवाले को दोष)
शुल्क मन्त्र श्वेत वस्त्र रत्नादि द्रव्यं तथा।
यो ददाति यतीनां तु दातारो नरकं व्रजेत् ॥
(यतिधर्म निर्णय)
अंगारे चैव कृष्णानि प्राकृतान्येव सद्वये।
अन्यानाद्य ... पूर्वं हि पाक दोषान्न मुच्यते ॥
यतिधर्म संग्रह से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँख के दाने में सिन्दूर अर्क गुलाब में मिलाकर लगावे
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Saturday the 10th March 1973.

रा॰ फाल्गुन १९ शाकः १८९४   ۴ صفر ۱۳۹۳ ہجری

शनिवार १० मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ६ सं. २०२९

घ. ३३/३२ कृत्तिका ४०/९ र. उ. ६/१७ र. अ. ६/०

फ. १३८० प्र. फग्गन २१ बं. फाल्गुन २६ ने. २७ गते

(संन्यास के नियम) शान्तिपर्व के अध्याय
[illegible] एक ही बार जाने का विधान २४५ मे
अश्वस्तनविधाता स्यान्मुनिर्भावसमाहितः ।
लघ्वाशी नियताहारः सकृदन्ननिषेविता ॥
अर्थ — वह दूसरे दिन को अन्न का संग्रह न करे ।
चित्तवृत्तियों को एकाग्र करके मौन भाव से
रहे । हल्का और नियमानुकूल भोजन करे तथा
दिन रात में केवल एक ही बार अन्न ग्रहण करे
शान्तिपर्व अ: २४५ मे

(परमार्थ पदावली मे)
भिक्षाशनं तदपि नीरस मेकवारं शय्या च भूः
परिजनो निज देह मात्रम् । वस्त्रं च जीर्ण शत
खण्ड मलीन कन्था हा हा तथापि विषयान्
परित्यजन्ति ॥

(भक्तमाल [illegible] मे)
कणं विचित्य [illegible] शाक [illegible] ।
[illegible] पञ्च [illegible] ॥४

७४

परवाल में बालों को उखाड़ अंजीर का दूध लगावे
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Sunday the 11th March 1973.

रा० फाल्गुन २० शकः १८९४ ४ ١٣٩٣ صفر ٥ یکشنبه
रविवार ११ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ७ सं. २०२९
घ. २७।३६ रोहिणी ३६।१ र. उ. ६।१६ र. अ. ६।
फ. १३८० प्र. फग्गन २२ बं. फाल्गुन २७ ने. २८ गते

संन्यासो [illegible]
(द्रव्यसंग्रह मन्त्र) [illegible]
[illegible] भिक्षुर्यस्य भिक्षो [illegible]
[illegible] द्रव्य संग्रह [illegible] ॥

(काशीरहस्य मे)

पार्वती ने भगवान शङ्कर जी से [illegible]
कामी, पापी, [illegible] के लिये
उद्धार का उपाय पूछा तो शङ्कर जी ने [illegible]
त पाप करनेवाले मनुष्यों के लिये उद्धार का
दूसरा प्रायश्चित्त बताया उन्हों ने [illegible]
तपस्वी, मुनियों [illegible] द्वारा [illegible]
के लिये अनुष्ठाय उद्धार का जो उपाय पूछ
गया वह कहा शंकर उनके निमित्त [illegible]
और स्तुति से प्रसन्न हो उसे अपना इष्ट मन्त्र
सुनाने को कहा [illegible] कि वह शिष्य को
मे रहकर भी सभी [illegible] गुणों से बुरी तरह [illegible]
गया है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंडी का दीपक जलाना मोतिझिरा को लाभकारी है
(मिथुन का चन्द्र ३।२७) सोना चाँदी महंगा
Monday the 12th March 1973.
रा• फाल्गुन २१ शकः १८९४ ४ ।۳۹۳ صفر ۷ دوشنبه
सोमवार १२ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ८ सं. २०२९
घ. २१।४० मृगशिरा ३१।२४ र. उ. ६।१२ र. अ. ६।१
फ. १३८० प्र. फग्गन २३ बं. फाल्गुन २८ ने. २९ गते

होलाष्टक (काशीरहस्यम्)

कोई सुधरने का मार्ग देख कर [illegible] मैंने इससे
बोलना भी बन्द कर दिया है इसे जब बाहर
निकल जाने को कहा गया था और श्राप देने की धमकी
भी दी गई तो वह विन्ध्य पर्वत की गुफा में
जाकर तप करने लगा वहीं तीन वर्ष तक तप कर
ने पर उस के मन को परितोष नहीं हुआ तो दावरी
शिखर भी गया वहाँ भी स्वच्छ जल प्रपात रूप के
फल का भक्षण मनः शान्ति न हुई फिर श्री शैल
पर स्कन्द की आराधना करने लगा। इसे वहाँ
अगस्त्य नामके ब्राह्मण के मुख से हा काशी।
हा काशी ऐसा काशी के विरह में आतुर स्वर से
पुकार सुनाई पड़ी अब उस काशी नाम के प्रभाव
से उसे अगस्त्य और स्कन्द दोनों का साक्षात्कार हुआ
और स्कन्द (कार्तिकेय) ने उस आगत काशी [illegible]
विरही ब्राह्मण की यथोचित [illegible]
र द्वारा प्रशंसित की उसके काशी प्रेम की प्रशंसा
की उससे कुशल प्रश्न किया और इधर आने
का प्रयोजन कोई कार्य के लिये पूछा अगस्त्य ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महुच का तेल मालिश करने से ज्वर नहीं आता
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Tuesday the 13th March 1973.

रा॰ फाल्गुन २२ शकः १८९४ ४ ।।।
मंगलवार १३ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ९ सं. २०२९
घ १३।२४ आर्द्रा २७।४८ र. उ. ६।१४ र. अ. ६।२
फ. १३८० प्र. फग्गन २४ बं. फाल्गुन २९ ने. ३० गते

काशीरहस्यम्

शीघ्र काशी प्राप्त करने के लिये आग्रह किया।
इस पर कार्तिकेय ने विघ्न बहुलता होने से
काशी दुर्लभ है उसको [illegible] पर उसे
साधु ही काशी प्राप्ति होती ऐसा कहा। आगे
कार्तिकेय ने कहा पुण्य शील व्यक्ति को का-
लाभ मिलता है काशी अन्तर्गृह प्रवेश के लिये
प्राणियों को मुक्ति दिलाने के लिये विश्वना-
थ भगवान ने प्रणव (ओंकार) का उपदेश है विश्वनाथ
अत्यन्त शरण दयालु हैं जिनकी कृपा से भूमण्ड-
ल पर काशी जैसा पुण्य क्षेत्र मोक्ष देने वाला विद्यमान
है अगस्त्य के पूछने पर स्कन्द ने काशी में स्थूल
सूक्ष्म किये गये पापों के निवारणार्थ उपाय
बताया भगवान शंकर ही जानते हैं इस पर [illegible]
[illegible] विश्वनाथ जी से प्रार्थना करने से [illegible]
को प्रसन्न हो अगस्त्य से अतीव गोप्य रहस्य
ज्ञान के बिना किसी व्यक्ति का प्रायश्चित कोई
अर्थ नहीं रखता काशी में देहाभिमानी भी व्यक्ति
किसी प्रकार रह नहीं सकता अतः काशी वास
प्रायश्चित है [illegible] काशी में किये गये पापों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफेद चन्दन घिसकर राहों पर लगावे
(कर्क का चन्द्र १०।२१) सोना चाँदी सस्ता
Wednesday the 14th March 1973.
रा॰ फाल्गुन २३ शकः १८९४ ४ ۱۳۹۳ ۱۰ ۸ صفر المظفر
बुधवार १४ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु॰ १० सं॰ २०२९
घ॰ १०।२७ पुनर्वसु २४।२९ र॰ उ॰ ६।१२ र॰ अ॰ ६।२
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन २५ बं॰ फाल्गुन ३० ने॰ १ गते

मीन का सूर्य ११।७, खरमास प्रारंभ (काशीरहस्यम्)

कोई प्रायश्चित्त नहीं उन्हें करने वालों को यातना भोगनी पड़ेगी परन्तु काशी के चारों ओर पंचकोशी से घिरा हुआ क्षेत्र की प्रदक्षिणा करे शिव के एतत्क्षेत्र से अधिष्ठित शिवलोक से यह सब पाप भी छूट जाते हैं पंचकोशी क्षेत्र की यात्रा अनन्त फलदायिनी है मनुष्य यात्रा अपने सारे जन्म भर काशी में रहकर प्रतिवर्ष विधि विधान से प्रदक्षिणा करे तो वह सब निष्पाप और जीवन मुक्त है धन्य है काशी की महिमा धन्य है काशीवासी और धन्य हैं उनके परीक्षण आदि सब [illegible] किया जाता है।
ऋषियों ने सूत जी से पूछा कि काशी में अनन्त तीर्थ हैं सो उनके जाने से तीर्थ क्षेत्र की प्रदक्षिणा करते हुए उनके दर्शन का लाभ लिया जावे तो कैसे है अन्य का जाना सो आवश्यक नहीं है तब सूत जी बोले कि सर्व प्रथम जीवन मुक्त में रहकर गङ्गा स्नान करे मध्याह्न में मणिकर्णिका आनन्द ले प्रातः फिर पञ्चनद में भक्ति पूर्वक स्नान करे फिर आदि केशव भगवान का स्थान जहाँ वरुणा भी गङ्गा जी से मिली हैं इसि सङ्गम भी इस प्रकार सङ्गपूर्ण है गङ्गा के किनारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोहा पर मिश्री और नमक का सुरमा लगावे
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Thursday the 15th March 1973.

रा॰ फाल्गुन २४ शकः १८९४ ४ [illegible]
गुरुवार १५ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. ११ सं. २०[illegible]
घ. ५।३५ पुष्य २१।३६ र॰ उ. ६।१२ र॰ अ. [illegible]
फ. १३८० प्र. फग्गन २६ बं. चैत्र १ ने. २ गं[illegible]

काशीरहस्यम् आमलकी ११ व्रत सबका, गोविन्द द्वादशी

अनन्त तीर्थ हैं उनमे सौ उत्तम हैं ऐसा का
सूकर, काशी, कांची, काली नरेश्वर
कालञ्जर एवं महाकाल सौ अरण्य और
जो नाम प्रसिद्ध है सप्तपुरी आदि के विषय
पूछने पर भगवान के और देवों के चतुर्थ
बारह लाख को उद्घाटित कर सप्तपुरियों को
क्या बताया श्रेष्ठ और प्रदेश में द्वारिका
विन्दु माधव जी स्थित विष्णु कांची
मे उत्तर वरुणा तक मथुरा सोमेश्वर समीप
वायुकोण मे अयोध्या आदि के गमन कर
हरि हर, वृद्धकाल से [illegible] और कृत्तिवासेश्वर
तक महाकाल पुरी [illegible] जन सम्
पुरियों को धाम सह वर्षा शरद हेमन्त वसन्त
ग्रीष्म हेमन्त और शिशिर की अवस्था में
यात्रा करना सब फल देता है
नारायण के द्वारा सप्तपुरी का माहात्म्य [illegible]
कहे से किसी [illegible] ऐसा पद [illegible]
[illegible] भगवान ने पांचों [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिल्ली पर ऊँट कटेरे को पानी में पीसकर पट्टी चढ़ावे
(सिंह का चन्द्र १९।२४) सोना चाँदी सम

Friday the 16th March 1973.

रा॰ फाल्गुन २५ शकः १८९४ ४ ।۳۱۳ ۱۳۹۰ ۱۰ ...
शुक्रवार १६ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु॰ १२ सं॰ २०२९
घ॰ ३३।४६ श्लेषा १९।२४ र॰ उ॰ ६।११ र॰ अ॰ ६।३
फ॰ १३८० प्र॰ फग्गन २७ वं॰ चैत्र २ ने॰ ३ गते

प्रदोष १२ व्रत (काशीरहस्यम्)

एवं ऋषियों के बीच हुये संम्वाद का विवरण दिया और कहा कि सबने एक स्वर से जीवों की मुक्ति पापक्षय तथा दुःख निवृत्ति और सुख प्राप्ति का उपाय जानना चाहा तब भगवान विष्णु ने सप्तपुरियों को मोक्षदायक कहा और ब्रह्माजी ने उनके इस सूत्रभूत कथन का बृहत् भाष्य किया और काशीपुरी में इन देवों के साथ जो विलक्षण योग होकर यहाँ अमित प्रभाव दिखाता है उसका विस्तार से निरूपण किया शंकरजी द्वारा सन्देह दूर होने पर देवगण का स्वस्थान जाने का वर्णन और सारी स्थिति जानने पर शौनकजी ने प्रमुख तीर्थों के विषय में जब जानना चाहा तो सूतजी ने अविमुक्तेश्वर, विश्वेश्वर, मणिकर्णीश्वर, केदारेश, कृत्तिवास वृद्धकालेश्वर, चंद्रेश्वर, ब्रह्मेश्वर त्रिलोचनेश्वर, ओंकारेश्वर, कपर्दीश्वर, धर्मेश्वर और अविमुक्त क्षेत्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की और संसार ताप से तापित जनता के उद्धार का एक मात्र उपाय काशी सेवन बताया धन्य काशी क्षेत्र और धन्य वहाँ के देव दर्शन लाभ का महात्म्य। ऋषियों ने सूतजी को उन से अविमुक्त क्षेत्र का अलौकिक महात्म्य सुनकर अनेकानेक साधुवाद दिये और ... ... के लिये अनुरोध किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७४

कलई चूना सूखा बाँधने से फोड़ा बैठ जाता है
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Saturday the 17th March 1973.

रा• फाल्गुन २६ शकः १८९४ ४ ।ﻣ।ﻣ ﻫ١٣٩٣ ।। ﺻﻔﺮ

शनिवार १७ मार्च सन् १९७३ फाल्गुन शु. १४ सं. २०२९

घ. ५५।१२ मघा १८।२३ र• उ. ६।१० र• अ. ६।४

फ. १३८० प्र. फग्गन २८ बं. चैत्र ३ ने. ४ गते

(काशीरहस्यम्)

सूत ने कुरुक्षेत्र में बैठे हुये वैशम्पायन आदि ऋषियों और व्यासजी के बीच हुए महत्त्वपूर्ण वार्तालाप का विवरण दिया एकबार महा तेजस्वी स्वायम्भुव मनु अपने तपः जीवन से दुःखित होकर ब्रह्माजी के यहाँ गये और ब्रह्मा के पूछने पर अपने वैराग्य कारण कहा कि काशी में सब पापों से छुटकारा होने का सुलभ उपाय है तो मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दीजिये जैसे ही काशी विषयक प्रश्न का उत्तर देने को ब्रह्माजी सोच रहे थे कि उसी समय पापी पुरुषों का शासन करने वाला यम भी सेवा में उपस्थित हुआ। उसने कहा भारत में पापी लोगों के पापों का छुटकारा काशी नामोच्चारणं, उसके दर्शन एवं वहां पर स्नान करने मात्र से हो जाता है इसलिये पापियों के शासन की अब कोई आवश्यकता नहीं रही। ब्रह्माजी ने दोनों को साथ लेकर भगवान् शङ्कर के पास जाकर उनकी स्तुतिपूर्वक अपने आने का कारण कहा ~~पूछा गया तो उन्होंने~~ ब्रह्मा बोले हे भगवन् आपको, जब आदिसर्ग में अपनी प्रसन्नता या भक्तों पर कृपा करने का कारण पूछा गया तो आपने बताया था कि वेद मार्ग से चलने वाले व्यक्तियों के ऊपर आप की पूर्ण ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(काशी रहस्यम्)

और ऐसे पर न हीं प्रश्न तो एक नया ही रूप सामने आया है
वह यह है कि जो लोग काशी का नाम लेते हैं या उसे प्रणाम
करते हैं वहाँ जाकर पूजा, जप, स्नान, परिक्रमा और
स्तुति करते हैं वे सभी आप के धाम में स्थान प्राप्त
करते हैं इसमें पापाचारी या धर्माचारी दोनों ही समा
न हैं (भगवान ने उन्हें अविमुक्त क्षेत्र के परम दुर्लभ से दुर्लभ
तत्त्व को समझाते हुए ब्रह्म एकमेव सत्य सनातन हैं माया
शबलित ब्रह्म के द्वारा यह सम्पूर्ण ब्रह्मादि स्तम्ब पर्यन्त
स्थावर जङ्गमात्मक सृष्टि प्रकाशित है माया के प्रभाव
से सम्पूर्ण ~~ब्रह्मादि~~ प्राणिमात्र चित्त विक्षेपयुक्त रहते हैं
केवल यह अविमुक्त क्षेत्र शुद्ध ब्रह्म का निवास स्थान है
इस में शिव, विष्णु का वास है अतः यहाँ रहने वाले को
परम गति उसी प्रकार होती है जैसे गङ्गा में मिले हुए सुरा
प्रवाह का रूप भी गङ्गाकार हो जाता है जैसे पारस को
छूने मात्र से ही लोहा सुवर्णमय हो जाता है वैसे ही काशी
में सम्पूर्ण प्राणी ब्रह्मरूप हो जाते हैं ब्रह्मा के यह
पूछने पर कि ए कहीं निरङ्कुश, यानि तमोगुण से परे
है उनका परिच्छेदयुक्त होकर काशी में वास किस
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८०

पेट के दर्द में सिरस के पत्त मिर्च पीसकर लगावे

(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 19th March 1973.

रा० फाल्गुन २८ शक: १८९४ دوشنبه ١٣ صفر ١٣٩٣ ھ

सोमवार १९ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. १ सं. २०२९

घ. ५५।३८ उ. फा १९।२८ र. उ. ६।८ र. अ. ६।५

फ. १३८० प्र. चेतर १ बं. चैत्र ५ ने. ६ गते

(काशी रहस्यम्) होली

महाँ मृत होने से रूप होने प्रकाशक है और उपाधि में से सूर्य एवं जीवों में अधिकृत भेद है यही बात इस अविमुक्त के विषय मे समझिये यहाँ ब्रह्म का सर्वतोभावेन प्रकाश है इसमें कोई भी शङ्का का स्थल नहीं बस आज से यही नियम राजाज्ञा रूप मे समझि जो काशी में स्मरण, पूजन, कीर्तन, स्नान आदि कर अपने आत्म शुद्धि के साधनों में प्रवित्त होता है वह कैसा भी हो ब्रह्मलोक का शिव और विष्णु लोक तक का अधिकारी होजाता है ब्रह्म अभिन्न स्वरूपा काशी सभी के ज्ञाता ज्ञात पापों का नाश कर देती है इस को विशेषरूप से बताने और पुष्टि करने के लिये शङ्कर जी, ब्रह्मा जी, स्वायम्भुव मनु और यमराज को साथ लेकर काशी पुरी में आये और उन्होंने प्रत्यक्ष अपनी आँखो से अविमुक्त क्षेत्र का चमत्कार देख और कृतार्थ होगये हरिहर क्षेत्र काशी में यह सब क्रियाकलाप एक अभूतपूर्व आदर्श है ॥ दूसरा प्रसंग देवासुरों के द्वारा समुद्र मन्थन के समय अमृत के निकलने पर स्त्री रूप मोहिनी वेषधारी भगवान विष्णु के द्वारा भूल से देव गण को पङ्क्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेट की सूजन पर हल्का जुलाब दे
(तुला का चन्द्र ५३।४६) सोना चाँदी सम
Tuesday the 20th March 1973.
रा॰ फाल्गुन २९ शकः १८९४ [illegible]
मंगलवार २० मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. २ सं. २०२९
घ. ५७।२० हस्त २१।५६ र॰ उ. ६।७ र॰ अ. ६।१५
फ. १३८० प्र. चेतर २ वं. चैत्र ६ ने. ७ गते

(काशी रहस्यम्)

बैठे हुए राहु को जैसे ही अमृत दे दिया और पुष्पवान् सूर्य एवं चन्द्रमा ने इसकी सूचना विष्णु को दी तो उन्होंने सुदर्शन चक्र से राहु का सिर अलग कर दिया अमृत पान से वह ग्रह विष्णु द्वारा अमर किया गया अब दानवों ने राहु को सुरा पान में लिये आमन्त्रण दिया परन्तु राहु ने कहा अमृत पान के बाद सुरा पान कौन मूर्ख करेगा दैत्यों ने राहु की हँसी की परन्तु जब दैत्य राहु ने ही अमृत की विशेषता जान कर सुरा से मुँह मोड़ लिया तो फिर अन्य लोग जो विचार शील हैं वेद शास्त्रोक्त मार्ग द्वारा काशी के रहस्य में तत्त्व को जानते हैं उन्हें क्यों अन्य विषयों में रुचि होगी यह बतलाया दुर्दैव से वे फिर भी विषयों के अन्धकूप में पड़ें तो इससे बड़ा आश्चर्य और क्या होगा ॥

काशी सेवन और गङ्गा स्नान सदा ही धर्म में प्रवृत्ति करने वाले और मोक्ष के द्वार हैं काशी और गङ्गा इनमें अभेद सम्बन्ध है मोक्ष के साधन को काशी वास करते हुए इसे कभी नहीं भूलना चाहिये यह सब विश्वनाथ की कृपा से पुण्यात्मा व्यक्ति को ही सुलभ होता है पुण्य कीर्ति नामक [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेट के दर्द पर अन्जीर सिरका में पीस लेप करे
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 21st March 1973.

रा॰ फाल्गुन ३० शकः १८९४ ।۳٦۳ فصلی 10 صفر १९७३ ...
बुधवार २१ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. ३ सं. २०२९
घ. ६०।० चित्रा २४।३७ र॰ उ. ६।६ र॰ अ. ६।६
फ. १३८० प्र. चेतर ३ बं. चैत्र ७ ने. ८ गते

काशी रहस्य

भक्त और पुराण सत्कथा को सुनने मे अपना जीवन बिताता था गङ्गा को वह ऐहलौकिक और पारलौकिक पुरुषार्थ का साधन मानता सभी कुछ वह गङ्गा जल से ही सम्पादन करता इस सुन्दर आचरण से गङ्गा ने प्रसन्न हो उससे वर मागने को कहा। राजा ने कहा यदि आप वर देना चाहती हो तो मुझे ऐसा अवसर दीजिये जिस से प्रतिदिन अमृतरूपिणी आप का दर्शन कर सकूँ गङ्गा ने उसे काशी आकर दर्शन करने को ही सदा अपना अमृतस्वरूप दर्शन बताया और काशी की महिमा विलक्षण बताई यद्यपि सर्वत्र विश्व मे मेरी व्यापकता है फिर भी यहाँ मेरा विशेष स्थान है काशी में सर्वात्मन विष्णु, शिव, पार्वती, सूर्य, ब्रह्मा और सभी देवगण ऋषि और योगी विराजते हैं परब्रह्म की सुख की इच्छा ही उनके निवास का कारण है अतः मनुष्य जितेन्द्रिय यश और विषयों से विमुख हो यहाँ रहे उसे अवश्य ही अमृतत्त्व का लाभ होता है अतः तुम्हें हे राजन् काशी पुरी में जाकर निवास करना इष्ट है इस राज्य को अपने पुत्र का अभिषेक कर उसे सौंप दो यहाँ से प्रयत्न से और काशी क्षेत्र की ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादी पर सोडा सज्जी गुड़ में मिला कर खावे
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Thursday the 22nd March 1973.

रा॰ चैत्र १ शकः १८९५   ४ ।٣١٣ ۔ ١ا پنجشنبه

गुरुवार २२ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. ३ सं. २०२९

घ. ०।७ स्वाती ३०।२४ र॰ उ. ६।४ र॰ अ. ६।६

फ. १३८० प्र. चेतर ४ बं. चैत्र ८ ने. ९ गते

काशी रहस्य

संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, राष्ट्रीय शकः १८९५ प्रारम्भ स्नान से ही मनुष्य पापों से छूट जाता है यह कह गङ्गा अन्तर्ध्यान कर गई और राजा ने गङ्गा की आज्ञानुसार पुत्र को राज्य पर अभिषिक्त कर अपनी रानी के साथ काशी वास करने के लिये गणेश को स्मरण कर काशी की ओर प्रस्थान किया वहाँ जाकर विष्णुपदी गङ्गा मे स्नान कर विष्णु भगवान शङ्कर और पार्वती अन्नपूर्णा के दर्शन कर अपना सर्वस्व योग्य ब्रह्म निष्ठ ब्राह्मणों को दान कर दिया और अपनी स्त्री के साथ काशी मे श्रद्धा पूर्वक त्रिकाल स्नान करने लगा। तब कुछ समय के बाद भगवती गङ्गा ने आकर दर्शन दिया और वर मागने को कहा राजा ने काशी वास की परमो[पयो]गिता बतलाकर उसकी कृपा से सम्पूर्ण देव गण के दर्शनों का सामीप्य लाभ एवं जीवन उद्धार के सम्पूर्ण साधनों का अवसर प्राप्ति पर भगवती गङ्गा को अपनी ओर से कृतज्ञता ज्ञापन की तब राजा ने काशी के प्रभाव को जानने के लिये सानुरोध गङ्गा से प्रार्थना की गङ्गा ने इसे सर्वेश्वर की चित्रकला बतलाया यह विष्णु द्वारा पञ्चक्रोश क्षेत्र में स्थित है [जि]तेन्द्रिय और धर्म निष्ठ व्यक्तियों को यह शाश्वत पद [क]ी प्राप्ति कराती है प्रभाव सुनने की इच्छा से जब जाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८२

कै पर मक्खी का गू शहद के साथ चटावे
(वृश्चिक का चन्द्र १९।४१) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 23rd March 1973.
रा० चैत्र २ शकः १८९५ ४ ।৳७।৳ ... IV ...
शुक्रवार २३ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. ४ सं. २०२९
घ. ४।६ विशाखा ३६।७ र. उ. ६।३ र. अ. ६।७
फ. १३८० प्र. चेतर ९ वं. चैत्र ९ ने. १० गते

काशी रहस्य
सम्पूर्ण देव देवियों ऋषि मुनि सिद्ध योगेश्वरों का निवास बताकर इसकी अपरिमेय स्तुति गाई और यहाँ सभी ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति के साधनों सुलभता बतलाई। संसार में प्रिय इष्ट वस्तु कभी शोक करके चित्त को व्याकुल करने वाली एवं अधिक संख्या में नहीं होती वह तो एक है स्वयं परमात्मा वह सच्छास्त्र के प्रत्यक्ष मूर्ति गुरु द्वारा ही प्राप्त हो सकता है गुरु की प्रशंसा राजा के यह पूछने पर कि हे मातः गुरु कैसा होना चाहिये तो गङ्गा ने उत्तर दिया कि विष्णुभक्त, शिवपरायण वेदके अर्थ रूपवाले स्वयं भक्त और भक्ति को देनेवाले शान्तिमूर्ति पुरुष ही गुरु होने योग्य हैं भक्त ही संसार के पापों का नाश करते हैं भक्त साक्षात् तीर्थ रूप हैं भक्तों में अनन्त छिपी हैं अतः भक्तों की सेवा में सदैव लगा रहे उन्हें कभी छोड़े व्यासजी यह सब कहते हुये गङ्गा के अन्तर्धान होने की बात कही और राजा के भूरि भाग्य की बारम्बार प्रशंसा की इस काशी कथा के सुनने और सुनाने का महात्म्य इसके सुनने मात्र से परमगति (मोक्ष) की प्राप्ति होती सूतजी ने कहा भगवान् व्यास यह सब बताकर [illegible] काशी और गङ्गा के [illegible] चले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिनौलेकी गिरि और चमेलीके तेलसे गलेका दर्द जाता है

(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Saturday the 24th March 1973.

रा॰ चैत्र ३ शकः १८९५ [illegible]

शनिवार २४ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ॰ ५ सं॰ २०२९

घ॰ ८।५० अनुराधा ४२।२७ र॰ उ॰ ६।२ र॰ अ॰ ६।७

फ॰ १३८० प्र॰ चेतर ६ बं॰ चैत्र १० ने॰ ११ गते

विप्र ब्राह्मणोंके नौ गुण परम पवित्र यह हैं

सम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता ये नौ गुण हैं ॥

दोहा

बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम।

बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम ॥

चौपाई

देव एकु गुनु धनुष हमारे। नौ गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु बिप्र अपराध हमारे ॥

इस चौपाई का मतलब ऊपर लिखा है ।। नीचे भी है

अर्थ— हे देव हमारे तो एक ही गुण धनुष है और आप के परम पवित्र (शम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता - ये) नौ गुण हैं हम तो सब प्रकार से आपसे हारे हैं हे बिप्र हमारे अपराधों को क्षमा कीजिये

दोहा बालकाण्ड

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।

बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ अर्थ—

[illegible] वाणी और उसके अर्थ तथा जल और जलकी लहर के समान कहने में [illegible] अलग हैं परन्तु वास्तव में अभिन्न (एक) हैं उन श्रीसीता [illegible] की मैं वन्दना करता हूँ जिन्हें दीन दुखी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(काशी रहस्य) —

ऋषियों ने भगवान का ज्योतिर्लिङ्ग पञ्चकोशात्मक काशी इस ज्योतिलिङ्ग के नाम से क्यों प्रसिद्ध हुआ। पूछने पर भगवान महादेव के द्वारा इसी प्रकार से पार्वती के प्रश्न के उत्तर का जो विवरण काशी के विवरण काशी के विषय मे दिया गया सूतजी ने प्रतिपा[दन] किया। यह ज्योतिर्लिङ्ग शिवशक्त्यात्मक है यह वेदों में प्रसिद्ध है, योनि कारणबीज शक्ति और ज्योतिर्लिङ्ग शिव है प्रकृति एवं पुरुष के ये रूप पुराणादि मे प्रसिद्ध शिव ही परमात्मा ब्रह्म, शिव, हरि व परब्रह्म नाम से शक्ति माया अविद्या, विद्या आदि नाम से प्रसिद्ध है और इसे सदा शिव की जो कोई चैतन्यरूपणी शक्ति है वही काशी नाम से प्रसिद्ध है कोई इसे अविमुक्त पञ्चकोश क्षेत्र, रुद्रावास, विष्णुवास और वाराणसी नाम कहते हैं परन्तु यह एक ही पूर्ण सच्चिदानन्द सदाशि[व] के सनातन ज्योतिर्लिङ्ग का वाच्यक है भगवान श[िव] ने एक बार अपनी शक्ति चैतन्यरूपणी को अलग [किया] दिया वही काशी नाम से विख्यात हुई और [शङ्कर] के वरदान से क्षेत्रस्वरूपिणी अधिष्ठात्री देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८८

(काशीरहस्यम्) ३८

पश्चिमाभिमुख गङ्गाकेशव की सन्निधि मे यह अवि-मुक्तेश्वर का स्मरण करती हुई सनातन काल से उसी रूप मे प्रकाशित है जो द्वादशी को प्रातः उठकर स्नान कर काशी का पूजन करता है उसकी बुद्धि पाप मे नहीं लगती और चतुर्विध सृष्टि के प्राणी काशी मे ही मुक्ति प्राप्त करते हैं इस में कोई सन्देह नहीं फिर भगवान् शङ्कर ने काशी माहात्म्य को कहते हुये एक बार कलिकाल मे धर्मवार्त्ता से रहित प्राणी वर्ग को काशीक्षेत्र में वास करने मात्र से उद्धार देख देवगण विश्वनाथ के पास आये और उन्होंने सर्वपापनाशिनी इस पुरी के विरुद्ध शिकायत की तब ब्रह्माजी के प्रश्न पर भगवान शङ्कर ने कहा कि इस विलक्षण पुरी की क्षमता ही ऐसी है कि समस्त पापों को अपने शरण मे आये हुए व्यक्ति से छुड़ा देती है। इस को प्रत्यक्ष देखने के लिये सब देवगण शङ्कर के साथ वहाँ आये तो दानवदलनी [illegible] शक्तिवाली मूर्तिरूपा काशी भी वहाँ आई और शङ्कर [illegible] अपने अभियोग करने लगी कि भगवन् आप [illegible] की रक्षा के लिये अब तक तो सबका निस्तार [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हौंठ के सूजन पर ईसबगोल सिरका में पकाकर लगावे

(धन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Tuesday the 27th March 1973.

रा. चैत्र ६ शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ صفر ۲۱ ...

मंगलवार २७ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. ८ सं. २०२९

घ. २४।१४ पू. षा. ६०।० र. उ. ५।२९ र. अ. ६।८

फ. १३८० प्र. चेतर ९ बं. चैत्र १३ ने. १४ गते

श्री शीतलाष्टमी ८ (काशी रहस्यम्)

आ जाने से मैं आप की शरण में हूँ अब आप जो उचि
सो करें इस पर भगवान शङ्कर ने सब नियम काशी
सुनाये और कहा कि काशी के बाहर किये पाप
का निस्तार काशी सेवन से हो जाता है परन्तु
काशी में किये गये पापों का ~~निस्तार~~ तो यातना
नाश सकता है अतः इस नूतन नियम से सनय दे
वा स्थित ठीक है -ऋषियों द्वारा यह पूछने पर
काशी में कलि का प्रवेश है ही नहीं तो यहाँ पर
वाले प्राणियों को कलि क्यों बाधा देता है इसके
सूतजी बोले कि कलि का प्रवेश काशी में न
होता बल्कि प्राणी के पूर्वजन्मार्जित संस्कारों
बस से उनमें वासना का उदय होता है शुभवास
में पुण्य जनक होती है और अशुभ वासनायें प
जनक वस अशुद्ध बुद्धि ही कलि नाम से कहा
है इससे दूर रहने वाले व्यक्ति की शुद्ध निर्मल
बुद्धि होकर भगवती काशी की कृपा से विश्वे
एवं भगवती के चरणों में दृढ़ निष्ठा होकर
परम पद की प्राप्ति होती है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(काशी पुरी की परिक्रमा के बास स्थान के नाम)

पहले दिन रात में सब यात्री (कर्दमेश्वर) सान्निध्य में ठहरे
दूसरे दिन (भीमचण्डी) में विश्राम किया
तीसरे दिन विशेष संयम से चलते २ महादेव, बासदेव, शिव आदि
नामों का कीर्तन क्षेत्र के दक्षिण भाग से परिक्रमण करते हुए
(देहली विनायक) पर विश्राम हुआ
चौथे दिन (रामेश्वर) मे विश्राम हुआ सोमनाथ को
पूजन कर पाँचवें रोज (वृषध्वज मे जाकर विधिपूर्वक
कपिला के जल में स्नान करे देवगण की पूजा करे फिर
बिश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा के दर्शन करे ॥
५ दिन तक पञ्चकोश प्रदक्षिणा से और स्कन्द के
प्रसाद से सब का उद्धार होता है ॥

तीन मासों मे क्षेत्र परिक्रमा — क्षेत्र परिक्रमा का महत्व
माघ, फागुन, चैत एवं वैसाख पूर्व (दिन ढुण्ढिराज)
की पूजन कर दूसरे दिन गंगा मे स्नान कर विश्वनाथ को
... करे फिर भगवती अन्नपूर्णा की यात्रार्थ पूजा करे
... ण्डुपिका में जाकर प्रजातनाक कास्य नमः पापों के
... लिये सम्पूर्ण पञ्चकोशस्थित ५६ देवगण
... [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँतों से खून गिरे तो फिटकरी के फूल से मञ्जन करे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Thursday the 29th March 1973.

रा. चैत्र ८ शकः १८९५ ४ ।३१३ १९० २३ [illegible]
गुरुवार २९ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. १० सं. २०२९
घ. ३१।२९ उ. षा. ६।१६ र. उ. ५।५७ र. अ. ६।९
फ. १३८० प्र. चेतर ११ बं. चैत्र १५ ने. १६ गते

(काशीरहस्य)

नानाअवतारों के देवगण और शक्ति सहित, योगिनी को पूजा करता हुआ क्षेत्र प्रदक्षिणा करूँगा यह संकल्प फिर ढुण्ढिराज गणेश को मौन हो कर प्रणाम कर पं[illegible] कोष की यात्रा निर्विघ्न करने के लिये उनसे आज्ञा मा[illegible] मोद, प्रमोद, सुमुख, दुर्मुख एवं गणनायक को प्र[illegible] करे षोडसोपचार से पूजन कर और दण्डपाणि की वि[illegible] करे मणिकर्णिका मे जाकर स्नान करे मणि[illegible] महादेव का पूजन करे वहीं तट पर गङ्गा, केशव ललिता, जरासन्धेश्वर, सोमनाथ, दुर्लभेश्वर शूलटङ्केश्वर आदि वाराह, दशाश्वमेध के लिङ्ग का वन्दन अर्चन करे फिर सर्वेश्वर, केदार, हनुमदीश, सङ्गमेश, लोलार्क, [illegible] अर्क, गणाध्यक्ष को आदि सङ्गम पर पूजन[illegible] क्षेत्र प्रदक्षिणा मे कोई भी स्थान बिना दर्शन[illegible] न छोड़े दुर्गाकुण्ड मे स्नान करे दुर्गविनायक का[illegible] करे वहाँ पर भगवती श्री दुर्गा की पूजा कर कर्दमेश[illegible] करे आदि मे कर्दमतीर्थ मे स्नान करे और सो[illegible] विरूपाक्ष और नीलकण्ठ अर्चना करे वहाँ [illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सींखिया के जहर पर कपूर खिलाकर घी दूध पिलावे
(कुम्भ का चन्द्र ४१।२७) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 30th March 1973.
रा॰ चैत्र ९ शकः १८९५
शुक्रवार ३० मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ. ११ सं. २०२९
घ. ३३।२१ श्रवण १०।७ र. उ. ५।२६ र. अ. ६।९
फ. १३८० प्र. चेतर १२ बं. चैत्र १६ ने. १७ गते
(काशीरहस्य) पापमोचनी एकादशी ११ व्रत सबका

वृहरणों को भोजन करावे श्राद्धादि करने से तीन ऋणों से (देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण) से उऋण हो जावे प्रातः स्नान कर कर्दमेश्वर का पूजन करे पुनर्दर्शन के लिये आजू ले जावे ... नागनाथ, चामुण्डा, मोक्षेस और करुणेश्वर, वीरभद्र विकट नाम को दुर्गा, उन्मत्त भैरव और कालकूट का पूजन वन्दन करे विमला नाम को दुर्गा को प्रणाम कर महादेव के यहाँ दर्शनार्थ जावे नंदिकेश, भृंगिरीटि गणप्रिय यक्षेश, विमलेश्वर, मोक्षद और अमृतेश्वर का पूजन करे गन्धर्वसागर पार कर भीमचण्डी मे जावे पूजन कर फिर यहाँ भीम देवस्थान मे जावे पूजन कर फिर देहलीस के यहाँ जावे विघ्नों के समूह के नास करने वाले है ५६ विघ्ननाथों को पूजे उदण्ड गणपति उत्कलेश्वर की पूजन करते हुये रुद्राणी भगवती तपो यम का दर्शन लाभ करता हुआ रामेश्वर मे जावे वहाँ वरुणा मे स्नान कर सफेद तिल बिल्वपत्र से पूजन करे यहीं पर नाना दिशाओं मे विराजमान सोमनाथ का पूजन करे भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, शत्रुघ्नेश्वर, द्यावा, भूमीश्वर ... आकर यहाँ से ... जावे ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेटके कीड़े खुरासानी अजवाइन और घीक्वारसे नष्ट होतेहैं

(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 31st March 1973.

रा॰ चैत्र १० शकः १८९५   ४ [illegible]

शनिवार ३१ मार्च सन् १९७३ चैत्र कृ॰ १२ सं॰ २०२९

घ॰ ३४।९ धनिष्ठा १२।४७ र॰ उ॰ ५।५५ र॰ अ॰ ६।१०

फ॰ १३८० प्र॰ चेतर १२ बं॰ चैत्र १७ ने॰ १८ गते

(काशीरहस्य)

प्रातः स्नान कर फिर भगवान रामेश्वर का पूजन क[illegible]
बरुणा पार कर सम्पूर्ण देवस्थानों का दर्शन कर[illegible]
हुआ देवसङ्केश्वर मे दान आदि देकर क्षेत्र के बीच
विराजे हुये पाशपाणि तथा विनायक का पूजन [illegible]
क्षेत्र के बाहर पृथ्वीश्वर को पूजे स्वर्ग भूमि और [illegible]
भूमि क्षेत्र के मध्य जो स्थित है यह कपिल क्षेत्र है [illegible]
वृषभध्वज का पूजन करे यहाँ तर्पण श्राद्ध [illegible]
न बहुत फल का देने वाला है यहा भी १ रात्री रुकना
ता है फिर ज्वाला नृसिंह मे जाने और कपिल [illegible]
की प्रदक्षिणा कर बरुणा को पार कर संङ्गम मे स्नान
कर आदि केसव भगवान का पूजन करे वहाँ जो
खिरवैरत्त हुआ चले इसके बाद प्रह्लादेश्वर, त्रिलो[illegible]
बिन्दुमाधव, पञ्चगङ्गा, गभस्तीश्वर और मंगलागौरी [illegible]
पूजन करे फिर वशिष्ठ, वामदेव, पर्वतेश्वर [illegible]
विनायक और सप्तावरण गणनायक सब [illegible]
का पूजन कर मणिकर्णिका मे स्नान कर [illegible]
विश्वनाथ के यहाँ आकर पंचोपचार से [illegible]
यहाँ मुक्ति मण्डप मे आकर विष्णु दण्ड[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कण्ठ बैठने पर गरम-गरम हलुवा कंठ में बाँधे
(मीन का चन्द्र ५९।१२) सोना चाँदी सस्ता
Sunday the 1st April 1973.
रा• चैत्र ११ शाकः १८९५ ४ ١٣٩٣ صفر ٢٧ ایک شنبہ
रविवार १ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र कृ. १३ सं. २०२९
घ. ३३।२८ शतभिषा १४।८ र. उ. ५।५४ र. अ. ६।१०
फ. १३८० प्र. चेतर १४ बं. चैत्र १८ ने. १९ गते

प्रदोष व्रत १३, मास शिवरात्रि, वारुणी पर्व

ढुंढि भैरव, आदित्य तथा पाँच गणपों का फिर पूजन
करे और यथायोग शक्ति पञ्चकोश प्रदक्षिणा की
साङ्गता सिद्धि के लिये क्षमा याजनापूर्वक दान देवे
घर जाकर ब्राह्मण भोजन करावे पञ्चकोशी प्रदक्षणा का
महात्म्य और श्रद्धा द्वारा है यात्रा काल का निर्णय जब
श्रद्धा का उदय हो तभी पञ्चकोशी यात्रा करे ॥

॥ ग्रहण मे निषेध ॥
सूर्येन्दु ग्रहणे यावत्ताव त्कुर्याज्ज पादिकम् ।
॥ विकर्म मना ॥
निद्रायाँ जायते रोगो मूत्रे दारिद्र्य माप्नुयात् ।
पुरीषे कृमियोनिः स्यान्मैथुने ग्राम सूकरः ॥
अभ्यङ्गे च भवेत् कुष्ठी भोजने स्यादधोगतिः ।
अञ्जने च भवेत्सर्पो भेधो च नरकं व्रजेत् ॥
(ग्रहण मे मुक्ति स्नान न करने मे दोष)
सुतो यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहण सूतके ।
सस्तका भवेत्तावद्यावत्स्याद् परो ग्रहः ॥
मुहू .... निर्णय सिन्धु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमक हींग की मालिश से पेट का दर्द जाता है

(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Monday the 2nd April 1973.

रा० चैत्र १२ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ صفر ٢٧ دوشنبه

सोमवार २ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र कृ. १४ सं. २०२९

घ. ३१।३२ पू. भा. १४।२८ र. उ. ५।२३ र. अ. ६।१०

फ. १३८० प्र. चेतर १९ बं. चैत्र १९ ने. २० गते

क्षत्रि आदि सन्यास धारण

क्षत्रियो वापि वैश्यो वा सन्न्यसेतु यदा तदा ।
अनावृत्तिं ब्रजेदेष दण्डादि परिवर्जित: ॥

पृष्ठ १८ यतिधर्म निरणय पूर्वाभा

(काशी मे मुक्ति का प्रमाण)

अन्यानि मुक्ति क्षेत्राणि काशी प्राप्ति कराणिहि ।
काशी प्राप्य विमुच्यन्ते नान्यथा तीर्थ कोटिभि: ।
स्कन्द पुराण मे

(परमहंस की क्रिया पना)

अत्र परमहंसस्य स्थले समाधिर्मुख्य: जले मध्ये
परमहंस प्रपूरयेत् इति वचनात् अत्र परमहंसं प्रकीकरणे
एकोदिष्टं जलं पिण्ड माशौच्चं प्रेत सत्क्रियाम् ।
न कुर्यात् पार्विका दन्यपुत्री भूताय भिक्षावे ॥
धर्म सिन्धु पृष्ठ २०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पित्त विकार में करेले के पानी का रस पिलावे
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Tuesday the 3rd April 1973.

रा॰ चैत्र १३ शकः १८९५ ४ [illegible] २८ [illegible]
मंगलवार ३ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र कृ. ३० सं. २०२९
घ. २८।३२ उ. भा. १३।१७ र. उ. ५।५२ र. अ. ६।११
फ. १३८० प्र. चेतर १६ बं. चैत्र २० ने. २१ गते

स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या ३०

(पादुका न पहिरना—मारकण्डे पुराण मे)
पादुका रोहणं चैव तिलै श्चापि सतर्पणम् ।
न जीवत्पितृकः कुर्यात्तथ्यं कृष्णोत्तरीयकम् ॥
पिता के जीते खड़ाऊँ पहिरना दोष मार्कण्डे पु. ३५
~~तिलों से तर्पण करना दोष~~
~~काली धोती पहिन कर ओढना मना है~~

(काश्यां मृत्युप्रमाणम्)
सूच्यग्रमात्र मपि नास्ति ममास्पदेऽस्मिन् ।
स्थानं सुरेश्वरि मृतस्य न यत्र मोक्षः ॥
भूमौ जले वियति वाशुचि मेध्यतो वा ।
सर्पाग्नि दस्यु पशु भिर्निहतस्य जन्तोः ॥
गंगायां मरणं चैदृढ भक्तिश्च केशवे ।
ब्रह्म विद्या प्रबोधश्च नाल्पस्य तपसः फलम् ॥
(काशी मोक्ष निर्णय मे)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६२

प्रमेह पर कचनार की कली खाँड़में मिलाकर सेवन करे
(मेष का चन्द्र ११।२३) सोना चाँदी तेज

Wednesday the 4th April 1973.

रा॰ चैत्र १४ शकः १८९५ ४ ربیع الاول ۱۳۹۳ ھ

बुधवार ४ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु॰ १ सं॰ २०३०
घ॰ २४।३६ रेवती ११।२३ र॰ उ॰ ५।२१ र॰ अ॰ ६।१२
फ॰ १३८० म॰ चेतर १७ बं॰ चैत्र २१ ने॰ २२ गते

नवरात्रारम्भ, संवत्२०३० प्रारम्भ, आखिरी चहार शम्बा

(खड़े२ पैर धुलाना धोना मना है)
ऊर्ध्व जङ्घेषु विप्रेष प्रक्षाल्यं चरण द्वयम्
तावच्चाण्डाल रूपेण यावद् गंगा न मज्जति ॥

(चातुर मास व्रतम्)
चत्वार्येतानि नित्यानि चतुराश्रम वासिनाम्
प्रथमे मासि कर्तव्यं नित्यं शाकव्रतं नरः ॥
द्वितीये मासि कर्तव्यं दधिव्रत मनुत्तमम् ।
पयोव्रतं तृतीयेतु चतुर्थेऽपि निशामय ॥
द्विदलं बहुबीजं च वृन्ताकं च विवर्जयेत ।
नित्यान्येतानि विप्रेंद्र व्रतान्याहुर्मनीषिण: ॥
जम्बीरं राजमाषञ्च मूलकं रक्तमूलकम् ।
कूष्माण्डं चेक्षु दण्डं च चातुर्मास्ये त्यजेद् बुध: ॥
निर्णयसिन्धु मे पृ॰

काशी मे ध्यानसे कैवल्य
अस्य क्षेत्रस्य माहात्म्याद् भक्त्या च मम भाविनः ।
जैगीषव्य गुहाश्रेष्ठा योगीनां स्थान मिष्ट ...
ध्यायन्तस्तत्र मां नित्यं योगाग्नि दीप्यते ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काली मिर्च राई और नमक की धूनी ज्वरको दूर करती है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Thursday the 5th April 1973.

रा॰ चैत्र १५ शकः १८९५ ४ । ۱۳۱۳ [illegible] । [illegible]
गुरुवार ५ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. २ सं. २०३०
घ. १९।४८ अश्विनी ८।३८ र. उ. ५।५० र. अ. ६।१२
फ. १३८० प्र. चेतर १८ वं. चैत्र २२ ने. २३ गते

(संसर्ग दोष कलि मे नहीं)
संसर्ग दोषः पापेष्विति कलिवर्ज्येषु वचनात्
कृते कृते संभाष्य पतति त्रेतायाँ स्पर्शने नतु ।
द्वापरे त्वन्नमादाय कलौ पतति कर्मणा ॥ धर्मसिन्धु

(कलि मे कार्य विधि)
(कलियुगे) गीता गङ्गा तथा विष्णुः कपिलाऽश्वत्थसेवनम्
एकादशी व्रतं चैव सप्तमं न कलौ युगे ॥ धर्मसिन्धु में
न स्यात्कलि कृतो दोषः काश्यां निवसतामपि ।

(गुरु ईश्वर सदा वंदनीय है)
यद्वदायुरुक्तायो वंद्या वेदान्तो गुरुरीश्वरः ।
आदौ ज्ञाने प्रसिद्ध्यर्थं कृतघ्नत्वापनुत्तये ॥

(उदार प्रशंसा) -
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
[illegible] - यह हमारा है यह अन्य का है ऐसे विचार संकीर्ण
[illegible] लोगों के होते हैं उदार हृदय वाले पुरुष के लिये सारे
[illegible] अपने ही अपने हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६५

कड़वी लौकीका रस टपकानेसे नाककी बदबू जाती है

(वृष का चन्द्र १९।१४) सोना चाँदी तेज

Friday the 6th April 1973.

रा॰ चैत्र १६ शक: १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الاول ٢ ...

शुक्रवार ६ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. ३ सं. २०३०

घ. १४।२६ भरणी ५।१२ र. उ. ५।४९ र. अ. ६।१२

फ. १३८० प्र. चेतर १९ बं. चैत्र २३ ने. २४ गते

गौरी तृतीया ३

बोधयन्ति न याचन्ते भिक्षाचारा गृहे गृहे
दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृशम्
अर्थ — भिक्षुक लोग भिक्षा नहीं मांगते प्रत्युत घर घर घूमकर शिक्षा देते हैं कि दो-दो नहीं देनेवाले की यही गति होती है।
दोहा — भिक्षुक मांगहिं नाहिं, घर घर सिख समुझि लेहु मन माहिं, बिन दीन्हें यही दशा॥
कर्णस्त्वचं शिविर्मांसं जीवं जीमूतवाहनः।
ददौ दधीचिरस्थीनि नास्त्यदेयं महात्मनाम्॥
अर्थ — कर्णने कवच, शिविने मांस, जीमूतवाहनने जीव (प्राण) और दधीचने हड्डी दे दिया उदार पुरुषों को कुछ भी अदेय नहीं है. अर्थात अवसर पर सर्वस्व दे देते हैं॥

(संतोष-प्रशंसा)

अकृत्वा परसंतापमगत्वा खलनम्रताम्।
अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद् बहु॥
अर्थ — दूसरे को कष्ट न देकर दुष्ट से नम्र न हो... मार्ग का उल्लङ्घन न कर ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४ श्री (लक्ष्मी) पञ्चमी ५

एक संतोषी ईश्वर भक्त धनधान्यपूर्ण व्यक्ति से कहता है कि हम लोग तो वल्कल वसन से ही संतोष किये हैं और आप लक्ष्मी से युक्त होकर सुखी हैं इस प्रकार दोनों सुखी हैं पर निर्विशेष (ब्रह्म) ही मेरे पक्ष में है अवशेष है वही दरिद्र है जिसे अधिक तृष्णा है मन के संतुष्ट होने पर कौन दरिद्र है कौन धनी अर्थात् सब तुल्य हैं ॥

संतोषामृत तृप्तानां यत्सुख शान्त चेतसाम् ।
कुतस्तद्धनलुब्धाना मितश्चेतश्च धावताम् ॥

संतोषरूपी अमृत से तृप्त हुए पुरुष को जो सुख होता है वह इधर उधर दौड़ने वाले लोभी को कहाँ मिल सकता है अर्थात् नहीं मिल सकता ॥

पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा शाकं पचति यद् गृहे ।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥

युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्न का उत्तर दिया है कि हे वारिचर पाँचवें वा छठवें दिन यदि शाक भी भोजन के लिये मिले और ऋणी न हो प्रवासी न हो तो वही सुखी है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चकवड़ के पत्ती का रस ज्वर को दूर करता है
(मिथुन का चन्द्र २५।११) सोना चाँदी महंगा

Sunday the 8th April 1973.

रा० चैत्र १८ शकः १८९५ ४ ।३१३ربیع الاول ۱۳۹۳ ، ۴ ایک شنبہ
रविवार ८ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. ५ सं. २०३०
घ. ३१।५३ मृगशिरा ५३।६ र. उ. ५।४७ र. अ. ६।१३
फ. १३८० प्र. चेतर २१ बं. चैत्र २५ नें. २६ गते

सूर्य षष्ठी ६

दिवसस्याष्टमे भागे शाकं पचति स्वगृहे ।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥
सर्वत्र संपदस्तस्य संतुष्टं यस्य मानसम् ।
उपानद् गूढपादस्य ननु चर्मावृतेव भूः ॥

जिसका मन संतुष्ट है उसके लिए सब जगह संपत्ति ही है
उपानह धारण किये हुए पुरुष के लिये सारी भूमि
चर्मवेष्ठित ही प्रतीत होती है अर्थात् संतोषी के लिए
सब जगह सुख ही सुख है ॥—

गोधन, गजधन बाजिधन सब हि रतनधन खान।
जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान॥

(संसर्ग-प्रसंसा)

अश्वः शास्त्रं शस्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च ।
पुरुष विशेषं प्राप्ता भवन्ति योग्या अयोग्याश्च ॥

अश्व, शास्त्र, शस्त्र, वीणा, वाणी, नर, नारी, ये सब योग्य
गुणी पुरुष के संग से योग्य अयोग्य के साथ पड़ने
से अयोग्य होजाते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओली आरम्भ (जैन)

(धन प्रशंसा)

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥

जिस व्यक्ति के पास धन है वही कुलीन, पण्डित, प्रसिद्ध, गुणी वक्ता एवं दर्शन योग्य है - सभी गुण सोने (धन) का आश्रय लेते हैं अर्थात् कैसा भी अवगुणी हो तो भी धनी का ही आदर होता है ।

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।
यस्यार्थाः स पुमान् लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥
धनी व्यक्ति के ही मित्र अधिक होते हैं भाई बन्धु भी उसे अधिक मिलते हैं वही पुरुष प्रसिद्ध गिना जाता है वही पण्डित भी कहा जाता है ।

(दुर्जन निन्दा)

खलानां कण्टकानाञ्च द्विविधैव प्रतिक्रिया ।
उपानन्मुखभङ्गो वा दूरतो वा विसर्जनम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जली तम्बाकू का मंजन दाँतों को साफ करता है
(कर्क का चन्द्र ३१।२५) सोना चाँदी सम
Tuesday the 10th April 1973.
रा॰ चैत्र २० शकः १८९५ ४ [illegible]
मंगलवार १० अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. ८ सं. २०३०
घ. ४५।१७ पुनर्वसु ४५।३१ र॰ उ. ५।४५ र॰ अ. ६।१४
फ. १३८० प्र. चेतर २३ बं. चैत्र २७ ने. २८ गते
अन्नपूर्णा परिक्रमा, महाष्टमी, मेला बहुफोर्ट (ज. क.)

खल (दुष्ट) और काँटे की दो ही दवा है। जूते से मुख भंग कर दे या दूर से जाय अर्थात् उसका त्याग कर दे।

(कृपण निन्दा)

मृत्युः शरीरगोप्तारं वसुरक्षं वसुन्धरा ।
दुश्चारिणी च हसति स्वपतिं पुत्रवत्सलम् ॥

शरीर पोषक को मृत्यु: धन (धरती मे) गड़ने वाले को धरती पुत्र को प्यार करने वाले पति को व्यभिचारिणी हँसती है अर्थात् उपर्युक्त तीनो व्यक्ति निन्दा के ही पात्र

कृपणेन समो दाता न भूतो न भविष्यति ।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति ॥

कंजूस के समान दाता न हुआ न होगा क्यों कि सारे धन को बिना स्पर्श किये दूसरे के लिये छोड़ जाता है अपने सुख के लिए तथा दानादि मे तनिक भी व्यय नहीं करता है।

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।

दान, भोग, नाश यही तीन गति धन की होती है जो दान नहीं देता, भोग नहीं लेता, उसके धन की तीसरी गति [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्भालूकी दतुवन करनेसे दाँतोंका खून बन्द होता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Wednesday the 11th April 1973.

रा० चैत्र २१ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ ربیع الاول, ۷ چہارشنبہ

बुधवार ११ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. ९ सं. २०३०

घ. ४०|३९ पुष्य ४२|२८ र. उ. ५|४४ र. अ. ६|१५

फ. १३८० प्र. चेतर २४ बं. चैत्र २८ नै. २९ गते

श्रीरामनवमी व्रत

(याचक निन्दा)

(*पाठान्तर) तृणं लघु तृणात्तूलं तूलादपि च याचकः। वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयिष्यति॥

*तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि हि याचकः।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं प्रार्थयिष्यति॥

तृण से हल्की रुई, रुई से हल्का भिक्षुक होता है तो वायु उसे क्यों नहीं उड़ा देता। कहते हैं कि वायु याचक के निकट जाता ही नहीं इसलिए कि हमसे भी यह माँग बैठेगा।

(दरिद्र निन्दा)

अर्था न सन्ति न च मुञ्चति मां दुराशा,
त्यागान्न संकुचति दुर्ललितं मनो मे।
याञ्चा च लाघवकरी स्ववधे च पापं,
प्राणाः स्वयं व्रजत किं प्रविलम्बितेन॥

मेरे पास धन नहीं रहा, दुराशा नहीं छोड़ती, त्याग से मेरा दुःखी मन संकोच भी नहीं करता, मांगने में लघुता आती है आत्म हत्या करने में पाप है अतः हे प्राण। तू शीघ्र ही क्यों नहीं निकल जाता। अर्थात् अब मुझे मर जाना ही अच्छा है।

(मूर्ख निन्दा)

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

जिसे स्वयं विचार नहीं उसे शास्त्रोपदेश क्या करेगा।
[illegible] दर्पण [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्भालू की दतुवन करने से पायरिया जाता है
(सिंह का चन्द्र ४०।१७) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 12th April 1973.
रा० चैत्र २२ शकः १८९५ ४ ۱۳۱۳ ربیع الاول, ۸ پنجشنبه
गुरुवार १२ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. १० सं. २०३०
घ. ३६।१६ श्लेषा ४०।१७ र. उ. ५।४३ र. अ. ६।१५
फ. १३८० प्र. चेतर २५ बं. चैत्र २९ ने. ३० गते

मूर्ख व्यक्ति को उपदेश शान्ति न देकर क्रोध ही बढ़ाता है अर्थात् वह क्रोध करता है जैसे सर्प को दूध पिलाने से केवल विष ही बढ़ता है।

(तृष्णा निन्दा)

जीर्यन्ति जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः।
जीर्यतश्चक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते ॥

केश श्वेत हो गये दाँत भी टूट गये नेत्र तथा कर्ण भी पुराने हो गये अर्थात् न दिखाई पड़ता है न सुनाई देता है केवल तृष्णा ही बढ़ गई वृद्धावस्था में तृष्णा बढ़ जाती है।

(दैवाख्यानम्)

भाग्यवन्तं प्रसूयेथा मा शूरं मा च पण्डितम्।
शूराश्च कृतविद्याश्च वने सीदन्ति (मे सुताः) पाण्डु

कुन्ती ने द्रौपदी से कहा कि भाग्यवान पुत्र उत्पन्न करना चाहिये शूर पंडित नहीं ये हमारे पाण्डव (पाँचो पुत्र) वीर और पंडित भी हैं पर वन में दुःख भोग रहे हैं।

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं,
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँतों के गढ़ों में हींग भरना चाहिये
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 13th April 1973.

रा॰ चैत्र २३ शकः १८९५ ४ १३९३ ربیع الاول ۱
शुक्रवार १३ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. ११ सं. २०३०
घ. ३३।१ मघा ३८।५३ र. उ. ५।४२ र. अ. ६।१६
फ. १३८० प्र. चेतर २६ वं. चैत्र ३० ने. १ गते

पुत्रदा११ व्रत सबका, मेष(सतुआ) संक्रान्ति वैशाखी पंजाब

कृत प्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ॥
अरक्षित भी दैव रक्षित होने से रक्षित हो जाता है सुरक्षित होने पर भी दैव विपरीत होने से नष्ट हो जाता है वन में भी छोड़े जाने पर बालक दैवबल से बच जाता है प्रयत्न होने पर भी घर में नहीं बचता यदि दैव अनुकूल न हो तो।

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं,
गज-भुजङ्ग-विहंगमबन्धनम्।
मति मताञ्च विलोक्य दरिद्रतां,
विधिरहो बलवानिति मे मतिः॥

चन्द्रसूर्य्य को ग्रहण की पीड़ा सहनी पड़ती है हाथी सर्प पक्षी को भी बन्धन में आना पड़ता है तथा विद्वानों को धनहीन होना पड़ता है यह देखकर आश्चर्य में आकर कहना पड़ता है कि दैव ही बलवान है॥

सदाचारः

वेदपाठी, सौभाग्यवती स्त्री, अग्निहोत्री, गौ, धार्मिक पुरुष और नदी को प्रातः उठकर देखे तो आपत्ति से छूट जाता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०३

तुलसीका रस और शहद चाटनेसे गले का दर्द जाता है
(कन्या का चन्द्र २३।४८) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 14th April 1973.

रा० चैत्र २४ शकः १८९५ ४ شنبه ۱۰، ربیع الاول ۱۳۹۳
शनिवार १४ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. १२ सं. २०३०
घ. ३०।४८ पू. फा. ३८।३५ र० उ. ५।४१ र० अ. ६।१६
फ. १३८० प्र. चेतर २७ बं. वैशाख १ ने. २ गते

दमनकोत्सव १२, शनिप्रदोष १२ व्रत

पापी, विधवा, चाण्डाल, नग्न, नकटा और
अप्रिय (शत्रु) इन्हें प्रातःकाल देखे तो कलह हो।
प्रतष्ठम जुलाब, वमन, क्षौर कर्म, बुरा स्वप्न और
दुर्जन स्पर्श होने पर स्नान करना चाहिए रजस्व
ला, पतित से भाषण करने पर तथा विडाल मूस
के स्पर्श से निष्ठा मूतसर्ग के देखने से अपवित्र
वस्तु के देखने से आँसू गिरने झगड़ा होने पर
श्वास कास गली में जाने से अञ्जन लगाने से
छींक होने पर और नर्मालाप में आचमन करे
तब शुद्ध होता है यदि आचमन न कर सके तो सूर्य
को देखे अथवा हरा गोबर देखे तृण, गौ, गोबर
भूमि या दाहिना कर्ण स्पर्श करे।
देवाधिकारी म्लेच्छ और कर्म हीन ब्राह्मण को
देखे तो आचमन करे स्पर्श हो जाय तो सवस्त्र
स्नान करे तब शुद्ध होता है ॥

अजाश्वं मुखतो मेध्यं गावो मेध्यास्तु पृष्ठतः
ब्राह्मणाः पादतो मेध्याः स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बबूल की पत्ती सूँघने से चौथिया जाती है
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 15th April 1973.

रा.चैत्र २५ शाक:१८९५ ४ ایک شنبہ ۱۱ ربیع الاول ۱۳۹۳

रविवार १५ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. १३ सं. २०३०

घ. २९।४९ उ. फा. ३९।२९ र. इ. ५।४० र. अ. ६।१६

फ. १३८० प्र. चेतर २८ बं. वैशाख २ ने. ३ गते

महावीर जयन्ती १३ (जैन), अनङ्ग त्रयोदशी

अजा (बकरी) और अश्व का मुख पवित्र होता है गौ की पीठ ब्राह्मणों का पाद (पैर) और स्त्री का सर्वाङ्ग शुद्ध होता है ॥

नास्ति यज्ञः स्त्रियाः किञ्चिन्नव्रतं नोपवासकः ।
या तु भर्तरि शुश्रूषा तया स्वर्गं जयत्यसौ ॥

स्त्रियों को यज्ञ, व्रत, उपवास आदि नियम के पालन की आवश्यकता नहीं है । केवल पति सेवा से ही वे स्वर्ग जा सकती हैं ॥

जो स्त्री पति के दिवङ्गत होने पर नियम से रहती है वह मरने पर ब्रह्मचारी की तरह स्वर्ग को प्राप्त करती है जो स्त्री पति का अनुगमन करती वह मानव शरीर में साढे तीन करोड़ रोम होते हैं उतने वर्ष स्वर्ग में निवास करती है ॥

जैसे संपेरा सर्प को बिल से बाहर खींच लेता है वैसे ही [illegible] स्त्री अपने पातिव्रत्य धर्म के बल पर अपने पति का उद्धार कर स्वर्ग सुख भोगती है पृथक चिता पर जल कर शरीर त्याग करने वाली ब्राह्मणी स्वर्ग नहीं [illegible] पति के साथ सती [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसीकी मंजरीके साथ अदरख खानेसे खाँसी जाती है
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Monday the 16th April 1973.
रा॰ चैत्र २६ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربيع الاول ١٢
सोमवार १६ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु. १४ सं. २०३०
घ. ३०।७ हस्त ४१।३८ र॰ उ. ५।३९ र॰ अ. ६।१७
फ. १३८० प्र. चेतर २९ बं. वैशाख ३ ने. ४ गते

सर्वदेव दमनकोत्सव १४, बारावफात

उसे स्वर्ग मिलता है ।।

शुचिः भूमिगतं तोयं शुचिर्नारी पतिव्रता।
शुचिः क्षेमकरो राजा संतोषी ब्राह्मणः शुचिः
भूमिगत जल, पतिव्रता स्त्री, क्षेमकर (प्रजापालक)
राजा और संतोषी ब्राह्मण ये पवित्र होते हैं ।।

नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणां शकुनिः फलपातने।
वत्सोऽपि स्तनपाने स्यात् श्वा मृगग्रहणे शुचिः।।
रति काल में स्त्री का मुख, फल गिराने में पक्षी का
मुख, दूध पीने के समय बछड़े का मुख और मृगग्रहण
(शिकार) के समय कुत्ते का मुख शुद्ध रहता है ।।

नित्य मामल के लक्ष्मी नित्यं हरितगोमये।
नित्यं शङ्खे च पद्मे च नित्यं शुक्ले च वाससि ।।
आँवले में, ताजे गोबर में, शङ्ख में, कमल में और
शुक्ल वस्त्र में सर्वदा लक्ष्मी का वास रहता है ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबेरे कालीमिर्च खाकर पानी पीने से मिचली जाती है
(तुला का चन्द्र १३।२१) सोना चाँदी सम
Tuesday the 17th April 1973.
रा॰ चैत्र २७ शकः १८९५ ४ [illegible]
मंगलवार १७ अप्रैल सन् १९७३ चैत्र शु.१५ सं. २०३०
घ. ३१।४७ चित्रा ४४।५ र॰ उ. ५।३८ र॰ अ. ६।१७
फ. १३८० प्र. चेतर ३० बं. वैशाख ४ ने. ५ गते

स्नानदान की व्रत पूर्णिमा १५, हनुमान जयन्ती

बालार्क प्रेतधूमं च वृद्धा स्त्री पल्वलोदकम् ।
आयुष्कामो न सेवेत रात्रौ च दधिभोजनम् ॥
प्रातःकालीन (उगते हुए) सूर्य्य को न देखे मुर्दे का धुआँ वृद्धा स्त्री, गढ़े का जल और रात्रि मे दही इनका सेवन आयु चाहने वाला व्यक्ति न करे ॥

गोद मे रखकर भोजन न करे भोजन करते हुये शिर तथा भौंह स्पर्श न करे, जूठे मुख न चले और अपवित्रता मे सूर्य, चंद्र तारा आदि न देखे ॥
परधन की चाह न करना सब से प्रेमभाव होना और अपने कर्म का फल समझना इन तीनों का मन से विचार करना चाहिए ॥
जीव हत्या चोरी और परायी स्त्री से संभोग ये पाप शरीर से नित्य त्यागना चाहिए ॥
व्यर्थ बकवाद, कठोर वचन, चुगली (पीठ के निन्दा) और असत्य भाषण इन चारों का न चिन्तन करे और [illegible] उन्हें कहे मन वचन कर्म से किसी प्राणी को पीड़ा न देना ठीक ठीक जैसा सुना समझा जो वैसा कहना प्राणि [illegible] भाव तथा मन को वश मे रखना और यथा [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूरकी दालके पानीसे कुल्ला करनेसे जीभके दाने जाते हैं
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 18th April 1973.

रा॰चैत्र २८ शक॰१८९५ [illegible]
बुधवार १८ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. १ सं. २०३०
घ. २४।४१ स्वाती ४९।३८ र॰ उ. ५।२७ र॰ अ. ६।१८
फ १३८०. प्र. विशाख १ बं. वैशाख ५ ने. ६ गते

देवान् पितॄन् मनुष्यांश्च भृत्यान्गृह्यांश्च देवता
भोजयित्वा ततः पश्चाद् गृहस्थो भोक्तुमर्हति
देवों, पितरों, मनुष्यों को नौकर और जो आश्रित जन
पशु पक्षी आदि हों, उन्हें भोजन करा कर गृहस्थ
को भोजन करना चाहिए ॥
वृक्षांश्छित्वा महीं भित्वा हत्वा कीटपिपीलका
दत्वान्न कार्षुकोऽभिभ्यः सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥
वृक्षों के काटने से, पृथ्वी खोदने से, कीड़ों एवं
चींटियों को मारने से खेती करने वालों को जो
पाप होता है वह सभी पाप भिक्षुक को अन्न देने
से छूट जाता है । खिलाने से ॥
राज्ञां दत्वा तु षड्भागं देवतानां च विंशतिः ।
त्रिंशद् दत्वा तु विप्राणां कार्षुको नावसीदति ॥
अपनी आयु का छठवाँ भाग राजा को बीसवाँ भाग
देवतावों को और तीसवाँ भाग ब्राह्मणों को जो कृषक
देता है वह कष्ट नहीं पाता सदा सुखी रहता है
नेत्र दे, मन दे, सुन्दर वाणी दे और उठकर आनन्द
अर्थात सुयोग्य व्यक्ति के आगमन पर प्रेम [illegible]
[illegible] यही सनातन धर्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसीको गुनर ना पोसकर पिलानेसे बच्चोंको दस्त होते हैं
(वृश्चिक का चन्द्र २५।२) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 19th April 1973.
रा० चैत्र २९ शकः १८९५ ४ १३९३ ربيع الاول 15 پنجشنبه
गुरुवार १९ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ० २ सं० २०३०
घ० २८।२६ विशाखा ५५।११ र० उ० ५।२६ र० अ० ६।१८
फ० १३८० प्र० विशाख २ बं० वैशाख ६ ने० ७ गते

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११
गीता अध्याय १७
और हे अर्जुन जो यज्ञ शास्त्र विधि से नियत किया हुआ है करना ही कर्तव्य है ऐसे मन को समाधान कर के फल को न चाहने वाले पुरुषों द्वारा किया जाता है वह यज्ञ तो सात्त्विक है ॥ ११ ॥
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥
और हे अर्जुन जो यज्ञ केवल दम्भाचरण के ही लिये अथवा फल को भी उद्देश्य रखकर किया जाता है उस यज्ञ को तू राजस जान ॥१२॥ गीता अ० १७
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥ गी० अ० १७
तथा शास्त्र विधि से हीन और अन्न दान से रहित एवं बिना मन्त्रों के बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किये हुए यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं ॥१३॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ १४॥ गी० अ० १७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धनियाँकी पत्ती और चन्दन सूँघनेसे छींक बन्द होता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 20th April 1973.

रा॰ चैत्र ३० शाकः १८९५ ४ [illegible]
शुक्रवार २० अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ३ सं. २०३०
घ. ४३।५ अनुराधा ६०।० र॰ उ. ५।२६ र॰ अ. ६।१९
फ. १३८० प्र. विशाख ३ बं. वैशाख ७ ने. ८ गते

गुड फ्राइडे

तथा हे अर्जुन देवता, ब्राह्मण, गुरु, और ज्ञानीजनोंका पूजन एवं पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा यह शरीर सम्बन्धी तप कहा जाता है ॥१४॥ गी॰अ॰१७

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ।
सतामेतानि हर्म्येषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥

तृण (पुआल आदि) भूमि, जल, प्रेमयुक्त सुन्दर वाणी ये चारों वस्तुएँ सज्जनों के यहाँ से नहीं जाती अर्थात् किसी भी अतिथि आने पर कम से कम इन चारों के द्वारा तो स्वागत हो ही सकता है ॥

अतिथिर्यस्य भग्नाशः गृहात्प्रति निवर्तते ।
स तस्मै दुष्कृतं दत्वा पुण्यमादाय गच्छति ॥

जिसके द्वार से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसके घर वह अपना पाप देकर और पुण्य लेकर चला जाता है ॥

ग्रासादपि तदर्धं वा कस्मान्नो दीयते [illegible] ।
[illegible] ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफाई रखने से चेचक नहीं होती
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Saturday the 21st April 1973.
रा॰ वैशाख १ शक: १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الاول ١٧ شنبه
शनिवार २१ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ४ सं. २०३०
घ. ४८।१४ अनुराधा १।२४ र. उ. ५।३२ र. अ. ६।१९
फ. १३८० प्र. विशाख ४ बं. वैशाख ८ ने. ९ गते

संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रत, ईद-ए-मौलाद

एक कौवल या उसका आधा ही मांगने वाले को क्यों नहीं दे देते इच्छा के अनुसार कल किसको धन हुआ है अर्थात् अभी से जितनी शक्ति है उसी के अनुसार दान पुण्य करते चलो।

न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति ।
अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्य व बुद्धिमान् ॥

कोई नहीं जानता कि कल क्या हो जायगा इसलिये जो कार्य (दान पुण्य) कल करना है वह आज ही कर डाले ॥

काल करै सो आज कर आज करै सो अब ।
पल में परलय होयगी बहुरि करेगा कब ॥

उष्णकाले जलं दद्याच्छीतकाले हुताशनम् ।
प्रावृट्काले गृहं देयं सर्वकालेषु भोजनम् ॥

गर्मी के दिनों में जल, सर्दी में अग्नि वर्षाकाल में गृह (आश्रम) और सभी काल में भोजन देना श्रेष्ठ है ॥

वृत्तिं व्याधिशोकार्तान्नुवर्तेत शक्तितः ।
आत्मवत्सततं पश्येदपि कीट पिपीलिकान् ॥

बिना जीविका वाले को व्याधिग्रस्त और शोक से दुखी को [illegible] कीड़े मकोड़े एवं चींटी तक को अपने सदृश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाव पर अंडी का तेल और चूना फैंटकर लगावे
(धन का चन्द्र ८।०) सोना चाँदी महंगा
Sunday the 22nd April 1973.
रा॰वैशाख २ शक॰१८९५ ४ ।۳۹۳ ربیع الاول ۱۸ ایک شنبه
रविवार २२ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ॰ ५ सं. २०३०
घ. ५३।२५ ज्येष्ठा ८।० र॰ उ॰ ५।२४ र॰ अ॰ ६।२०
फ॰ १३८० प्र॰ विशाख ५ बं॰ वैशाख ९ ने॰ १० गते

ईस्टर-सण्डे

साईं के सब जीव हैं कीरी कुञ्जर दोय ।
दया कौन पर कीजिये का पर निर्दय होय ॥
गां पङ्कात् ब्राह्मणीं दास्यात् वृत्तिलोपात् द्विजं तथा ।
मोचयन् मुच्यते जन्तुः पापादामरणान्तिकात् ॥

पंक से गाय को दासी होने से ब्राह्मणी को, जीविका की हानि बध से ब्राह्मण को बचाता है [illegible] जीवनभर के पाप से छूट जाता है ।
अनेन मर्त्य देहेन यल्लोकद्वयशर्मदम् ।
विचिन्त्य तदनुष्ठेयं हेयं कर्म ततोन्यथा ॥
इस मानव शरीर से लोक, परलोक मे कल्याण देनेवाले कर्म करे इससे अन्य अर्थात् कल्याण कारक (शास्त्र विरुद्ध) कर्म त्याग दे ।
उपकारः परो धर्मः परोर्थः कर्मनैपुणम् ।
पात्र दानं परः कामः परो मोक्षो वितृष्णता ॥
दूसरे की भलाई करना श्रेष्ठ धर्म है निपुणता से कर्म करना श्रेष्ठ अर्थ है योग्य व्यक्ति को दान देना श्रेष्ठ काम है तृष्णा रहित होना ही श्रेष्ठ मोक्ष है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ीइलायची व मिश्री खानेसे गर्भिणीका श्रम दूर होता है
(धन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Monday the 23rd April 1973.

रा॰ वैशाख ३ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربيع الاول ١٩ ٥ شوال

सोमवार २३ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ६ सं. २०३०
घ. ४८।१४ मूल १४।२८ र. उ. ५।२३ र. अ. ६।२०
फ. १३८० प्र. विशाख ६ बं. वैशाख १० ने. ११ गते

बाबू कुँअरसिंह जयन्ती

दीपो पशमनं पुंसां कूष्माण्डच्छेदनं स्त्रियः ।
अचिरेणैव कालेन कुलच्छेदकरं मतम् ॥
पुरुष यदि दीपक शान्त करे (बुझावे) स्त्री भतुआ काटे तो शीघ्र ही वंशच्छेद होता है अर्थात् शुभ नहीं है ॥
गोल लौकी कुन्द फूल के सदृश्य श्वेत भण्टा और मूली सहित मसूर अन्न प्राण संकट में हों तब भी न खाये ।
बिखरे केशवाली बिना बिचारे कार्य करने वाली सर्वदा पति के विरुद्ध (आचरण करनेवाली) बोलनेवाली दूसरे के घर अधिकतर रहनेवाली और लज्जारहित स्त्री का त्याग करना चाहिये ।
मलिन वस्त्र से युक्त पुरुष को मलिन दाँत वाले को अधिक भोजन करने वाले को कठोर वाणी बोलने वाले को और सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय सोने वाले को लक्ष्मी छोड़ देती है वह यदि विष्णु के सदृश हो तो भी ।
एकच्छागं द्विरावंश्च त्रिगवं पञ्च माहिषम् ।
षडश्वं [illegible] मातङ्गं शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥
[illegible] तीन गाय, पाँच भैंस, छः घोड़ा और ८ हाथी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योनि की खुजली पर गुलाब में कपूर मिलाकर लगावे
(मकर का चन्द्र ३५।४४) सोना चाँदी सम

Tuesday the 24th April 1973.

रा॰वैशाख ४ शकः १८९५ ४ . ۱۳۹۳ ربیع الاول ۲۰
मंगलवार २४ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ७ सं.२०३०
घ. ६०।० पू. षा. २०।२६ र॰ उ. ५।३२ र॰ अ. ६।२१
फ. १३८० प्र. विशाख ७ बं. वैशाख ११ ने. १२ गते

गङ्गोद्भेदे कुरुक्षेत्रे विश्रान्तौ मणिकर्णिके ।
वेण्यां गयायामोङ्कारे स्नात्वा दत्त्वा सुखी भवेत् ॥
हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, गङ्गासागर, मणिकर्णिका घाट(काशी)
त्रिवेणी संगम, गया, ओंकारनाथ इन स्थानों में दान स्ना[न]
करके प्राणी सुखी होता है ।

शरणागतरक्षार्थं स्त्री-गो-द्विजहिताय च ।
स्वाम्यर्थे यस्त्यजेत्प्राणांस्तस्य लोकाः सनातनाः ॥
शरण में आये हुए प्राणी की रक्षा के लिए, स्त्री, गौ, ब्राह्मण
के हित के लिए और अपने स्वामी की रक्षा के निमित्त जो
प्राण त्याग करता है, उसे स्वर्गलोक प्राप्त होता है ।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥
एक मात्र धर्म ही सच्चा मित्र है, जो मरने पर भी साथ जा[ता]
है प्राणी के साथ कुछ नहीं जाता अन्य सभी कुछ यहीं प[र]
रह जाता है ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में से [illegible]
पास एक भी न हो उसका जन्म बकरी के [illegible]
के समान व्यर्थ है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्भके खूनपर चावलका धोवन पीनेसे आराम होता है
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Wednesday the 25th April 1973.

रा. वैशाख ५ शक १८९५ ४ ।۱۳۹۳ ربیع الاول ۲۱ ।۹ ...
बुधवार २५ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ७ सं. २०३०
घ. २।२१ उ. षा. २५।२८ र. उ. ५।३१ र. अ. ६।२१
फ. १३८० प्र. विशाख ८ वं. वैशाख १२ ने. १३ गते

श्री शीतलाष्टमी ८

न जातु कामान्न भयान्न लोभा द्धर्म
जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ।
धर्मो नित्यः सुख दुःखेत्व नित्ये
जीवो नित्यो हेतु रस्य त्वनित्यः ॥

काम से, भय से तथा लोभ से और प्राण संकट उपस्थित होने पर भी धर्म को न छोड़े धर्म नित्य है सुख दुख तो अनित्य हैं और जीव नित्य है इसके हेतु जितने हैं सब अनित्य हैं (नाशवान हैं)।

धर्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण हन्यते ग्रहः ।
धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्ततो जयः ॥

धर्म के पालन से रोग दूर होता है धर्म पालन करने से ग्रह दोष शान्त होते हैं धर्म से ही शत्रु बाधा दूर होती है जहाँ धर्म है वहीं विजय है ।

ऋतुस्नातां च यो भार्यां नैव गच्छति मूढ़धी ।
घोरायां भ्रूण हत्यायां युज्यते नात्र संशयः ॥

अपनी स्त्री के रजो धर्म से निवृत्त होने के पश्चात अर्थात चौथी रात के बाद से जो पुरुष उसके पास नहीं जाता वह भ्रूण हत्या का भागी होता है पति के ... [illegible] ... हो तो कोई दोष नहीं होता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुदा सूजने पर रेंडी का तेल गुदा पर लगावे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Thursday the 26th April 1973.

रा॰वैशाख ६ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الاول ٢٢ پنجشنبه
गुरुवार २६ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ८ सं. २०३०
घ. ५।१८ श्रवण २९।४३ र. उ. ५।३० र. अ. ६।२१
फ. १३८० प्र. विशाख ९ बं: वैशाख १३ ने. १४ गते

जहाँ कहीं मनुष्यों द्वारा लिंग पधराया होता है वहाँ १०० हाथ तक पुण्य क्षेत्र होता है वहाँ जो भी पुण्य कर्म किया जाता है उसका सौ गुना फल मिलता है। और जहाँ ऋषियों ने लिंग पधराया हो वहाँ हजार हाथ तक और जो लिंग स्वयं निकले होते हैं वहाँ पर हजार हाथ की दूरी तक शिव क्षेत्र माना जाता है तथा उस पुण्य वैसा ही उतना ही अधिक होता है। कवियों ने कहा है कि ऐसे पुण्य क्षेत्र मे कुओं, बावली, तालाब और तलाइयों का होना आवश्यक है उसे शिवगङ्गा कहते हैं ऐसे स्थान मैं दान, जप करना सर्वथा ही कल्याणप्रद है। दाह, दसाह, मासिक सपिंडीकरण वार्षिक पिण्डदान (बरसी) आदि शिव क्षेत्र मे करने से सब पापों से मुक्त कर देता है शिव क्षेत्र मे सात, पाँच, तीन या एक रात अवश्य ही निवास करे वर्णानुसार इसका भी उत्तम फल प्राप्त होता है। सकाम से तुरन्त सिद्ध और निष्काम से शिवपद की प्राप्ति होती है। (शिव पुराण से सं॰।)

कार्तिक मे देवताओं का यजन सर्व भोगप्रद और सब [illegible]
कार्तिक मास मैं कार्तिक मास में रविवार के दिन [illegible]
को पूजा करता है और तेल तथा [illegible]
[illegible] दूर हो जाता है। [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काँच पर पुराने चमड़े की राख छिड़के
(कुम्भ का चन्द्र १।१०) सोना चाँदी सम
Friday the 27th April 1973.
रा. वैशाख ७ शकः १८९५ ४ ।१३१३ [illegible], २३ [illegible]
शुक्रवार २७ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ९ सं. २०३०
घ. ७।१४ धनिष्ठा ३२।३८ र. उ. ५।३० र. अ. ६।२२
फ. १३८० प्र. विशाख १० बं. वैशाख १४ ने. १५ गते

विद्यार्थी पुरुष प्रीति पूर्वक सहस्त्र पार्थिव शिव का पूजन करे ऐसा करने से उसका मनोरथ पूर्ण होता है। धन का इच्छुक पाँच सौ, पुत्र का इच्छुक डेढ़ हजार तथा वस्त्र का चाहने वाला पाँच सौ पार्थिव लिङ्ग को बनाकर पूजे। मोक्ष का इच्छुक एक करोड़ भूमि का इच्छुक एक सहस्त्र, दया का इच्छुक तीन सहस्त्र तीर्थ की कामना वाला दो सहस्त्र तथा इसी प्रकार जिसकी जैसी कामना हो उसके अनुसार वेदोक्त विधि से उतनी-उतनी संख्या मे पार्थिव लिङ्ग की पूजा करे पार्थिव की पूजा करोड़ों यज्ञ का फल देने वाले है पार्थिव मूर्ति ४ अंगुल की मिट्टी की बनावे (शिव पुराण स्ल. २१ मे

बावनवाँ अध्याय शिवपुराण रुद्र संहिता
(पतिब्रता धर्म वर्णन) पार्वती खण्ड ॥

पिता गेह को त्याग कर गिरजा पति के गेह। द्विज पत्नि उनको दिया पतिव्रत उपदेश ॥

ब्रह्मा जी बोले - हे नारद जी तब सप्तऋषियों ने कहा कि - हे [illegible]माचल जी पुत्री पार्वती जी को शीघ्र ही तैयार करके भगवान [illegible] साथ भेजने की कृपा करें। इतना सुन कर पर्वतराज [illegible]व्याकुल हो गये कुछ समय तक विरह में व्याकुल रहे [illegible] के लिये कहा -

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान की पीव पर कान में सिरका छोड़े
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 28th April 1973.

रा॰ वैशाख ८ शकः १८९५ ४ | ١٣٩٣ ربيع الاول ٢٥
शनिवार २८ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. १० सं.२०३०
घ. ७।४४ शतभिषा ३४।१८ र॰ उ. ५।२९ र॰ अ. ६।२२
फ. १३८० प्र. विशाख ११ बं. वैशाख १५ ने. १६ गते

मैना को हर्ष भी हुआ और एवं उदासीनता भी
तब उत्सव के कार्य करने लगी और पार्वतीजी का
सुन्दर श्रृंगार किया गया तभी मैना के कहने से एक
ब्राह्मण की पत्नी आकर श्री पार्वतीजी को पतिव्रता
धर्म की शिक्षा देने लगी उसने कहा हे पार्वतीजी जो स्त्रियां
पतिव्रता धर्म की शिक्षा मानती होती हैं वे धन्य हैं
समस्त पापों को नाश करके अपने दोनों कुलों को तार
देती हैं जो भी स्त्री अपने पति को साक्षात ईश्वर सम
कर उसकी सेवा करती रहती है उन्हें इस लोक में आनन्द
की प्राप्ति होती रहती है अन्त में सद्गति होती है हे श्री
पार्वतीजी पतिव्रता स्त्री पति के भोजन कर चुकने के
भोजन करे पति के सो जाने के बाद सोवे क्रोध से स्वप्न
अवस्था से पति का नाम मुख से न बोले कभी पति क्रोध
में आकर कुछ मार भी बैठे तो उसे सहन करे उत्तर में मरो या
ऐसा शब्द न कहे इतना कहे हे स्वामिन मेरा अपराध क्षमा
करें इसी प्रकार कहती रहे पति के बुलाने पर सभी काम
छोड़कर पति के पास चली आय उसकी आज्ञा का बड़े प्रेम से पालन
करे ~~पतिव्रता कभी~~ पतिव्रता कभी द्वार पर न खड़ी हो
दूसरे के घर जाकर बिना कारण न बैठे अपने घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिफलाका चूर्ण दूधके साथ विषम ज्वरको नाश करता है
(मीन का चन्द्र १९।२८) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 29th April 1973.

रा.वैशाख ९ इ.क.:१८९५ ४ ।ایک شنبہ ۲۵ ربیع الاول ۱۳۹۳
रविवार २९ अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. ११ सं. २०३०
घ. ६।५५ पू. भा. ३४।४४ र. उ. ५।२८ र. अ. ६।२३
फ. १३८० प्र. विशाख १२ बं. वैशाख १६ ने. १७ गते

बरूथिनी ११ एकादशी व्रत सबका, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती

(शिवपुराण)
ठीक समय यथा स्थान सम्हालकर रखे फिर अपने काम को
जल्दी में भी चतुर रहे पति की आज्ञा का पालन करना पतिव्रता का
मुख्य धर्म है आज्ञा के बिना तीर्थ यात्रा खेल तमाशे किसी स्थान
पर न जाये तीर्थ स्नान की इच्छा से पति के चरण धोकर उसको
पान करने से उसका तीर्थ स्नान हो जाता है अपने पति की आज्ञा
पाकर पति के झूठे अन्न को परम प्रसाद समझकर ग्रहण
करे श्राद्धादि पर्वों में भी बाँटकर न खावें किन्तु पति को भोजन
खाना ही सर्वोत्तम है किसी चीज के लिये भी पति से न झगड़े
और न बहुत खर्चा करावे ऐसी स्त्री उत्तम होती है हे पार्वती जी
पति की आज्ञा बिना पतिव्रता कोई भी उपवास व्रत आदि
न करे अपने हठ से व्रत आदि करने वाली स्त्रियों को कोई
फल नहीं मिलता फिर अन्त होने पर नरक में जाती है सुख
से बैठे सोते पति को कभी न उठावे दुःखी नपुंसक धन
हीन रोगी वृद्ध किसी अवस्था में पति क्यों न हो पतिव्रता उस
का त्याग न करे मासिक धर्म में आकर स्त्री अपने पति
को तीन दिन सुख न दिखाय जब तक शुद्ध स्नान न हो
तब तक उसका पति उसका वचन भी न सुने
... शुद्ध होकर पहिले पति का दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोरखमुण्डीका अर्क और शहद रक्तविकारको नष्ट करताहै
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 30th April 1973.

रा. वैशाख १० शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربيع الاول, ٢٥ ارديبهشت
सोमवार ३० अप्रैल सन् १९७३ वैशाख कृ. १२ सं. २०३०
घ. ४।५५ उ. भा. ३३।२९ र. उ. ५।२७ र. अ. ६।२३
फ. १३८० प्र. विशाख १३ बं. वैशाख १७ ने. १८ गते

सोम प्रदोष १२ व्रत (शिवपुराण)

करे पति यदि कहीं चला गया हो तो उसके रूप का ध्यान
करके सूर्यनारायण का ध्यान करे दर्शन करे सिंदूर
आदि सुहाग की वस्तुऐं धारण कर अपने पति की दीर्घ
आयु के लिये कामना करती रहे धोबिन सुद्रा
व्यभिचारिणी आदि नीच स्त्रियों को अपनी सहेली
न बनावे पति से लड़ने वाली एवं शत्रुता रखने वाली
स्त्री से बोले तक नहीं एकान्त में कभी अकेली न रहे
कभी नङ्गी न होवे स्नान भी वस्त्रहीन हो कभी न करे पति
की इच्छा होने पर ही पति से रमण करे रमण समय में ही
पति से ढीठता कर सकती है और समय में नहीं सदा
पति के अनुकूल चले उसके उदास होने पर उदास
और सुखी रहने पर सुखी रहे सुख दुख दोनों में ही पति
से विमुख न हो यदि ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी अपने
पति को [illegible] जो भी स्त्री जीत की [illegible]
ना व्रत उपवास [illegible] विष्णु पूजादि करती हैं वे अपने
पति की आयु का हरण करती हैं और अन्त में नरक
में जाती हैं जो स्त्री पति के कुछ कहने पर कड़
[illegible] उत्तर देती है ऐसी स्त्रियाँ निर्जन मे [illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धान्यपञ्चक पीनेसे सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं
(मेष का चन्द्र ३२।१४) सोना चाँदी सम
Tuesday the 1st May 1973.
रा॰ वैशाख ११ शक॰ १८९५ । ۱۳۹۳ ربیع الاول ۲۷
मंगलवार १ मई सन् १९७३ वैशाख कृ॰ १३ सं॰ २०३०
घ॰ ११।३६ रेवती ३२।१४ र॰ उ॰ ५।२७ र॰ अ॰ ६।२४
(शिवपुराण) फ॰ १३८० प्र॰ विशाख १४ वं॰ वैशाख १८ ने॰ १९ गते

दुष्टों से दूर रहे पति से कभी कुटिलता से न बोले
सास ससुर जेठ जिठानी बड़ों के सामने कभी ऊँचा
न बोले न हँसे बाहर से आये हुए अपने पति का आदर
पूर्वक उसके चरण धोये हे पार्वती जी इस प्रकार
की पतिव्रता नारियाँ लोकों को पवित्र कर देती हैं
तीनों देवों की प्रार्थना से अत्रि की पत्नी ने शाप और
वाराह से मरे हुये एक ब्राह्मण को जीवित कर दिया
था हे देवी पार्वती आप तो सर्वश्रेष्ठ हो सबका कल्या
ण करने वाली हो आप के सामने तो केवल लोकोपकार
के लिये इतना कहना पड़ा ब्रह्मा जी बोले हे नारद जी
इस प्रकार शिक्षा देकर ब्राह्मणी श्री पार्वती जी को
आशीष देकर वहीं बैठ गई ॥

(तुलसी शाप वर्णन) इकतालीसवाँ अध्याय
शिवपुराण
शंखचूड़ का रूप धरि तुलसी सम्मुख जाय पतिव्रत के शाप ते पत्थर
रूप धराय व्यास जी बोले हे मुने विष्णु जी ने तुलसी जी में आपने
शक्ति का आधान कैसे किया यह मुझसे कहिये सनत्कुमार
ने देवताओं के कार्य करने वाले नारायण ने शंखचूड़ का रूप
[illegible] और रमा के साथ ही रमण किया था तुलसी के पिता
[illegible] माता माधवी [illegible] का पालन [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अफीम और पेड़ा खाने से दस्त बन्द होता है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Wednesday the 2nd May 1973.

रा॰वैशाख १२शक:१८९५ ४ | १३१३ [illegible]
बुधवार २ मई सन् १९७३ वैशाख कृ. ३० सं. २०३०
घ. ५२|५८ अश्विनी २९|३९ र॰ उ. ५|२६ र॰ अ. ६|२४
फ. १३८९ प्र. विशाख १५ बं. वैशाख १९ ने. २० गते

स्नानदान श्राद्ध की ३० अमावस्या (शिवपुराण)

ग्रहण किया तथा ब्राह्मण का रूप त्याग शंखचूर्ण का रूप धारण कर शीघ्र ही तुलसी के पास आ पहुँचे अपने स्वामी को आया देखकर तुलसी बहुत प्रसन्न हुई और पति के चरणों को धोकर प्रणाम कर रोने लगी फिर रत्न सिंहासन पर बिठाकर सत्कार कराया और ताम्बूल दिया साथ ही कुतूहलता प्रगट करती हुई कटाक्ष सहित युद्ध का समाचार पूछने लगी शंखचूर्ण रूपी रमापति-विष्णु हंसकर अमृत सदृश वचनों में युद्ध का समाचार कह यह बतलाया कि ब्रह्माजी ने हममें और शंकर में सन्धि करा दी है इस लिये मैं अपने घर चला आया हूँ और शिवजी शिवलोक को चले गये हैं ऐसा कह जगत पति ने शयन कर उसके साथ विहार भी किया तब उनके इस रमण को देखकर तुलसी को भ्रम हुआ और बहुत तर्क करने लगी उसने विष्णुजी से पूछा अरे तू कौन है सत्य कह तूने माया से मुझे क्यों भोगा मेरा सतीत्व धर्म क्यों दूर किया मैं तुम्हे शाप देती हूँ तुलसी के शाप के भय से विष्णुजी ने अपनी सुन्दर मूर्ति बना ली परन्तु तुलसी ने वह रूप देख चिन्हों से उसको विष्णु जाना और अपना पतिव्रत भंग जानके क्रोध किया तुलसी ने कहा हे विष्णु तुममें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलई चूना शहद में मिलाकर तिल्ली पर लेप करे
(वृष का चन्द्र ४०।२४) सोना चाँदी महंगा

Thursday the 3rd May 1973.

रा॰वैशाख १३ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ ربیع الاول ۲۹
गुरुवार ३ मई सन् १९७३ वैशाख शु. १ सं. २०३०
घ. ४७।३१ भरणी २६।२१ र. उ. ५।२५ र. अ. ६।२५
फ. १३८० प्र. विशाख १६ बं. वैशाख २० ने. २१ गते

देव दामोदर तिथि (आसाम)

(शिवपुराण)

को भक्त मेरे स्वामी का बध कराया है तुम बड़े कर्म हीन
भी हो अतएव मैं तुम्हे शाप देती हूँ कि तुम पत्थर हो जाओ
तुम्हें दयासागर कहना व्यर्थ है तुमने दूसरे के लिये एक
निरपराध भक्त को क्यों मारा ऐसा कह के शंखचूड़ की प्रिय
सती वृन्दा अत्यन्त विलाप करने लगी उसके विलाप को सुन
विष्णु जी ने भक्त वत्सल शंकर जी का स्मरण किया शंकर
जी शीघ्र ही वहाँ प्रकट हो गये उन्होने शोका उस दुखिया को
जगत की नश्वरता समझाते हुये उसको तपस्या का फल दिया
और यह कहा कि इस शरीर को त्याग तुम दिव्य देह धारण कर
हरि के साथ विहार करो साथ ही तुम्हारा यह शरीर छूटने पर
भारत में गण्डकी नदी होगी और देवपूजन के साधन से कुछ
काल में तुम मेरे वर से प्रधान रूपा तुलसी नाम से विख्या
त होओगी और स्वर्ग पाताल तथा मर्त्य तीनों लोकों में तुम
सर्वदा हरि की समीपता पाओगी और सब वृक्षों में तुम्हारा श्रेष्ठ
स्थान होगा तुम दिव्य रूप धारण कर सर्वदा वैकुण्ठ में हरि के
[illegible] क्रीड़ा करती रहोगी और हरि अंश से क्षीर सागर की
[illegible] होओगी तुमने जो हरि को शाप दिया है तो उसके फ
[illegible] के तट पर हरि पाषाण रूप से स्थित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२ अनारकी पत्ती पीसकर पीनेसे मुँहसे खून जाना बन्द होताहै

(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Friday the 4th May 1973.

रा० वैशाख १४ शक: १८९५ ४ १३९३ ربيع الاول ٣٠

शुक्रवार ४ मई सन् १९७३ वैशाख शु. २ सं. २०३०

घ. ४१।४० कृत्तिका २२।३४ र. उ. ५।२४ र. अ. ६।२५

फ. १३८० प्र. विशाख १७ बं. वैशाख २१ ने. २२ गते

(शिवपुराण)

शिवाजी जयन्ती

वहाँ पैने दाँतों वाले करोड़ों कीड़े उस शिला को छेदकर उस में चक्र बना देंगे और उसका नाम शालिग्राम होगा इस प्रकार समझाकर शिवजी अन्तर्धान हो गये तुलसी प्रसन्न हो उस देह को त्याग दिव्य देह को प्राप्त हुई कमलापति उसके हाथ बैकुण्ठ को गये और गण्डकी नदी होकर बह चली विष्णु जी उसके तट के पत्थर होगये उस पत्थर में कीड़े अनेक प्रकार के छिद्र कर देते हैं और जो पत्थर जल से गिरता है वह पुण्य दायक होता है विष्णु जी के महात्म्य सहित यह आख्यान बड़ा ही भुक्ति मुक्ति दायक है हे मुने यह सब तो मैंने तुमसे कहा कहिये अब इसके आगे आप और क्या सुनना चाहते हो ॥

एक जंगल मे एक ब्राह्मण अपनी स्त्री समेत तप करता था वहाँ एक मायामय सिंह आकर ब्राह्मण की स्त्री को उठा ले गया ब्राह्मण व्याघ्र द्वारा स्त्री के हरण [illegible] जाने से ब्राह्मण जार जार रोने लगा और बहुत काल तक [illegible] रहा तब राजा मद्रायुसे बोला राजन् तुम्हीं बड़े [illegible] हैं और [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्याज पास में रखने से लू नहीं लगती

(मिथुन का चन्द्र ४६।२५) सोना चाँदी तेज

Saturday the 5th May 1973.

रा० वैशाख १५ शकः १८९५ ४ ।१३१९ [illegible]

शनिवार ५ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ३ सं. २०३०

घ. ३५।३४ रोहिणी १८।३० र. उ. ५।२४ र. अ. ६।२६

फ. १३८० प्र. विशाख १८ बं. वैशाख २२ ने. २३ गते

५१४

अक्षय तृतीया ३, परशुराम जयन्ती ३

दुःख से रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है जब कुलोचित धर्म ही
नष्ट हो गया तो जीवित रहने से क्या प्रयोजन है धर्मात्मा
राजा लोग शरणागतों की अपने प्राणों और धन से भी रक्षा करते
हैं और इसके बिना वे मृतक के समान हैं जो दुखित की रक्षा
नहीं करता उसके जीवित रहने से उसका मरना ही श्रेष्ठ है
इसी प्रकार यदि धनी दान से रहित है तो गृहस्थाश्रम में उसका
भिक्षुक रहना श्रेष्ठ है कृपण, अनाथ और दीन को दान न करने
में बुद्धिमान विष खा लेना या अग्नि-प्रवेश कर लेना उत्तम है
नन्दीश्वर बोले तब इस प्रकार उस ब्राह्मण द्वारा अपने सत्व की
निन्दा सुन कर राजा शोकाकुल हो अपने दुर्भाग्य के प्रति पश्चा
-ताप करने लगा उसने कहा आज प्रारब्धवश मेरा पौरुष नष्ट हो
गया अब मैं इस मृत स्त्री वाले शोकाकुल ब्राह्मण के लिए अपने प्रिय
प्राणों को त्याग कर इन्हें शोक रहित करूँगा राजा भद्रायु मन में
ऐसा निश्चय कर ब्राह्मणों के चरणों पर गिर कर उन्हें सन्तोष
देने लगा उसने कहा मैं अपनी रानी सहित अपना सब राजपाट
आपके चरणों में निछावर करता हूँ तथा इसके अतिरिक्त भी
आप को और जो इच्छा हो वह कहिये ब्राह्मण ने कई बातें कहकर
उस राजा से यह कहा कि मेरी स्त्री नहीं है तुम अपनी प्रधान स्त्री
को दो इस पर राजा ने कहा मैं तो और सब कुछ दे सकता हूँ परन्तु स्त्री
[illegible] पर स्त्री सेवन [illegible] पाप है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२५ कसौंदी के छालका रस रतौंधी को दूर करता है
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Sunday the 6th May 1973.

रा॰वैशाख १६ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ ربیع الآخر ۲ ایک شنبہ
रविवार ६ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ४ सं. २०३०
घ. २९।२९ मृगशिरा १४।२० र. उ. ५।२३ र. अ. ६।२६
फ. १३८० प्र. विशाख १९ बं. वैशाख २३ ने. २४ गते

श्री गणेश ४ व्रत

अन्य पापतो प्रायश्चित से नष्ट हो जाते हैं किन्तु पर स्त्री उपभोग से अर्जित पाप कदापि नहीं धुल सकता ब्रह्माजी ने कहा मैं अपने तप से ब्रह्म हत्या तथा मदिरा सेवन रूपी पाप भी शान्त कर सकता हूँ फिर पर स्त्री उपभोग तो क्या है अतएव तुम अपनी स्त्री मुझे दे दो इस के अतिरिक्त मैं कुछ नहीं चाहता यदि तुम भयभीतों की रक्षा न करोगे तो अवश्य ही नरक जाओगे नन्दीश्वर बोले ब्राह्मण की बात से राजा चिन्तित हो गया उसने विचारते विचारते निश्चय किया कि दोनों की रक्षा न करना बड़ा पाप है इससे तो यही अच्छा है कि स्त्री दान कर दूं पाप से तो मुक्ति मिले पश्चात् मैं शीघ्र ही अग्नि प्रवेश कर जाऊंगा और संसार में मेरी कीर्ति होगी ऐसा मन में निश्चय कर उस राजा ने अग्नि प्रज्वलित की और हाथ में जल ले उस ब्रह्मण को बुला पत्नी दान कर पश्चात् अग्नि का तीन प्रदक्षिणा कर एकाग्र हो शिव का ध्यान करने लगा तब अपने चरणों का ध्यान लगाये अग्नि प्रवेश करने वाले राजा की ऐसी वृत्ति देख द्विजेश्वर रूपधारी शिवजी से न रहा गया और वे अपने पाँच मुख तीन नेत्र पिनाक और चन्द्रकला धारण किए मध्यान्ह काल के करोड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाँग और तम्बाकू चिलममें पीनेसे लकवा दूर होता है
(कर्क का चन्द्र २२।३२):सोना चाँदी सम

Monday the 7th May 1973.

रा॰वैशाख १७ शक: १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الآخر ٣ دوشنبه
सोमवार ७ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ५ सं. २०३०
घ. २३।२५ आर्द्रा १०।२० र. उ. ५।२२ र. अ. ६।२७
फ. १३८० प्र. विशाख २० वं. वैशाख २४ ने. २५ गते

श्रीशंकराचार्य जयन्ती ५

आकाशसे फूलों की वर्षा होने लगी देवताओं के बाजे बजने लगे अप्सरायें नाचने और गाने लगीं ब्रह्मा, विष्णु आदिक देवता तथा नारदादिक मुनीश्वर वहां आकर स्तुति करने लगे भक्ति को बढ़ाने वाला अपूर्व समारोह हुआ शिवजी के दर्शन से भद्रायु गद् गद् वाणी में हाथ जोड़ उनकी स्तुति करने लगा इसकी स्तुति सुन पार्वती सहित शङ्करजी ने प्रसन्न होकर कहा मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ तुम अपनी स्त्री सहित मुझसे वर मांगो मैं तुम्हें इच्छित वर दूँगा मैं परीक्षा के लिये ही यहां आया था और जिसे वह व्याघ्र उठा लेगया वह साक्षात् पार्वती देवी थीं तथा वह माया का व्याघ्र था जो तुम्हारे बाणों से घायल नहीं हुआ तुम्हारे धैर्य की परीक्षा के लिये ही मैंने तुम्हारी पत्नी मांगी थी यह सुन भद्रायु ने फिर शिवजी को प्रणाम किया और बोला मैं सकुटुम्ब आपके चरणों की भक्ति चाहता हूं मेरे पिता वज्रबाहु भी सपत्नीक आपके भक्त हों पद्माकर नाम के वैश्य और उसके पुत्र ये सभी आपके निकट वासी हों नन्दीश्वर कहते हैं कि फिर उसकी रानी ने अपने पिता चन्द्राङ्गद तथा माता सीमन्तिनी के लिये ईश्वर की निकटता मांगी भक्तवत्सल भगवान पार्वती पति ने उनको एवमस्तु कह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२ गदाकी पत्ती पीसकर लेप करनेसे सर दर्द दूर होता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 8th May 1973.

रा॰वैशाख १८ शकः१८९५ ४ ।३।३ ربیع الاول، ۱۳۹۳ھ
मंगलवार ८ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ६ सं. २०३०
घ. १८।१ पुनर्वसु ६।२६ र. उ. ४।२२ र. अ. ६।२७
फ. १३८० प्र. विशाख २१ वं. वैशाख २५ ने. २६ गते

श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, गङ्गोत्पत्ति ६

और तत्क्षण वहीं अन्तर्ध्यान हो गये महादेवजी के आशीर्वाद से अत्रायु की सारी चिन्ता छूट गई और सीमन्तिनी सहित भक्ति पूर्वक महादेवजी की पूजा करता हुआ महादेव पद को प्राप्त हुआ जो मनुष्य इस द्विजेश्वरावतार पढ़ता और सुनता है वह शिव पद को प्राप्त होता है वह कभी धर्मच्युत नहीं होता और परलोक मे मुक्ति प्राप्त करता है ॥ शिवपुराण मे द्विजेश्वरावतार शतरुद्र संहिता में

(ब्यालीसवाँ अध्याय)
द्वादश ज्योतिर्लिंग

ज्योतिर्लिंग वर्णन सुनहु, द्वादश संख्या कान भक्ति मुक्ति दाता महा जग में पावि मान ॥ शिवपुराण - शतरुद्र संहिता में नन्दीश्वर बोले - हे मुनि श्रेष्ठ अब सर्व व्यापक शङ्कर जी के ज्योतिर्लिंग स्वरूप उनके बारह संख्या वाले अवतार की कथा सुनो सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैनी महाकालेश्वर, ओंकार में अमरेश्वर, हिमालय पर्वत केदार, डाकिनी में भीमशङ्कर, काशी में विश्वनाथ, गौमती तट पर त्र्यम्बक, चिताभूमि में वैद्यनाथ, दारुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंगुदी का धुआँ पीने से शूल नष्ट होता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 9th May 1973.

रा. वैशाख १९ शकः १८९५ ४ ।३१३ [Urdu date]
बुधवार ९ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ७ सं. २०३०
घ. १३।० पुष्य ३।२६ र. उ. ५।२१ र. अ. ६।२८
फ. १३८० प्र. विशाख २२ बं. वैशाख २६ ने. २७ गते

५ गंगा सप्तमी ७

धुश्मेश्वर से बारह अवतार हैं जो मनुष्य इनके दर्शन और स्पर्श करता है उसे ये परम आनन्द दायक हैं उनमे प्रथम सोमनाथ चन्द्रमा के दुःख का नाश करने वाले हैं कि जिनका पूजन करने से क्षय तथा कुष्टादि रोगों का नाश होता है शिवजी के इन आत्मस्वरुप सोमनाथ महाँलिंग का जो दर्शन करता है उसके सब पाप छूट जाते हैं तथा उसे भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है इसी प्रकार मल्लिकार्जुन का जो दर्शन करता है उसे सब मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं शिवजी का यह दूसरा लिंग भी दर्शन करने से बड़ा सुख दायक और निश्चय ही मुक्ति दायक है तीसरा उज्जैन मे महाँकाल नामक लिंग का दर्शन करने से सब कामनायें पूर्ण होती हैं तथा अन्त मे उत्तम गति प्राप्त होती है चौथा ओंकार लिंग भक्तों को इच्छित फल देने वाला है पाँचवाँ केदारेश नामक ज्योतिर्लिंग स्वरूप जो केदार मे स्थित है यह नरनाराय ण नामक भगवान का अवतार है जो इसका दर्शन और पूजन करता है उसको ये अभीष्ट फल प्रदान करते हैं शिवजी का छठवाँ अवतार भीम नामक असुर को मारने से भीम शंकर ज्योतिर्लिंग हुआ जिसमे उस दैत्य को मार कर शिवजी ने काम रूप देश के राजा की रक्षा की थी यही भक्तों के सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला और इस खण्ड का स्वामी है हे मुने इसी प्रकार ... काशी मे ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीरा सोंठ गर्म पानीके साथ खाने से बादी नष्ट होतीहै
(सिंह का चन्द्र १।१) सोना चाँदी सम

Thursday the 10th May 1973.

रा॰वैशाख २० शक:१८९५ [illegible]
गुरुवार १० मई सन् १९७३ वैशाख शु. ८ सं. २०३०
घ. ८।४८ श्लेषा ५८।२४ र. उ. ५।२० र. अ. ६।२८
फ. १३८० प्र. विशाख २३ बं. वैशाख २७ ने. २८ गते

सीता नवमी ९

जो समस्त ब्रह्माण्ड का स्वरूप [illegible] भुक्ति मुक्ति दायक है इन
पूजा आदि विष्णु आदि सब देवों ने की तथा ये कैलाशपति और भैरव
रूप से वहीं पर स्थित हैं ये यहाँ ज्योतिर्लिंग से स्थित अपने पुरी के
स्वामी तथा मुक्तिदायक और स्वयं सिद्ध-स्वरूप है जो इन
काशी विश्वनाथ को पूजते और उनके नाम को जपते हैं वे कर्म
बन्धन से छूट मोक्ष के भागी होते हैं इसी प्रकार शिवजी का
त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग आठवाँ अवतार गौमती के किनारे
गौतम ऋषि की प्रार्थना और कामना से हुआ है इस ज्योतिर्लिंग
दर्शन तथा स्पर्श से सब कामनायें पूर्ण होती है और पश्चात्
प्राप्त होती है नवाँ वैद्यनाथ अवतार हुआ जिस में अनेक
लाचारी शङ्कर जी रावण के निमित्त प्रकट हुए जब रावण शंकर
जी को लिये जा रहा था तब शङ्कर जी बहाना करके वहीं ज्योतिर्लिंग
स्वरूप से चिता भूमि में स्थित हुये और त्रैलोक्य से उनका वैद्य
नाथेश्वर नाम प्रसिद्ध हुआ उनके दर्शन तथा भक्ति पूर्वक पूजन
भुक्ति मुक्ति प्राप्त होती है वैद्यनाथेश्वर शंकर के इस माहात्म्य
को तथा अनुशासन को जो पढ़ता या सुनता है उसे वे भुक्ति
प्रदान करते हैं दशवाँ नागेश्वर अवतार अयोध्यापुरी में हुआ
जी के इस लिंग का दर्शन और पूजन करने से महा पातकों
का समूह नष्ट हो जाता है इस प्रकार शिवजी का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुक्केका पानी पिलानेसे साँपका जहर उतर जाता है
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 11th May 1973.

रा॰वैशाख २१ शकः १८९५ ४ [illegible]
शुक्रवार ११ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ९. सं. २०३०
घ॰ ४।२९ सू. फा. ४८।४३ र॰ उ. ५।२० र॰ अ. ६।२९
फ. १३८० प्र. विशाख २४ बं. वैशाख २८ ने. २९ गते

जिसने रामचन्द्र को प्रिय किया और जो रामचन्द्र जी द्वारा संस्थापित हुआ इस ज्योतिर्लिंग ने रामचन्द्र से सन्तुष्ट होकर उन्हें जय का बरदान दिया और उनसे प्रार्थित तथा सेवित होकर शंकर जी ज्योतिर्लिंग स्वरूप से सेतुबन्ध मे स्थित हुये पृथ्वी पर रामेश्वर की अद्भुत महिमा है ये रामेश्वर भोग तथा मुक्ति के देने वाले और भक्तों की कामना को पूर्ण करने वाले हैं जो मनुष्य उन रामेश्वर महादेव को श्रेष्ठ भक्तिपूर्वक गंगाजल से स्नान कराता है वह जीवन मुक्त होता है वह संसार में देव दुर्लभ भोग भोग कर फिर परम ज्ञान को प्राप्त होता है और कैवल्य मोक्ष प्राप्त करता है. इसी प्रकार शंकर जी का घुश्मेश्वर नामक बारहवाँ अवतार हुआ जिस ने घुश्मा को आनन्द दिया दक्षिण दिशा मे देवलोक के निकट सरोवर मे घुश्मा के प्रिय करने वाले शङ्कर प्रकट हुए जिन्होंने सुदेहा दैत्य से मारे हुये घुश्मा के पुत्र को उसकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर उसकी रक्षा की फिर उससे प्रार्थित सहायक घुश्मेश्वर नामक शिवजी ज्योतिर्लिंग स्वरूप से उस सरोवर मे स्थित हुये जिस लिङ्ग के दर्शन पूजन से [illegible] सुख प्राप्त होता है शिवजी की यह मुख्य बारह संख्या [illegible] ज्योतिर्लिंगावली मैंने वर्णन की जो इस ज्योतिर्लिंग कथा के [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकरकरहा और अफीसका लेप शीतको नष्ट करता है
(कन्या का चन्द्र १४।२) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 12th May 1973.

श॰ वैशाख २२ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربيع الآخر ٨ شنبه
शनिवार १२ मई सन् १९७३ वैशाख शु. १० सं. २०३०
घ. ३।१२ उ. फा. २९।३१ र. उ. ५।१९ र. अ. ६।२९
फ. १३८० प्र. विशाख २५ बं. वैशाख २९ ने. ३० गते

यह सो श्रोताओं की शतरुद्र नामक संहिता सब कामनाओं के फल को देने वाली है जो इसे मन लगा कर पढता या सुनता है उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं वह मोक्ष को प्राप्त होता है

श्री शिवपुराण कोटिरुद्र संहिता।
(तीसरा अध्याय) अनुसूया और अत्रि का तप

अनुसूया अत्रि ने बड़ी तपस्या की। वर्तमान अध्याय मे पोह मत्ति परवीन ॥ सूत जी ने कहा है ऋषियो अब आप श्री महादेव जी के सब लिंगावतारों की कथा सुनिये दक्षिण देश मे ये लिङ्ग विद्यमान हैं पितामह ब्रह्मा जी की नगरी मे एक चित्रकूट नामी पर्वत है वहाँ पर श्री ब्रह्मा जी ने मत्त गयन्द नामक शिवलिंग की स्थापना की है वह सब प्राणियों को सभी प्रकार की सम्पत्ति देने वाला है उससे पूर्व दिशा मे मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करने वाला कोटीस नाम का शिवलिंग है और पापनाशिनी गोदावरी पश्चिमा और पशुपति नामक शिवलिंग है वहाँ से दक्षिण की ओर लोक हितकारक सती श्री अनुसूया जी को ज्ञान देने वाला अत्रीश्वर लिंग है। ऋषि बोले हे सूत जी तेजोमय अत्रीस नामक शिव लिङ्ग की किस प्रकार उत्पत्ति हुई कृपा करके विस्तार पूर्वक सुनाइये। बोले कि दक्षिण की ओर चित्रकूट पर्वत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीशम की पत्ती पीसकर पीनेसे सूजाक नष्ट होता है
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Sunday the 13th May 1973.
रा. वैशाख २३ शकः १८९५ ४ | ۱۳۹۳ ربیع الاول ۱ ایک شنبه
रविवार १३ मई सन् १९७३ वैशाख शु. ११ सं. २०३०
घ. २|६ हस्त ६०|० र. उ. ५|१९ र. अ. ६|३०
फ. १३८० प्र. विशाख २६ वं. वैशाख ३० ने. ३१ गते

मोहिनी ११ एकादशी व्रत सबका

कामदगिरि आश्रम का एक मनोहर वन है ब्रह्माजी के पुत्र अत्रि महर्षि ने अपनी पत्नी अनुसूयाजी के साथ यहाँ निवास कर के बहुत समय तक तपस्या की एक समय की बात है कि वर्षा होने पर भी उस वन मे वर्षा न हुई इसी प्रकार चलते चलते सौ वर्ष पर्यन्त अकाल पड़ गया था जिस से जल का अभाव हो गया था भूख से प्राणी मरने लगे पेड़ पत्ते फल फूल कुछ भी न रहा सारी प्रजा दुखी हो गई यह देख कर अनुसूया अत्यन्त व्याकुल होकर अपने पतिदेव से इस तरह बोली- हे पतिदेव मै इन प्राणियों का दुःख नही देख सकती आप इसके लिये कोई प्रयत्न करें यह सुन कर महर्षि पद्मासन लगा कर बैठ गये प्राणायाम द्वारा वायु ब्रह्माण्ड मे जा कर शिव ध्यान मे मगन हो गये उन्हें शरीर की सुध बुध भूल गई शिव की सारी दिव्य ज्योति द्वारा उनके हृदय में प्रकाश भर गया जब अत्रिजी समाधि मे लग गये तो उनके शिष्य गण यह देख कर भूखे प्यासे वहां से भाग गये तब लोपा के लो अनुसूया पति सेवा मे तत्पर हुई सती ने मंत्रों द्वारा वहीं पार्थिव प्रतिमा की रचना की फिर नियम पूर्वक उसके अर्चन पूजन मे लग गई ... उपचारों द्वारा पूजन से शिव को प्रसन्न करने ... कर अपने पति तथा शिव की परिक्रमा नित्य करती हुई ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

933

प्याज और मिर्च पीसके लगानेसे साँपका जहर दूर होता है
(तुला का चन्द्र ३३।०) सोना चाँदी सम

Monday the 14th May 1973.

रा. वैशाख २४ शकः १८९५४ ।१३९३ [illegible]
सोमवार १४ मई सन् १९७३ वैशाख शु. १२ सं. २०३०
घ. २।१८ हस्त १।२५ र. उ. ५।१८ र. अ. ६।३०
फ. १३८० प्र. विशाख २७ वं. वैशाख ३१ ने. १ गते

सोमप्रदोष १२ व्रत

बड़े तेज वाली थी उसके तेज से दैत्य दानव-मानव सभी
डरते थे महर्षि तथा अनुसूइया दोनों ही शिवाराधन में
संलग्न थे हे ऋषियो श्री महादेवजी उन दोनों की तपस्या
से प्रभावित होकर ऋषि मुनि देवगणों को साथ लेकर वहाँ
पहुँचे और गङ्गादि पवित्र नदियाँ भी उनके दर्शनार्थ वहाँ
आ गई उनकी तपस्या की सराहना करते हुए सब बोले
सभी ऋषि मुनि सभी तपस्या करते चले आ रहे हैं किन्तु
मुनि की पत्नी अनुसूइया जैसी पति सेवा स्वं तपस्या किसी
की नहीं की दोनों धन्य हैं इस प्रकार सभी देवता ऋषि
मुनि उन दोनों की कीर्ति गायन करते २ अपने २ धाम
चले गये किन्तु भगवान शङ्कर अत्यन्त प्रसन्न होकर
अपने सम्पूर्ण अंशों से वहाँ रुके रहे केवल अंशी भाव से कैला-
स पर पधारे पतित पावनी गंगाजी भी अनुसूइया के पति-
व्रत के प्रभाव से उस पर अनुग्रह करती हुई प्रेम बढ़ वहाँ
गई और बोली आज जब तक मैं पति परायण अनुसूइया
का हित न कर लूँ तब तक कहीं न जाऊँगी अनावृष्टि चौवन
वर्ष तक रही किन्तु महर्षि अत्रिजी जैसे ही तपस्या में लगे
इसी प्रकार अनुसूइया जी भी पृथ्वी पर वर्षा न होने तक
जल न लेने की प्रतिज्ञा में लगी रहीं अब उनकी इस तपस्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्दन का तेल खाने से सूजाक नष्ट होता है
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी, सस्ता
Tuesday the 15th May 1973.
रा० वैशाख २५ शकः १८९५ ४ । ١٣٩٣ ربيع الثاني ११ شنبه
मंगलवार १५ मई सन् १९७३ वैशाख शु. १३ सं. २०३०
घ. ३।५१ चित्रा ४।१६ र. उ. ५।१८ र. अ. ६।३१
फ. १३८० प्र. विशाख २८ बं. ज्येष्ठ १ ने. २ गते

श्री नृसिंह चतुर्दशी १४, ग्यारहवीं शरीफ शिवपुराण मे
(चौथा अध्याय) (अत्रीश्वर की महिमा वर्णन)

गंगा मे लय के कारणों गंगा नहीं सकुन। अत्रीश्वर पलाय से मन्दाकिनि जल कुण्ड।
सूतजी बोले हे ऋषियो इस प्रकार तप करते करते एकबार महर्षि
अत्रिजी ने तप समाधि से जाग कर पत्नी से कहा हे प्रिये मुझे तो
जोरों से प्यास लग रही है कहीं से जल लाओ इतना सुनते ही पति
भक्ता अनुसूइया कमंडल लेकर जल लाने के लिये वन मे
चल पड़ी जल को इधर उधर ढूंढने लगी इतने में श्री गंगाजी
ने देखा कि अनुसूइया जी अपने पति के लिये जल लाने को इधर
उधर व्याकुल होकर फिर रहीं हैं तब तो स्वयं श्री गंगाजी अद्भुत
शृंगार करके रूपवती होकर अनुसूइया के पास आकर
मधुर वाणी से बोलीं देवी मैं आप से बहुत प्रसन्न हूँ कहो
इस समय आप कहाँ जा रहीं हैं इतनी मधुर एवं प्रिय वाणी
सुनकर चकित होती हुई प्रेम पूर्वक अनुसूइया बोली हे भगवति
आप कौन है कहाँ से आ रही हैं तब श्री गंगाजी बोली हे पति
परायणे मैं गंगा हूँ केवल आप के दर्शन करने आयी हूँ
तुम्हारे पातिव्रत धर्म शिवपूजन आदि व्रत से संतुष्ट होकर
मैं आप के पास ही रह रही हूँ मैं तुम्हारा कुछ हित करना चाहती
हूँ इस लिये कुछ मुझसे वर मांगिये श्री गंगाजी के इस प्र-
कार के वचन सुनकर हाथ जोड़ कर अनुसूइया ने —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३५

केशर और घीका नाश लेनेसे अधकपारी दूर होती है
(वृश्चिक का चन्द्र २७।२४) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 16th May 1973.

रा॰वैशाख २६ शक॰१८९५ ।१३९३ रबीउलआख़िर १२ ...
बुधवार १६ मई सन् १९७३ वैशाख शु॰ १४ सं २०३०
घ॰ ६।२८ स्वाती ८।५२ र॰ उ॰ ५।१७ र॰ अ॰ ६।३१
फ॰ १३८० प्र॰ विशाख २९ बं॰ ज्येष्ठ २ ने॰ ३ गते

व्रत की पूर्णिमा १२

प्रणाम करके नम्रता से कहा - हे देवी मातेश्वरी यदि आप प्रस
हैं तो सबसे पहिले मेरे इस कमण्डल को जलसे भर दें यह सु
कर श्रीगङ्गाजीने हे कल्याणी आप पृथ्वी मे एक गड्ढा खोदें
दि सब अनुसइयाजीने पृथ्वी मे एक गड्ढा खोद दिया श्री
गंगाजी उसी गड्ढे मे समा गई श्री अनुसुइयाजीने विस्मित
होकर अपना कमण्डल उस जल से भर लिया फिर कहने ल
पतित पावनी गंगे यदि सचमुच तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो
मेरे कहने के अनुसार तबतक इसी गड्ढे में आप इसी प्रक
विराजमान रहो जबतक कि मेरे पतिदेव यहाँ आकर
का दर्शन न करलें इतना सुन कर श्री गंगाजी वहीं
जलरूप होकर स्थिर हो गई इतने में श्री अनुसुइया
शीतल जल लेकर पतिदेव के पास पहुँची उन्हें जल का
इल दिया ऋषिदेव प्यासे तो थे ही उस जल द्वारा आचम
करके प्रेमपूर्वक जल पान किया फिर कहने लगे य
तो जल बहुत मधुर और सा ... है इसका स्वाद तो पीहे
जल से निराला है यह कह कर प्रतिजी इधर उधर देखने लगे
उन्हें वर्षा न होने के कारण सभी वृक्ष फल फूल हीन ...
ई दिये पड़े देख कर उन्हें आश्चर्य की सीमा न रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अशोकके रसमें समुद्रफेन घिसकर देनेसे मृगी दूर होती है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Thursday the 17th May 1973.

रा.वैशाख २७ शकः १८९५ ४ | پنجشنبه ۱۳ ربیع الآخر ۱۳۹۳
गुरुवार १७ मई सन् १९७३ वैशाख शु. १५ सं. २०३०
घ. १०|१६ विशाखा १४|१४ र. उ. ५|१७ र. अ. ६|३२
फ. १३८० प्र. विशाख ३० वं. ज्येष्ठ ३ ने. ४ गते

स्नानदान की वैशाखी पूर्णिमा, १५ बुद्ध जयन्ती

फिर पत्नी से बोले हे प्रिये क्या अभी तक वर्षा हुई ही नहीं सुन
कर अनुसूइया ने कहा हे पति देव आप के शिव आराधना से
सदाशिव के प्रताप से तथा हमारी तपस्या से सन्तुष्ट हो
कर श्री गङ्गाजी यहीं पधारी हैं और इसी आश्रम के पास ही
विराजमान हैं यह परम स्वादिष्ट सीतल एवं मधुर जल
उसी का है सूत जी बोले ऋषियो ऐसा कहके अनुसूइ
या जी अपने पति को साथ लेकर श्री गंगाजी के समीप
पहुँच गई और इशारा करके उस गड्ढे मे श्री गंगाजी
के, दर्शन कराने लगी महर्षि ने दर्शन किये कि उसी गड्ढे मे
महारानी गंगाजी अपनी तरल तरङ्गों से लहराती हुई
दिब्य दर्शन दे रही है तब महर्षि ने धन्य २ कहकर स्तुति करना
प्रारम्भ किया फिर दोनो पति पत्नियों ने मिलकर गंगास्ना
न किया फिर दैनिक सन्ध्या वन्दन आदि नित्य के कर्म
भी किये उसी समय श्री गंगाजी की इच्छा भी पूर्ण हुई
तब अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने स्थान पर जाने को श्री गंगा
जी ने दोनेसे आज्ञा मांगी इतना सुनते ही अनुसूइयाजी ने
नम्रता से कहा पतित पावनी गंगाजी यदि सचमुच मुझपर
... हो तो मेरी इस अभिलाषा को पूर्ण करें आप इसी तपो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़ुआ तेल सिर में लगाने से नींद आती है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Friday the 18th May 1973.
रा॰ वैशाख २८ शकः १८९५ ४ [illegible]
शुक्रवार १८ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ १ सं॰ २०३०
घ॰ १४।५० अनुराधा २०।१९ र॰ उ॰ ५।१६ र॰ अ॰ ६।३२
फ॰ १३८० प्र॰ जेठ १ बं॰ ज्येष्ठ ४ ने॰ ५ गते

प्रवाह चले तब महर्षि अत्रि ने भी कहा है देवि मैं भी यही प्रार्थना करता हूँ आप हमारे सहायक रूप होकर यहाँ विराजें हम कृतार्थ हो रहें तब श्री गंगा जी ने अनुसूइया जी से कहा यदि आप मुझे अपने आश्रम के समीप ही रखना चाहते हैं तो मेरी भी एक इच्छा पूर्ण करो वह यह है कि आप ने जो अपने पतिदेव के लिये शिवार्चन जो किया है उसके एक वर्ष का फल मेरे लिये अर्पण कर दें तभी मैं आप लोगों के तथा ऋषि मुनियों के हित के लिये वहाँ निवास करूँगी इतना सुनकर पतिव्रता परायण साध्वी अनुसूइया ने शिवार्चन किये हुए पूजन के एक वर्ष का सर्वोत्तम फल श्री गंगा जी को अर्पण कर दिया इसके बाद भगवान शङ्कर भी श्री अनुसूइया जी के सेवा धर्म के प्रताप से प्रसन्न होकर शीघ्र ही उस पार्थिव लिंग से साक्षात् रूप में प्रकट हो गये और अतीव प्रसन्न होकर अनुसूइया से बोले हे कल्याणी मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूँ वर माँग लो तब पति पत्नी दोनों ने भगवान शंकर के दर्शन किये और विधि पूर्वक पूजन करके स्तुति करते हुये नम्रता से बोले हे स्वामिन यदि आप प्रसन्न होकर वर देना चाहते हैं तो आप की अतीव कृपा होगी आप जगदम्बा श्री पार्वती जी के सहित इस तपोभूमि में विराजें फिर वर्षा द्वारा अन्न आदि यहाँ उत्पन्न हो चर्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाड़ाके बुखारमें आककी बोंड़ी मिर्च मिलाकर खिलावे
(धन का चन्द्र २६।५२) सोना चाँदी तेज

Saturday the 19th May 1973.

रा. वैशाख २९ शकः १८९५ ४ |३१३ ربیع الاول ١٠ شمسی
शनिवार १९ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ. २ सं. २०३०
घ. १९।५३ ज्येष्ठा २६।५२ र. उ. ५।१६ र. अ. ६।३३
फ. १३८० प्र. जेठ २ बं. ज्येष्ठ ५ ने. ६ गते

यह सुन कर भगवान शंकरने तथास्तु कह दिया फिर अत्रीश्वर रूपसे उस तपो भूमि वन मे विराजमान हुए और गंगा जी भी मन्दाकिनी से विख्यात हो कर उसी कुण्ड में सदा के लिये निवास कर गई ऋषियो यह कुण्ड केवल एक हाथ में जितना था श्री गंगा जी उसी कुण्ड में से अपनी माया द्वारा अब भी धारा रूपसे प्रवाहित हो रही हैं तब सुकाल हो गया उस तपोवन से भागे हुए ऋषि मुनि सभी लौट आये ऋषि अत्रि जी का आश्रम हरा भरा हो गया सूत जी बोले ऋषिगण यह मैंने आप को महर्षि अत्रि तथा पतिव्रता अनुसूया जी की भक्ति की कथा सुना दी है इसे प्रेम पूर्वक सुनने सुनाने वाले मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते है उसे भगवान शङ्कर की अविचल भक्ति प्राप्त होती है ॥ शिव पुराण कोटि रुद्र संहिता अध्याय ४

छान्दोग्योपनिषत् आठवां खण्ड

हे सौम्य ये अन्न, जल, तेज रूपी तीनों देवता पुरुष के शरीर में आकर त्रिविध त्रिविध हो जाते हैं यह मैंने पहिले ही बताया है इसी से मरने वाले पुरुष की वाणी मन मे लीन हो जाती है, मन प्राण में लय हो जाता है, प्राण तेज में लय होता है और तेज और तेज पर देवता में लीन हो जाता है यह जो अणिमा (अंग रूप हो जाता है) वही सब है वही आत्मा है और हे श्वेतकेतु वही तू है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौथिया बुखारमें खटमलको गुड़में लपेटकर खिलावे
(धन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Sunday the 20th May 1973.

रा॰वैशाख ३० शक॰१८९,२४ | ١٣٩٣ ربیع الاخر ١٧ | ایک شنبه
रविवार २० मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ २ सं॰ २०३०
घ॰ २२।१ मूल ३३।२४ र॰ उ॰ ५।१५ र॰ अ॰ ६।३३
फ॰ १३८० प्र॰ जेठ ३ बं॰ ज्येष्ठ ६ ने॰ ७ गते

एक पन्ना छोड़कर लिखा गया
श्रीगणेश ४ व्रत

प्रेस्थान चले तब महर्षि अत्रि ने भी कहा है देवि मैं
यही प्रार्थना करता हूँ आप हमारी सहायता रूप होकर
हो विराजे हम कृतार्थ होते रहे हैं तब श्री गंगाजी ने अनु
सूइया जी से कहा यदि आप मुझे अपने आश्रम के लि
ए ही रखना चाहते हैं तो मेरी भी एक इच्छा पूर्ण करो व
यह है कि जो आपने पतिदेव के लिये शिवार्चन किया
उसके एक वर्ष का फल मेरे लिये अर्पण कर दें तभी
आप लोगों के तथा ऋषि मुनियों के हित के लिये वहीं
स को जी इतना सुनकर पतिपरायणा साध्वी अनुसू
ने शिवार्चन किये हुये पूजन के एक वर्ष का सर्वोत्तम
फल श्री गंगा जी को अर्पण कर दिया इसके बाद श्री
भगवान शंकर भी श्री अनुसूइया जी के सेवा धर्म के
प्रताप से प्रसन्न होकर शीघ्र
यह कथा पहिले हो गई है जो यहां से लिखा

जो अन्न भक्षण किया जाता है वह तीन प्रकार से बट जाता है जो स्थूल
तम अंश है वह विष्टा बन जाता है जो मध्यम अंश है वह रसादि हो
मांस बन जाता है जो अति सूक्ष्म है वह मन बनता है जो जल पिया जा
वह तीन प्रकार से विभाजित होता है उस का अत्यन्त स्थूल अंश मूत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरानी रूईका धुआँ नाश लेनेसे आधीशीशी दूर होती है
(मकर का चन्द्र २६।७) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 21st May 1973.

रा. वैशाख ३१ शक: १८९५ ४ | ۱۳۹۳ ربیع الثانی ۱۷ دوشنبه
सोमवार २१ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ. ४ सं. २०३०
घ. २९।४४ पू. षा. ३९।३१ र. उ. ५।१५ र. अ. ६।३४
फ. १३८० प्र. जेठ ४ बं. ज्येष्ठ ७ ने. ८ गते

बाईसवाँ अध्याय (काशीपुरी में शिवागमन)

प्रकृति पुरुष ने तप किया काशी नगरी माहिं। कल्मष नाम क जगत को मोक्ष देत क्षण माहिं॥
सूतजी बोले सत्य सनातन। विकार रहित सदाशिव ने स्त्री पुरुष के भेद से स्वरूप धारण कर के प्रकृति तथा पुरुष को पैदा किया उसने विचार-किया कि हमारे माता पिता कौन होंगे। जो कि दिखाई नहीं देते तब तो वे बहुत व्याकुल हुए इतने में आकाशवाणी हुई कि तप करने से जगत उत्पन्न होता है इसी कारण तुम भी तप करो तब दोनों बोल उठे स्वामिन तप तो हम करें पर कहाँ बैठ कर करें हमें तो कहीं स्थान भी कहीं दिखाई देता नहीं देता। सूतजी बोले प्रकृति पुरुष अभी इस प्रकार कह ही रहे थे तब भगवान शङ्कर ने सभी सामग्रियों से भरपूर अत्यन्त प्रकाशमान परम सुन्दर एक नगर रचकर उन दोनों के सामने उपस्थित कर दिया तब दोनों शिव स्मरण करके उस नगर मे तप करने लग गये इस प्रकार तप करते करते उन्हें बहुत सम समय लगा तब अधिक परिश्रम के कारण उनके शरीर से पसीने की बूँदें निकल आयीं तब उन्होंने विस्मित होकर सिर हिलाया तो उनके कान से एक मणि टपक पड़ी इसी कारण इस स्थान का नाम मणिकर्णिका नाम से प्रसिद्ध हुआ वह परम पवित्र तीर्थ है पाँच कोस की [illegible] वह नगर जल के प्रवाह में बहने लगा उस समय [illegible] उनकी पत्नी प्रकृति उसी नगर में [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात को सोते समय गरम दूध पीना लाभकारी है

(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Tuesday the 22nd May 1973.

रा० ज्येष्ठ १ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الثانی ١٨

मंगलवार २२ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ० ५ सं. २०३०

घ. ३३।४५ उ. षा. ४५।२५ र. उ. ५।१५ र. अ. ६।३४

फ. १३८० प्र. जेठ ५ बं. ज्येष्ठ ८ ने. ९ गते

तब भगवान शङ्कर की प्रेरणा हुई तो भगवान विष्णुजी की ना
भिकमल से ब्रह्माजी प्रगट हो गये ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना
आरम्भ कर दी पचास करोड़ योजन लम्बा तथा इतना ही चौ
ड़ा ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड रच डाला जिस में आदि भूत से चौदह भुव
न स्वयंभूम् निर्मित थे तब भगवान शङ्कर ने विचार किया
कि संपूर्ण जीव तो कर्मों के बन्धनों में जकड़े रहेंगे तो
मुझे किस प्रकार पा सकेंगे ऐसा सोच कर उन्होंने अ
ने त्रिसूल से पाँच कोस नगरी उतार कर ब्रह्माण्ड से
अलग रखी फिर उसी में अपनी अविमुक्ति ज्योतिर्लिं
ग की स्थापना कर दी तब मुक्ति की अभिलाषा वालों को
काशी का सेवन करना चाहिये इस प्रकार की आज्ञा शङ्क
र जी ने की है ब्राह्मणो काशी जी तो ब्रह्माजी के दिन व्यतीत
करने पर भी प्रलय काल में भी नष्ट नहीं होगी करोड़ों
[illegible] प्रकार की हत्यादिकों के पाप महा पाप इसी के सेवन
से नाश हो जाते हैं मोक्ष देने में तो यह प्रसिद्ध एवं सर्व
श्रेष्ठ है इस की महिमा सहस्त्रों वर्ष तक तो कही नहीं जा
सकती सूतजी बोले यह तो मैं संक्षेप में अपनी बुद्धि के
अनुसार कुछ कहता हूँ जो परमात्मा समस्त प्राणियों के
मध्य में तो सत्वरूप से हैं और बाहिर तामस रूप से है
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजयक्ष्मा पर ताजे आँवले का रस शहद में खाये

(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Wednesday the 23rd May 1973.

रा॰ज्येष्ठ २ शकः १८९५ ४ | १३९३ ربیع الثانی [illegible]
बुधवार २३ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ ६ सं. २०३०
ध॰ ३६।४१ श्रवण ४९।१४ र॰ उ. ५।१४ र॰ अ. ६।३५
फ. १३८० प्र. जेठ ६ बं. ज्येष्ठ ९ ने. १० गते

हुए भी गुणातीत कालाग्नि रूप रुद्रजी ने स्तुति करते हुए कहा हे स्वामिन् विश्वनाथ मैं आप के अंश से उत्पन्न हूँ आप मुझ पर कृपा करें जगत् का कल्याण करना आप के आधीन है इसी निमित्त से मातेश्वरी श्री पार्वतीजी के साथ इस पवित्र काशीपुरी मे आप सदा के लिये विराजें हे स्वामिन् तब विश्वनाथ शंकर भगवान श्री रुद्रजी की प्रार्थना से जगत के कल्याण के लिए इसी काशीपुरी में विराजमान हुए ॥

(तेईसवाँ अध्याय)

श्री विश्वेश्वर महिमा

काशी की महिमा कही मोक्ष मुक्ति की दैन। कर्म तीन वर्णन करें परम गोप्य है वैन

सूतजी बोले हे मुनियो अब श्री काशीजी मे स्थित अविमुक्त शिव लिंग की महिमा आप को सुनाता हूँ इसकी महिमा तो एक बार श्री पार्वतीजी ने सदा शिव से पूछी थी इस विषय में भगवान शंकरजी ने श्री पार्वती से कहा था सुनिये शंकरजी बोले हे प्रिये समस्त प्राणियों को मुक्ति देने वाला ही सर्व श्रेष्ठ यह काशी धाम है यह मेरा ही गुह्य स्थान है यहाँ सिद्ध पुरुष आकर मेरे नियमों के अनुसार आचरण करते हुए मेरे ध्यान को रूपों का वर्णन करते हैं हे कल्याणी मेरे भक्त तथा ज्ञानी जन अन्य तीर्थों पर जावें मान जावें किन्तु काशी तो दोनों को मोक्ष देने वाली है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाज बन्द हो तो शीतल चीनी का नाश ल
(कुम्भ का चन्द्र २०|५०) सोना चाँदी सम

Thursday the 24th May 1973.

रा० ज्येष्ठ ३ शक: १८९५ ४ ۱۳۹۳ ربيع الاول ٢٠ پنجشنبه
गुरुवार २४ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ० ७ सं० २०३०
घ० ३८|३५ धनिष्ठा ५२|२६ र० उ० ५|१४ र० अ० ६|३५
फ० १३८० प्र० जेठ ७ बं० ज्येष्ठ १० ने० ११ गते

ये चाहे कहीं भी मृत्यु को प्राप्त करें किन्तु इनके लिये मुक्ति तो सिद्ध है इस पवित्र क्षेत्र की महिमा है पार्वती जी सुनो इस पुरी मे किसी भी अवस्था के मनुष्य की मृत्यु हो उसको मोक्ष प्राप्त हो जाती है स्त्री चाहे शुद्ध हो चाहे अशुद्ध सुहागिन हो या विधवा वन्ध्या हो या रजस्वला कन्या हो या प्रसूता ऐसी संस्कार रहित की भी मुक्ति हो जाती है वह केवल क्षेत्र मे आकर मृत्यु प्राप्त करे यहाँ न किसी उत्तम जाति वर्ण, ज्ञान, कर्म, दान, संस्कार, स्मरण मेरा भजन पूजन आदि किसी की भी आवश्यकता नहीं है इसमे तो केवल आकर मृत्यु प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त है मुक्ति तो उनको स्वत: सिद्ध है हे उमे यह मेरा काशी धाम अत्यन्त गोपनीय ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता भी इसकी महिमा नहीं जान सके जिस मुक्ति के लिये योगी जन अनेकों जन्मों को पाकर कठिन तपस्या किया करते हैं वही मुक्ति यहाँ केवल शरीर त्यागने से ही प्राप्त होती है प्राणी किसी प्रकार का भी योग्य अयोग्य कर्म करके पाप कर्म क्यों न कर बैठे कितना ही अधर्मी क्यों न हो इस पुरी मे मृत्यु द्वारा उसका आवागमन का जाल छूट जाता है यदि विचार पूर्वक भक्ति श्रद्धा से वहाँ रह कर मुझ शिव शंकर का ध्यान अर्चन आराधना स्मरण एवं तप [illegible] है [illegible] पापी मे नहीं [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँख चिपकने पर अकोलकी जड़का रस पानीमें लेप करे

(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 25th May 1973.

रा॰ ज्येष्ठ ४ शकः १८९५ ४ ।
शुक्रवार २५ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ. ८ सं. २०३०
घ. ३९।४ शतभिषा ५४।२२ र. उ. ५।१४ र. अ. ६।३६
फ. १३८० प्र. जेठ ८ बं. ज्येष्ठ ११ ने. १२ गते

श्री शीतलाष्टमी ८

जो तो मेरे स्वरूप से तन्मय हो जाते है यह तीर्थ सभी को मुक्ति देता है इसी प्रकार पापी जन यहाँ मृत्यु को नहीं पाते तो उन्हें अपने कर्मों के अनुसार कई जन्म लेने पड़ते हैं कर्मों के फल भोग लेने पर ही उनको मुक्ति मिलती है यदि इस प्रकार के [illegible] धाम में रह कर कोई जन दुष्कर्म कर बैठता है तो उसे मृत्यु के बाद दश हजार वर्ष की नरक भोगना पड़ता है फिर जाकर मुक्ति होती है इस परम पवित्र क्षेत्र में बिचार करके ही निवास करना श्रेष्ठ है हाँ यह तो निश्चित है कि किया हुआ शुभ अथवा अशुभ कर्म क्यों न हो वह फल कर्म करोड़ों कल्पों तक बिना भोगे नहीं छूटता शुभ कर्म स्वर्गदायक होता है अशुभ घोर नरक दायक होता है ये दोनों प्रकार के कर्म जन्म मरण देने वाले हैं अधिक शुभ कर्मों के कारण किसी उत्तम घर में जन्म होता है एवं अधिक दुष्कर्म के कारण नीच किंवा दरिद्री अथवा हीन जाति के घर में जन्म होता है देवि कर्म तीन प्रकार के है -(१) पहिले जन्म मे किये कर्म संचित होते हैं।(२) इस जन्म में किए हुए क्रियमाण हैं।(३) इन दोनों के फल रूप जो इस शरीर से भोगे जा रहे हैं उन्हें प्रारब्ध कर्म कहते हैं इनमें संचित तथा क्रियमाण कर्म तो दानादिक यानी दान पुण्य करने से नाश हो जाते हैं किन्तु प्रारब्ध कर्म बिना भोगे नाश नहीं होते संचित क्रियमाण कर्म—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुर्गी का गू लेप करने से कुत्ते का जहर जाता है
(मीन का चन्द्र ३९।२२) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 26th May 1973.

रा० ज्येष्ठ ५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ ربیع الثانی، ۲۲ شنبه
शनिवार २६ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ० ९ सं. २०३०
घ० ३८।१७ पू. भा. ५५।२ र० उ. ५।१३ र० अ. ६।३६
फ. १३८० प्र. जेठ ९ बं. ज्येष्ठ १२ ने. १३ गते

काशीपुरी को छोड़ कर अन्य किसी क्षेत्र पर भली भाँति
नष्ट नहीं हो पाते जिन मनुष्यों ने पहिले जन्म में वि
र पूर्वक काशी निवास किया है वे ही दूसरा जन्म पा
काशी में शरीर छोड़ते हैं और कोई भी नहीं काशीपुरी
गंगा स्नान ही संचित एवं क्रियमाण कर्मों का नाश
प्रारब्ध कर्म काशी धाम में रह कर मृत्यु प्राप्त होने से
तुरन्त ही नाश हो जाते हैं काशी का निवासी यदि कारण
पाप कर बैठता है तो उसे काशी के पुण्य प्रताप से फिर
में जन्म मिलता है तब जाकर पापों से मुक्त होता है इस
काशी में किसी ब्राह्मण को बसाने वाले को परम पुण्य
प्राप्ति होती है उसे परमधाम पद मिलता है किसी ने
ले तो काशी निवास किया फिर किसी सिद्धि के हेतु प्रया
राज चला जाता है उसका देह पात होता है उसे काशी नि
स का फल नहीं मिलता यदि मनोरथ सिद्धि के बिना
प्रयागराज जाकर बसता है वहीं उसकी मृत्यु होने पर कि
पुण्य की प्राप्ति नहीं होती है कल्याणी भगवान् विष्णु तो
नई सृष्टि रच कर मेरी प्रेरणा से अभीष्ट फल देते हैं।
शिवपुराण तेईसवाँ अ० सं०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीतल ज्वर में कटई की जड़ का काढ़ा दें
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Sunday the 27th May 1973.
रा॰ज्येष्ठ ६ शकः १८९५ ४ ।३१३ [illegible] ربیع الثانی ۲۳
रविवार २७ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ १० सं. २०३०
घ॰ ३६।१४ उ. भा. ५४।३१ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।३७
फ॰ १३८० प्र. जेठ १० बं. ज्येष्ठ १३ ने. १४ गते

(चौंतीसवाँ अध्याय)

॥ विष्णु भगवान् को सुदर्शन चक्र प्राप्ति ॥

विष्णु ने कर कठिन तप दानव वध के हेतु। चक्र सुदर्शन प्राप्त कर यश पायो नर केतु ॥

ऋषि कहने लगे – हे महाभाग सूतजी अब सो हमें आप हरीश्वर नाम के, ज्योतिर्लिंगों की कथा सुनाइये इसी हरीश्वर शिवलिंग पूजन से विष्णु जी ने सदाशिव से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया यही आख्यान हम सुनाना चाहते हैं सूतजी बोले हे ब्राह्मण गण पहिले अत्यन्त बलवान दैत्य हुए हैं जो सभी प्राणियों को दुःख देते हुए धर्म का विनाश करने पर तुले हुए थे उन्हीं राक्षसों से दुःखित होकर देव गण विष्णु के पास पहुँचे और अपना दुःख जाकर सुनाया यह सुनकर भगवान् विष्णु जी ने कहा हे देवताओ तुम मत भय करो मैं भगवान शंकर का पूजन करता हूँ उसी के द्वारा तुम्हारे दुःखों का विनाश होगा सूतजी बोले इस प्रकार श्री विष्णु जी के परम शान्ति देने वाले बचन सुनकर सभी देवता निर्भय होकर अपने अपने लोकों में चले गये उसके बाद विष्णु जी शिवपूजन के लिये कैलास पर पहुँचे वहाँ कुण्ड के मध्य में अग्नि स्थापित की फिर शिव पार्थिव लिंग की विधि के अनुसार पूजा करके तपस्या आरम्भ कर दी भगवान विष्णु अपना दृढ़ संकल्प करके बैठे थे कि मैं भगवान शिव को संतुष्ट करके ही अपनी तपस्या छोड़ूँगा एक पल भर भी यहाँ से नहीं हिलूँगा। –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८६

मुर्छा में जायफर की बुकनी सुँघावे
(मेष का चन्द्र ४२।४७) सोना चाँदी महंगा

Monday the 28th May 1973.

रा॰ ज्येष्ठ ७ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الآخر ۲۴ دوشنبه
सोमवार २८ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ ११ सं. २०३०
घ॰ ३३।७ रेवती ४२।४७ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।३७
फ. १३८० प्र. जेठ ११ बं. ज्येष्ठ १४ ने. १५ गते

अचला ११ एकादशी व्रत सबका, भद्रकाली ११ (पञ्जाब)

इस प्रकार कठोर तपस्या करते-करते विष्णुजी को बहुत
समय व्यतीत हो गया किन्तु शंकर सन्तुष्ट न हुए तब ही
ने शिवसहस्रनाम का पाठ आरम्भ कर दिया एक एक
मन्त्र बोलकर एक-एक कमल का पुष्प चढाने लगे तब
एक बार विष्णु की भक्ति की परीक्षा लेने के लिये पूजन
के निमित्त हजार की संख्या में लाये हुये कमलों मे से एक
कमल सदाशिव ने इधर उधर कर दिया। तब पूजा करते
एक पुष्प कम पड गया भगवान विष्णु को अत्यन्त आश
्चर्य हुआ वे इधर उधर ढूँढने लगे पुष्प कहीं से न ही मिल
तब भगवान विष्णुजी ने कमल के समान अपना नेत्र
निकाल लिया जैसे ही शिव अर्पण कर दिया तब भगवान
शंकर अत्यन्त सन्तुष्ट होकर प्रत्यक्ष हो गये और बोले
हे विष्णुजी तुम्हारी इस भक्ति द्वारा मैं अत्यन्त प्रसन्न
हुआ हूँ मन-चाहा वर माग लो विष्णु बोले हे स्वामिन
समय दैत्यों ने उपद्रव मचा रखा है उनका वध करने
लिये मेरे पास का तो शस्त्र सामर्थ्य नहीं रखता इस
कारण मैं आप की शरण आया हूँ सूतजी बोले तब
भगवान शंकर ने विष्णुजी को अत्यन्त-चमकता
सुदर्शन-चक्र दे दिया उसी दिव्य शस्त्र से विष्णुजी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४८

मकोय की जड़ सरमें बाँधने से नींद आती है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Tuesday the 29th May 1973.

रा. ज्येष्ठ ८ शाकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ربیع الثانی ٢٥ [illegible]
मंगलवार २९ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ. १२ सं. २०३०
सू. [illegible] फ. १३८० प्र. जेठ १२ बं. ज्येष्ठ १५ नं. १६ गते

चतुर्थ कोटि रुद्र संहिता ६४८

पैंतीसवाँ अध्याय भौम प्रदोष १२ व्रत शिव सहस्रनाम

लक्ष्मी पति जगजप कियो, सहस्र नाम के मांग। कमल पुष्प अर्चन करें सनीत मनायो भाग्य॥
सूत जी बोले अब मैं आप लोगों को शिवजी के सहस्रनाम सुनाता हूँ कि जिनका उच्चारण विष्णुजी ने किया था सुनिये।
विष्णु बोले हे सदा शिव सृष्टि के हर्त्ता सुखदाता तथा दुःख के हरने वाले पुष्टि देने वाले परि पुष्टि नेत्र धारी आप को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को चाहने वाले सदा सेवा किया करते हैं श्रेष्ठ आचरणवान् प्रजा के सुखदाता एवं संहार कर्ता ॥१॥ सब के ईश परब्रह्म परमात्मा मस्तक पर चन्द्रमा से शोभायमान दुष्ट स्वरुप, विश्व के पालक, वेदान्त तत्व के के ज्ञाता, कपाली, लाल, २ स्वं श्याम, २ जटाधारी अविनाशी ध्यान के आधार स्वरुप, ॥२॥ पार्वतीनाथ प्रथमादि गणों के स्वामिन् आकाशादि अष्ट मूर्तियों वाले, विपुल स्वरुप, धर्म, अर्थ काम स्वार्गादि की प्राप्ति के साधन, विज्ञान के पूर्ण ज्ञाता देवाधिदेव, त्रिनेत्र धारी, विपरीत देव, ॥३॥ सारे देवताओं में महादेव, परम चतुर कुशल एवं रक्षक, पुष्ट बलवान, विम्बरूप, त्रिनेत्र, वाणी के अधिपति, सारे देवों में बड़े, सब प्राणियों के ज्ञाता ब्रह्म लक्षणों वाले ॥४॥ बृषभ के सवार, सर्वेश्वर, पिनाक धनुष वाले, नन्दी ईश, आयुधारी, अद्भुत वेष वाले, त्रिकाला बाधित, अज्ञानमय अन्धकार के नाशक, महायोगी रक्षक, ब्रह्मांड हर्ता ॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूध जलेबी खाने से ताकत बढ़ती है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Wednesday the 30th May 1973.

रा॰ज्येष्ठ ९ शकः१८९५ ४ [illegible]
बुधवार ३० मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ १३ सं. २०३०
घ॰ २४।१० भरणी ४७।२५ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ.६।३८
फ. १३८० प्र. जेठ १२ वं. ज्येष्ठ १६ ने. १७ गते

शिवपुराण में

मास शिवरात्रि १३ व्रत

जटाधारी, कालों के भी काल, व्याघ्र आदि का चर्म वस्त्र की भाँति धारण करने वाले, उत्तम विभव वाले, ओंकार स्वरूप। पापियों को दण्ड देने वाले। सभी प्राणियों में निवास करने वाले, सेवाके एवं भजनयोग्य दुर्वासा का अवतार ग्रहण करने वाले त्रिपुर दैत्य के विनाशक ॥६०॥ श्रेष्ठ शस्त्रधारक, कार्तिकेय स्वामी के पिता, परब्रह्म, प्रकृति से परे, आदि अन्त एवं मध्य से रहित, पर्वतों के स्वामी उमानाथ, कुबेर के भ्राता सुन्दर कण्ठधारी, सर्व श्रेष्ठ तथा वर्ण वाले ॥७०॥ सच्चे स्वभाव, समाधिगम्य, धनुर्धारी, नीलकण्ठ, अद्भुत प्रकाशवान विशालनेत्र, तथा संहार के समय मृग रूप, जीवों के लिये शिवकारी देवेश, सूर्य के प्रचण्ड ताप की तरह दुष्टों को तापित करने में समर्थ, धर्म के स्वामी ॥८०॥ सहनशक्ति, शीतल कान्ति, वैभवों के स्वामी, भगवान् के नेत्र निकालने वाले क्रोधी, जीवों के नाथ, गरुड़ रूप धारक, भक्तों के प्रेमी, तपस्वी, सबके दाता, दयासागर ॥९०॥ परम चतुर, जटाजूटधारक, काम के दण्ड दाता, श्मशान में सूक्ष्मरूप से सब में रहने वाले, सर्व समर्थ, सृष्टिकर्ता [illegible] ॥१००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आँवले का पानी बालोंको मजबूत करता है
(वृष का चन्द्र १।३०) सोना चाँदी तेज

Thursday the 31st May 1973.

रा० ज्येष्ठ १० शक:१८९५ ४ ।३१३ ربيع الاخر ٢٧ بنج‌شنبه
गुरुवार ३१ मई सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ० १४ सं. २०३०
घ० १८।४० कृत्तिका ४३।४४ र० उ. ५।१२ र० अ. ६।३८
फ० १३८० प्र. जेठ १४ बं. ज्येष्ठ १७ ने. १८ गते

वटसावित्री गौड, श्राद्ध की अमावस्या ३०

शिवपुराणमें

संसार को आवागमन से छुड़ाने में महौषध, सोमरस पीने वाले, अमृतपान करने वाले, अत्र महातेजस्वी, उत्तम, कान्तिमान्, प्रकाशमय, जलरूप, मृत्युरहित, अन्नरूप प्रतापी, ॥१०१॥ अमृतस्वामी, संसार से पार कराने वाले, स्वर्ग, पृथ्वी पशु, वाणी, जल एवं इन्द्रियोंके स्वामी रक्षक, विज्ञानसे प्राप्य, समयसे अविनाशी, नीतिज्ञ उत्तमनीति रूप, शुद्ध अन्तःकरण, चन्द्ररूप, ॥१२०॥ सोमरस में श्रेष्ठ, सदासुखी, अजात शत्रु, स्वयं प्रकाश, माननीय देवताओं को हवि, पहुँचाने के लिये अग्निरूप लोक रचयिता, वेद तथा सूत्र रचयिता, अनादि काल रूप ॥१३०॥ सब वेदों के जानने वाले, जगत को प्रकाशित करने वाले त्रिनेत्रधारी, पिनाक धनुषवाले, पृथ्वी देव, ब्राह्मण स्वरूप, महामंगल, सुन्दर बुद्धि सम्पन्न, पृथ्वी के धारक, प्रकाश भक्तों के मनोरथ पूरक ॥१४०॥ सब के नाथ, वेद तथा ब्रह्मा के रचयिता, विश्वकारक सृष्टिरूप, सर्वज्ञ, कनेर पुष्प प्रिय, शंखनामधारी विशारद नामसे वेदशास्त्रमय, त्रिगुण मित्र ॥१५०॥ उत्तम वेद प्रवाहित गङ्गा जल सम निर्मल, कान्तिमय श्रेष्ठ सृष्टि रचना स्थिररूप [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसी की पत्ती और अदरख खाने से भूख बढ़ती है
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Friday the 1st June 1973.

रा॰ ज्येष्ठ ११ शाकः १८९५ ४ ।३७३ [illegible] २८ [illegible]
शुक्रवार १ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ कृ॰ ३० सं. २०३०
घ॰ १२।४५ रोहिणी ३९।४१ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।३९
फ. १३८० प्र. जेठ १५ बं. ज्येष्ठ १८ ने. १९ गते

स्नानदान की अमावस्या ३०

शिवपुराण में
को कर्म फल देने वाले गणसेवित ॥१८०॥ गूढ़शरीर निर्म
कीर्ति निःसंशय कामस्वरूप इच्छापूरक भस्मधारी म
के प्रेमी भस्म की शय्या पर शयन करने वालों के प्रेमी वे
स्वच्छिता ॥१७०॥ संसार चलाने वाले आत्मनिवृत्ति-
रहित धर्म समूह तथा मङ्गलरूप निष्पाप पवित्रात्म
चतुर्भुज दुष्टों के लिये असह्य दुर्लभ कठिनता से
॥१८०॥ महा कठिन असह्य शत्रुओं में चतुर विद्याओं के नि
अध्यात्मयोगी संसार के आधार सृष्टिवर्धक, सु
पुत्रों वाले भ्रमरों की भांति लोकतत्त्वज्ञाता, ना
संहार करने वाले, भस्म द्वारा पवित्रता करने वाले
अमय आत्मा वाले शुद्ध शरीर कठिनता से लभ्य स
नों से भजनीय हनुमान स्वरूप, अग्निरूप, पुराण
शत्रु विनाशक महाबली ॥२००॥ महाकुण्ड रूप अ
माया धारी देव सिद्ध गण वन्दनीय व्याघ्र चर्म गणस
के भूषण धारी महाविराट् उत्पादक सम्पूर्ण जीवों के
अमर वायुरूप स्वात्मसुखरूप अमृतपान कर्ता शोभा
॥२१०॥ पच्चीस तत्वों के मध्य में स्थित अग्निरूप क
बुद्ध सुलभ [illegible]ता से जाति एवं आश्रमों के चालक श्म
धारी ॥२२०॥ शत्रुओं को जीतने वाले आत्मस्वरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भिंडी की जड़ का चूर्ण खाने से प्रदर नष्ट होता है
(मिथुन का चन्द्र ७।२६) सोना चाँदी तेज
Saturday the 2nd June 1973.
रा॰ज्येष्ठ १२ शकः १८९५ ४ [illegible]
शनिवार २ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु॰ १ सं॰ २०३०
घ॰ ६।२९ मृगशिरा ३५।३२ र॰ उ॰ ५।१२ र॰ अ॰ ६।४०
शिवपुराण में फ॰ १३८० प्र॰ जेठ १६ बं॰ ज्येष्ठ १९ ने॰ २० गते

परिश्रम के दूर कर्त्ता, परम ज्ञानी वक्ता के नाथ, प्रमाण
रचयिता कीठनलाभ्य गरुड़ रूप वायु पर सवार ॥२३॰॥
धनुषधारी धनुर्वेदज्ञ उत्तम स्थान सत्य रूप सत्य से भाव दीनता
रहित धर्म पृथ्वी तथा धर्मस्वरूप पृथ्वी तथा धर्म के शाशक
अपार दृष्टि वाले दण्ड रूप दमन तथा निग्रह कर्त्ता ॥२४॰॥ अभिचारी
तथा मायाधारी विश्व की रचनाओं में चतुर, राग द्वेष विनाश
भक्तों को नम्र करने वाले तपस्वी जीवों के वर्द्धक, मतवाले,
छिपे काम पर विजय पाने वाले विष्णु पर प्रेम वाले उत्तम स्वभाव
सब से प्रथम ॥२५॰॥ सभी लोगों की मन की गति जानने वाले
वेगवान उद्धारक बुद्धिमान मुख्य परमात्मा अविनाशी लोक
पालक अन्तर्यामी सब में रहने वाले कल्पों के आदि कमल नेत्र
॥२६॰॥ वेद शास्त्र के अर्थ एवं सार के ज्ञाता नियम रहित
नियम आश्रित आनन्द दायक चन्द्र दायक चन्द्रमा स्वरूप सूर्य
रूप शनि रूप धूम्रकेतु रूप उत्तम मूँगे के समान शोभी शक्ति
के वश में होने वाले ॥२७॰॥ परब्रह्म मन की भाँति वेगवान
अनघ निष्पाप भक्ति रूप पर्वत वासी प्रिय श्रेष्ठ आत्मा
जगत के पिता सभी कर्मों के स्थान सदा प्रसन्न मंगल
मूर्ति मंगल सेवित ॥२८॰॥ महातपस्वी दीर्घ तपस्वी
अति स्थूल वृद्ध स्वरूप स्थिर दिन वर्षा काल सर्वव्यापक
प्रमाण रूप उत्तम ॥२९॰॥ ऋत सत्य रूप संवत्सर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eG

आकको बोंड़ी काली मिर्च नमक पेटका दर्द दूर करता है]

(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Sunday the 3rd June 1973.

रा०ज्येष्ठ १३ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱ ایک شنبہ

रविवार ३ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. २ सं. २०३०

घ. ५३|५६ आर्द्रा २१|२७ र. उ. ५|१२ र. अ. ६|४०

फ. १३८० प्र. जेठ १७ बं. ज्येष्ठ २० ने. २१ गते

रम्भा ३ तृतीया व्रत, प्रताप जयन्ती (राजस्थान), शिवपुराण में

कर्ता मन्त्रों के आधीन सबके तापक अजन्मा सर्वे निवृत्त एवं निष्पन्नरूप महातेजस्वी अति बलवान सिद्धि ॥३००॥ अतिपराक्रमी सफलस्वरूप सब आदि अधर्मजित अजेय कुबेररूप प्रकाशमय मनस् सत्यस्वरूप पापविनाशक सुन्दर कीर्ति शोभामया मालाधारक वेदवेदांग ज्ञाता मुनिप्रकाश प्रकृतिरूप जन के मोक्षपुरुषरूप लोकनाथ दुष्टजनों से आच्छ हित नित्य अमृतमय शान्तरूप बाणहस्त ॥३२०॥ प्रतापी कमण्डलुधारक धनुर्धर मन वाणी से पर अत्यन्त मायाधारी सर्वव्यापक चारमार्ग वाले में प्राणियों को प्रविष्ट कर्ता महा शब्द कर्ता महाउत्स ॥३३०॥ महाबली श्रेष्ठ बुद्धि महावीर भूतगण सेवित त्रिपुरदैत्य विनाशक रात्रि में विचरने वाले शक्तिशाली महाकान्ति अजेय शरीर शोभामय ॥३४०॥ सब प्राणि यों के मन की गतिज्ञाता शास्त्र रचयिता विधि माया र ता नियत तथा स्थिर आत्मा, चररूप तेजों के भी तेजरूप कान्तिरूप सबके ॥३५०॥ ओंकारस्वरूप ज्ञानवान मन्त्ररूप समभाव तत्त्वरूप मोक्षरूप सत्ययुगादि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

258

भाँग का धुँआ बवासीर को आराम करता है
(कर्क का चन्द्र ३३।३७) सोना चाँदी सम

Monday the 4th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ १४ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ دوشنبه ۴ جمادی الاول
सोमवार ४ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ४ सं. २०३०
घ॰ ४८।३७ पुनर्वसु २७।४० र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।४१
फ. १३८० प्र. जेठ १८ बं. ज्येष्ठ २१ ने. २२ गते

शिवपुराण में

श्री गणेश ४ व्रत, गुरु अर्जुनदेव दिवस

महात्माओं के प्रिय सुलभ तत्वशोधक तीर्थस्वरूप तीर्थनाम तीर्थों के देखने योग्य तीर्थों के प्रापक सागररूप प्राणियों के स्थान अजेय ॥३७०॥ विजयज्ञाता प्रशंसनीय प्रमाणज्ञाता सुवर्णकवच के धारक देवरूप विद्यास्वामी बिन्दु के आश्रय वायुस्वरूप त्रितापनाशक पापनाशक ॥३८०॥ निर्मल प्रपञ्च विस्तारक कठिन मायाद्वारा स्वरूप छिपाने वाले साधक कारणमय स्वयं सर्वकर्ता सभी बन्धनों से मोचक सतचित मात्ररूप ॥३९०॥ व्यवस्थापक स्थानदाता ब्रह्मस्वरूप शत्रुओं को खण्डन करनेवाले सर्व सुन्दर देता द्वैत सरूप सदानन्द आत्मा में स्थित, वीरस्वामी, वीरभद्रगणरूप ॥४००॥ वीरों के आसन विधान में गुरु शूरवीर शिरोमणि सर्वज्ञाता अतिआनन्दरूप नन्दीश्वररूप नागरूप संतान को नित्य धारण करने वाले त्रिशूलधारक विष्णुरूप से युगोपर्यन्त स्थित कल्याण वाले विल्व स्वरूप ॥४१०॥ अतीव पराक्रमी तापवाले किरणों के स्थान सूर्य सरूप श्रोत्र इन्द्रियरहित आकाश में विचरण करनेवाले सुन्दर एवं आनन्द युक्त सुन्दर शरण वेदशों पर प्रेम कर्ता अमृत स्वामी इंद्र रूप विश्वामित्र स्वरूप ॥४२०॥ प्रकाशमान प्राणियों के अन्त, सभी कर्मों के साधक —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५५

मूली और सज्जी प्लीहा को नष्ट करती है
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 5th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ १५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۳ سنہ ہجریہ
मंगलवार ५ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ५ सं. २०३०
घ. ४३।४० पुष्य २४।२२ र. उ. ५।११ र. अ. ६।४१
फ. १३८० प्र. जेठ १९ बं. ज्येष्ठ २२ ने. २३ गते शिवपुराण

मस्तक पर नेत्रधारी सम्पूर्ण विश्व शरीर तत्त्वरू
संसार-चक्रधारक सफल दण्डदाता सबके प्राण
प्रलय में संसार के संहर्ता ॥४३॥ ब्रह्मतेजस्वी ॥४
मुक्तिदाता माया से पर एकत्रित कर्ता व्याघ्र के केतल
मल चर्म के धारक कृतिमय ज्योति दीप्त वाले रूप
वैद्यरूप वाणी के नाथ दिवाकर ॥४४॥ रसग्रंथि
ण कर्ता अग्निरूप अग्निरूप से रूप तथा वायुरूप पां
शोषण कर्ता शासन के लिये यमरूप युक्ति से उ
कीर्तिमय प्रेमस्थान शत्रु विजेता कैलाशनाथ सर्व
र जगत रचयिता ॥४५॥ सूर्य नेत्र श्रेष्ठ विश्वरूप निर्भ ने
विश्वपालक कर्मों के फलदाता जन्म मरण रहित मंगल ॥
पवित्र श्रवण कीर्तन प्रसिद्ध विघ्ननाशक ॥४६॥ ध्ये
दुःस्वप्न नाशक संसार सागर से उद्धार कराने वाले पापि
के नाशक पत्नी भाँति शेष सहन न करने वाले पराक्रमी उत्पा
रहित अनादि पृथ्वी स्वर्ग की शोभा किरीट धारक ॥४७॥ म
स्वर्ग के स्वामी जगत रक्षक त्रिपुर रक्षक अनेक गति
उत्तम बाजूबन्द धारक जन उत्पादक जगत के जन्मादि
प्रेमयुक्त नीतिज्ञ सर्वस्वामी ॥४८॥ वशिष्ठरूप का
रूप प्रकाशमय भयंकर भयानक पराक्रमी ॐ रूप
मार्ग पर आचरण करने वाले महौकाश उत्तम धन जन्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूरन का भर्ता बवासीर को दूर करता है
(सिंह का चन्द्र २१।४४) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 6th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ १६ शक: १८९५४ । ۱۳۹۳ جمادی الاول ۴ بدھ شنبہ

बुधवार ६ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ६ सं. २०३०
घ. ३९।२४ श्लेषा २१।४४ र॰ उ. ५।११ र॰ अ. ६।४१
फ. १३८० प्र. जेठ २० बं. ज्येष्ठ २२ ने. २४ गते

विन्ध्यवासिनी पूजा शिवपुराण में

स्त्री॥४९०॥ सबसे बड़े देव सभी वेदों पूर्णज्ञाता सब के साररूप
के तत्वज्ञ एक रूप सब में व्यापक विष्णु बिभूषण ऋषि एवं ब्राह्मण
रूप परम वैभव, जन्मजरा मरण से रहित ॥५००॥ पंचतत्वोत्पादक
विश्वेश्वर मङ्गलकर्त्ता आदि अन्त रहित सब के कारण सर्वप्रिय
रूप पांच भूतों के स्रष्टा लोकों के धारण कर्ता शिवगायत्री प्रेमी पवित्र
उर्ध्वकिरण धारक विष्णु व्यापी ॥५१०॥ दिन कर्त्ता आत्मक रूप कैलाश
व सर्वत प्रिय संसार के राजा देव शत्रु विनाशक नेमि रहित एवं द्वीन्द्र
निर्मित नेमि आनन्द दाता सर्वतार पर रहित स्वप्रकाशमान परम प्रकाश
वाल॥५२०॥ परम प्रकाश शरीर व्याघ्र चर्मधारी पिंगल वर्ण की
दाढ़ी मूछों वाले मस्तक पर नेत्रधारी वेद रूप विज्ञान रूप
अमृत दाता जगत् के जन्म दाता दुष्टों को दुःख देनेवाले जग वि
उत्पादक एवं आदित्यरूप संसार से परे ॥५३०॥ बृहस्पतिस्व
मङ्गल एवं गुण रूप नामधारी पापविनाशक पवित्र दर्शन
दारय शास्त्री उद्यमकर्त्ता नित्ययोगी सत्य असत्यनाश
आकाशरूप उसमें शव नक्षत्र माला रूप स्वर्ग के स्वामी
॥५४०॥ स्वात्मपद के आधार शुद्ध स्वरूप सबनाशक मणि
दाता आकाशविहारि हृदय कमल में स्थित इन्द्र स्वरूप शा
[illegible] चञ्चल धर्मतापयुक्त ग्रहस्वामी ॥५५०॥—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५८

चने की गोली शूल नष्ट करती है
(सिंह का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 7th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ १७ शकः१८९५ ४ | ۱۳۹۳ جمادی الاول ۰ ذیقعدہ
रविवार ७ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ७ सं. २०३०
घ. ३२।५५ मघा १९।५८ र. उ. ५।११ र. अ. ६।४२
फ. १३८० प्र. जेठ २१ बं. ज्येष्ठ २४ नें. २२ गते शिवपुराण में

कृशरूप सर्बसमर्थ अत्याचार विनाशी धर्मके... अनेकजनों से आराधनीय वेदस्थान महान के... स्थानधारी धर्म की उत्पत्ति के स्थान धनके आगमके... ॥५८०॥ जगत् के हितैषी मोहन कर्ता बुद्ध अवतार बाल... आनन्द दाता सुवर्ण वर्ण प्रकाशमान प्राणियों में रमण... कर्ता नादरूप रोगरहित नेत्रस्वामी विश्वामित्ररूप ॥५... धनके स्वामी महान तेजस्वी एवं अत्यन्त तेजस्वी पर... उत्तम सबके माता पिता पवनस्वरूप सर्पों की मालये... धारण करने वाले पुलस्त्य महर्षि रूप पुलह स्वरूप... यरूप ॥५८०॥ जातु कर्ण्य ऋषिरूप पराशर रूप माण्ड... आवरण से रहित ब्रह्माजी के पुत्र विष्णु रूप आत्म स्वर... अनिरुद्ध स्वरूप अत्रिरूप विज्ञारूप महा यशस्वी ॥५... लोकवीर शिरोमणि शूर क्रोधी सफल पराक्रम नागस... धारक महाकल्परूप कल्पवृक्षरूप कलाधारी अधिक... तेजस्वी स्थावर ॥६००॥ कान्तिमान पराक्रमी उन्नत... एवं शब्द के स्वामी वाचाल दुःखनाशक अधिसाक्षी... पृथरूप अतिथिरूप शत्रु विनाशक वृक्ष के नीचे नाशक... धारी ॥६१०॥ उत्तम आवणकर्त्ता पितृगणों पृति वीर... अग्निरूप उत्तम तपस्वी विश्व को भोजन दाता भजन... जरादि रोग विनाशक बड़े अश्व के वाहन वाले...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़का दूध बताशा में खाने से प्रमेह नष्ट होता है
(कन्या का चन्द्र ३४।१५) सोना चांदी सम

Friday the 8th June 1973.

रा० ज्येष्ठ १८ शकः १८९५ ४

शुक्रवार ८ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ८ सं. २०३०

घ. ३३।२२ पू. फा. १९।१० र. उ. ५।११ र. अ. ६।४२

फ. १३८० प्र. जेठ २२ बं. ज्येष्ठ २५ ने. २६ गते

मेला क्षीर भवानी (जम्मू-काश्मीर) शिवपुराण में

के कारण सुन्दर अंग वाले ॥६२०॥ अज्ञानान्धकार
के निवर्तक ग्रीष्मरूप निर्मल मेघरूप शत्रु पर विजेता
सुखदायक वायुरूप संसार कर्त्ता आनन्द दाता शिशिर
रूप बसन्तरूप वैसाख मासरूप ॥६३०॥ ग्रीष्म भाद्र
पद रूप धान्य प्रापक शरद हेमन्त रूप अंगिरा ऋषि रूप
तो ज्ञेय स्वरूप निर्मल विश्वबाहु ने पाप रहित पुर
विजेता इन्द्र रूप वेदत्रयी ज्ञाता नूतन गज की भांति
मदवाले मत्स्य बुद्धिरूप ॥६४०॥ अहंकार स्वरूप
मित्र क्षेत्र रक्षक जमदग्नि रूप सागर रूप सर्व मुक्ति
रूप अमृत पिलाने वाले विश्व में गालव रूप भयङ्करता
रहित सब में बड़े यज्ञ रूप ॥६५०॥ शुभ कल्याण दाता
वृत्तरूप गगन कुन्दवत शोभावाले दैत्य शत्रु शत्रु नाशक
मित्र स्वरूप पिता बुद्धिमान लोक एवं कल्प के धारण, ऋग
यजु, साम, अथर्व रूप ॥६६०॥ धर्म आदि चार भाव
कुशल-चतुर पुरुषों के प्रेमी बेटों के रूप स्वरूप तीर्थ
के देवता, तीर्थ स्थान शिव स्थान वाले अनेक वर्षों से
शीतलकाय सर्व स्वरूप, चराचर रूप न्याय कर्ता
नायकता, तथा नेता ॥६७०॥ न्याय से पहिचानने योग्य
आनन्द उत्पादक, हजार सिरों वाले, देवों के राजा, —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसी की पत्ती का रस मलने से पसीनेकी बदबू जाती है

(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Saturday the 9th June 1973.

रा.ज्येष्ठ १९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ جمادى الاول ٧ شنبه

शनिवार ९ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. ९ सं. २०३०

घ. ३२।२१ उ. फा. १९।३१ र. उ. ५।११ र. अ. ६।४३ शिवपूजा

फ. १३८० प्र. जेठ २३ बं. ज्येष्ठ २६ ने. २७ गते

सभी शास्त्रोंके नाशक, मुण्डित सिर, सुन्दर स्वरुप,

श्रीवत्सरस रूप धारक, इन्द्रिय दमन कारक ॥६८०॥ श

रूप, उत्तम गुणरूप, पिंगलवर्ण के नेत्रोंवाले, अनेक नेत्र

धारी, नीलकण्ठ दुःखरहित, सहस्र भुजाधारी, सबके

, भक्तों के शरण दाता, सर्वलोक धारक ॥६९०॥ पद्मासन

लगानेवाले, परम तेजस्वी, नित्य फलदायक, पद्मगर्भ,

महागर्भ, विश्वगर्भ, वाचाल, सर्वज्ञाता, बरदाता, वर्णनीय

॥७००॥ महानादरूप, सुरासुरगुरु, सुर दैत्य नमनीय, दे

दानव मित्र, ईश्वर, स्वामी, अलौकिक रूपवान, देवदानव

, परमदेव, निश्चिन्त ॥७१०॥ ब्रह्मादिक देवों की आत्मा, शी

प्रकट होनेवाले, महाअसुरों के मारने में व्याघ्र रूप, देवों में

सिंह, दिनकर्त्ता, देवताओं में श्रेष्ठ, सर्व श्रेष्ठ विष्णु

दि से श्रेष्ठ, अपनेही आत्मा में रमण कर्त्ता, शोभायुक्त, च

शवान ॥७२०॥ श्री पर्वत प्रेमी, बज्रहस्त, तलवार धारक,

नृसिंह मद विनाशक, ब्रह्मचारी स्वरूप, लोकों में विचर

करने वाले, धर्म का आचरण करनेवाले, धन के स्वामी, नं

गड़, नन्दी के ईश्वर, ॥७३०॥ अन्त रहित, नग्न रहनेवाले,

व्रतधारी, अवगुण रहित, लिंग स्वामी, देवस्वामी, युग

स्वामी, युगनाशक, स्वर्गस्वामी, स्वर्ग के पवन ॥७४०॥

[illegible] मानो लेज ओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलईचूनाकीसूखीबुकनीबाँधनेसेंप्लेगकीगिल्टीनष्टहोतीहै

(तुला का चन्द्र ५२।३३) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 10th June 1973.

रा०ज्येष्ठ २० शकः१८९५ ४ ।۳۹۳ جمادی الاول ۸ ایک شنبہ

रविवार १० जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. १० सं. २०३०

घ. ३२।२५ हस्त २१।७ र. उ. ५।११ र. अ. ६।४३

फ. १३८० प्र. जेठ २४ वं. ज्येष्ठ २७ ने. २८ गते

शिवपुराण में

६ गङ्गा दशहरा १०

कार्यकर्त्ता धर्म संचालक, कपटरूपधारक, लालच से रहित उत्तम स्वभाव, सर्व स्वामी श्मशान वासी, त्रिनेत्र धारी ॥७५०॥ सतुस्वरूप, मूर्ति अहंकार से रहित, सब के ऊपर रहने वाले, त्र्यंबक, सर्वआभूषण धारी, इंधक सुर शत्रु, मयदानव शत्रु, विष्णुस्कन्ध को गिराने वाले, दोष रहित, नित्य गुणवान ॥७६०॥ दक्ष के शत्रु, पूषा के दाँत तोड़ने वाले, सर्व संपन्न, संपन्न करर्ता, पवित्र, श्रेष्ठ कुमार वाले, सुन्दर नेत्र धारी, उत्तम मार्ग रक्षक, भक्तों के प्रेमी, धतूरे के सेवन कर्ता, पवित्र यशवान ॥७७०॥ व्याधि रहित, मन से भी तीव्र, तीर्थ कर्ता, जटाधारी, नियत रक्षक, स्वामी, जीवन को समाप्त करने वाले, अपरछिन्न, स्वर्ग समान वीर्य धारी, धनदाता, श्रेष्ठ गति ॥७८०॥ सिद्धि दाता, सत्‌चित् रूप, उत्तम जाति, दुष्टनाशक, कलाधारी महोंकलरूप, प्राणियों के सत्व में स्थित, लोकों मे लावण्यता युक्त, सब को सुन्दरता देने वाला सुख स्थान, चन्द्र संजीवनी रूप, ॥७९०॥ परम शासक सृष्टि तथा प्रलय में गाढ़ स्वरूप, महेश्वर संसार बन्धु तथा स्वामी, जीवन कृत शुभाशुभ ज्ञाता, चर्म अम्बर से शोभित, अनाशी प्रभा रूपलिंग ॥८००॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६६ मुसब्बर और गुड़ मिलाकर खाने से शूल नष्ट होता है
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Monday the 11th June 1973.
रा॰ज्येष्ठ २१ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ جمادی الاول ٩ دوشنبه
सोमवार ११ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु॰ ११ सं. २०३०
घ॰ ३३।५० चित्रा २३।५९ र॰ उ॰ ५।११ र॰ अ॰ ६।४२
फ॰ १३८० प्र॰ जेठ २५ बं॰ ज्येष्ठ २८ ने॰ २९ गते

निर्जला ११ एकादशी व्रत सबको शिवपुराणमें

सभीशास्त्रोंके ज्ञाताओं मेंअग्रणी, तेजस्वी, कान्तिमय, लो
मान्य, कृपासागर, मन्दमुस्कान युक्त प्रसन्नमन
अजेय, कठिन पराक्रमी, प्रकाशमय ॥ ८१०॥ जगत्के
निराकार, नलस्वामी, तुमाकी वीणावाले; विशालकाय
, शोकरहित, शोकनाशक, त्रिलोकी रक्षक, त्रिलोकी
नाथ, पवित्रकर्त्ता ॥ ८२०॥ जिनसे ज्ञान प्रकट होकर
संसार को मिलता है, वे उत्तम ज्ञान, गुप्तलक्षणोंवाले
देवरूप, स्पष्ट-अस्पष्ट रूप सभी प्रजाके स्वामी,
संसार से परे, मंगलमय धन, प्राणसत्व, मानधारी
॥ ८३०॥ संसाररूप ब्रह्मा विष्णुरूप प्रजापालक,
योगी, योगियों की गति, पक्षी रूप, विश्वरचयिता,
फल दाता, जगतधारक ॥ ८४०॥ रचनेवाले,
शक, चतुर्भुज, कैलाश के सिखर के निवासी, जगतव्याप
क नित्य गतिरूप, हिरण्यगर्भ, पारब्रह्म, जीव पालक
पृथ्वीनाथ ॥ ८५०॥ ब्रह्मरूप, शुभकर्मों के प्रवर्त
योगज्ञाता, वरदायक, ध्यानरूप, ब्राह्मणों के प्रेमी,
देवप्रिय, देवताओं के साथ, देवों में वायु, ब्रह्मा, स्व
यं समान देवगण, चिन्तनीय, त्रिनेत्रधारी, विषम
वान ॥ ८६०॥ उपदेश दाता, धर्मवर्धक, समता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारपीन का तेल मलने से पसली का दर्द नष्ट होता है

(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 12th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ २२ शकः १८९५ ४ ।३९३ جمادی الاول ١٠ سه‌شنبه

मंगलवार १२ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. १२ सं. २०३०

घ॰ ३६।२० स्वाती २७।५९ र॰ उ. ५।११ र॰ अ. ६।४४

फ. १३८० प्र. जेठ २६ बं. ज्येष्ठ २९ ने. ३० गते

चम्पक द्वादशी १२

शिवपुराणमें

मानानाशक, सदा प्रसन्न, जगतके प्रसन्न कर्त्ता, समीधर्षों के धारण करनेवाले, एवं हजारों किरणोंवाले ॥८७०॥ भस्मरूप भूषण से शोभित सरल प्राकार सम्पन्न, वास देव, भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालके स्वामी, जगत बनाने वाले, शत्रुओं के धननाशक, सबके कारण, इच्छा रहित, बड़े खजाने वाले, मुक्तिदाता, निष्कपट आत्मा, नित्यानन्दरूप, कपट रहित, कपट के नाशक, बलो, उत्पन्न सत्व रहित, सत्यसे हकर्ता शास्त्र रचयिता निकृष्टगुणज्ञ, सर्वप्रात्मा, अनेककार्य कर्ता, सुन्दर प्रेमी ॥८९०॥ सुखदाता, लघुरूपधारी सुन्दर भुजा वाले, दक्षणी पवनरूप, नन्दी एवं स्कन्द के धारक, सर्वत्र प्रकट होनेवाले प्रीतिवर्धक, किसीसे न हारने वाले सहन करने में समर्थ ॥९००॥ गायों के स्वामी, सच्ची सवारिवाले, किसी के अप्रयन्न रहने वाले, अपने गौरव पर निर्भर पूर्ण पवित्ररूप, यशरूप, धन वाले वाराह के दन्त रूप सींग वाले बल एवं सेना वाले सर्प के नेता ॥९१०॥ वेदप्रकाशक, वेदरूप, जगतके बन्धु, अनेकों रूप वाले विष्णु के कल्याण के आरम्भ सज्जन कल्याण [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized ...

१६३

कुचला खाने से पागल कुत्ते का जहर जाता है
(वृश्चिक का चन्द्र १६।५२) सोना चाँदी सम
Wednesday the 13th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ२३ शक: १८९५ ४ ।१३९३ جمادی الاول ١١ । چہارشنبہ
बुधवार १३ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु॰ १२ सं॰ २०३०
घ॰ ४०।१ विशाखा ३३।९ र॰ उ॰ ५।११ र॰ अ॰ ६।४४
फ॰ १३८० प्र॰ जेठ २७ बं॰ ज्येष्ठ ३० ने॰ ३१ गते

शिवपुराण में

प्रदोष १२ व्रत

शृङ्गार सबकी सम्पत्ति ।।८२०।। जीवों को रचनेवाले म
जीवों को बढाने वाले प्रचल भक्तों जैसे शरीरवाले स
काल के क्षीण करने वाले कलानाथ सत्यव्रती महा
त्यागी सदाशान्त रूप दान तथा आजीविका दाता भ
ण्डारी ।।८३०।। रागादि रहित चतुर शुभ कर्त्ता
सुन्दर नामधारी शुभ रूप चाहना रहित संसार प
कर्त्ता गुण ग्रहण कर्त्ता स्वर्ण समान सुन्दर म
रूप मध्यस्थ न्याय कर्त्ता ।।८४०।। शीघ्र गामी
शीघ्रता नाशक, शिखा कवच त्रिशूल धारक जटा
धारी सर्प के कुण्डलों वाले सदा अमर रहनेवाले ।।
समदृष्टि प्रकाशमय मणिस्वरूप गणनारहित अपरि
मित शरीरी परम पराक्रमी रम्य ।।८५०।। विशिष्ट
वसुधापर मुनिजन स्वामी सब से उत्तम कोमल एवं प्रि
शरीर धारी देवस्वामी ध्यान के योग्य समस्त शब्दरूप
श्रेष्ठ तपस्वी सहायक समय काल के भी काल ।।८६०
शुभ कर्ता वासुकी सर्प के रचयिता उत्तम धनुषधा
पृथ्वी धारने वाले निष्कलंक बन्धन रहित दिन के म
पार करने के लिये नौका रूप सफल साधना सिद्धदाता
माना युक्त विशाल वृत्तीवाले ।।८७०।। विशाल म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवाखार मिश्री मिलाकर खाने से पथरी नष्ट हो जाती है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सम

Thursday the 14th June 1973.

रा. ज्येष्ठ २४ शकः १८९५ ४ | ١٣٩٣ جمادى الاول ١٢ | پنجشنبه
गुरुवार १४ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. १४ सं. २०३०
घ. ४४|२८ अनुराधा २९|५ र. उ. ५|१२ र. अ. ६|४४ शिवपुराण
फ. १३८० प्र. जेठ २८ बं. ज्येष्ठ ३१ ने. ३२ गते

माया रहित विच्छिन्न करने वाले व्याधियों के नाशक स्तुति मय स्तुति से प्रसन्न होनेवाले ॥९९८॥ स्तुति के योग्य सर्वव्यापक व्याकुलता रहित निरवद्य रूप मुक्तिप्रद नियमों के भण्डार उत्तम कर्म कर्ता शान्त बुद्धि अपराजित संग्रह कर्ता सर्व सुन्दर ॥९९९॥ व्याघ्र चर्म धारी पृथ्वी स्वामी सकल कृष्ण रूप रात्रि के स्वामी परमार्थ रूप मुक्ति के गुरु भक्तजन अर्पित भेंटों को स्वीकार करने वाले शरणागत रक्षक विद्वानों पर दयालु पार्वती जी के साथ रहने वाले रस के स्वाद दाता वीर्य दाता सम महत्त सत्व के प्रभूत भगवान शंकर सदाशिव ॥१०००॥ मेरी रक्षा करें ॥

सूत जी बोले – हे मुनियो इस प्रकार विष्णु भगवान ने शिव सहस्त्र नाम का पाठ कर के एक २ नाम पर एक २ कमल पुष्प चढ़ा-चढ़ा कर शिव पूजन किया ॥ ॐ ॥

शिव भक्तों की कथा (छत्तीसवाँ अध्याय)
शिव सहस्त्र नाम का फल

...की मनोरथ करते हैं सिद्ध सरल महेश। सहस्त्रनाम शिव की कथा भक्तों को... इसी पाठ एवं पूजन द्वारा शंकर प्रसन्न हुए प्रत्यक्ष होकर भगवान ... को दिव्य सुदर्शन चक्र देते हुए बोले हे विष्णु जी सभी भ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसीकी पत्तीका रस शहदके साथ खानेसे ज्वर दूर होताहै
(धनु का चन्द्र ४५।३२) सोना चाँदी महंगा
Friday the 15th June 1973.
रा॰ज्येष्ठ २५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۳ هجری
शुक्रवार १५ जून सन् १९७३ ज्येष्ठ शु. १५ सं. २०३०
घ॰ ४९।२७ ज्येष्ठा ४५।३२ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।४५
फ॰ १३८० प्र. जेठ २९ बं. आषाढ़ १ ने. १ गते
वटसावित्री व्रत दाक्षिणात्य, व्रत स्नानदानादिक पूर्णिमा

शिवपुराण में

इससे तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे और यह सुदर्शन चक्र तुम्हें सभी प्रकार से भय से निर्मुक्त करता रहेगा इसे धा- -रण करो और जो भी पुरुष प्रातः काल उठकर मेरा पूजन करके खड़े होकर इन हजारों नामों का पाठ करेगा उसे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होंगी विष्णुजी मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ अब अपनी इच्छा के अनुसार बर मांगो विष्णुजी बोले हे स्वामिन् इस दास पर आप सदा कृपा करते रहें मैं सदा आप की भक्ति में लगा रहूँ बस यही बर चाहिए तब शंकर बोले हे विष्णुजी तुम सभी देवों में श्रेष्ठ स्तुति योग्य विश्वम्भर कहलाओगे सूतजी बोले इस प्रकार कह कर एवं सुदर्शन-चक्र देकर भगवान शंकर अन्तर्धान हो गये तब विष्णुजी शिव का स्मरण करते हुए अपने कार्य मे संलग्न हुए ॥

चालीसवाँ अध्याय (निषाद चरित्र)

भील भयंकर कार्यरत गुरुद्रुह पायो मोक्ष। आशुतोष भगवान का अर्चन करयो परोक्ष॥

सूतजी बोले - हे ऋषियो प्राचीन समय मे एक बन प्रदेश मे गुरुद्रुह नामक एक भील अपने परिवार के साथ रहा करता था बन के पशुओं को वध तथा चोरी करता हो उसका नित्य का काम इसी प्रकार करते करते एक समय शिवरात्रि के व्रत का दिन...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्याज खाने से नींद अच्छी लगती है
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Saturday the 16th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ २६ शाकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۴ شنبه

शनिवार १६ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. १ सं. २०३०

घ. २४।१८ मूल २२।६ र. उ. ५।१२ र. अ. ६।४५

फ. १३८० अ. हाड़ १ बं. आषाढ़ २ ने. २ गते

गुरु हरगोविन्द सिंह जन्म-दिवस

शिवपुराण में
परिवार के माता पिता सभी भूखे थे उन्होंने कहा कि कहीं से खाने को लावो हम तो भूखे मर रहे हैं यह सुन कर भील ने अपना धनुष वाण उठाया शिकार के लिये बन की ओर चल पड़ा भाग्यवस सारा दिन फिरता रहा किन्तु शिकार हाथ न आया रात हुई शिकारी व्याकुल हो गया उसने विचार किया कि मैं खाली हाथ घर कैसे लौटूं उन्हें खाने को क्या लाकर दूं वे लोग तो मेरी प्रतीक्षा में होंगे इसलिये अब मैं इसी तालाब के किनारे ही बैठ जाता हूं कोई न कोई पशु जल पीने आयेगा मैं उसी का शिकार कर लूंगा उस प्रकार विचार कर वह भील जल लेकर वृक्ष बेल पर बैठ गया रात्रि के प्रथम पहर में एक हिरनी वहाँ जल पीने आई भील ने बध करने को धनुष पर वाण चढ़ाया उस समय उसके पानी तथा कुछ बेल के पत्ते झड़ कर वहीं जा गिरे जहाँ नीचे भगवान शङ्कर का ज्योतिर्लिंग विद्यमान था इससे उस भील द्वारा पहिले पहर की शिव पूजा हो गई भील के पापों का नाश हो गया उसके बाद भील के धनुष की टङ्कार सुन कर हिरनी ने कहा हे भील यह आप क्या करने लगे हो भील ने कहा मेरा परिवार भूखों मर रहा है उन्हें भोजन दूंगा [illegible] हिरनी ने कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५८७

हींग पानी में घोलकर पीने से नशा उतर जाता है

(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Sunday the 17th June 1973.

रा०ज्येष्ठ२७ शकः १८९५४ ۱۳۹۳ ایک شنبہ ۱۰ جمادی الاول

रविवार १७ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. २ सं. २०३०

घ. ५९।१२ पू. षा. ५८।१८ र. उ. ३।१२ र. अ. ६।४५

फ. १३८० प्र. हाड़ २ बं. आषाढ़ २ ने. २ गते

शिवपुराण में

कि तुम लोग तो महाँ पुन्यात्मी हो दया करना तो जानते
हीन नहीं यदि मेरे माँस द्वारा तुम्हारे परिवार को सुख मिले
तो इसमें मेरा जीवन सफल है संसार में दूसरों के कष्ट निवा
करने वाले ही मनुष्य प्रशंसा के योग्य हैं अब तुम थोड़ीदेर
के लिये रुक जाओ मैं अपने घर जाकर अपने बच्चों को बहि
के हवाले करके आती हूँ मुझे मार कर ले जाना मैं इसमें
नहीं बोल रही हूँ विश्वास करो मैं लौट कर आती हूँ यदि
लौट कर न आऊँ तो मुझे वह पाप लगे जो विश्वासघाती
एवं शिव द्रोही को लगता है तब इस प्रकार हिरन के
स दिलाने पर भील ने उसे जाने दिया हिरनी प्रसन्नता
छलांगें भरती हुई चली गई सूतजी बोले इसी प्रकार उस
प्रथम पहर का जागरण भी हो गया. उसके बाद उस हि
की बहिन ढूंढते २ वहाँ आ पहुँची उसे देखकर भील ने फौ
ने धनुष पर बाण चढ़ा लिया तब पहिले की तरह जल
बेल पत्र फिर शिवजी पर चढ़ गये इसी से उसका दूस
प्रहर का पूजन भी हो गया जो कि भील के भी लिये सु
दायक था धनुष की टंकार सुनकर वह हिरनी बोली
ले राज आप यह क्या करने लगे हैं तब भील ने उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीतपित्त में तम्बाकू के काढ़े से बदन पोंछे

Monday the 18th June 1973.

(मकर का चन्द्र १४|४१) सोना चांदी सस्ता

रा.ज्येष्ठ २८ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۷ دوشنبه

सोमवार १८ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृष्ण ३ सं.२०३०

व. ६०|० उ. षा. ६०|० र. उ. ५|१२ र. अ. ६|४६

फ. १३८० प्र. हाड़ २ वं. आषाढ़ ४ ने. ४ गते. शिवपुराण

सुनकर हिरनी बोली हे भीलराज थोड़ी देर के लिये मुझे घर जाने की आज्ञा दे दो मै अपने बच्चों को देख कर लौटकर आ जाऊँगी भील ने उसे भी जाने की आज्ञा दे दी वह पानी पी कर चली गई इसी प्रकार जागते जागते भील को दूसरे पहर का जागरण हो गया इसके बाद तीसरा प्रहर लगा उस समय एक मोटे शरीर वाला हिरन आ पहुँचा उसे देखकर फिर उसने धनुष पर बाँण चढ़ाया जिससे फिर शिवजी पर जल एवं बेल पत्र झड़ कर गिरे इससे उसको तीसरे पहर की पूजा हो गई हिरन ने उसके चढ़े हुये बाँण को देखकर पूछा कि आप यह क्या करने लगे हैं उस हिरन के प्रति भी उसने वही उत्तर दिया जो कि प्रथम कह चुका था तब हिरन ने अनुनय विनय से कहा कि हे भीलराज मै अपने बच्चों को धैर्य देकर अभी लौट कर आता हूँ यह मै शपथ पूर्वक कह रहा हैं आप विश्वास रखिये भील ने यह सुनकर उसे भी जाने की आज्ञा दे दी हिरन जल पीकर घर की ओर चल आया सेभील ने जल्दी लौट आने के लिये कहा था तब वे तीनों दूसरे जाकर एकत्रित हुए आपस मे अपना अपना वृतान्त सुना कर बोले हमने भील के आगे वापिस लौटने की शपथ ले रखी है इसी कारण हमें वहाँ अवश्य जाना चाहिये तब उन्होंने अपने बच्चों को धैर्य दिया और आप चलने को ... हो गये तब उस हिरनी ने कहा कि प्रथम ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५८६

मुलहठीका चूर्ण शहदके साथ खाने से वीर्य बढ़ता है.

(मकर का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Tuesday the 19th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ २९ शकः१८९५४ । سنہ ۱۳۹۳ ۱۷ جمادی الاول

मंगलवार १९ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ३ सं. २०३०

शिवपुराण

प्र. ३।१२ उ. षा. ३।५१ र. उ. ५।१२ र. अ. ६।४६

फ. १३८० प्र. हाड़ ४ बं. आषाढ़ ५ ने. ५ गते

प्रतिज्ञा करके आयी थी वह बोली स्वामिन् आप मेरी छोटी ब
नच्चे साथ अपने बच्चों को संभाले यहीं रहिये मैं भील के पास बा
जा रही हूं मैंने भील से प्रतिज्ञा की हुई है इतना सुनकर
छोटी हिरनी बोली हे बहिन मैं तो आप की दासी हूं इसलि
ये मैं क्यों न जाऊं मैं भी तो भील से प्रतिज्ञा कर चुकी हूं
तब हिरन ने कहा हे प्रिये माता के बिना बच्चों का पालन
न है तब यहीं रहकर मुझे जाने दो इतना सुनकर दोनों हिरनि
याँ व्याकुल हो गई अपने पति की बात न मान कर बोली हे नाथ
बिधवा स्त्रियों का तो जीवन ही व्यर्थ होता है आपकी मृत्यु होने
ने पर हम किस प्रकार जीवित रह सकती हैं अतएव हम
भी वहीं अब चलेंगी इस प्रकार कहकर वे तीनों बच्चों
बच्चों समझा बुझा कर चल पड़े बच्चों ने देखा हमारे माता
पिता तो जा रहे हैं हमें यहीं नहीं रहना चाहिये वे भी उन
पीछे पीछे चल पड़े उन्होंने विचार किया जहाँ हमारे माता
पिता जीवन देंगे हम भी उन्हीं के साथ अपने प्राण गवाँवे
इस प्रकार वे सब के सब वहाँ जा पहुंचे भील ने उन्हें आते
देखकर झट धनुष पर बाण चढ़ाया तब उसी समय
जल तथा बेल पत्र झड़ कर शिवजी पर जा चढ़े इस
उस के चौथे पहर की पूजा हो गई इससे उसके सभी
कर्म नष्ट हो गये उसे ज्ञान प्राप्त हो गया उससे मृग
मृगीयों ने कहा हे भील राज अब आप कृपा करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्नदोषमें काली तुलसीके बीजको दूधके साथ खावे
(कुम्भ का चन्द्र ४०।४) सोना चांदी सम

Wednesday the 20th June 1973.

रा॰ज्येष्ठ ३० शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۸ چهارشنبه
बुधवार २० जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ४ सं. २०३०
घ॰ ६।९ श्रवण ८।२४ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।४६
फ॰ १३८० प्र. हाड़ ५ चं. आषाढ़ ६ नै. ६ गते

शिवपुराण में

बध करें जिससे कि हमारी यह देह सफल हो जाय तब भील शङ्कर की परम कृपा से ज्ञान प्राप्त करके आश्चर्य से सोचने लगा देखो मुझसे तो यह अज्ञानी पशु ही धन्य हैं, जो कि परोपकार परायण होकर अपना शरीर तक दे रहे हैं एक मैं हूं जो मनुष्य जन्म पाकर भी इतना हत्यारा बन चुका हूं आज तक किसीका भी हित मैंने नहीं किया न मालूम मुझे कौन सी गति प्राप्त होगी सूतजी बोले इस प्रकार विचार कर भील बोला हे मृगियो तुम धन्य हो तुम्हारा जीवन सफल है जाओ मैं तुम्हें नहीं मारता तुम निर्भय रहो हे ऋषियो इस प्रकार भील के कहने की देर थी तब तो वहीं स्वयं शंकर अद्भुत रूप से प्रकट हो गये और बोले हे भीलराज मैं तुम पर सन्तुष्ट हूं अपना मन चाहा वर मांगलो भगवान शंकर के वचन सुनकर वह भील झट ही शंकर के चरणों में गिर पड़ा और आंखों से जल धारा बहने लगी तब भगवान शंकर ने कहा हे व्याध मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं इस समय तुम शृङ्गवेरपुर की श्रेष्ठ राजधानी में जाकर आनन्द के साथ इच्छित भोग प्राप्त करो। तुम्हारे घर पर ही भगवान रामचन्द्रजी पधारेंगे उनके साथ तुम्हारी भक्ति पूर्वक मित्रता हो जायगी ऐसा कहने पर अपने परिवार के साथ वह व्याध कृतार्थ हो गया

[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्तपित्त पर गूलर का रस और शहद चाटे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Thursday the 21st June 1973.
श०ज्येष्ठ ३१ शकः१८९५ ४ ।१३९३ جمادی الاول ۱۹ پنجشنبہ
गुरुवार २१ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ५ सं. २०३०
घ. ८।४ धनिष्ठा ११।५३ र. उ. ५।१२ र. अ. ६।४७
फ. १३:८० प्र. हाड़ ६ बं. आषाढ़ ७ ने. ७ गते

श्रीरामचन्द्रजी के प्रताप से उस व्याध ने परमपद प्राप्त किया सूतजी बोले हे ऋषियो जब बिना जाने एक पापी व्याध से शिव-चतुर्दशी व्रत हो गया उसी के उपवास से उसे मोक्ष प्राप्त हो गया तो ज्ञान सहित उस उपवास व्रत के धारण करने से क्यों न मोक्षपद की प्राप्ति हो इसमें आश्चर्य ही क्या है ॥

जब व्याध को वर दे भगवान शंकर शृंगबेर पुर की रजधानी मे रहने का वरदान दिया वहीं राम, लक्षिमण, सीता आकर तुम्हारे घर दर्शन देंगे और तुम से मित्रता हो जाए
चौ॰ सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी ॥
सीताजी और मन्त्री सहित दोनों भाई शृंगबेरपुर जा पहुँचे गंगाजी को देखकर श्रीरामजी रथ से उतर पड़े और बड़े हर्ष के साथ उन्होंने दण्डवत की ॥
चौपाई – यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥
जब निषादराज गुह ने वही जो व्याध था वही गुह नाम से श्री राम के आने की खबर पाई तब आनन्दित होकर उसने अपने प्रियजनों को और भाई बंधुओं को बुला लिया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंवले के शर्बत से सुस्ती दूर होती है
(मीन का चन्द्र २९।४४) सोना चांदी सम
Friday the 22nd June 1973.
रा॰ आषाढ़ १ शकः१८९५ ४ ।१३१४ جمادی الاول ٢٠ جمعہ
शुक्रवार २२ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ६ सं. २०३०
घ॰ ८।३४ शतभिषा १४।२ र॰ उ. ५।१३ र॰ अ. ६।४७
फ. १३८० प्र. हाड़ ७ बं. आषाढ़ ८ ने. ८ गते

देने के लिये फल, मूल, (कन्द) ले कर और उन्हें भारों (बहँगियों) मे भर कर मिलने के लिये चला उसके हृदय में हर्ष का पार न था।

चौ॰ करि दंडवत भेंट धरि आगें । प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें ॥
सहज सनेह बिबस रघुराई । पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥

दण्डवत कर के भेंट आगे धर कर वह अत्यन्त प्रेम से प्रभु को देखने लगा श्री रघुनाथ जी ने स्वाभाविक स्नेह के वश होकर उसे अपने पास बैठा लिया और कुशल पूंछी ॥

चौ॰ नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भाग भाजन जन लेखें ॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥

निषादराज ने उत्तर दिया हे नाथ आप के चरण कमल के दर्शन से ही कुशल है आप के चरणारबिन्दों के दर्शन कर आज मैं भाग्यवान पुरुषों की गिनती में आ गया हूं देव यह पृथ्वी, धन और घर सब आप का है मैं तो परिवार सहित आप का नीच सेवक हूं

चौ॰ कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

अब कृपा कर के पुर शृंगबेरपुर में पधारिये और इस दास की प्रतिष्ठा बढ़ाइये जिससे सब लोग मेरे भाग्य की बड़ाई करें श्री रामचन्द्र जी ने कहा हे सुजान सखा तुम ने जो कुछ कहा सब सत्य है परन्तु पिताजी ने मुझको और ही आज्ञा दी है —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमेहमें सिंघाड़े का चूर्ण मिश्री समान भाग कर खावे

(मीन का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 23rd June 1973.

रा०आषाढ़ २ शकः १८९५ ४ | ١٣٩٣ جمادی الاول ٢١ | شنبه

शनिवार २३ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ७ सं. २०३०

घ. ७।४७ पू. भा. १४।५८ र. उ. ५।१२ र. अ. ६।४७

फ. १३८० प्र. हाड़ ८ बं. आषाढ़ ९ ने. ९ गते

दोहा— बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु॥
उनकी आज्ञा अनुसार मुझे चौदह वर्ष तक मुनियों का व्रत
और वेष धारण कर और मुनियों के योग्य आहार करते हुए
वन में ही बसना है गाँव के भीतर निवास करना उचित
नहीं है यह सुन कर गुह को बड़ा दुःख हुआ ॥

चौ० राम लखन सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे॥
श्रीरामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी के रूप को देख कर गाँव के
स्त्री पुरुष प्रेम के साथ चर्चा करते हैं कोई कहती है हे सखि
कहो तो वे माता पिता कैसे हैं जिन्होंने ऐसे सुन्दर सुकुमा-
र बालकों को वन में भेज दिया है ॥

चौ० एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा॥
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना॥
कोई एक कहते हैं राजा ने अच्छा किया इसी बहाने हमें भी ब्रह्मा
ने नेत्रों का लाभ दिया तब निषाद राज ने हृदय में अनुमान किया
तो अशोक के पेड़ को उनके ठहरने के लिये मनोहर समझ
कुछ चौपाई छोड़ दी गई यह भाव दिखाना है व्याध का भी गुह
जन्म श्रृंगबेर का होना भगवान के दर्शन होना सब आगे
गंगा पार होने नाव पर चढ़ कर ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु के सिर दर्द में सत लोहवान की नाश ले
(मीन का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 24th June 1973.

रा॰आषाढ़ ३ शकः१८९५४ | ایک شنبہ ۲۲ جمادی الاول ۱۳۹۳

रविवार २४ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृष्ण ८ सं. २०३०

व. ५।४९ उ. भा. १४।२९ र. उ. ५।१२ र. अ. ६।४७

फ. १३८० प्र. हाड़ ९ वं. आषाढ़ १० ने. १० गते

श्री शीतलाष्टमी ८ व्रत

चौपाई — मागी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरनकमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥

श्रीराम ने केवट से नाव मांगी पर वह लाता नहीं वह कहने लगा मैंने तुम्हारा मर्म (भेद) जान लिया तुम्हारे चरण कमलों की धूलि के लिये सब लोग कहते हैं कि वह मनुष्य बना देने वाली जड़ी है कोई

चौ॰ छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥

जिसके छूते ही पत्थर की शिला सुन्दरी स्त्री हो गई (मेरी नाव तो काठ की है) काठ पत्थर से कठोर तो होता नहीं मेरी नाव भी मुनि की स्त्री हो जायगी और इस प्रकार मेरी नाव उड़ जायगी मैं लुट जाऊँगा अथवा रास्ता रुक जायगा जिससे आप पार न हो सकेंगे और मेरी रोजी मारी जायगी मेरी कमाने खाने की राह ही मारी जायगी ॥

चौ॰ एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

मैं तो इसी नाव से सारे परिवार का पालन पोषण करता हूँ दूसरा कोई धंधा नहीं जानता हे प्रभु यदि तुम अवश्य ही पार जाना चाहते हो तो मुझे पहले अपने चरण कमल पखारने (धो लेने) के लिये कह दो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माजूफल घिसकर लगाने से निनावाँ जाता है
(मेष का चन्द्र १३।१६) सोना चाँदी महंगा

Monday the 25th June 1973.

रा॰आषाढ़ ४ शक:१८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۲۳ ذوقعدہ
सोमवार २५ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ० सं. २०३०
घ॰ $\frac{3}{46}$।$\frac{45}{25}$ रेवती १३।१६ र॰ उ. ५।१२ र॰ अ. ६।४७
फ. १३८० प्र. हाड़ १० बं. आषाढ़ ११ ने. ११ गते

छं॰ पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम रावरि आन दसरथसपथ सब साँची कहौं॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं॥
हे नाथ मैं चरण कमल धोकर आप लोगों को नाव पर चढ़ा लूँगा मैं आपसे कुछ उतराई नहीं चाहता हे राम मुझे आपकी दुहाई और दशरथजी की सौगंध है मैं सब सच सच कहता हूँ लक्ष्मण भले ही मुझे तीर मारें पर जब तक मैं पैरों को पखार न लूँगा तब तक हे तुलसीदास के नाथ हे कृपालु मैं पार नहीं उतारूँगा॥

सो॰ सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन॥
केवट के प्रेम मे लपेटे हुए अटपटे वचन सुनकर करुणा धाम श्रीरामचन्द्रजी जानकी जी और लक्ष्मणजी की ओर देख कर हँसे॥१००॥

चौ॰- कृपासिंधु बोले मुसकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू॥
कृपा के समुद्र श्रीरामचद्रजी केवट से मुसकराकर बोले भाई वही कर जिससे तेरी नाव न जाय जल्दी पानी ला और पैर धो ले देर हो रही है पार उतार दे॥१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकरी के दूध से स्तन रोग नाश होता है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Tuesday the 26th June 1973.

रा॰आषाढ़ ५ शक: १८९५ ४ | ۱۳۹۳ جمادی الاول ۲۴ سه‌شنبه
मंगलवार २६ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ॰ ११ सं. २०३०
घ॰ ५३।४९ अश्विनी ११।५ र॰ उ॰ ५।१४ र॰ अ॰ ६।४७
फ॰ १३८० प्र॰ हाड़ ११ वं॰ आषाढ़ १२ ने॰ १२ गते

योगिनी ११ एकादशी व्रत स्मार्तों का

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥१
एक बार जिस का नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर के पार उतर जाते हैं और जिन्होंने (वामनावतार में) जगत को तीन पग से भी छोटा कर दिया था दो ही पग में त्रिलोकी को नाप लिया था वही कृपालु श्रीरामचन्द्र जी गङ्गाजी से पार उतारने के लिये केवट का निहोरा कर रहे हैं ॥२॥

चौ॰—पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥३॥

प्रभु के इन वचनों को सुनकर गङ्गाजी की बुद्धि मोह से खिंच गई थी ये साक्षात भगवान होकर भी पार उतारने के लिये केवट का निहोरा कैसे कर रहे हैं परन्तु समीप आने पर अपनी उत्पत्ति के स्थान पद नखों को देखते ही उन्हें पहचान कर देवनदी गङ्गाजी हर्षित हो गईं वे समझ गयीं कि भगवान् नर लीला कर रहे हैं इससे उनका मोह नष्ट हो गया और इन चरणों का स्पर्श प्राप्त करके मैं धन्य हो जाऊँगी यह विचार कर वे हर्षित हो गयीं केवट श्रीरामचंद्रजी की आज्ञा पाकर कठौते में भर कर जल ले आया ॥

चौ॰—अति आनन्द उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८८

शीताङ्ग में जायफल की बुकनी का धुआँ दे
(वृष का चन्द्र २२।८) सोना चाँदी तेज

Wednesday the 27th June 1973.

रा.आषा.६ शक:१८९५४ ।۱۳۹۳ جمادی الاول ۲۵ چہار شنبہ

बुधवार २७ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. १२ सं. २०३०

घ. ४८।१८ भरणी ८।२ र. उ. ५।१४ र. अ. ६।४७

फ. १३८० प्र. हाड़ १२ बं. आषाढ़ १२ ने. १२ गते

योगिनी ११ एकादशी व्रत वैष्णवों का

अत्यन्त आनन्द और प्रेम में उमाँगकर वह भगवान् के चरण
मल धोने लगा सब देवता फूल बरसाकर सिहाने लगे कि इस
के समान पुण्य की राशि कोई नहीं है ॥४॥
दो०- पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥१०१॥

चौ.- उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
निषादराज और लक्ष्मण सहित श्री सीता जी और श्रीरामचन्द्र जी
नाव से उतर कर गङ्गा जी की रेत (बालू) में खड़े हो गये तब केवट ने
उतर कर दण्डवत की उस को दण्डवत करते देखकर प्रभु को संको
च हुआ कि इसको कुछ दिया नहीं ॥१॥
चौ.- पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥
पति के हृदय की जानने वाली सीता जी ने आनन्द भरे मन से अपनी
रत्नजटित अँगूठी (अँगुली से) उतारी कृपालु श्रीरामचन्द्र जी ने केवट से
कहा नाव की उतराई लो केवट ने व्याकुल होकर चरण पकड़ लिए
चौ.- नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायफल का हुलास सिर दर्द को दूर करता है
(वृष का चन्द्र) सोना चांदी तेज
Thursday the 28th June 1973.
रा॰आषाढ़ ७ शकः १८९५ ४ । १३१३ २४ جمادی الاول ۲۶ پنجشنبه
गुरुवार २८ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. १२ सं. २०३०
घ. ४२।२२ कृत्तिका ४।२६ र. उ. ५।१४ र. अ. ६।४८
फ. १३८० ... ह.इ १२ बं. आषाढ़ १४ ने. १४ गते

प्रदोष १२ व्रत मास शिवरात्रि व्रत

चरणोंको धोकरऔर सारे परिवारसहित स्वयं उस जल (चरणोदक) को पीकर पहिले उस महान् पुण्य के द्वारा अपने पितरोंको भवसागरसे पारकर फिर आनन्द पूर्वक प्रभु श्रीरामचन्द्रजी को गङ्गाजी के पार लेगया ||१०१||
अर्थ सामने है

उसने कहा - हे नाथ आज मैंने क्या नहीं पाया मेरे दोष, दुःख और दरिद्रता की आग आज बुझ गई मैंने बहुत समय तक मजदूरी की विधाता ने आज बहुत अच्छी भरपूर मजदूरी देदी ||३||
चौ॰- अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ||४||
हे नाथ हे दीन दयाल आप की कृपा से अब मुझे कुछ नहीं चाहिये लौटती बार आप मुझे जो कुछ देंगे वह प्रसाद मैं सिर चढ़ाकर लूँगा ||४||
दो॰ बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ ||
प्रभु श्रीरामजी लक्ष्मणजी और सीताजी ने बहुत आग्रह (प्रयत्न) किया पर केवट कुछ नहीं लेता तब करुणा के धाम भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने निर्मल भक्ति का वरदान देकर उसे विदा किया ||

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बबूल की पत्ती सूँघने से चौथिया जाता है
(मिथुन का चन्द्र २८।२०) सोना चांदी तेज

Friday the 29th June 1973.

रा॰आषाढ़ ८ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ جمادی الاول ٢٧ جمعہ
शुक्रवार २९ जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ॰ १४ सं. २०३०
घ॰ ३६।१३ रोहिणी ५६।२६ र॰ उ. ५।१४ र॰ अ. ६।४८
फ़. १३८० प्र. हाड़ १४ बं. आषाढ़ १५ ने. १५ गते

फिर भरद्वाज मुनि आश्रम पहुँचकर यमुना स्नानक
के वहाँ से विदा होकर बालमीक जीके स्थान में पहुँ
दो॰ सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥१२४
पवित्र और सुन्दर आश्रम को देखकर कमलनयन श्रीरामचन्द्र
हर्षित हुए रघुश्रेष्ठ श्रीरामजी का आगमन सुनकर मुनि बाल्मीकि
जी उन्हें लेने के लिये आगे आये ॥ श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि को
दण्डवत् किया विप्रश्रेष्ठ मुनि ने उन्हें आशीर्वाद दिया श्रीरामचन्द्र
की छबि देखकर मुनि के नेत्र शीतल हो गये सम्मान पूर्वक
मुनि उन्हें आश्रम में ले आये ॥ बालमीक जी ने अतिथि
को समझ कर उनके लिये कन्द मूल मधुर और फल
दि मगवाये श्री सीताजी, लक्ष्मणजी और रामचन्द्रजी ने फल
को खाया और विश्राम करने के लिये सुन्दर स्थान बतलाये
मुनि श्रीरामजी के पास बैठे हैं और उनकी मङ्गल मूर्ति को देखकर
वाल्मीकिजी के मन में बड़ा भारी आनन्द हो रहा है तब श्री
जी कमल सदृश हाथों को जोड़ कर ~~कानों~~ कानों को
सुख देने वाले मधुर वचन बोले हे मुनि नाथ आप त्रिका
लदर्शी हैं सम्पूर्ण विश्व आप के लिये हथेली पर रक्खे हुए
बेर के समान है प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसा कहकर फिर
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफाई रखने से बीमारी नहीं होती
(मिथुन का चन्द्र) सोना चांदी तेज
Saturday the 30th June 1973.
रा॰आषाढ़ ९ शकः १८९५ ४ १३९३ جمادى الاول २८ شنبه
शनिवार ३० जून सन् १९७३ आषाढ़ कृ. ३० सं. २०३०
घ. ३०।० आर्द्रा ५२।८ र. उ. ५।१५ र. अ. ६।४८
फ. १३८० प्र. हाड़ १५ बं. आषाढ़ १६ ने. १६ गते

स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या ३०

और कहा प्रभो पिताजी की आज्ञा का पालन माता का हित और
भरत के जैसे स्नेही एवं धर्मात्मा भाई का राजा होना और
फिर मुझे आप के दर्शन होना यह सब मेरे पुण्यों का
प्रभाव है हे मुनि राज आप के चरणों का दर्शन करने से
आज हमारे सब पुण्य सफल हो गये इमें सारे पुण्यों का
फल मिल गया अब जहाँ आप की आज्ञा हो और जहाँ कोई
भी मुनि उद्वेग को प्राप्त न हों ॥
चौ॰ - मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं।
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
क्योंकि जिनसे मुनि और तपस्वी दुःख पाते हैं वे राजा बिना
अग्नि के अंकुरपने दुष्ट कर्मों से ही जल कर भस्म हो जाते हैं
ब्राह्मणों का सन्तोष सब मङ्गलों की जड़ है और भूदेव
ब्राह्मणों का क्रोध करोड़ों कुलों को भस्म कर देता है
चौ॰ - अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्र सहित जहँ जाऊँ ॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौं कछु काल कृपाला॥
ऐसा हृदय में समझ कर वह स्थान बतलाइये जहाँ मैं लक्ष्मण
और सीता सहित जाऊँ और वहाँ सुन्दर पत्तों और घास की कुटी
बना कर हे दयालु कुछ समय निवास करूँ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८१

बड़ी इलायची खानेसे गर्भवती स्त्रीको शान्ति मिलती है
(कर्क का चन्द्र २४।१२) सोना चाँदी सम

Sunday the 1st July 1973.

रा॰आषाढ़ १० शकः १८९२४ । ۱۳۹۳ ایک شنبہ ۲۹ جمادی الاول

रविवार १ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ १ सं॰ २०३०
घ॰ २३।२५ पुनर्वसु ४८।१४ र॰ उ॰ ५।१२ र॰ अ॰ ६।४८
फ॰ १३८० प्र॰ हाड़ १६ बं॰ आषाढ़ १७ ने॰ १७ गते

मनोरथ द्वितीया २ व्रत (बंगाल)

श्री रामचन्द्र जी की सरल वाणी को सुनकर ज्ञानी मुनि बाल्मीकि बोले धन्य-धन्य हे रघुकुल के ध्वजा स्वरूप आप ऐसा क्यों न कहेंगे आप सदैव वेद की मर्य्यादा का पालन रक्षण करते हैं ॥

छं॰ श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी। जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी। सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

हे राम आप वेद की मर्यादा के रक्षक जगदीश्वर हैं और जानकी जी आप की स्वरूपभूता माया हैं जो कृपा के भण्डार की रुख पाकर जगत् का सृजन पालन और संहार करती हैं जो हजार मस्तक वाले सर्पों के स्वामी और पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करने वाले हैं वही चराचर के स्वामी शेष लक्ष्मण हैं देवताओं के कार्य के लिये आप राजा का शरीर धारण करके दुष्ट राक्षसों की सेना का नाश करने के लिये चले हैं ॥

सो॰ राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥

हे राम आपका स्वरूप वाणी के अगोचर बुद्धि से परे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर्का छोड़ने से कान का घाव आराम होता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Monday the 2nd July 1973.
रा॰ आषाढ़ ११ शकः १८९५ | ١٣٩٣ جمادی الاخر | دوشنبه
सोमवार २ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ २ सं. २०३०
घ॰ १८।१४ पुष्य ४४।४७ र॰ उ॰ ५।१६ र॰ अ॰ ६।४८
फ॰ १३८० प्र. हाड़ १७ चं. आषाढ़ १८ नें. १८ गते

रथयात्रा २

अकथनीय और अपार है वेद निरन्तर उसका नेति नेति कह कर वर्णन करते हैं ।।१२६।।
चौ॰ जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे ।।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा ।।
हे राम जगत दृष्य है आप उसके देखने वाले हैं आप ब्रह्मा, विष्णु और शङ्कर को भी नचाने वाले हैं जब वे भी आप के मर्म को नहीं जानते तब और कौन आप को जानने वाला है ।।
चौ॰ सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ।।
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन ।।
वही आप को जानता है जिसे आप जना देते हैं और जानते ही वह आप का ही स्वरुप बन जाता है हे रघुनंदन हे भक्तों के हृदय के शीतल करने वाले चन्दन आप की ही कृपा से भक्त आप को जान पाते हैं ।।
चौ॰ चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी ।।
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा ।।
आप की देह चिदानंदमय है यह प्रकृति जन्य पञ्च महाभूतों की बनी हुई कर्म बन्धन युक्त त्रिदेह विशिष्ट मायिक नहीं है और उत्पत्ति नाश वृद्धि क्षय आदि सब विकारों से रहित है इस रहस्य को अधिकारी पुरुष ही जानते हैं आपने देवता और संतों के कार्य के लिये नर शरीर धारण किया है और प्राकृत प्रकृति के तत्वों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान की पीड़ा में सुदर्शन की पत्ती का अर्क छोड़े
(सिंह का चन्द्र ४१।५८) सोना चांदी सम

Tuesday the 3rd July 1973.

रा॰आषाढ़१२ शकः१८९५४ ।سہ شنبہ ۲ جمادی الآخر ۱۳۹۳
मंगलवार ३ जुलाई सन्१९७३ आषाढ़ शु॰ ३ सं. २०३०
घ॰ १३।२ श्लेषा ४१।५८ र॰ उ. ५।१६ र॰ अ. ६।४८
फ॰ १३८० प्र. हाड़ १८ बं. आषाढ़ १९ ने. १९ गते

श्री गणेश ४ व्रत

चौ.–राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे।
तुम्ह जो कहहु करहु सबु सांचा। जस काछिय तस चाहिय नाचा।
हे राम आप के चरित्रों को देख और सुन कर मूर्ख लोग तो मोह को प्राप्त होते हैं और ज्ञानी जन सुखी होते हैं आप जो कुछ कहते करते हैं वह सब सत्य (उचित) ही है क्योंकि जैसा स्वाँग भरें वैसा ही नाचना भी चाहिए इस समय आप मनुष्य रूप में हैं अतः मनुष्योचित व्यवहार करना ठीक है

दो॰ पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मै पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥
आप ने मुझ से पूछा कि मै कहाँ रहूँ परन्तु मै यह पूछते सकुचाता हूँ कि जहाँ आप न हों वह स्थान बता दीजिये तो मै आप के रहने के लिये स्थान दिखाऊँ ॥१२७॥
चौ॰ सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसकाने।
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिअ रस बोरी।
मुनि के प्रेम रस से सने हुए बचन सुनकर श्रीरामचन्द्र जी रहस्य खुल जाने के डर से सकुचाकर मन में मुसकराये बालमीकि जी हँसकर फिर अमृत रस में डुबोयी हुई मीठी वाणी बोले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंख आनेपर घीक्वारका रस सोते समय आंखमें टपकावे
(सिंह का चन्द्र) सोना चांदी सम

Wednesday the 4th July 1973.

रा॰ आषा. १३ शकः १८९५ | ١٣٩٣ جمادی الاول ۴ چہار شنبہ

बुधवार ४ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ ४ सं. २०३०

घ. ८।२८ मघा ४०।१ र॰ उ. ५।१६ र॰ अ. ६।४८

फ. १३८० प्र. हाड़ १९ बं. आषाढ़ २० ने. २० गते

चौ॰ सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥

हे राम जी सुनिये अब मैं वे स्थान बताता हूँ जहाँ आप सीता जी और लक्ष्मण जी समेत निवास करिये जिनके कान समुद्र की भांति आप की सुन्दर कथा रूपी अनेकों सुन्दर नदियों से — ॥

चौ॰ - भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥

निरन्तर भरते रहते हैं कभी पूरे तृप्त नहीं होते उनके हृदय आपके लिये सुन्दर घर हैं और जिन्होंने अपने नेत्रों को चातक बना रक्खा है जो आपके दर्शन रूपी मेघ के लिये सदा लालायित रहते हैं॥

चौ॰ निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

तथा जो भारी भारी नदियों समुद्रों और झीलों का निरदर करते हैं और आप के सौन्दर्य (रूपी मेघ) के एक बूँद जल से सुखी हो जाते हैं अर्थात् आप के दिव्य सच्चिदानन्दमय स्वरूप के किसी एक अंशु की जरा सी भी झांकी के सामने स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों जगत के अर्थात् पृथ्वी स्वर्ग और ब्रह्म लोक तक के सौन्दर्य का तिरस्कार करते हैं हे रघुनाथ जी उन लोगों के हृदय रूपी सुखदायी भवनों में आप भाई लक्ष्मण जी और सीता जी सहित निवास कीजिये॥

दो॰ जासु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमार षष्ठी ६

आपके यशरूपी निर्मल मानसरोवर में जिसकी जीभ हंसिनी बनी हुई आपके गुणसमूहरूपी मोतियों को चुगती रहती है, हे रामजी आप उसके हृदय में बसिये ।। १२८ ।।

चौ॰ प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ॥

जिनकी नासिका प्रभु (आप) के पवित्र और सुगन्धित (पुष्पादि) सुन्दर प्रसाद को नित्य आदर के ग्रहण करती (सूँघती) है और जो आप को अर्पण कर के भोजन करते हैं और आप के प्रसादरूप ही वस्त्राभूषण धारण करते हैं ।।

चौ॰ - सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥

जिन के मस्तक देवता, गुरु और ब्राह्मणों को देख कर बड़ी नम्रता के साथ प्रेम सहित झुक जाते हैं जिन के हाथ नित्य श्री रामचन्द्र जी (आप) के चरणों की पूजा करते हैं और जिन के हृदय में श्रीरामचन्द्र जी (आप) का ही भरोसा है दूसरा नहीं ।।

चौ॰ चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥

तथा जिनके चरण श्रीरामचन्द्र जी (आप) के तीर्थों में चलकर जाते हैं, हे रामजी आप उनके मनमें निवास कीजिये जो नित्य आप के (राम रूप) मंत्रराज को जपते हैं [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर में खाली कंघा फेरने से सर दर्द कम होता है
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 6th July 1973.
रा०आषाढ़ १५ शकः१८९५ ४ जमादिउल आख़िर १३९३ हिजरी
शुक्रवार ६ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु० ६ सं. २०३०
घ० २।३३ उ. फा. २९।० र० उ. ५।१७ र० अ. ६।४८
फ़. १३८० म. हाड़ २१ बं. आषाढ़ ३२ ने. २२ गते

चौ०—तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी। सकल भायँ सेवहिं सनमानी॥
जो अनेक प्रकार से तर्पण और हवन करते हैं तथा ब्राह्मणों को भोजन कराकर बहुत दान देते हैं तथा जो गुरु को हृदय में आप से भी अधिक (बड़ा) जानकर सर्व भाव से सम्मान करके उनकी सेवा करते हैं॥

दो० सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ।
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ॥१२९॥
और ये सब कर्म करके सबका एक मात्र यही फल माँगते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में हमारी प्रीति हो उन लोगों के मन रूपी मन्दिरों में सीताजी और रघुकुल को आनन्दित करने वाले आप दोनों बसिये॥१२९॥

चौ०—काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥
जिनके न तो काम, क्रोध, मद अभिमान और मोह है न लोभ है न क्षोभ है न राग है, न द्वेष है और न कपट, दम्भ और माया ही है हे रघुनाथ आप उनके हृदय में निवास कीजिये॥
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
जो सब के प्रिय और सबका हित करने वाले हैं जिन्हें दुःख और सुख तथा [illegible] तथा न [illegible] आपकी शरण है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८७

मेदे के रोग में परिश्रम करना चाहिये
(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Saturday the 7th July 1973.
रा॰आषाढ़ १६ शक:१८९५ ४ ١٣٩٣ جمادی الاول ٥ شنبه
शनिवार ७ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ ७ सं. २०३०
घ॰ १।१५ हस्त ४०।१५ र॰ उ. ५।१७ र॰ अ. ६।४८
फ़. १३८० प्र. हाड़ २२ वं. आषाढ़ २३ ने. २३ गते

वैवस्वत सूर्य ७

चौ॰-तुम्हहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥
और आपको छोड़कर जिन के दूसरी कोई गति (आश्रय) नहीं है, हे रामजी आप उनके मन में बसिये जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं और पराया धन जिन्हें विष से भी भारी विष है॥
चौ॰ जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥
जो दूसरे की सम्पत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर विशेष रूप से दुखी होते हैं और हे रामजी जिन्हें आप प्राणों के समान प्यारे हैं उनके मन आपके रहने योग्य शुभ भवन हैं॥
दो॰ स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात॥
हे तात जिनके स्वामी, सखा, पिता, माता और गुरु सब कुछ आप ही हैं उनके मनरूपी मन्दिर में सीता सहित आप दोनों भाई निवास कीजिये॥१३०॥
चौ॰-अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोतेके सूजन पर त्रिफला के काढ़ेमें गोमूत्र मिला पीवे
(तुला का चन्द्र ११।३२) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 8th July 1973.

रा॰आषाढ़ १७ शकः १८९५ ४ | ایک شنبہ ۷ جمادی الاخری ۱۳۹۳
रविवार ८ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ ८ सं. २०३०
घ॰ १।११ चित्रा ४२।४९ र॰ उ. ५।१८ र॰ अ. ६।४८
फ॰ १३८० प्र. हाड़ २३ वं. आषाढ़ २४ ने. २४ गते

मेला शरीक भगवती (काश्मीर)

जो अवगुणों को छोड़कर सबके गुणों को छोड़कर ग्रहण कर,
ते हैं ब्राह्मण और गौ के लिये संकट सहते हैं नीति निपुणता में
हैं जिन की जगत् में मर्यादा है उनका सुन्दर मन आप का घर है।
चौ॰ गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जो गुणों को आप का और दोषों को अपना समझता है जिसे सब
प्रकार से आप का ही भरोसा है और राम भक्त जिसे प्यारे लगते हैं
उसके हृदय में आप सीता सहित निवास कीजिये ॥
चौ॰ जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥
जाति, पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुख देने वाला
घर सब को छोड़कर जो केवल आप को ही हृदय में धारण किये
रहता है हे रघुनाथ जी आप उसके हृदय में रहिये ॥
चौ॰-- सरगु नरकु अपबरगु समाना। जँह तँह देख धरें धनु बाना ॥
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा ॥
स्वर्ग नरक और मोक्ष जिस की दृष्टि में समान हैं क्यों कि वह जहाँ
तहाँ सब जगह केवल धनुष बाण धारण किये आप को ही
देखता है और जो कर्म से बचन से और मन से आप का दास
है हे राम जी आप उसके हृदय में डेरा कीजिये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८८

दांत के दर्द पर मेकड़ी की दातुन करनी चाहिये
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Monday the 9th July 1973.
रा॰आषाढ़ १८ शकः १८९५ ४ ।१३९३ ذالقعد ۸ جمادی الاول ١٠٣٩ ...
सोमवार ९ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ ९ सं. २०३०
घ॰ २।२७ स्वाती ४६।३७ र॰ उ. ५।१८ र॰ अ. ६।४७
ज्योत्स्ना १६।२० प्र. हाड़ २४ वं. आषाढ़ २५ ने. २५ गते

दो॰ जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरन्तर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३१॥
जिसको कभी कुछ न चाहिये और जिसका आपसे स्वभाविक प्रेम है आप उसके मन में निरन्तर निवास कीजिये वह आपका अपना घर है ॥
चौ॰ एहि बिधि मुनिवर भवन देखाये। वचन सप्रेम राम मन भाये
कहमुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक
इस प्रकार मुनि श्रेष्ठ वाल्मीकि जी ने श्रीरामचन्द्र जी को घर दिखाये उनके प्रेम पूर्ण बचन श्रीराम जी के मन को अच्छे लगे फिर मुनि ने कहा हे सूर्य कुल के स्वामी सुनिये अब मैं इस समय के लिये सुखदायक आश्रम कहता हूँ (निवास स्थान बताता हूँ) ॥
चौ॰ चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू
सैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू ॥
आप चित्रकूट पर्वत पर निवास कीजिये वहाँ आपके लिये सब प्रकार की सुविधा है सुहावना पर्वत है और सुन्दर बन है वहाँ हाथी सिंह, हिरन और पक्षियों का विहार स्थल है ॥
चौ॰ नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रि प्रिया निज तप बल आनी ॥
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(अयोध्याकाण्ड) पुनर्यात्रा

वहाँ पवित्र नदी है जिसकी पुराणों ने प्रशंसा की है और जिसको अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसुइया जी अपने तपोबल से लायी थी वह गंगा जी की धारा है उसका मन्दाकिनी नाम है वह सब पाप रुपी बालकों को खा डालने के लिये डाकिनी (डाइन रुप है) ||

चौ॰ अत्रि आदि मुनिवर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं ||
चलहु सफल श्रम सब कर करहू। राम देहु गौरव गिरिबरहू ||

अत्रि आदि बहुत से श्रेष्ठ मुनि वहाँ निवास करते हैं जो योग जप और तप करते हुए शरीर को कसते हैं हे रामजी चलिये सब के परिश्रम को सफल कीजिये और पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट को भी गौरव दीजिये ||

दो॰—चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ ||१३२||

महामुनि वाल्मीकि जी ने चित्रकूट की अपरिमित महिमा बखान कर कही तब सीता जी सहित दोनों भाइयों ने आकर श्रेष्ठ नदी मन्दाकिनी में स्नान किया ||१३२| अयोध्याकाण्ड

कहहु सुपेम प्रगट को करई। केहि छाया कबि मति अनुसरई ||

चौ॰ कबिहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा ||

ऐसे उस श्रेष्ठ प्रेम को कौन प्रगट करे किस बुद्धि किसकी छाया का अनुसरण करे। कवि को तो अक्षर और अर्थ का ही सच्चा बल है नट ताल की गति के अनुसार ही नाचता है ||

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाखून उड़ने पर घी शहद और हल्दी मिलाकर लगावें
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Wednesday the 11th July 1973.

रा॰आषा.२० शकः१८९५ ४।१३९३ جمادی الاول ١٠ چہار شنبہ
बुधवार ११ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु. ११ सं.२०३०
घ. ८।२८ अनुराधा ५७।१६ र. उ. ५।१९ र. अ. ६।४७
फ. १३८० प्र. हाड़ २६ बं. आषाढ़ २७ ने. २७ गते

हरिशयनी ११ एकादशी व्रत सबका

अगम सनेह भरत रघुबर को। जहँ न जाइ मनु बिधि हरि हर को॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती॥
भरतजी और श्रीरघुनाथजी का प्रेम अगम्य है जहाँ ब्रह्मा विष्णु और महादेव का भी मन नहीं जा सकता उस प्रेम को मैं कुबुद्धि किस प्रकार भला गाँडर की ताँत से भी कहीं सुन्दर राग बज सकता है॥

चौ॰-राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा॥
नाना बिधि बिलाप कर तारा। छूटे केस न देह सँभारा॥
श्रीरामचन्द्रजी ने बालि को अपने परम धाम भेज दिया नगर के सब लोग व्याकुल होकर दौड़े बालि की स्त्री तारा अनेकों प्रकार से बिलाप करने लगी उसके बाल बिखरे हुए हैं और देह की सँभाल नहीं है॥

चौ॰- तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया॥
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा॥
तारा को व्याकुल देखकर श्रीरघुनाथजी ने उसे ज्ञान दिया और उसकी माया (अज्ञान) हर ली उन्होंने कहा पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पाँच तत्त्वों से यह अत्यन्त अधम शरीर रचा गया है॥

चौ॰- प्रगट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा॥
उपजा ग्यान चरन तब लागी। लीन्हेसि परम भगति बर मागी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कै करवानेसे सभी प्रकार का नशा उतर जाता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सम
Thursday the 12th July 1973.
रा॰आषाढ़२१ शकः१८९५ ४ | ١٣٩٣ جمادی الاول ١١ | ...
गुरुवार १२ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ १२ सं.२०३०
घ॰ १२|२१ ज्येष्ठा ६०|० र॰ उ॰ ५|१९ र॰ अ॰ ६|४७
फ॰ १३८० प्र॰ हाड़ २७ बं॰ आषाढ़ २८ ने॰ २८ गते

प्रदोष १२ घव

यह शरीर तो प्रत्यक्ष तुम्हारे सामने सोया हुआ है और जीव नित्य है फिर तुम किसके लिये रो रही हो जब ज्ञान उत्पन्न हो गया तब वह भगवान के चरणों लगी और उसने परम भक्ति का वर माँग लिया ||

चौ॰-उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं ||
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा ||
शिवजी कहते हैं हे उमा स्वामी श्रीरामजी सबको कठपुतली की तरह नचाते हैं तदनन्तर श्रीरामचन्द्रजी ने सुग्रीव को आज्ञा दी और सुग्रीव ने विधिपूर्वक बालि का सब मृतक कर्म किया ||

(अरण्यकाण्ड में)

श्रीरामजी ने रास्ते में आते हुए कबंध राक्षस को मार डाला उसने अपने शाप की सारी बात कही।

दुरवासा मोहि दीन्ही सापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा ||
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ||
वह बोला दुर्वासाजी ने मुझे शाप दिया था अब प्रभु के चरण के देखने से वह पाप मिट गया श्रीरामजी ने कहा हे गन्धर्व सुनो मैं तुम्हें कहता हूँ ब्राह्मण कुल से द्रोह करने वाला मुझे नहीं सुहाता ||

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्क गुलाब और जैतका फूल आंखोंको साफ करता है
(धनु का चन्द्र ३।३७) सोना चाँदी तेज

Friday the 13th July 1973.

रा०आषाढ़ २२ शक:१८९५ ۱۳۹۳ جمادی الاخر ۱۲
शुक्रवार १३ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु०१३ सं.२०३०
घ० १७।४७ ज्येष्ठा ३।३७ र० उ. ५।११ र० अ. ६।४७
फ. १३८० म. हाड़ २८ बं. आषाढ़ २९ ने. २९ गते

दो॰ मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव॥

मन बचन और कर्म से कपट छोड़कर जो भूदेव ब्राह्मणों की सेवा करता है मुझ समेत ब्रह्मा, शिव आदि सब देवता उसके बस में हो जाते हैं॥

चौ॰-- सापत ताड़त परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता॥
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना॥

शाप देता हुआ मारता हुआ और कठोर बचन कहता हुआ भी ब्राह्मण पूजनीय है ऐसा संत कहते हैं शील और गुण से हीन भी ब्रह्मण पूजनीय है। और गुणगणों से युक्त और ज्ञान में निपुण भी शूद्र पूज्यनीय नहीं है॥

चौ॰-- कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भा[वा]॥
रघुपति चरन कमल सिरु नाई। गयउ गगन आपनि गति पा[ई]॥

श्रीरामजी ने अपना धर्म (भागवत धर्म) कहकर उसे समझाया अपने चरणों मे प्रेम देखकर वह उनके मन को भाया तदनन्तर श्रीरघुनाथजी के चरण कमलों में सिर नवाकर वह अपनी गति गन्धर्व का स्वरूप पाकर आकाश में चला गया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियमित रूप से भोजन करना लाभदायक है
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता
Saturday the 14th July 1973.
रा॰ आषाढ़ २३ शकः १८९५ ४ । १३९३ جمادی الاخر ۱۳ شنبہ
शनिवार १४ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु॰ १४ सं. २०३०
घ॰ २२/४९ मूल १०/१० र॰ उ. ५/२० र॰ अ. ६/४७
फ॰ १३८० प्र. हाड़ २९ वं. आषाढ़ ३० ने. ३० गते

चौ॰ व्रत की पूर्णिमा १५, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर)
ताहि देइ गति राम उदारा । सबरी के आश्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृह आए । मुनि के बचन समुझि जियँ भाए ॥
उदार श्रीरामजी उसे गति देकर शबरीजी के आश्रम में पधारे सबरीजीने श्रीरामचन्द्रजी को घर में आये देखा तब मुनि मतङ्गजी के बचनों को याद कर के उनका मन प्रसन्न हो गया।
चौ॰ सरसिज लोचन बाहु बिसाला । जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥
कमलसदृश नेत्र और विशाल भुजा वाले सिर पर जटाओं का मुकुट और हृदय पर बन माला धारण किये हुये सुन्दर साँवले और गोरे दोनों भाइयों के चरणो मे शबरीजी लिपट पड़ी
चौ॰ प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ।
सादर जल लै चरन पखारे । पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥
वे प्रेम मे मग्न हो गई मुख से बचन नहीं निकलता बार बार चरणकमलो मे सिर नना रही है फिर उन्होने जल लेकर आदरपूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोये और फिर उन्हें सुन्दर आसनों पर बैठाया ॥
दो॰ कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ॥
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बासी मुँह नीम की पत्ती खानेसे खून साफ होता है
(मकर का चन्द्र ३२।५६) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 15th July 1973.

रा०आषा.२४शाकः१८९५४ ।१३٩٣ ایک شنبه ۱۴ جمادی الاخری

रविवार १५ जुलाई सन् १९७३ आषाढ़ शु. १२ सं. २०३०
घ. २७।२२ पू. षा. १६।३१ र. उ. ५।२० र. अ. ६।४६
फ. १३८० प्र. हाड़ ३० बं. आषाढ़ ३१ ने. ३१ गते

॥ आरण्यकाण्ड में ॥

व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा १५, स्नानदान की पूर्णिमा १५

लाकर श्रीरामजी को दिये प्रभुने बार बार प्रशंसा
करके उन्हें प्रेमसहित खाया ॥
चौ· पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी
फिर वे हाथ जोड़ कर आगे खड़ी हो गई प्रभु को देखकर
उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया उन्होंने कहा मैं किस प्रका
र की आप की स्तुति करूँ मैं नीच जाति की और अत्यन्त मूढ़
बुद्धि हूँ ॥
चौ· अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता
जो अधम से भी अधम हैं स्त्रियाँ उनमें भी अत्यन्त अधम हैं
और उनमें भी हे पापनाशन मैं मन्द बुद्धि हूँ श्री रघुनाथजी
ने कहा हे भामिनि मेरी बात सुन मैं तो केवल एक भक्ति
ही का सम्बन्ध मानता हूँ ॥
चौ· जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥
जाति, पाँति, कुल, धर्म, बडाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और च[illegible]
इन सबके होने पर भी भक्ति से रहित मनुष्य कैसा लगता है
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुँहसें शहद्का लेप करनेसे निनावां अच्छा होता है
(मकर का चन्द्र) सोना चांदी तेज
Monday the 16th July 1973.
रा॰आषाढ़२५शाकः१८९५ ४ ।۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۰ دوشنبه
सोम वार १६ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. १ सं.२०३०
घ॰ ३१।३६ उ. षा. २२।१२ र॰ उ. ५।२१ र॰ अ. ६।४६
फ॰ १३८० प्र. सावन १ बं. आषाढ़ ३२ ने. १ गते

|| आरण्यकाण्डमें ||

नवश्रावण सोमवार व्रत, मनसा पूजा आरम्भ (वंगाल)

चौ॰-नौधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥
मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर पहिली भक्ति है संतों का सत्संग दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम ॥
दो॰ गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ॥३५॥
तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा और चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करे ॥३५॥
चौ॰ मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
मेरे राम मंत्र का जाप और मुझ में दृढ़ विश्वास यह पाँचवीं भक्ति है जो बेदों में प्रसिद्ध है छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह शील अच्छा स्वभाव या चरित्र बहुत कार्यों से वैराग्य और निरन्तर संत पुरुषों के धर्म आचरण में लगे रहना ॥
[illegible] सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा ॥
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९७

सवेरे गोल मिर्च खाने से मिचली नहीं आती
(कुम्भ का चन्द्र ५८।५१) सोना चांदी तेज
Tuesday the 17th July 1973.
रा०आषाढ़२६ शकः१८९५ ४।१३।१३ جمادی الاخر ١٧ سہ شنبہ
मंगलवार १७ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. २ सं.२०३०
घ. ३५।३६ श्रवण २७।० र. उ. १।२१ र. अ. ६।४६
फ. १३८० प्र. सावन २ वं. श्रावण १ ने. २ गते

सातवीं भक्ति है जगत् भर को समभाव से मुझमें ओतप्रोत राममय देखना और संतों को मुझसे भी अधिक करके मानना आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाय उसी में सन्तोष करना और स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना ॥

चौ० नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नवमहुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥

नवीं भक्ति है सरलता और सबके साथ कपट रहित बर्ताव करना हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना इन नवों में से जिन के एक भी होती है वह स्त्री-पुरुष, जड़ चेतन कोई भी हो

चौ० सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥

हे भामिनि मुझे वही अत्यन्त प्रिय है फिर तुझमें तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है वही आज तेरे लिये सुलभ हो गई है ॥

चौ० मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज स[illegible]रूप॥
जनक सुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु [illegible]
[मे]रे दर्शन का परम अनुपम फल यह है कि जीव [illegible]
[स्व]रूप को प्राप्त हो जाता है हे भामि[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५२८८

सप्ताहमें एकदिन उपवास करनेसे तन्दुरुस्ती ठीक रहतीहै
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चांदी सम

Wednesday the 18th July 1973.

रा०आषा.२७ शकः१८९५४ । چہارشنبہ ۱۷ جمادی الاخر ۱۳۹۳
बुधवार १८ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ.३ सं. २०३०
घ. ३६।३३ धनिष्ठा ३०।४२ र. उ. ५।२२ र. अ. ६।४६
फ. १३८० प्र. सावन ३ बं. श्रावण २ ने. ३ गते

श्री गणेश ४ व्रत

चौ. पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥

शबरी ने कहा हे रघुनाथ जी आप पंपा नामक सरोवर को जाइये वहाँ आप की सुग्रीव से मित्रता होगी हे देव हे रघुबीर वह सब हाल बतावेगा हे धीर बुद्धि आप सब जानते हुए भी मुझसे पूछते हैं ॥

चौ. बार बार प्रभु पद सिरु नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

बारबार प्रभु के चरणों में सिर नवाकर, प्रेमसहित उसने सब कथा सुनाई ॥

छं.- कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदयँ पद पंकज धरे।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥

सब कथा कहकर भगवान् के मुख के दर्शन कर हृदय में उनके चरणकमलों को धारण कर लिया और योगाग्नि से देह को त्याग कर (जलाकर) वह उस दुर्लभ हरि पद में लीन हो गई जहाँ से लौटना नहीं होता तुलसी दास जी कहते हैं कि अनेकों प्रकार के कर्म अधर्म और बहुत से मत ये सब शोक प्रद हैं हे मनुष्य (इनका) त्याग कर दो और विश्वास करके श्रीरामजी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठंडीपर रोज थोड़ा ठंडा पानी छोड़नेसे स्वप्नदोष नहीं होता
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Thursday the 19th July 1973.

रा॰ आषाढ़ २८ शक: १८९५४ | १३१३ पंजशंबः १८ जमादी उल आखिर
गुरुवार १९ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ४ सं. २०३०
घ. ३७|२ शतभिषा ३३|११ र. उ. ५|२२ र. अ. ६|४६
फ़. १३८० प्र. सावन ४ बं. श्रावण ३ ने. ४ गते

दो॰ जाति हीन अघ जन्म महि मुक्ति कीन्हि असि नारि।
महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ क
जो नीच जाति की और पापों की जन्मभूमि थी ऐसी स्त्री को भी जिन्होंने मुक्त कर दिया अरे महादुर्बुद्धि मन तू ऐसे प्रभु को भूल कर सुख चाहता है ॥३६॥
श्रीरामचन्द्रजी ने उस वन को भी छोड़ दिया और आगे चले दोनों भाई अतुल नीय बलवान और मनुष्यों में सिंह के समान हैं प्रभु विरही की तरह विषाद करते हुए अनेकों कथाएं और संवाद कहते हैं॥ दूसरा प्रसंग —

विवेकचूडामणि

ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्ता मृषामात्रा उपाधय: ।
तत: पूर्णं स्वमात्मानं पश्येदेकात्मना स्थितम् ॥३८
ब्रह्मा से लेकर स्तम्ब (तृण) पर्यन्त समस्त उपाधियाँ मिथ्या हैं इसलिये अपने को सदा एकरूप से स्थित परिपूर्ण आत्मस्वरूप देखना चाहिये ॥

यत्र भ्रान्त्या कल्पितं यद्विवेके
तत्तन्मात्रं नैव तस्माद्विभिन्नम्।
भ्रान्तेर्नाशे भाति दृष्टाहितत्त्वं
रज्जुस्तद्वद्विश्वमात्मस्वरूपम्॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ा कपूर खाने से निनावाँ नहीं होता
(मीन का चन्द्र १८।४७) सोना चाँदी तेज

Friday the 20th July 1973.

रा०आषाढ़२९ शकः१८९२४ ۱۳۹۳ جمادی الاول ۱۷ جمعہ
शुक्रवार २० जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ४ सं. २०३०
घ. ३६।२८ पू. भा. ३४।१९ र. उ. ५।२३ र. अ. ६।४५
फ. १३८० प्र. सावन ४ बं. श्रावण ४ ने. ४ गते

नागपञ्चमी (बंगाल)

जिस वस्तु की जहाँ जिस आधार में भ्रम से कल्पना होजाती है उस आधार का ठीक ठीक ज्ञान हो जाने पर वह कल्पित वस्तु तद्रूप ही निश्चित होती है। उससे पृथक उसकी सत्ता सिद्ध नहीं होती जिस प्रकार भ्रान्ति के नष्ट होने पर रज्जु में भ्रान्ति वस प्रतीत होने वाला सर्प रज्जुरूप ही प्रत्यक्ष होता है वैसे ही अज्ञान के नष्ट होने पर सम्पूर्ण विश्व आत्म स्वरूप ही जान पड़ता है।

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः स्वयमिन्द्रः स्वयं शिवः।
स्वयं विश्वमिदं सर्वं स्वस्मादन्यन्न किञ्चन ॥ १२८॥

स्वयं आत्मा ही ब्रह्मा, वही विष्णु, वही इन्द्र वही शिव और वही यह सारा विश्व है आत्मा से भिन्न और कुछ भी नहीं है

यः पश्यति स्वयं सर्वं यं न पश्यति कश्चन।
यश्चेतयति बुद्ध्यादिं न तु यं चेतयत्ययम् ॥ १२९॥

जो स्वयं सब को देखता है किंतु जिस को कोई नहीं देख सकता जो बुद्धि आदि को प्रकाशित करता है किन्तु जिसे बुद्धि आदि प्रकाशित नहीं कर सकते।

येन विश्वमिदं व्याप्तं यन्न व्याप्नोति किञ्चन।
आभारूपमिदं सर्वं यं भान्तमनुभात्ययम् ॥ १३०॥

जिसने सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त किया हुआ है किन्तु जिसे कोई [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीनावें पर गूलर का दूध लगावे
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज
Saturday the 21st July 1973.
रा॰आषाढ़३० शकः १८९५ ४ ।३९३ شنبه ۲۰ جمادی الاخر
शनिवार २१ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ६ सं.२०३०
घ. ३४।३४ उ. भा. ३४।२० र. उ. ५।२३ र. अ. ६।४५
फ. १३८० प्र. सावन ६ बं. श्रावण ५ ने. ६ गते

जन्तूनां नरजन्म दुर्लभमतः पुंस्त्वं ततो विप्रता
तस्माद्वैदिकधर्ममार्गपरता विद्वत्त्वमस्मात्परम् ।
आत्मानात्मविवेचनं स्वनुभवो ब्रह्मात्मना संस्थितिः
मुक्तिर्नो शतकोटिजन्मसुकृतैः पुण्यैर्विना लभ्यते ॥
जीवों को प्रथम तो नरजन्म ही दुर्लभ है उससे भी पुरुषत्व और उससे भी ब्राह्मणत्व का मिलना कठिन है ब्राह्मण होने से भी वैदिक धर्म का अनुगामी होना और उससे भी विद्वत्ता का होना कठिन है यह सब कुछ होने पर भी आत्मा और अनात्मा का विवेक सम्यक् अनुभव ब्रह्मात्मभाव से स्थिति और मुक्ति ये तो करोड़ों जन्मों में किये हुए शुभ कर्मों के बिना प्राप्त हो ही नहीं सकते ॥
दुर्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रहहेतुकम् ।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ॥
भगवत्कृपा ही जिनकी प्राप्ति का कारण है वे मनुष्यत्व मुमुक्षुत्व (मुक्ति होने की इच्छा) और महान पुरुषों का संश्रय तीनों ही दुर्लभ हैं ।
लब्ध्वा कथञ्चिन्नरजन्म दुर्लभं ।
तत्रापि पुंस्त्वं श्रुतिपारदर्शनम् ।
यस्त्वात्ममुक्तौ न यतेत मूढधीः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दशमूल का काढ़ा प्रसूत को नष्ट करता है 202

(मेष का चन्द्र ३३।८) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 22nd July 1973.

रा॰आषा.३१ शाकः१८९५४ । ایک شنبہ ۲۱ جمادی الاولیٰ ۱۳۹۳

रविवार २२ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ७ सं. २०३०

घ॰ ३१।२२ रेवती ३३।८ र॰ उ. ५।२४ र॰ अ. ६।४५

फ. १३८० प्र. सावन ७ बं. श्रावण ६ ने. ७ गते

किसी प्रकार इस दुर्लभ मनुष्यजन्म को पाकर और उसमें भी जिसमें श्रुति के सिद्धान्त का ज्ञान होता है ऐसा पुरुषत्व पाकर जो मूढबुद्धि अपने आत्मा की मुक्ति के लिये प्रयत्न नहीं करता वह निश्चय ही आत्मघाती है वह असत् में आस्था रखने के कारण अपने को नष्ट करता है ।

इतः को न्वस्ति मूढात्मा यस्तु स्वार्थे प्रमाद्यति ।
दुर्लभं मानुषं देहं प्राप्य तत्रापि पौरुषम् ॥

दुर्लभ मनुष्य देह और उसमें भी पुरुषत्व को पाकर जो स्वार्थ साधन में प्रमाद करता है उससे अधिक मूढ और कौन होगा ।

बदन्तु शास्त्राणि यजन्तु देवान्
कुर्वन्तु कर्माणि भजन्तु देवताः ।
आत्मैक्यबोधेन बिना विमुक्तिर्न
सिध्यति ब्रह्मशतान्तरेऽपि ॥

भले ही कोई शास्त्रों की व्याख्या करें देवताओं का यजन करें नानाशुभ कर्म करें अथवा देवताओं को भजें तथापि जबतक ब्रह्म और आत्मा की एकता का बोध नहीं होता तबतक सौ ब्रह्माओं के बीत जानेपर भी मुक्ति नहीं हो सकती ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(शिवपुराण)

श्रावण सोमवार व्रत

(बत्तीसवाँ अध्याय) सुदेहा सुधर्मा की कथा ॥

सूत जी बोले हे महर्षियो अब हम आपको घुश्मेश नामक शिवज्योतिर्लिंग की महिमा सुनाते हैं दक्षिण दिशा में देव नामक एक सुन्दर पर्वत है उसके पास भारद्वाज गोत्री कोई सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहता था उसको अति सुन्दर सुदेहा नाम की पत्नी थी सुधर्मा उत्तम ब्राह्मण था नित्यप्रति अग्नि होत्र आदि कर्म अतिथि सेवा शिवपूजनादि करने वाला शिवजी का परम भक्त था इन्हीं कर्मों को करते हुए उसे बहुत समय गुजर गया किन्तु घर प्रसन्न नहीं हुई सुधर्मा को तो इस विषय में कुछ दुःख नहीं था उनकी पत्नी व्याकुल रहती थी उसे पुत्र प्राप्ति की चाहना थी अपने पति को बार बार कहा करती उसके परम ज्ञानी पति कहा करते कल्याणी पुत्र प्राप्ति से क्या लाभ सभी सम्बन्धी स्वार्थी होते हैं माता पिता मित्रादि सबको हमने देख लिया है इस प्रकार समझा कर कभी कभी फटकार भी देते सूतजी बोले आप स्त्री के कहने पर ध्यान नहीं दिया और आप दुःख न पाकर शिव भक्ति में लगे रहते एक दिन सुधर्मा पत्नी सुदेहा अपनी सहेलियों के साथ मन बहलाने को कहीं गयी थी कई स्त्रियों के साथ झगड़ा भी हो गया उस...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(शिवपुराण)

उन स्त्रियों ने कहा अरी बाँझ तू भी इतना अभिमान करती है हम जानती हैं तू धन वाली है लेकिन तेरा धन तो राजा छीन लेंगे तेरे किस प्रयोजन का धन है देख हम तो पुत्रों वाली हैं हमारा धन तो पुत्रों के उपयोग में आ जायेगा। यह सुन सुदेहा अत्यन्त व्याकुल होती हुई घर लौट आई आते ही अपने पति से उन स्त्रियों की सभी बातें रो कर कह सुनाई सुन कर सुधर्मा दुःखी न हुये बल्कि अपनी स्त्री को धैर्य देते हुये बोले हे प्रिये जो कुछ होना है वह तो अवश्य होगा, उसमें व्याकुल नहीं होना चाहिये जो कुछ भी कोई कहता हो उसे कहने दो दुःखी मत हो अरी तब सुदेहा बोली हे प्राणनाथ या तो किसी प्रकार पुत्र पैदा करो या मुझे मार दो नहीं तो मैं स्वयं मरती हूँ सूतजी बोले इस प्रकार सुदेहा के वचन कहने पर उस ब्राह्मण देवता ने शिव ध्यान करके दो पुष्प अग्नि की ओर फेंके उन दोनों पुष्पों में दाहिना पुष्प पुत्र देने वाला है यही सोच कर ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा तुम पुत्र इच्छा से एक पुष्प उठा लो तब उसकी पत्नी ने शिव माया से बाँई ओर का पुष्प उठा लिया जो कि पुत्र वाला नहीं था यह देख कर सुधर्मा व्याकुल होकर पत्नी से बोले हे कल्याणी अब तुम पुत्र ... [illegible] ... उत्पन्न में लग जाओ ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिवपुराण

पुत्र प्राप्ति नहीं इस प्रकार उसे समझा बुझाकर सुधर्मा शिव पूजन में लग गये कुछ समय के बीत जाने पर फिर पुत्र इच्छा से सुदेहा ने कहा हे प्राणनाथ यदि मेरे गर्भ से पुत्र नहीं होता तो आप दूसरा विवाह करके पुत्र प्राप्त करो मैं अपनी प्रसन्नता से कहती हूं तब ब्राह्मण बोले हे प्रिये हम दोनों इस समय झगड़े से मुक्त हैं ऐसा होने पर क्यों न अपना उद्धार करें यदि फिर इस विपत्ति में पड़ जायें तो बड़ा उपद्रव होगा इसलिये इस विवाह की विपत्ति में मुझे मत डालो सूतजी बोले इस प्रकार सुधर्मा ने विवाह के लिये इन्कार कर दिया फिर भी सुदेहा ने अपनी छोटी बहिन को घर में बुलाकर पति से कहा हे प्राणनाथ आप मेरी बहिन के साथ अवश्य विवाह करलें यह सुनकर सुधर्मा ने कहा हे कल्याणी तुम मुझे इस झगड़े में मत डालो यदि इससे पुत्र हो भी गया तो तुम सगी बहिनें परस्पर विरोध कर बैठोगी जो कि किसी को भी सुखदायक न होगा तब सुदेहा ने हाथ जोड़ कर कहा हे प्राणनाथ यह मेरी बहिन है इसके साथ मैं विरोध क्यों करने लगी आप निश्चिन्त रहें ऐसा कहकर अपनी छोटी बहिन घुश्मा के साथ विधि पूर्वक विवाह करा ही दिया विवाह करलेने के बाद सुधर्मा बोले हे प्रिये अब यह तुम्हारी सौत तुम्हारी बहिन है इससे तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीनी खाने से सुपारी का नशा उतर जाता है २०८

(मिथुन का चन्द्र ४८।४३) सोना चांदी तेज

Thursday the 26th July 1973.

रा०श्राव. ४ शक:१८९५ ४ ۱۳۹۳ الاول جمادی ۲۵ پنجشنبہ

गुरुवार २६ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ११ सं.२०३०

घ. ११।१२ रोहिणी २०।४८ र. उ. ५।२५ र. अ. ६।४३

फ. १३८० प्र. सावन ११ बं. श्रावण १० ने. ११ गते

कामदा एकादशी ११ व्रत सबका (शिवपुराण)

आज्ञा में वे दोनो घर मे सुखी से रहने लगीं और घुश्मा अपनी बड़ी बहिन की आज्ञा से नित्य प्रति एक सो एक शिव पार्थिव लिंगों की षोडसो पचार पूजा करके वे पार्थिव लिंग नित्य ही तालाब में जाकर बहा देती इस प्रकार उसका नित्य क्रम था एक दिन पुत्र प्राप्ति के लिये शिव पार्थिव पूजन किया इस प्रकार की संख्या भी एक लाख हो गई भगवान शंकर की परम कृपा से उसे परम सुन्दर गुणवान पुत्र प्राप्त हुआ पुत्र पाकर सुधर्मा अत्यन्त प्रसन्न हो गये किन्तु उनकी बड़ी बहिन पुत्रवती बहिन से ईर्षा करने लग गई ॥

(तेतीसवां अध्याय) घुश्मेश शिव ज्योतिलिंग की उत्पत्ति घुश्मेश्वर शिवलिंग की उद्भव कथा सुजान पढे सुने जो ध्यान से करत जग कल्याण

सूतजी बोले हे मुनियो इस प्रकार कुछ समय के अनन्तर वह ब्राह्मण कुमार बड़ा हो गया सुधर्मा ने उसे उसे विवाह योग्य देखकर उसी योग्य ब्राह्मण की कन्या से उस का विवाह कर दिया फिर घुश्मा ने अपने पुत्र तथा पुत्र बधू को ले जाकर अपनी बहिन के चरणों मे डाल कर कहा ये आप का पुत्र है और ये आप की पुत्र बधू है यह कह कर अपने पुत्र एवं पुत्र बधू से भी कहा कि पुत्री यह तुम्हारी माता है इनकी सेवा करना तुम्हारा काम [illegible] कर उन दोनों को समझाया फिर वे दोनों ही सुदे [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुड़ खाने से सुपारी का नशा उतर जाता है

(मिथुन का चन्द्र) सोना चांदी तेज

Friday the 27th July 1973.

रा. श्रावण ५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ جمادی الآخر ۲۵ جمعہ

शुक्रवार २७ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. १२ सं. २०३०

घ. ५३⁄५ | ३⁄४६ मृगशिरा १६|३१ र. उ. ५|२६ र. अ. ६|४३

फ. १३८० प्र. सावन १२ बं. श्रावण ११ ने. १२ गते

प्रदोष १२ व्रत (शिवपुराण)

ईर्षा बढती ही गई उसका व्योहार भी वैसा होगया एक दिन उसने विचार किया कि मेरा यह दुःख तभी शान्त होगा जब घुश्मा की आखों से पुत्र के मर जाने पर जल की धारायें बहेंगी अब मुझे यही उपाय करना चाहिये सूतजी बोले कुटिल पुरुषों को शत्रुता के बस में आकर बुरे भले का कुछ भी विचार नहीं रहता उनकी बुद्धि बल आदि सभी नष्ट हो जाते हैं इस प्रकार सुदेहा ने भी कपट से आकर एक रात को सबके सो जाने पर हाथ में छुरी उठाली और उस सोते हुये पुत्र को जाकर उसने मार दिया फिर उसके टुकड़े टुकड़े कर के रातों रात उसी तालाब में जाकर डाल दिया जिसमें घुश्मा नित्य ही शिवपार्थिव लिंग बहा आती थी यह सब कर करा कर घर में आकर सो गई प्रातः काल हुआ घुश्मा सोकर उठी अपने नित्य के कर्मों में लग गई सुदेहा भी उठकर अपने काम काज में लग गई फिर पुत्र बधू उठी उसने खाट पर रुधिर एवं शरीर के कुछ टुकड़े कटे देखे तो उसके होश न रहे आपनी सास के पास आकर कहा कि आप के पुत्र कहाँ है मुझे तो ऐसा लगता है कि उन्हें किसी ने मार दिया है यह कहकर [illegible] मानो [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बांझ ककोड़े की जड़का लेप स्तन पीड़ाको नष्ट करता है
(कर्क का चन्द्र २४।२८) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 28th July 1973.

रा॰श्रावण ६ शक:१८९५ ४ ١٣٩٣ شنبه ٢٧ جمادى الاول

शनिवार २८ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. १४ सं. २०३०
घ. ५२।५५ आर्द्रा १२।३० र. उ. ५।२६ र. अ. ६।४२
फ. १३८० प्र. सावन १३ वं. श्रावण १२ ने. १३ गते

मास शिवरात्रि १४ व्रत (शिवपुराण)

हो वह भी यह देख कर रोने लग गई इधर सुदेहा बनावटी दुःख प्रगट करती हुई वह भी रोने में तत्पर हो गई किन्तु अपनी सौत को रोता देख कर भीतर ही भीतर प्रसन्न थी सुधर्मा शिवपूजन से निवृत्त हो वहां आये उन्होंने यह काण्ड देख कर कहा शोक एवं सन्ताप करना व्यर्थ है जिसने यह पुत्र दिया है वही उसका रक्षक है घुस्मा तुम अपना नित्यकृत्य न छोड़ो यह कह कर उसे भेज दिया घुस्मा नित्य की तरह शिव पार्थिव लिंग लेकर उसी तालाब पर बहाने चली गई वहाँ बहा कर जब लौटने लगी तो उसने तट पर खड़ा हुआ दिखाई दिया वह झट ही माता के समीप पहुँच कर बोला मातेश्वरी तुम्हारे प्रताप एवं शिव कृपा से मैं मर कर भी जीवित हुआ हूँ तब घुस्मा को पुत्र जीवित देख कर प्रसन्न हुई वह तो उसी प्रकार शिव आराधन में रही उसी समय उस की परम भक्ति से प्रसन्न होकर ज्योतिर्लिंग स्वरूप शिव प्रत्यक्ष हो गये और इस प्रकार बोले हे घुस्मे तेरे इस पुत्र को सुदेहा ने मार दिया था अब मैं उस पापिनका वध करता हूँ मैं तुम्हारी इस भक्ति से प्रसन्न हूँ अपना मनचाहा वर मांगो यह सुन कर घुस्मा प्रणाम करके बोली [illegible] यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेमलके कांटोंका उबटन दूधके साथ मुँहासेको नष्ट करता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 29th July 1973.

रा.श्रावण ७ शाक: १८९५ ४ | ۱۳۹۳ جمادی الاخر ۲۸ | ایک شنبه

रविवार २९ जुलाई सन् १९७३ श्रावण कृ. ३० सं. २०३०

घ. ४७|१५ पुनर्वसु ८|२९ र. उ. ५|२७ र. अ. ६|४२

फ. १३८० प्र. सावन १४ बं. श्रावण १२ ने. १४ गते

स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या ३० (शिवपुराण)

तब सदा शिव बोले अरी घुश्मे उसने तो तुम्हारे साथ
बुरा किया फिर तू उस पापिन का भला क्यों चाहती है
यह सुन कर घुस्मा बोली हे नाथ क्या मैं बुरी हूँ जो उस
बुरा करने वाली का बुरा चाहूँ स्वामिन् वर देते हैं तो यही
वर दीजिये सदा शिव प्रसन्न होते हुये बोले अच्छा ऐसा ही
होगा और भी मन चाहा वर माँग सकती हो तब घुस्मा बोली
हे स्वामिन् यदि ऐसा है तो आप लोगों के कल्याण एवं पालन
के लिये यहीं विराजमान हो जाँय यही मेरी प्रार्थना है य
ह सुनकर भगवान बोले हे घुस्मे मै घुस्मेश नाम से
ज्योतिर्लिंग रूप होकर यहीं निवास करूँगा यह तालाब
लिङ्ग स्थान हो जायगा यह त्रिलोकी में शिवालय
नाम से प्रसिद्ध होगा दर्शनार्थियों के सभी मनोरथ इस
के द्वारा परिपूर्ण होंगे सूतजी बोले इस प्रकार कहकर स
शिव वहीं सदा के लिये स्थिर हो गये इतने में सुदेहा सुध
र्मा वहाँ आ पहुँचे तब सबने मिलकर एक सौ एक पा
र्थिव शिव पूजन करके ही सबका परस्पर प्रेम हो गया घ
र जाकर सुख पूर्वक रहने लगे सूत जी बोले हे मुनिश्वरो इस प्र
कार मैने आप लोगों को बारह शिव ज्योति लिंगों की उत्पत्ति क
हानी है शिव ज्योतिर्लिंगों की उत्पत्ति क्या ऐसे सुनाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टट्टीकरतेसमय बाएँपैरपर जोर देकर बैठनेसे अजीर्णनहीं होता
(कर्क का चन्द्र) सोना चांदी सम
Monday the 30th July 1973.
रा॰श्रावण ८ शक॰१८९५ १३९३ دوشنبه ۲۶ جمادى الاخر
सोमवार ३० जुलाई सन् १९७३ श्रावण शु॰ १ सं.२०३०
घ॰ ४२।२ पुष्य ५१।२४ र॰ उ॰ ५।२८ र॰ अ॰ ६।४१
फ॰ १३८० प्र. सावन १५ बं. श्रावण १४ ने. १५ गते

श्रावण सोमवार व्रत

(शिवपुराण उमासंहिता) (सातवां अध्याय)

नरकलोकके दुखसुनेंहु मीत प्रभूत। पापमतसनु इखस्लीतरंजस्यगूढ॥
श्रीसनत्कुमारजी वेदव्यासजी से बोले हे महर्षि सभी पापी
लोग यमलोक मे पहुंचकर पाप का फल अवश्य भोग
ते हैं इन मे भेद इतना है कि पुण्यात्मा यमराज के पास
उत्तर के मार्ग से पहुंचाये जाते हैं और पापात्मा दक्षिणमार्ग
मार्ग वैवस्वत नगर यहां से छियासी हजार योजन दूरी पर है
धर्मात्मा लोग तो सुगम प्रकार से पहुंच जाते हैं और पापी कठि
नता से पहुँचते हैं पापियों के जाने के मार्ग में बड़े नुकीले कांटे
बिछे रहते है बड़ी गरम बालू होती है और छुरियों के समान
पैने कंकड़ पड़े रहते हैं उसी मार्ग मे कीचड़ ऊंची नीची जगह
लोह शंकु सुइयें अंगारों के समान तपी पृथ्वी बड़ी २ डालियों
वाले चुभते चुभते बांस बड़े बड़े लम्बे वन: दु:ख दायक अन्ध
कार वन मे लगी आग बर्फीले मार्ग कड़ाके सर्दी गन्दा पानी
सिंह भेड़िया बाघ मच्छर आदि से व्याप्त वन बड़ी २ जोंके
जहरीले सांप मदमस्त हाथी तीक्ष्ण दातों वाले सूअर बड़े २
भयानक जीवजन्तु चोर डाकिनी भूत प्रेत बड़े २ शरीर वाले
सभी फिरते रहते हैं कि मार्ग में चलते पापियों को स
ते हैं इन्हीं प्रकार कष्टों को झेलते २ पापात्मा प्राणी
...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूर दूधमें पीस घी मिला उबटन करनेसे झाँई दूर होती है

(सिंह का चन्द्र १।५४) सोना चाँदी सम

Tuesday the 31st July 1973.

रा॰श्रावण ९ शाकः १८९५४ । ١٣٩٣ جمادى الاخر ٣٠ ...

मंगलवार ३१ जुलाई सन् १९७३ श्रावण शु॰ २ सं.२०३०

घ॰ ३७।३४ श्लेषा $\frac{१।५४}{द्व॰}$ र॰ उ॰ ५।२८ र॰ अ॰ ६।४०

फ॰ १३८० प्र. सावन १६ बं. श्रावण १५ ने. १६ गते

(शिवपुराण)

माई कोई भी नहीं मिलता उसका रुप प्रेत का होता है नग्न शरीर होंठ एवं तालु सूखे हुए पानी न मिलने के कारण अत्यन्त प्यासा ऊपर से यमदूतों के निर्दय डण्डे एवं अंकुस पड़ते हैं पैरों मे पड़े हुये पाशों से घसीटते घसीटते यमदूत ले जाते हैं डरता है जलता है भूखा है प्यासा है इसको किसी का परवाह नहीं यमदूत तो पाशों से बाँधकर घसीटते लिये जा रहे हैं किसी को अंकुस का प्रहार करते हैं किसी को काँटे एवं अंगारा से भरे मार्ग से खींच रहे हैं किसी की जीभ मे रस्सी डालकर खींचते हैं तथा किसी तथा किसी की जीभ में अंकुस चुभा देते हैं किसी के हाथ पैर किसी के नाक कान किसी के होंठ किसी की लिंगेन्द्रिय किसी के अण्ड इसी प्रकार किसी के अन्य अंगों को काट २ कर यतनायें पहुँचाते जाते हैं कठोर प्रहार मार खाकर पापात्मा चिल्ला उठते हैं इधर उधर भागते हैं देह उनका फटता जाता है खून तथा पीब बहती जाती है उस को पीने के लिये बड़े २ डाढ़ों वाले कीड़े चिपटकर नोचते रहते हैं भूखे प्यास व्याकुल होकर पापात्मा याचना करते हैं पर सुनता कौन है यमदूत तो अत्यन्त निर्दयता के साथ घसीट कर यमपुरी ले जाते हैं जिन पुरुषों ने कुछ दान किया है उनके साथ तो ... [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांडुमें सदा सिकञ्जबीन अर्क सांठी में दे
(सिंह का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Wednesday the 1st August 1973.

रा० श्रावण १० शकः १८९५ ४ । १३९३ रजब, । १६ शव्वाल, ५४ ह०
बुधवार १ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु० ३ सं. २०३०
घ० ३३।५७ पू० फा० ५८।२६ र० उ० ५।२९ र० अ० ६।३९
फ० १३८० प्र० सावन १७ बं० श्रावण १६ ने० १७ गते

मधुश्रवा ३, तिलक जयन्ती (शिवपुराण)

तथा जल रहता है उसे खाते पीते जाते हैं यमपुरी में बड़ी कठिनता से पहुंचाते हैं। यमराज की आज्ञा से उन्हें यमदूत यमराज के सम्मुख ले जाते हैं जो श्रेष्ठ कर्म करने वाले होते हैं उनका तो यम आदर भी करते हैं फिर उनके पुण्यों के अनुसार बिमानों में बिठा कर स्वर्ग लोक में भिजवा देते हैं यदि उनका कुछ पाप कर्म होता है तो स्वर्ग के अनन्तर उन्हें पापों का भी थोड़ा फल मिलता है यदि निरन्तर पापात्मा होते हैं तो उन्हें भयङ्कर डाढ़ों वाले बिकराल भौंहों से देखते हुए अनेकों प्रकार के भयानक अस्त्र-शस्त्र धारे हुए अठारह हाथों वाले भैंसे पर सवार जलती अग्नि के समान तेजस्वी इस प्रकार के भयानक रूप धारण कर यमराज दिखाई देते हैं और चित्रगुप्त का भी यही रूप दिखाई देता है तब उन पापियों को यमराज फटकारते हैं चित्रगुप्त धर्म युक्त बचन कहते हैं ॥

(नरक वर्णन) साठवां अध्याय

नरक लोक वर्णन के अनेक विध प्रकार। सात रौरव आदि सभी नरक मंडल और चित्रगुप्त कहते हैं हे पापियो तुमने तो सदा पाप करते रहे हो अब उसका फल भी भोगो पापात्मा राजाओं से चित्रगुप्त कहते हैं अरे अभिमानी राजाओ तुमको थोड़े समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीर्य रक्षा करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है

(कन्या का चन्द्र १३।२५) सोना चांदी सस्ता

Thursday the 2nd August 1973.

रा॰ श्रावण ११ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ٢ پنجشنبه

गुरुवार २ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ ४ सं. २०३०

घ॰ ३१।२१ उ. फा. ५८।१२ र॰ उ. ५।३० र॰ अ. ६।३९

फ॰ १३८० प्र. सावन १८ वं. श्रावण १७ ने. १८ गते

श्रीगणेश ४ व्रत

(शिवपुराण)

राज्य सुख मिला था उसे सर्वस्व अपना मान बैठे अपने सुख को मुख्य रख कर अन्याय पर तुल गये प्रजा लि-चारी को बड़े २ कष्ट पहुंचाते अनुचित शासन करते रहे अब उसका फल पाओ उस समय उनके पाप रूप मैल को छुटाने के लिये धर्मराज यमदूतों को आज्ञा देते हैं हे चण्ड एवं महाचण्ड तुम दोनों इन पापी राजाओं को बल पूर्वक पकड़ कर अग्नि कुण्ड में फेंक दो जिससे कि इसके पापों का मैल जल जाय इतना सुनते ही यमदूत राजाओं को उठा कर चारों ओर फिरा २ कर गरम २ भट्ठियों में फेंक देते हैं और ऊपर से बज्र प्रहार करते हैं तब उनके कानों से रुधिर टपक पड़ता है बेहोश हो जाते हैं उसके बाद जब पवन लगता है तब जर्जर शरीर होते हुये भी जीवित हो जाते हैं फिर उन्हें नरकों में पटका जाता है वे नरक इस पृथ्वी के नीचे सात पर्दों के भी नीचे अत्यन्त अन्धकार में हैं वह नरक २८ कोटि हैं जिसमें १ घोर कोटि २ सुघोर कोटि ३ अति घोर ४ महाघोर ५ घोररूपा ६ तलातला ७ भयानक ८ कालरात्रि ९ भयोत्तरा १० चण्ड महाचण्डा ११ चण्ड कोलाहला १२ प्रचण्ड १३ चण्ड नायका १४ पद्मा १५ पद्मावती १६ भीता १७ भीमा १८ भीषण [illegible] [illegible] २२ [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहरुवा गले में बांधने से पांडु रोग नष्ट होता है
(कन्या का चन्द्र) सोना चांदी सम
Friday the 3rd August 1973.
रा० श्रावण १२ शक: १८९५ ४ |ﺗ۱ﺗ ﺟﺐ ﻳ ﺗ ۱۳۹۳
शुक्रवार ३ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु० ५ सं. २०३०
घ. २९।५९ हस्त ५९।१ र. उ. ५।३० र. अ. ६।३८
फ. १३८० प्र. सावन १९ बं. श्रावण १८ ने. १९ गते

नागपंचमी ५ (शिवपुराण)

२३ पङ्क कोप सुदीर्घ शिलादित २५ सम्र २६ भीमसबलाभ २७ उग्र २८ दीप्त प्राय है इस प्रकार से पापात्माओं को यातना पहुँचाने के लिये अठाईस नरककोटि कही गई है यही सौ रौरव एवं चालीस सौ महा नरक मण्डल कहे गये है ॥

(नवाँ अध्याय साधारण नरकगतिवर्णन)

कर्मशील इन जगत में कर्म किये थे जोइ। तिन का फल तहं लीजिये अब काहे दुःख होइ

जैसे खोटे सोने को अग्नि में डालकर शुद्ध करते हैं उसी प्रकार जीवात्माओं को पाप मैल को दूर करने के लिये उन्हें नाना नरकाग्नियों में डाल २ कर शुद्ध किया जाता है पहिले पापियों के दोनों हाथ रस्सियों से जकड़ लिये जाते हैं फिर उन्हें एक बड़े वृक्ष की ऊँची डाली पर लटका देते हैं फिर उन्हें बड़े जोर के साथ झोटा देते हैं उसके बाद उन पापियों के पैरों में लोहा बाँध देते फिर उस भारी भार के कारण बहुत दुःखी होकर अपने पाप कर्मों को याद करते हैं उसके बाद उनके अंग फोड़े जाते हैं फिर उबलते हुए तेल के कड़ाहों में डाल कर बैंगन की भाँति उन्हें पकाया जाता है उसके बाद विष्ठ के कुण्डों मे पटक देते हैं जहाँ कीड़ों के झुण्ड उसे नोचने के लिये चिपट जाते हैं। बड़े २ पैने डंको वाले कीट तथा लोहे जैसी कठोर चोंच वाले कौए कुत्ते, भेड़िये आदि उसे नोचते खाते हैं और भी भयङ्कर मुख बघेरे आदि जीव [illegible] जाते हैं इस प्रकार के अनेक यातनायें उन पापी प्राणि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धारोष्ण दूध वीर्य को बढ़ाता है
(तुला का चन्द्र ३०।२१) सोना चाँदी सम
Saturday the 4th August 1973.
रा॰ श्रावण १३ शकः १८९५ ४ ।३९३ رجب ٤ شعبان
शनिवार ४ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ ६ सं. २०३०
घ॰ २९।५० चित्रा ६०।० र॰ उ. ५।३० र॰ अ. ६।३७
फ़. १३८० प्र. सावन २० बं. श्रावण १९ ने. २० गते

(शिवपुराण)

को पहुँचाई जाती है उसके बाद बाकी के नरकों में भी फेंका जा
जहाँ उनकी पीठों पर बड़े बड़े तपाये हुये हथौड़े पड़ते हैं कहीं २
आरों से उन्हें चीरा जाता है कहीं कहीं उन पापात्माओं को अपने
ही माँस तथा रुधिर खाने को बाध्य किया जाता है इसी प्रकार
पापात्मा अनेकों कष्ट पाते हैं किन्तु मरते नहीं उनका शरीर
यातना मय होता है वह अनेक दुःखों को भुगत लेता है
फिर निरुच्छ्वास नामक नरक में भी स्वास लेने के बिना
पापात्मा प्राणी बहुत समय तक पड़ा रहता है वहाँ रेत के ही म
होते हैं जिनसे उसे और भी अधिक पीड़ा पहुँचे रौरव ना
में तो प्राणियों के पैर, मुख, गुदा, शिर, आँखे माथा आदि प
खूब गरम हुए अंकुस एवं कठोर घनों का तड़ा तड़ प्रहार
जाता है फिर बार बार गरम रेत एवं गन्दे कीचड़ में उसे प
दिया जाता है उसके बाद कुम्भी पाक नरक में बहुत गरम
तेल में उसे पकाते हैं फिर लाजाभक्ष, सूची पत्र लोह कुम्भ
नरकों डालकर धीरे धीरे श्वास लेने लगते हैं फिर तीक्ष्ण
धार कूप तथा महाज्वाला नरक में पटके जाते हैं वहाँ
भी होती है जिससे पापात्मा इधर उधर भागते हैं फि
यम दूत इनके कन्धे को झुका देते हैं पीछे की तरफ
सिर लगा देते हैं फिर बज्र के समान अपने मुक्कों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलसी भूनकर लड्डू बनाके खानेसे वीर्य बढ़ता है
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 5th August 1973.

रा॰ श्रावण १४ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رجب ٥ یکشنبہ
रविवार ५ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ ७ सं. २०३०
घ॰ ३१।१ चित्रा १।२४ र॰ उ. ५।३१ र॰ अ. ६।३७
फ़॰ १३८० प्र. सावन २१ बं. श्रावण २० ने. २१ गते

गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती (शिवपुराण)

को एक ही रस्सी में बाँधकर कीचड़ से लपेट लेते हैं फिर करषाग्नि आदि अग्नि में पकाते हैं इस प्रकार की बड़ी यातनायें पापी लोग नरकों में भोगते हैं ॥

(दसवाँ अध्याय नरकगति भोगवर्णन)

भिन्न भिन्न कृत कर्मके कर्मतुल्य फल लेहु सुकृत सुन्दर फल लेहु दुष्कृत दुःख फल लेहु

नास्तिक द्विज हारव्य नरक में जाते हैं वहाँ उन पर आधे कोस लम्बी जीभ के समान बड़े पैने हल चलाते हैं जिन पापियों ने माता पिता तथा गुरु को फटकारा हो उनके मुख विष्ठा से भर दिये जाते हैं फिर उन पर प्रहार किया जाता है जिन पापियों ने शिवालय बावड़ी तालाब कुयें बगीचे ब्राह्मणों के घर नष्ट भ्रष्ट किये हों तथा वहाँ व्यभिचार करते रहे हैं किंवा काम अन्धे होकर उबटन मर्दन स्नान आदि किया हो पान जल पान भोजन खेल द्यूत विषय भोग आदि किया हो उन्हें कोल्हू में पेरा जाता है फिर सृष्टि के संहार होने तक नरकाग्नि में पकाया जाता है इसी प्रकार पर स्त्रियों के साथ भोग विलासी पुरुषों को अपने कों दुःख देकर यमदूत लोहे की बनाई अत्यन्त गरम २ स्त्री की मूर्ति से चिपटा देते हैं इसी प्रकार महात्माओं की निन्दा सुनने वाले पापियों के कान में लोह तथा ताम्बे की सलाखों तथा कीलों से गलाये हुये [illegible] शीशा पीतल आदि [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर की ओर पैरकर सोने से दिमाग दुरुस्त रहता है
(वृश्चिक का चन्द्र ४३।२२) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 6th August 1973.

रा० श्रावण १५ शकः १८९५ ४ ।१३९३ رجب ٥ دوشنبه
सोमवार ६ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु०.८ सं. २०३०
घ. ३३।२२ स्वाती ४।५४ र. उ. ५।३१ र. अ. ६।३६
फ. १३८० प्र. सावन २२ बं. श्रावण २१ ने. २२ गते

श्रावण सोमवार व्रत (शिवपुराण)

तेल से भर देते हैं भौंहें एवं आँखें मटका२ कर जो पापी नर नारियों को देखते हैं उनकी वही इन्द्रियाँ नरकों में नष्ट की जाती हैं जो पापी नरनारी को बुरी दृष्टि से देखते हैं उनकी आँखें सुइयें तथा गरम राख भर दी जाती है जो पापी लालची होकर देवताओं के बाग के फूल तोड़ लेते हैं या उन्हें सूंघते हैं मालायें बना कर पहिन लेते हैं नरकों मे उनके सिरों पर लोह शंकु ठोके जाते हैं जो पापी महात्माओं के धर्मोपदेशों को देवता गुरु भक्त धर्म शास्त्र आदि की निन्दा किया करते हैं उन लोगों की छाती कण्ठ, जीभ, तालु, होंठ, नाक, सिर आदि में तीन तीन नोकें वाले गरम२ लोहे की कीलें ठोकी जाती हैं ऊपर से मुगदरों का प्रहार किया जाता है परधन हर्ता एवं ब्राह्मणों के पैर लगाने वाले पुरुष सभी प्रकार के नरक भोगते हैं शिव पूजा सामग्री गौ तथा ज्ञान शक्ति आदि को पैरों से लताड़ा करते हैं उन पापियों को सभी नरकों में पीड़ित किया जाता है शिवालय के निकट एवं अन्य देव मन्दिरों के पास तथा बगीचों में जाकर मल मूत्र करने वाले पापियों को दुष्ट कौवों के साथ लिंगेन्द्रिय पर मुगदर प्रहार करके अण्डकोषों में तथा लिंग छिद्रों में गरम२ बालु भर देते हैं धन होते या जो धन दान नहीं करता उनकी इन्द्रियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंवलेसे नित्य बालको धोना सफेद बालको काला करे
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Tuesday the 7th August 1973.

रा॰ श्रावण १६ शकः १८९५ ४ ।۳۱۳ رجب ۷ سمشی

मंगलवार ७ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ ९ सं. २०३०

घ॰ ३८।५३ विशाखा ०।३१ र॰ उ॰ ५।३१ र॰ अ॰ ६।३५

फ॰ १३८० प्र॰ सावन २३ बं॰ श्रावण २२ ने॰ २३ गते

संकट मोचन, दुर्गाजी यात्रा-(शिवपुराण)

घर में आये अतिथि को फटकार कर खाली हाथ निकाल देते हैं ऐसे पुरुषों को नरकों में बुरी गति होती है और जो पुरुष शिव पूजन के पश्चात् विधिपूर्वक हवन करके शिवमंत्र बोलकर यम मार्ग को रोककर रहने वाले श्याम एवं शबल दो श्वानों तथा पश्चिम वायव्य उत्तर नैरित्य दिशाओं के वासी कौवों को जो बलि दिया करते हैं उन्हें यम के दर्शन नहीं करने पड़ते वे तो सीधे स्वर्ग को जाते हैं इसी कारण नित्य ही चार हाथ का मण्डप बनाके उसके ईशान में धन्वंतरि पूर्व में इन्द्र पश्चिम में सुदर्शन दक्षिण में यम तथा पितृश्वर पूर्व में सूर्य द्वार पर धाता विधाता इन सब को बलि देनी आवश्यक है कुत्ते श्वपच एवं कौवों के लिये तो बलि पृथ्वी पर रख देनी चाहिये स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कार एवं हंतकार ये चारों गाय के स्तन हैं इस कारण गो सेवा परम आवश्यक है सब को सुखदायक गौ की सब कोई पूजा करें इस प्रकार न करने वाले पुरुषों की नरकों में दुर्गति होती है विशेष पाप कर्मों के कारण नरक भोगने के बाद भी उनको सुख नहीं मिलता ऐसे पापी जन्म पाकर भी दुःख व्याकुल भोजन के लिये तरसते हुये दूसरों को सुखी देखकर [illegible] करते हैं पुण्य वान पुरुष तो श्रेष्ठ गृहस्थ में जन्म पाकर [illegible] ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंठमाल में गुग्गुल और अफीम बारीक पीसकर लगावे
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सम

Wednesday the 8th August 1973.

रा॰ श्रावण १७ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ٨ چهارشنبه
बुधवार ८ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ १० सं. २०३०
घ॰ ४१।१५ अनुराधा १५।६ र॰ उ. ५।२२ र॰ अ. ६।३५
फ॰ १३८० प्र. स्रावन २४ बं. श्रावण २३ ने. २४ गते

पाप पुंज वर्णन (शिवपुराण)

पाप नरक को द्वार है ध्यान धरो सब कोय। यही पढो इस बिषय मे पाप के फल होय
सनत्कुमार जी बोले हे व्यास जी पराया भाग मिटा देना अभिमान क्रोध कपट एवं कृतघ्नता करना बिषयों मे पडे रह साधुओं से द्वेस करना श्रेष्ठ कन्या को कलंक लगाना शिवालय के बृक्ष तथा बगीचे किंवा घर में लगे बृक्ष फूल टहनियाँ उजाड डालना अपने नोकर कुटुम्बी आदि के संचित धन लूट लेना धान्य तथा पशु-चुरा लेने यज्ञ बावली कुआँ आदि में स्थित बगीचों के जल को अपवित्र करना स्त्री पुत्र आदि बेच डालना स्त्री के कमाये धन से जीविका करना स्त्री के आधीन रहना स्त्रियों की रक्षा न कर सकना समयानुसार दान न देना धान्य तथा वर्षा के आधार पर रहना व्यापार करते हुए असत्य बोलना मारण मोहन उच्चाटन आदि का प्रयोग करना वेधक करना शास्त्रीय ब्रत त्याग शास्त्रीय आचार छोड कर मन माना करना नास्तिक शास्त्र मानना व्यर्थ में तर्क कुतर्क करते रहना देव गुरु अग्नि ब्राह्मण चक्रवर्ती राजा आदि को सामने अथवा पीछे निन्दा करना पित्र तथा देवयज्ञों का न करना कर्म त्यागना मधुर व्योहार न करना नास्तिकता उत्तम पर्व अनु पर्व का व्यापालन करके जल में पशुओं में पर स्त्री में रजस्वला में जीवन मे नालों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संग्रहणी पर इन्द्र जौ और अतीस मट्ठ से खावे
(धनु का चन्द्र २१।१९) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 9th August 1973.
रा० श्रावण १८ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ١ شہریور
गुरुवार ९ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु० ११ सं. २०३०
घ. ४६।१० ज्येष्ठा २१।१९ र. उ. ५।३२ र. अ. ६।३४
फ. १३८० प्र. सावन २५ बं. श्रावण २४ ने. २५ गते

पुत्रदा ११ एकादशी व्रत सबका (शिवपुराण)

तालाब कुएँ एवं रस व्योपारादि नष्ट कर डालना एक पंक्ति में भोजन करने वालों से भेद करना इत्यादि २ पाप करने वाले नर हो या नारी सभी पापी कहे गये हैं पर स्त्री के लिये संतप्त रहना कम तोलना ब्राह्मण होते हुये शूद्रों से व्यभिचार करना मद्यपान हिंसा करना बाँस ईंट लकड़ी पटिया सींग कील आदि से मार्ग रोककर दूसरों की सीमा हथिया लेना झूठे कार्यों में संलग्न नौकर तथा पशुओं पर दयारहित हो दण्ड देना स्वामी मित्र गुरु से शत्रुता दूसरे को भूखा बिठाकर स्वयं खा बैठना इन्द्रियों के दास बने रहना सन्यासी होकर घर में टिके रहना शिवमूर्ति तोड़ना गाय को मारना कमजोर पशुओं पर अधिक बोझा लादकर पीडित करना भोजन न देकर पशुओं को खेती में जोत लेना भार से अथवा भूख से व्याकुल गाय बैल का पालन न करना इस प्रकार के पाप करने वाले मनुष्य गौ हत्या जैसे पापी हैं बूढे बैल कसाइयों को देना बन्ध्या गाय जोत लेना आदि पापकर्त्ता मनुष्य नरक में जाते हैं भूखे प्यासे रास्ते के चलने से थके हुये भिक्षुक, दीन, वृद्ध, दुर्बल, रोगी भोजन की इच्छा से आये अतिथि को निराश कर देना शरणागतों पर दया न करनी इत्यादिक पापकर्ता अज्ञानी मूर्ख नरकों में जाते हैं मरने के बाद मनुष्य का सहायक तो धर्म है पापनाशक और पुत्र कलत्रादि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिल्टी पर सज्जीखार शंखचूर्ण पानीमें पीसकर लेप करे
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता
Friday the 10th August 1973.
रा० श्रावण १९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ١٠ ...
शुक्रवार १० अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु० १२ सं.२०३०
घ० ५१।१७ मूल २७।२१ र० उ. ५।३३ र० अ. ६।३३
फ० १३८० प्र. सावन २६ बं. श्रावण २५ ने. २६ गते

महालक्ष्मी व्रत (शिवपुराण)

बकरी तथा भैंस के व्यापार कर्ता नीच स्त्री का पति शूद्र किंवा क्षत्रियों जैसी आजीविका इत्यादि काम करने वाला ब्रह्मण नरक गामी होता है जो अन्याय करने वाले राजा ब्राह्मणों से कर लेते हैं किंवा अन्याय से संग्रहीत धन ब्रह्मणों को दान देते हैं वह भी नरक गामी होते हैं ब्रह्मण होकर शिल्प करने वाले बढ़ई सुनार राजा की ध्वजा बनाने वाले नौकर इस प्रकार के कपट करने वा ब्रह्मण नरक गामी होते हैं राजा पर स्त्री को चुराकर घर में रखे तथ परस्त्रियों पर आसक्त रहे वह महा पापी है, जो राजा योग्य पुरुषो को चोर कह कर दण्ड तथा चोरों को अच्छा कहकर छोड़ देना नीति का विचार न करना आदि किया करते हैं वे नरक गामी होते हैं घृत, तैल, अन्न, पेय पीने की चीजें शहद, माँस, मद्य, कमण्डल, ताम्बा, सीसा, राँगा, हथियार, शंख आदि वस्तुओं के चुराने वाले वैश्य, वैष्णव आदि नरक गामी होते हैं पाप करने वाले चाहे देवता भी हों सभी नरक में जाते हैं पशु पक्षी मनुष्य दानव पापियों पर शासन करने वाले यमराज हैं परस्त्रियों को चुराने वाले न्याय का व्यौहार करने वाले छिपकर पाप करने वालों के शासक यमराज हैं इसी कारण पापों के लिये प्रायश्चित करने चाहिये यदि प्राय... न किये जाँय तो पाप फल भोगे बिना करोड़ों वर्षों तक ... ... सकता स्वयं पाप करने वाले अथवा पापों के ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान की पीड़ा पर माँ का दूध गरम कर कान में डाले
(मकर का चन्द्र २०।४८) सोना चांदी सस्ता
Saturday the 11th August 1973.
रा॰ श्रावण २० शकः १८९५ ४ १३९३ رجب ११ شنبه
शनिवार ११ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ १३ सं. २०३०
घ॰ २६।४ पू. षा. ३४।१४ र॰ उ. ५।२२ र॰ अ. ६।३३
फ॰ १३८० प्र. सावन २७ बं. श्रावण २६ ने. २७ गते

शनि प्रदोष १३ व्रत

(अन्न दान महिमा) (शिवपुराण)

अन्नदान महा दान है महिमा बड़ी अपार। जीवन नर सुख नहीं लहे दान जगत का सार
परम दयालु शुभकर्म कर्ता पुरुष उस भयानक रास्ते से बिना
कष्ट यमपुर पहुँच जाते हैं ब्राह्मणों को जूते खड़ाऊँ आदि
पहिनाने वाले साधुवों को खड़ाऊ वस्त्र भोजन आसन देने वाले
पुरुष घोड़ों पर सवार होकर ही यमपुर पहुँचते हैं छातके दानी
छाता पाते हैं शय्या एवं आसन दान कर्ता विश्राम करते एवं बाग
बृक्ष आदि लगाने वाले बृक्षों की छाया के सहारे होते हुए यम
पुर पहुँचते हैं फूलों की बाटिका लगाने वाले पुष्प विमानों में
बैठकर जाते हैं देव मन्दिर सन्यासी मठ निर्धनों के घर बनवा
-कर देने वाले पुरुषों को सुन्दर भवन बिश्राम के लिये मिल
ते हैं देव, अग्नि, ब्राह्मण, माता, पिता आदि की सेवा सतकार
करने वाले पुरुषों का आदर होता है दीप जलाकर दूसरों को
प्रकाश देने वाले जन परम प्रकाश पाकर निरोगता पूर्वक सुख
से विचरण करते हैं गुरु सेवक विश्राम पूर्वक होकर दीन
गरीब एवं ब्राह्मणों का दान देने वाले अपने घर जैसे सुख
भोगते हुए यम का रास्ता करते हैं गौदान करता मन चाहा सुख
[illegible] हैं अन्न जल दाता अन्न जल पाते हैं ब्राह्मणों के चरण धोने वाले
[illegible]त मार्ग से जाते हैं ब्राह्मणों के चरणों की मालिस कर[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] है ऐसे पुरुषों [illegible]

222

बेवाचकी जड़ घासके साथ देनेसे भैंसका दूध बढ़ता है

(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 12th August 1973.

रा• श्रावण २१ शकः १८९५ ४ | १३९३ رجب ١٢ | ایک شنبہ ١٢

रविवार १२ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु• १४ सं. २०३०

घ. ६१।० उ. षा. ४०।६ र• उ. ५।२३ र• उ. ६।३२

(शिवपुराण)

फ. १३८० प्र. सावन २८ बं. श्रावण २७ ने. २८ गते

फटका नहीं सकते स्वर्ण रत्न आदि के दान से पुरुष बड़े २ किले पार कर जाते है चाँदी आदि के दान से सुख पूर्वक गमन करते हैं स्वर्ण तथा रजत दान दोनो स्वर्ग के सुखदायक हैं अन्न तो सब दानों में उत्तम दान है यही दान प्राणियों को उत्पन्न करता प्राणियों मे उत्साह प्रसन्नता बल बुद्धि रुधिर मास चर्वी वीर्य आदि वर्धक है अन्न न मिलने पर अनेकों प्रकार के सुख चैन वैभव विलास आदि वर्द्धक हैं अन्न न मिलने पर अनेकों प्रकार के सुख चैन वैभव विलास आदि मनुष्यों को जीवित नहीं रख सकते इस कारण अन्न दान करने वाले सभी सुख पाते हैं दान में दिये अन्न खाने से शरीर पुष्ट होता है उस शरीर से धर्म होता है उस धर्म का आधा भाग अन्न दाता को मिलता है यह शरीर ही तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, साधक है अतः इस शरीर की पुष्टि के लिये अन्न सबसे उत्तम होता है और यह संसार का ही कार्य है अन्न ~~सबसे उत्तम होता है और यह~~ बल एवं प्राण हैं अतः अपने खर्चे से थोड़ा २ बचाकर भिखारियों को अन्न देना कल्याणकारक है इस लोक एवं परलोक में चाहने की इच्छा से परम आरे अतिथियों का यथा शक्ति अन्न द्वारा सत्कार करना उत्तम है यही अन्न दान श्रेष्ठ फल एक फलादार वृक्ष है अन्न दाता को स्वर्ग में सुख रूप फल प्राप्त होते हैं वे स्वर्ग में [illegible] होते है अन्न दान की महिमा वाले इस [illegible] पढ़ता है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर्च सिंदूर मक्खनका : नः नाशेप अजीर्णको दूर करता है
(कुम्भ का चन्द्र १७।६) सोना चांदी सम

Monday the 13th August 1973.

रा॰ श्रावण २२ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ، ١٣ ...
सोमवार १३ अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु॰ १४ सं. २०३०
घ॰ ०।१२ श्रवण ४४।८ र॰ उ॰ ५।३४ र॰ अ॰ ६।३१
फ॰ १३८० म॰ सावन २९ वं॰ श्रावण २८ ने॰ २९ गते

(शिवपुराण)

हजरत अली जन्म दिवस

(चंचुली कथा वर्णन) देवराज की कथा सुनकर प्रसन्न हुई चंचुला

दुराचारिणी चंचुला सुनकर शिव का नाम। उठी प्रेरणा हृदय में पाने को शिवधाम फिर शौनक जी ने सूत जी से कहा हे प्रभु आप बुद्धिमान हो भाग्यशाली एवंम् सर्वज्ञ हो आप की कृपा से मैं भी बार बार कृतार्थ हूँ इस इतिहास को सुन कर मेरा मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ है आप कृपा करके प्रेम वर्धनी और मोक्ष दायिनी शम्भु की कथा भी सुनाइये सूत जी बोले हे शौनक तुम परम शिव भक्त और ज्ञानी हो इस लिये मै तुम्हें उस गुह्य कथा को भी सुनाता हूँ सुनिये — समुद्र के निकट एक वाष्कल नाम का ग्राम था वहाँ वैदिक धर्म को त्याग कर महा पापी जन निवास किया करते थे वे बड़े दुष्ट थे जिन की आत्मा दूषित थी शस्त्रधारी पर स्त्री भोगी खल कपटी खेती करने वाले थे ज्ञान वैराग्य एवम् सत् धर्म को जानते ही न थे उन की स्त्रियाँ भी सब की सब स्वच्छाचारिणी कुटिला पाप परायण दुर्बुद्धि व्याभिचारिणी थी इस प्रकार दुर्जनो से पूर्ण उस वाष्कल ग्राम में बिन्दुग नामी एक अधम ब्राह्मण भी था वह दुरात्मा महा पापी था स्त्री होने पर भी कुमार्ग गामी था इस लिए वह सुधर्मिणी चंचुला नाम अपनी पत्नी को त्याग कर वेश्यागामी हो गया इसी प्रकार उसे कुकर्म करते करते बहुत समय व्यतीत हो गया उसकी पत्नी चंचुला काम पीड़ित होकर भी अपने धर्म के भय से क्लेश सहती रही जब वह युवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्भकी कमजोरीपर कमलगट्टा और बादामकाहलुआखावे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 14th August 1973.

रा० श्रावण २२ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ١١ August

मंगलवार १४अगस्त सन् १९७३ श्रावण शु.१५ सं.२०३०

घ. ३।२० धनिष्ठा ४१।२ र. उ. ५।३५ र. अ. ६।३०

फ. १३८० प्र. सावन ३० बं. श्रावण २९ ने. ३० गते

स्नानदान की पूर्णिमा १५, रक्षा बन्धन (शिवपुराण)

और कुमार्ग गामिनी हो गई एक बार बिन्दुग ने काम पीड़ित अपनी पत्नी को अन्य पुरुष से सङ्गत करते देख लिया तब तो वह क्रोध में भर उस पर वेग से दौड़ा उसे आता देखकर वह पुरुष तो कपट करके से भाग गया तब तो उसने अपनी स्त्री को पकड़ लिया और उस दुश्चरित्रा को उसने खूब घूँसे जमाये जब वह अपने पति से पी[illegible] गई तो उसे भी क्रोध आ गया और वह दुराचारिणी निर्भय होकर अपने पति से बोली तुम्हें अपना विचार नहीं है तुम भी तो नवयौवना पतिपरायण मुझ पत्नी को त्याग कर प्रतिदिन वेश्यागामी हो रहे हो जो पत्नी रूपवती हो काम से व्याकुल हो उसे पति का बिहार प्राप्त नहीं उसकी क्या गति होगी उत्तर दो मैं भी तो रूपवती नवयौवना हूँ तुम्हारा सङ्ग प्राप्त नहीं भला मैं किस प्रकार काम का दुःख सहूँ सूत जी बोले जब उस ब्राह्मणाधम की पत्नी ने ऐसा कहा उस [illegible]बुद्धि पापी ने पत्नी को कहा तुमने सत्य कहा है तुम्हारा म[illegible] [illegible]न से व्याकुल है कान्ते अब तुम्हें हित की बात कहता हूँ म[illegible] [illegible]कर सुन निर्भय होकर औरों के साथ बिहार कर पर उन[illegible] [illegible]न भी तो ले क्योंकि मैं वेश्यागामी हो गया हूँ और तू उनसे [illegible]र मुझे देती रहु जिससे तेरा मेरा दोनों का स्वार्थ [illegible] [illegible]ने कहा इस भाँति पति से सुन कर वह चंचुला प्र[illegible] [illegible] मान ली अब तो वे [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कफवात ज्वरपर पीपल मिर्च और तुलसीका काढ़ा पीवे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 15th August 1973.

रा॰ श्रावण २४ शाक॰१८९५ ४ [illegible] 10 [illegible]
बुधवार १५ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ॰ १ सं॰ २०३०
घ॰ ५।२७ शतभिषा ५१।४८ र॰ उ॰ ५।३५ र॰ अ॰ ६।३०
फ॰ १३८० प्र॰ भादों १ दं॰ श्रावण ३० ने॰ ३१ साते

अशून्य शयन २ व्रत, भारतीय स्वतन्त्रता दिवस

(शिवपुराण)

मे पड़ गये इस प्रकार उन दोनों दुराचारियों को कुकर्म करते
बहुत सा समय व्यतीत हो गया कुमति वेश्यापति दुष्ट ब्रह्मण
समय आने पर मर गया एवं पापों के कारण नरक में गया उस
मूर्ख ने बहुत काल पर्यन्त नरक दुःख भोगे इसके अनन्तर वह पापी
विन्ध्याचल पर्वत पर भयंकर पिशाच हुआ अब दुराचारिणी
बिंदुग पति के मर जाने पर मूर्खा चंचुला चिरकाल पुत्रों के सा-
थ घर में रह गयी अन्य पुरुषों के साथ उसका विहार वैसा ही रहा
समय की गति के कारण उसका यौवन बीतने लगा एक बार
.. वयोग से पुण्य पर्व के आने पर वह नारी बन्धुओं के साथ गो-
कर्ण क्षेत्र में आ गई बन्धुओं के प्रसंग उसने भी किसी तीर्थ
में स्नान किया फिर बन्धुओं के साथ इधर उधर भ्रमण करने
.. किसी देवालय में पहुँचकर उसने दैवज्ञ के मुख से शिवपुराण
की पवित्र एवं शुभ कथा सुनी कथा में उसने सुना जो स्त्री काम
भक्त होकर मरती है तो नरक में यमदूत लोहे के परिघ तपा कर
.. की योनि में डालते हैं इस प्रकार वे राग्य वर्धिनी कथा सुन
कर भय से वह काँप उठी जब कथा हो चुकी श्रोता गण भी चले
.. डरी हुई शिव भक्त कथा वाचक के पास गई और बोली
.. मैं दुराचारिणी हूँ अपना धर्म खो बैठी हूँ मेरा चरित्र [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीठे का पानी पिलानेसे अफीम का नशा उतरता है
(सीन का चन्द्र ३७।२५) सोना चाँदी महँगा
Thursday the 16th August 1973.
रा० श्रावण २५ शक:१८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ١٧ ذیقعدہ
गुरुवार १६ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. २ सं. २०३०
घ. ६।१० पू. भा. २३।१७ र. उ. ५।२५ र. अ. ६।२९
फ. १३८० प्र. भाद्रा २ बं. श्रावण ३१ ने. ३२ गते

मनसा पूजा समाप्त (बंगाल) (शिवपुराण)

व्यतीत कर दिया है आप की वैराग्य रसदायक कथा सुनकर मुझे ज्ञान हुआ है दुराचार में पड़ी हुई स्वधर्म से पतित महा निन्दनीय मेरी क्या गति होगी जो स्वल्प सुख के कारण जो कि स्वकार्य विनाशक है इसे मैं न जानती हुई अति कष्ट दायक घोर पाप करती रही हूँ हे प्रभु मै क्या करूँ कहाँ जाऊँ किसकी शरण लूँ नरक समुद्र में गिरती हुई मुझे कौन आकर बचायेगा हे ब्रह्मन् आप ही मेरे गुरु पिता माता हो मैं बहुत दीन हूँ आपकी शरण में आई हूँ कृपा करके मेरा उद्धार करो सूतजी बोले वह इस प्रकार दुःखी होकर ब्राह्मण के चरणों मे गिर पड़ी तब ब्राह्मण ने कृपा करके उसे उठाया और बो

(चंचुला का शिव पद प्राप्त)

बिन्दुग पत्नि चंचुला सुनकर परम पुरान। भक्ति ज्ञान वैराग्य युत पाता पद निर्वा[illegible]
ब्राह्मण बोला मुझे प्रसन्नता है कि तुझे समय पर ज्ञान प्राप्त हो गया है यह सदा शिव की कृपा है जो तूने शिव पुराण की वैराग्य दायक कथा [illegible] हैं हे द्विजपत्नि तू भय मत कर शिवजी की कृपा से तेरे सब प्र[illegible] पाप नष्ट हो जायेंगे मैं शिवकीर्ति संयुक्त परम वस्तु तुम्हें सुनाऊँ [illegible]से कि तुम्हारी सदा सुखदायक गति होगी श्रेष्ठ कथा के श्रव[illegible] [illegible]कौरी इस प्रकार की बुद्धि हुई है विषयों में वैराग्य हुआ है पश्चाता[illegible] [illegible] तुम्हारी मीत शुद्ध हो गई है इस शिवपुराण की कथा [illegible] [illegible] शुद्ध हो जाता है वैसा [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेंधानमक हल्दी गोमूत्रमें लगानेसे खजुली अच्छीहोती है
(मीन का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Friday the 17th August 1973.

रा॰ श्रावण २६ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رجب ۱٧ ...
शुक्रवार १७ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. २ सं. २०३०
घ. ४।२५ उ. भा. ५३।३१ र. उ. ५।२६ र. अ. ६।२८
फ. १३८० प्र. भाद्रों २ बं. भाद्रपद १ ने. १ गते

(शिवपुराण)

कज्जली ३, बहुला ४, श्रीगणेश ४ व्रत

जिस प्रकार चित्त शुद्ध हो जाता है वैसा अन्य उपायों से नहीं जिस प्रकार शुद्ध किया हुआ दर्पण निर्मल हो जाता है उसी प्रकार इस कथा के द्वारा भी निःसंशय चित्त शुद्ध हो जाता है चित्त के शुद्ध होने पर महादेवजी पार्वती जी के साथ उस चित्त में जाकर विराजमान होते हैं तब वह शुद्धात्मा शिव के परम पद को पाता हैं इसी कारण सब वर्ण इस कथा को सुनै महादेवजी ने इसकी रचना की है बहुत से पापी इस कथा के श्रवण से शिव का ध्यान पाकर पश्चाताप करते हुए सिद्धि को प्राप्त हुये इस सत्कथा के श्रवण से सर्व प्रकार के मङ्गल प्राप्त होते हैं शिव कथा को हृदय में मनन करने से सर्वथा चित्त की शुद्धि हो जाती है। भक्ति विहीन माया के बन्धन में पड़े हुये पुरुष को पशु जानना चाहिये संसार बंधन से वह कभी मुक्त नहीं होता इस लिये हे ब्राह्मणी तू भी इस परम पावनी कथा को सुन विषयों को मन को हटाले शङ्कर भगवान् की कथा के श्रवण से तेरी शुद्ध हो जायगी तब मुक्ति को प्राप्त होगी यह मैं सत्य ही सत्य कह रहा हूँ सूतजी बोले यह कहकर कृपालु वह शैव श्रेष्ठ ब्राह्मण शिव ध्यान मग्न होकर मौन हो गये बिन्दुग पत्नी चंचुला सुनकर प्रसन्न हो गई उसकी आँखों से आँसू झरने लगे तब हाथ जोड़ कर ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ी और बोली महाराज अब मैं कृतार्थ हो गई चरणों ... परम शान्ति से गद् गद् वाणी द्वारा महा शैव ब्राह्मण से ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ा कपूर रुई के साथ सवेरे खानेसे अधकपारी दूर करती है
(मेष का चन्द्र ४२।३७) सोना चांदी महंगा

Saturday the 18th August 1973.

रा० श्रावण २७ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رجب ۱۸ اگست
शनिवार १८ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ० ४ सं० २०३०
घ० ३।४९ रेवती ४२।३७ स० उ० ५।२६ स० अ० ६।२७
फ० १३८० प्र० भाद्रपद ४ बं० भाद्रपद २ ने० २ गते

श्री माधव देव तिथि (आसाम) (शिवपुराण)

समुद्र में गिर रही हूं मेरा उद्धार कीजिये शिवपुराण की कथा अर्थयुक्त सुनकर मैं विषयों से विरक्त हो गई हूं अब मुझे इस पुराण के सुनने की बड़ी श्रद्धा है सूत जी बोले शिवपुराण सुनने की इच्छा से वह द्विज की सेवा में वहां रहने लगी उनकी कृपा पाकर हाथ जोड़े उपस्थित रहती वह शैव श्रेष्ठ ब्राह्मण भी उसे शिवपुराण की कथा सुनाने लगे इस प्रकार उस महान श्रेष्ठ ब्राह्मण से शिवपुराण की उत्तम कथा उसने सुनी भक्ति ज्ञान वैराग्य वर्धिका एवं मुक्तिदायिनी कथा को सुनकर वह कृतार्थ हुई और उसका चित्त शुद्ध हो गया शिव की कृपा से शिवरूप का ध्यान उसने प्राप्त कर लिया इस प्रकार सद्गुरु आश्रय से शिव में सन्मति पाकर शंभु के चिदानन्दमय रूप का बार बार ध्यान करने लगी वह नित्य ही तीर्थ जल में स्नान करती जटा तथा वल्कल धारण कर लिये थे सारे अंगों पर भस्म रमाये रहती रुद्राक्ष पहिनती वाणी का संयम एवं थोड़ा आहार करके गुरु उपदिष्ट मार्ग द्वारा शिवनाम का जपन करती हुई शिव को सन्तुष्ट किया इस प्रकार शम्भु का ध्यान करते करते चंचुला ने बहुत सा काल व्यतीत किया समय के पूरा होने पर ज्ञान वैराग्य से युक्त उसने बिना कष्ट के शरीर छोड़ा तब तो शिव के संयुक्त शोभायमान दिव्य विमान स्वयं महादेव जी ने वहां भेजा शिवगणों ने उसे झट पट विमान पर चढा लिया और उसे [illegible] दिव्य भूषण पहिने शिवपुरी में [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमेलीकीपत्तीकारसऔरकपूरछोड़नेसेवहरापनदूरहोताहै
(मेष का चन्द्र) सोना चांदी सम

Sunday the 19th August 1973.

रा॰ श्रावण २८ शाकः १८९५ ४ ।۳٩۳ رجب ۱۷ ایک شنبه
रविवार १९ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. ५ सं. २०३०
घ॰ ५६। १५४ अश्विनी २०।४५ र॰ उ. ५।२७ र॰ अ. ६।२६
फ॰ १३८० प्र. भादों ५ बं. भाद्रपद ३ ने. ३ गते

हलषष्ठी (शिवपुराण)

जाकर दर्शन किया वहां ब्रह्मा विष्णु आदि जिस शिव की सेवा कर रहे
थे जो शिव करोड़ों सूर्य के समान प्रभा वाले विराजमान थे गणेश
भृङ्गी नन्दीश्वर बीरभद्रेश्वर आदि जिनकी उपासना कर रहे थे महादे
व नीलकण्ठ पञ्चमुख त्रिलोचन चन्द्रशेखर रूप से दर्शन दे रहे थे
जिनके वामाङ्ग में विद्युत के समान गौरीजी विराजमान थीं कपूर के
समान गौर सर्वालङ्कार विभूषित श्वेत भस्म रमाये श्वेत वस्त्र धारी
गौरीश शङ्कर का दर्शन करके वह चंचुला परम प्रसन्न होकर बार
बार प्रणाम करने लगी सदाशिव एवं पार्वतीजी ने उस पर कृपा दृष्टि
कर के उसे अपने समीप बिठा लिया और पारवतीजी ने तो उस चंचुला
को दिव्यरूप देकर अपनी सखी बना लिया वह परम सुखी हो गई
उस ज्योतिस्वरूप सनातन लोक में उसने निवास प्राप्त किया
और परम सुख प्राप्त किया ॥

(बिन्दुक को मोक्ष प्राप्ति)

शौनक बोले हे सूतजी आप धन्य हो आप ने हमें अद्भुत कथा सुनाई है
अब यह कहिये। चंचुला ने सद् गति पाकर क्या किया और उसके
पति का क्या हुआ सूतजी बोले चंचुला एक बार पार्वतीजी के पास
जाकर हाथ जोड़कर स्तुति करने लगी हे पार्वतीजी आप स्कन्द माता
... खों को देने वाली रूपिणी हो तुम आद्या प्रकृति सूक्ष्म ...
... ब्रह्मा आदि देवों से सेव्य हो स्त्रोष्टि स्थिति ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपामार्ग की जड़ से बिच्छू भागता है
(मेष का चन्द्र) सोना चांदी सम

Monday the 20th August 1973.

रा॰ श्रावण २९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ٢٠ دوشنبه
सोमवार २० अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. ७ सं.२०३०
घ. ५२।१६ भरणी ४८।१ र. उ. ५।२७ र. अ. ६।२५
(शिवपुराण) फ. १३८० प्र. भाद्रों ६ बं. भाद्रपद ४ हे. ४ गते

ब्रह्मा बिष्णु महेशों की परम प्रतिष्ठा करनेवाली हो चंचुल

इसप्रकार पार्वती की स्तुति कर प्रेमाश्रु बहाती हुई नतम-
स्तक होकर मौन होगई तब भक्तवत्सला शङ्कर प्रिया पार्व-
ती जीने प्रसन्न होकर चंचुला से कहा हे सखी चंचुले मैं तुम्हा-
री स्तुति से प्रसन्न हूँ तू वर मांग तुम्हारे लिये तो कुछ भी अदेय नहीं
सूतजी बोले तब मस्तक झुका कर चंचुला ने कहा मैं अपने पति
की गति नहीं जानती वह अब कहाँ है मुझे उससे युक्त करने की
कृपा करें हे दीनवत्सले महादेवि वह महापापी मुझसे पहि-
ले मरा है न जाने किस गति को प्राप्त है यह सुन कर श्री पार्वती
प्रसन्न होकर बोलीं तेरा पति बिंदुग नामी वेश्या भोगी महापापी
मरकर नरक में गया है अनेक बर्षों तक दुःख भोग कर अब पाप
शेष से वह पापी विंध्याचल पर पिशाच हुआ है वह वहीं नाना
भांजी अनेकों क्लेश भोग रहा है सूतजी बोले इस प्रकार पार्वती
के बचन सुन चंचुला पति के दुःख से बड़ी दुःखी हुई कुछ धैर्य
धरके पार्वतीजी को प्रणाम करके दुःखी मन से वह बोली हे देवि
कृपा कर दुष्ट कर्मी मेरे पति का भी उद्धार करो किस उपाय द्वारा
पापी की सद् गति हो कृपा शीघ्र कहें आप को नमस्कार हो सूत
जी बोले इसप्रकार सुन कर श्री पार्वती जीने चंचुला से कहा यदि तुम्हारा
पति शिवपुराण की कथा सुनले तो उसे सद् गति मिल जा-
...र गौरी जी के बचन सुन कर चंच...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपामार्ग की जड़ लेकर बिच्छू पकड़ सकते हैं
(वृष का चन्द्र २।१०) सोना चांदी महंगा

Tuesday the 21st August 1973.

श० श्रावण ३० शक: १८९५ ४ ۱۳۹۳ رجب ۲۱ ھ
मंगलवार२१ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ.८ सं.२०३०
घ० ४६।२४ कृत्तिका ३४।२८ र० उ. ५।३८ र० अ. ६।२४
फ. १३८० प्र. आदर्श ७ वं. भाद्रपद ५ ने. ५ गते

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ८ व्रत सबका (शिवपुराण)

अपने पति के सब पापों की विशुद्धि के लिये एवं सद्गति के लिये कथा के अर्थ प्रार्थना करने लगी सूतजी बोले जब उस नारी ने बार बार प्रार्थना की तो परम कृपालु भक्तवत्सला पार्वतीजी को दया आगई तब उन्होंने शिव कीर्ति का गायन करने वाले तुम्बरु गन्धर्व को बुलाकर कहा हे तुम्बरु मेरा वचन मान कर इस स्त्री के साथ बिंध्याचल को शीघ्र जाओ तुम्हारा कल्याण हो वहाँ एक भयङ्कर पिशाच रहता है उसका वृत्तान्त आदि से मैं तुमको सुनाती हूँ पिछले जन्म में वह बिन्दुग नामक ब्राह्मण मेरी सखी इस नारी का पति था वह दुष्टतथा वेश्या का पति बना रहा स्नान सन्ध्या क्रिया आदि से वह हीन अशुद्ध क्रोधी बांयें हाथ से खाने वाला दीनों को दुःखदाता क्रूर पराये घरों में आग लगाने वाला चाण्डालों के साथ प्रेम करने वाला वेश्यागामी अपनी पत्नी को त्यागने वाला दुष्टसङ्गी महा पापी था उसने वेश्या संग में पड़कर सत्कर्म नाश कर दिये वित्त लोभ से अपनी पत्नी को भी जारिणी बना दिया आयु भर वह दुराचारी रहा समय पाकर जब मरा तो यमपुर में उसे घोर नरक में डाला गया उस पापी ने घोर यातनायें भोगी अब वह बिंध्याचल पर्वत पर पिशाच होकर पापों का फल पा रहा है तुम वहाँ जाओ यत्नपूर्वक शिवपुराण को [illegible] बिनाशिनी दिव्य कथा उसके आगे कहो शिवपुराण को [illegible]

[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुलहठी का सत मुँहमें रखनेसे खांसी दूर होती है
(वृष का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Wednesday the 22nd August 1973.

रा.श्रावण ३१ शाकः १८९५ ४ چہارشنبہ ۲۲ رجب ۱۳۹۳
बुधवार २२ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. ९ सं. २०३०
व. ४१।२ रोहिणी ४०।३६ र. उ. ५।३८ र. अ. ६।२४
फ. १३८० प्र. भादरों ८ बं. भाद्रपद ६ ने. ६ गते
रोहिणी नक्षत्र वाले वैष्णवों का जन्माष्टमी ८ व्रत

(शिवपुराण)

पिशाच की दुर्गति से छूट जाय तो मेरी आज्ञा से उसे विमान पर
चढ़ा कर शिवजी के पास ले आना सूतजी बोले जब ऐसा
पार्वतीजी ने कहा तब चंचुला तुम्बरु के साथ विमान पर
चढ़ कर विन्ध्याचल पर्वत पर पहुँची वहाँ उसने बड़े शरीर
वाले महा हनु वाले हँसते अथवा रोते हुये विकट आकार वाले
बहुत बोलते हुये एक पिशाच को देखा उस भयङ्कर विशाल
को महाबली तुम्बरु गन्धर्व ने बल पूर्वक पकड़ कर पाशों
से बाँध लिया तब उसे शिवपुराण सुनाने के लिये महान्
उत्सव मनाया उस उत्सव से यह प्रसिद्ध हो गया कि देवी की
आज्ञा से पिशाच को तारने के लिये तुम्बरु गन्धर्व विन्ध्याचल
पर्वत पर शिवपुराण की कथा करेंगे। सब लोकों में महान्
कोलाहल हुआ कथा सुनने के लिये देवर्षिगण वहाँ शीघ्र पहुँच गये
शिवपुराण सुनने के लिये वहाँ बड़ा समाज इकट्ठा हो गया सब में
कथा सुनने की लालसा थी पाशों से बँधे हुये पिशाच को वहाँ बि-
ठा गया तब तुम्बरु हाथ में वीणा लेकर शिवकथा कीर्तन क-
रने लगा पहिली संहिता से लेकर सातवीं संहिता तक महात्म्य
के साथ उसने शिवपुराण की कथा सुनाई सारे श्रोतागण
संहिता वाले सम्पूर्ण शिवपुराण को सुनकर कृतार्थ हो
... शिवपुराण ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुना सोहागा अरूसे के साथ चाटनेसे खांसी मिटती है
(मिथुन का चन्द्र ८।४२) सोना चांदी सम
Thursday the 23rd August 1973.
रा० भाद्रपद १ शकः १८९५ ४ ।४१४ رجب, २४ شمسی
गुरुवार २३अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ.१० सं. २०३०
घ० ३४।२७ मृगशिरा ३६।३७ र० उ. ५।३८ र० अ. ६।२३
फ. १३८० म. भादों ९ वं. भाद्रपद ७ ने. ७ गते (शिवपुराण)

से मुक्त हो गया और पिशाच शरीर त्याग कर दिव्यरूप प्राप्त हुआ उसकी पत्नी को देख कर सारे देवर्षि बिस्मित एवं आनन्दित हुए और प्रसन्न होकर शंकर यश गाते-गाते अपने-अपने लोक में गये बिन्दुग भी बिमान पर चढ़कर दिव्यात्मा अपनी पत्नी के साथ शोभायमान हुआ श्री शङ्कर के गुण गाता तुम्बरु के साथ शङ्कर लोक में गया श्री पार्वतीजी के साथ शङ्कर भगवान ने उसका आदर किया और उसे अपना गण बना लिया और उसकी पत्नी को गौरी जी ने अपनी सखी बनाया उस परमानन्द ज्योतिस्वरूप सुख सम्पन्न सनातन लोक में उसे अचल निवास प्राप्त हुआ यह इतिहास पाप बिनाशक पुण्यदायक निर्मल भक्ति वर्धक शिव सन्तोष कारक है जो इस इतिहास को भक्ति पूर्वक सुनता है एवं कीर्तन करता है वह इस लोक भोगों को भोग कर अन्त में मुक्ति पाता है ॥

(सनत्कुमार व्यास संवाद)

इस पर मुनियों ने पूछा कि ब्रह्माजी श्रवण और मनन क्या है तथा कीर्तन कैसे किया जाता है ब्रह्मा जी ने कहा ईश्वर के रूप गुण नाम और उनके विलासों में अपनी पूजा और जप से रुचि बढ़ाना निरंतर अपनी युक्तियों सहित अपने मन को उनके सम्मुख रखना ... और श्री परब्रह्म महादेव जो अपने शंभु भगवान के ना... जप करना कीर्तन है तथा दृढ़ हो भगवान...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँख उठनेपर सहीजनके पत्तेका रस और शहद लगावे
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 24th August 1973.

श॰ भाद्रपद २ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ٢٤
शुक्रवार २४अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ.११ सं.२०३०
घ॰ २८।४७ आर्द्रा ३२।२६ र॰ उ. ५।२९ र॰ अ. ६।२२
फ. १३८० प्र. भादरों १० बं. भाद्रपद ८ ने. ८ गते

विजया एकादशी व्रत सबका, पर्युषण पर्वारम्भ (जैन)

शिवपुराण
श्रवण है जब सत्संग में बैठकर भगवान श्री महादेवजी की
कृपा से श्रवण और कीर्तन कर ले तब उसका मनन करे
और वही सर्वोत्तम मनन है जिससे आत्मा पवित्र हो जाती
है सूतजी बोले हे मुनीश्वरो मैं साधन सम्बन्धी एक
प्राचीन इतिहास आप लोगों को सुनाता हूँ सावधान होकर
सुनिये एक समय जब सरस्वती नदी के तट पर मेरे गुरु
पाराशर-पुत्र भगवान वेदव्यासजी तप कर रहे थे तो
सनतकुमारजी ने आकर उनके निकट बैठकर पूछा कि
हे भगवन शिवजी तो प्रत्यक्ष ही सबके सहायक हैं फिर
आप ऐसा तप क्यों कर रहे हैं व्यासजी ने उत्तर दिया मुक्ति
लिये इस पर सनत्कुमारजी ने कहा अवश्य पहिले मुझे
ऐसा ही भ्रम हुआ था और मैं भी मन्दराचल पर्वत पर जाकर
तप करने लगा था परन्तु जब दयालु शिवजी की आज्ञा से
नन्दिकेश्वर ने आकर मुझे यह बतलाया कि शिवजी के
कीर्तन और मनन से मुक्ति प्राप्त हो जाती है तब मेरा सा
भ्रम दूर हो गया अतएव हे ब्रह्मन आप भी ऐसा ही कीजिये
यह कहकर सनत्कुमारजी चले गये इस पर ऋषियों ने
[illegible] कि जो श्रवण कीर्तन और मनन नहीं करता उसे
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंवाहल्दीदूधमें घिसकर अंजनकरनेसे आंखकादर्द दूरहोवे
(कर्क का चन्द्र १४।२४) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 25th August 1973.

रा॰ भाद्रपद ३ शकः १८९५ . ४ ١٣٩٣ رجب , ٢٥ شنبه
शनिवार २५अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. १२ सं.२०३०
घ॰ २२।४४ पुनर्वसु २८।२३ र॰ उ. ५।२९ र॰ अ. ६।२१
फ. १३८० अ. भादों ११ बं. भाद्रपद ९. ने. ९ गते

शनि प्रदोष १२ व्रत

श्रीमद्भागवत भाषा स्कन्ध १ अध्याय ६

जिस समय युद्ध में कौरव पांडव धृष्टद्युम्न प्रभृतियों समेत
वीर लोग जब बीर गतियों को गये भीमसेन की फेंकी गदा केलग
ने से धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन की जंघा टूटी उस समय अश्वत्थाम
दुर्योधन का प्रिय मित्र उसकी जङ्घा टूटी देखकर द्रौपदी के सोते
हुए पुत्रों का शिर काट लाया यह बहुत बुरी बात है इस निंदित कर्म के
शास्त्र में बड़ी निन्दा लिखी है द्रौपदी पुत्रों का मरना सुनकर महा
दुःखी हो रोती पीटती आंखों में आंसू बहाती अर्जुन के पास आयी
अर्जुन ने उसको रोने से बन्द किया और यह कहा हे भद्रे आग का
लगाने वाला १ बिष का देनेवाला २ शस्त्र का बाँधने वाला ३
धन का चुराने वाला ४ परायी भूमि का हरने वाला ५ स्त्री और
बालकों का मारने वाला ये छः आततायी कहलाते हैं सो ब्राह्मणों
में अधम आततायी अश्वत्थामा का शिर गाण्डीव धनुष के निकले
बाणों से काटकर तेरे सम्मुख लाऊँ उसके ऊपर खड़ी होकर तुम स्ना
न करोगी तो तुम्हारा पुत्रों के मरने का शोक दूर होगा ऐसे द्रौ
पदी का मन मनोहर विचित्र वाक्यों से प्रसन्न करके श्रीकृष्ण जिस
के मित्र और सारथी कवच पहिरे गाण्डीव धनुष हाथ में लिये
कपि ध्वज अर्जुन गुरु पुत्र अश्वत्थामा के पीछे रथ पर चढ़
... यातो कंपित हृदय प्राणों का भय किये जो लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२३६ गायका घी व नमकका गर्म लेप बिच्छूके जहरको नष्ट करे
(कर्क का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 26th August 1973.

रा.भाद्रपद २ शाकः १८९५ ४ | ۱۳۹۳ رجب، ۲۵ ایک شنبه
रविवार २६ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. १२ सं.२०३०
घ. १७|१ पुष्य २४|३९ सू. उ. ५|४० सू. अ. ६|२०
फ. १३८० प्र. भाद्रों १२ चं. भाद्रपद १० गै. १० गते

मास शिवरात्रि, १२ व्रत

बैठकर जहाँतक भागा गया वहाँतक भागा जैसे शिवके भय
से सूर्य भागे थे वामनपुराण मे इस प्रकार लिखा है विद्युन्मा[illegible]
नाम एक शिवभक्त राक्षस था उसको शिवजीने सोने का वि[illegible]
न दिया सो वह राक्षस विमान पर चढ़ा सूर्य के पीछे पीछे फि[illegible]
कर विमान के प्रकाश से रात होनी दूर होगई तब सूर्य ने देखा
मेरा तेज तो नष्ट हो गया यह जान उसका विमान पृथ्वी पर गि[illegible]
दिया यह सुन महादेवजी क्रोध करके सूर्य के मारने को दौड़े
तब तो सूर्य घबड़ा कर भागे और रुद्र की क्रूर दृष्टि से जल क[illegible]
काशी में गिरे सो आजतक काशी में लोलार्क नाम तीर्थ
विख्यात है ॥ जब अश्वत्थामा के रथ के घोड़े थक गये और अपने
शरीर का कोई रक्षक नहीं दिखायी दिया तब विप्रपुत्र ने
अपनी रक्षा के लिये ब्रह्मास्त्र चलाने की चेष्टा की तब आच[illegible]
मन कर प्राण बचाने के लिये ब्रह्मास्त्र चलाया परन्तु ब्रह्म[illegible]
का फेरना वह नहीं जानता था सब ओर से प्रचण्ड तेज जब ब्रह्म[illegible]
का प्रकट हुआ और प्राणों पर आपत्ति आयी जान अर्जुन श्री[illegible]
[illegible] से बोले हे कृष्ण हे कृष्ण महा भाग तुम भक्तों के अभ[illegible]
[illegible]कारक और संसार के जीव जन्तुओं के सुखदायक हो
[illegible] आदि पुरुष साक्षात केवल माया से परे हो [illegible]
[illegible] शक्ति से माया का तिरस्कार कर के वल्य [illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कण्ठमाले पर सूखे चूने की कलई बांधे
(सिंह का चन्द्र २१।२८) सोना चांदी सस्ता

Monday the 27th August 1973.

रा० भाद्रपद ३ शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رجب ۲۷ ذیقعده
सोमवार २७ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ० १४ सं० २०३०
घ० ११।४१ श्लेषा २१।२८ र० उ० ५।४० र० अ० ६।१९
फ० १२८० प्र० भादरों १२ बं० भाद्रपद ११ से० ११ गते

भादकी अमावस्या ३०. शब्बे मिराज

अपने प्रभाव से अभौतिक लक्षण कल्याण से तुम ही
बिधान करते हो गृह स्राप का औतार भूमि का भार उतार
ने की इच्छा से है और अपने जाति के और एकान्त भक्तों के
ध्यान के लिये है हे देव देव यह क्या है कहां से आया है
सब ओर से परम दारुण तेज आता है हम नहीं जानते श्रीभ
गवान बोले कि हे पार्थ प्राणों पर आपत्ति आती देख द्रोणाचा
र्य के पुत्र ने ब्रह्मास्त्र चलाया है सो यह चलाना तो जानता है परन्तु
अपने पास बुलाना नहीं जानता इस अस्त्र को दूर करने वाला और
कोई उपाय नहीं है तुम भी अपना ब्रह्मास्त्र चलाकर अपने तेज
से उसका नाश करो क्यों कि तुम दोनों बातें जानते हो सूतजी बोले
कि हे ऋषियो शत्रुनाशी अर्जुन ने भगवान की बात सुनकर
जल से आचमन कर श्रीकृष्ण महाराज की परिक्रमा करके उस ब्रा
ह्मण पर ब्रह्मास्त्र चलाया तब दोनो ब्रह्मास्त्र परस्पर लड़ने लगे
उनका तेज महाप्रचण्ड पृथ्वी आकाश को ढककर महाप्रलय
सा समय कर दिया जैसे महाप्रलय में संकर्षण के मुख की
अग्नि ऊपर से सूर्य का तेज ये दोनों मिलकर बढते हैं असी भांति
दोनो ब्रह्मास्त्रों का तेज बढा उन दोनों ब्रह्मास्त्रों का तेज महा घोर
[illegible] को फूंके डालता था और जली हुई प्रजा कहती थी कि आज
[illegible] समय आगया प्रजा और लोक का नाश होता है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीपल की पत्ती के भाप से कान का दर्द दूर होता है
(सिंह का चन्द्र) सोना चांदी सम

Tuesday the 28th August 1973.

रा॰ भाद्रपद ४ शकः १८९५ ४ १३९३ رجب, २८ ...
मंगलवार २८ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद कृ. ३० सं. २०३०
घ. ७।२१ मघा १९।७ र. उ. ५।४० र. अ. ६।१८
फ. १३८० प्र. भादों १४ बं. भाद्रपद १२ ने. १२ गते

स्नानदान की अमावस्या ३० कुशोत्पाटनी, ३०

बडे बेग से उनको पकड़कर गौतम बंधु की गौतमी कृपी से
कठोर पुत्र अश्वत्थामा को क्रोध से लाल लाल तांबे हुए
नेत्र किये यज्ञ के पशु की भाँति बाँध लिया शोक रोष युक्त
धनंजय कर्म निष्ठा देख श्रीकृष्ण जी सेना निवास स्थान
में ले जाकर बल से रस्सी से बैरी को बाँधकर क्रोधित हो
अर्जुन से बोले हे पार्थ यह अधम ब्राह्मण रक्षा करने योग्य
नहीं इसको अभी मार डालो इस पापी ने सोते निरपराधी
बालकों को मारा है धर्म शास्त्र में ऐसे लिखा है कि जो के अ
मद्यादिक से मत्त हो १ या और किसी प्रकार से प्रमत्त हो अथ
वातादि से उन्मत्त हो ३ सोता हुआ जीव ४ बालक ५ स्त्री ६ जो
उद्यम नहीं जानता ७ जो कोई अपनी शरण आया हो ८ इन आठों
जीवों को धर्म वेत्ताओं को सदैव रक्षा करनी चाहिये अपने
शत्रु भी हों तो भी इनका मारना योग्य नहीं परन्तु प्राण ले
र जो निर्दयी दुष्ट अपना प्राण पुष्ट करता है उसका मारना
योग्य है उस दुष्ट के मारने से पुरुष नरक में नहीं जाते मेरे सा
मने द्रौपदी प्रतिज्ञा की थी कि रे प्राणप्रिये जो तेरे पुत्रों का
मारने वाला है उसका सिर काट कर तेरे आगे लाऊँगा सो तु
त्र के बध करने वाले आततायी के अवश्य मारने योग्य है
... भी इन बालकों को देख दुःखी हुआ यह अप...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिफला का उबटन करनेसे श्वेतकुष्ठ नष्ट होता है
(कन्या का चन्द्र २२।२४) सोना चाँदी सम

Wednesday the 29th August 1973.

स॰ भाद्रपद ६ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رجب ٢١ [illegible]
बुधवार २९ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ १ सं. २०३०
घ॰ ३।४२ पू॰ फा॰ १७।३२ र॰ उ॰ ५।४१ र॰ अ॰ ६।१७
फ॰ १३८० प्र॰ भादों १९ बं॰ भाद्रपद १३ ने॰ १३ गते

श्री शंकरदेव तिथि (आसाम)

समझाने लगे और अर्जुन यह जानता था कि यही मेरे पुत्रों को
मारने वाला है तो भी गुरुपुत्र समझ मारने की इच्छा नहीं की
ऐसे धर्मध्वजा धारी अर्जुन जिनके श्रीकृष्ण सरीखे मित्र
और सारथी, जो अश्वत्थामा को पकड़कर अपने दल में लाये
वहाँ द्रौपदी बैठी अपने मरे पुत्रों का शोक कर रही थी कहा हे
द्रुपदनंदिनी तुम्हारे पुत्रों को मारने वाला यह उपस्थित है पशु के
समान गले में फाँसी पड़ी निंदित कर्म से नीचे को नार किये
अपराधी गुरुपुत्र अश्वत्थामा को देख कृपा करके शील
स्वभाव वाली द्रौपदी ने नमस्कार किया और अपने पति
अर्जुन से कहा हे स्वामी उसका बाँधना मुझको सहन नहीं
हो सकता छोड़ दो छोड़ दो यह ब्राह्मण हमारा परमपूज्य है
इसके मारने से हमारे पुत्र आ नहीं सकते यह हत्यारा अपने
कर्मों का फल आप भोगेगा जिस भाँति मैं अपने मरे हुए पुत्रों
का शोक करती हूँ इसी प्रकार इसकी कृपी माता भी पुत्र के
मरने का दुःख देखेगी और आपको इसके पिता ने [illegible]
हित धनुर्वेद और ब्रह्मास्त्र चलाना और बुलाना दोनों
बातें सिखाईं और इसको इसके पिता ने ब्रह्मास्त्र च-
लाना सिखाया परन्तु बुलाना नहीं सिखाया इसलिये
[illegible]र्य की कृपा से सब अस्त्र शस्त्र यंत्र मंत्र सं[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छः मासे रेंडी का तेल नित्य पीनेसे पेटके कीड़े नष्ट होतेहैं
(कन्या का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Thursday the 30th August 1973.

रा० भाद्रपद ८ शकः १८९५ ١ ١٣٩٣ شعبان | ...
गुरुवार ३० अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद शु० २ सं. २०३०
घ० ८८।१६ उ. फा. १७।० र० उ. ५।४१ र० अ. ६।१६
फ. १३८० प्र. भादरों १६ बं. भाद्रपद १४ ने. १४ गते

हरितालिका (तीज) ३ व्रत, गौरी तृतीया ३.

क्योंकि उन भगवान् द्रोणाचार्य ने तुमको पुत्र करके समझ
सो उन द्रोणाचार्य की स्त्री गौतमी कृपी इस पुत्र के रहने से सती
नहीं हुई इस दुःख से अपने पुत्र का मुख देख देख जीती
हाय जैसे मैं अपने मरे हुए पुत्रों का शोक करती हूं ऐसे ही
वह भी सोच करेगी इसलिये हे धर्मज्ञ हे महाभाग आप
कुल को कष्ट नहीं दीजिये बारबार पूजन और वन्दन के
योग्य ब्राह्मण है पतिव्रता गौतमी इसकी माता को सो
न हो क्योंकि जैसे मेरे मुख पर आंसू बारम्बार सलिलधा
से चले जाते हैं और मैं सिर पटक पटक रो रही हूँ ऐसे कहीं
वह पुत्र के शोक में न रोवे ब्राह्मणकुल जिस पर कोप
चाहे वह कैसा ही राजा हो उसका वंश और परिवार क्षण
मात्र में ब्रह्मतेज से भस्म हो जाता है सूतजी बोले कि हे
ब्राह्मणो निष्कपट धर्मशील शान्त सुभाववाली द्रौपदी
वचन सुन धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने बड़ी प्रशंसा की नकुल
सात्यकि अर्जुन देवकीनन्दन भगवान और जो स्त्रि
हां प्रस्तुत थीं द्रौपदी की यह बात सुन सब का मन प्र
उस समय भीमसेन द्रौपदी की बातें सुनकर बड़े
से बोले कि ऐसे दुष्ट का मारना ही अच्छा है क्यों
ने मित्र दुर्योधन का और अपना दोनों का कल्याण
... मारने से ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहेड़े की : छीककूरशहद लगानेसे आँखकी फूली नष्टहोतीहैं
(तुला का चन्द्र ४८।३७) सोना चाँदी सम

Friday the 31st August 1973.

रा॰ भाद्रपद ७ शकः १८९५   ٤ ١٣٩٣ شعبان ١ ...

शुक्रवार ३१ अगस्त सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ ४ सं. २०३०

घ॰ ५३।३१ हस्त १७।४० र॰ उ. ५।४२ र॰ अ. ६।१२

फ़. १३८० प्र. भादों १७ बं. भाद्रपद १५ ने. १५ गते

श्रीगणेश-४ व्रत

अश्वत्थामा के शिर काटने की प्रतिज्ञा की थी सोतुम सो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहिये और जो तुम कहते हो कि हम को ब्रह्म हत्या का कलंक लगेगा सो इसमें ब्रह्म अंश और ब्राह्मण का एक कर्म भी नहीं रहा राजाओं का धर्म है कि ऐसे मनुष्यों को अवश्य मारना चाहिये भीमसेन की यह बात सुन द्रौपदी और अर्जुन की ओर देखकर श्रीकृष्ण भगवान ने चतुर्भुज रूप धारण किया और मुसकरा कर बोले श्रीकृष्ण भगवान बासुदेव बोले कि आततायी बध के योग्य है और ब्राह्मण हो तो मारना नहीं चाहिये दोनों बातें हमने कही हैं परन्तु ब्राह्मण के लिये देह दण्ड देना उचित नहीं हमारी आज्ञा है सदा ब्राह्मणों की रक्षा करो उनको धन दो पूजा करो ब्राह्मण कैसा ही अपराध करे परन्तु वह बध के योग्य नहीं द्रौपदी के सम्मुख जो आपने प्रतिज्ञा की है उसका प्रतिपालन करो और भीमसेन की बात को मानना भी अवश्य चाहिये और राजा युधिष्ठिर का बचन भी स्वीकार करना चाहिये और मेरी भी प्रसन्नता करो और द्रौपदी की भी प्रसन्नता करो। सूतजी बोले कि हरि के हृदय की बात जान कर अर्जुन ने अश्वत्थामा के मस्तक की मणि अपनी तलवार की नोक से चीर कर निकाली और मूंड़ उसका मुड़वा दिया रस्सी से खोल ... और गले में फांसी पड़ी थी ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५२

श्रीऋषि पंचमी ५

बालों के मुड़ने से उसकी कान्ति मलिन होगई और तेज न रहि आने लगा और मणि छीन अपने दल से बाहर निकाल दिया मुंडन करना धन हरना और देश से निकाल देना यही ब्राह्मण का मारना है और देह दण्ड तो हत्या है सब पाण्डव शोक से व्याकुल हो द्रौपदी को आगे कर मरे हुए पुत्रों की दाह क्रिया करने लगे ॥

(याज्ञवल्क्य स्मृति मे लिखा है) कि

क्रीड़ा करना, मलकर सिर धोना, समाज मे जाना, उत्सव देखना हँसी करनी, पराये घर जाना, जिसका पति परदेश मे हो उस स्त्री को ये छः काम नहीं करना चाहिये ॥

भागवत मे स्कन्ध ५५.१२ मे

किसी देश मे चोर किसी का धन चुराकर भागे और राजा के दूत उसके दौड़े वे चोर भागते २ वहां पहुंचे जहां मांडव्य ऋषि तप कर रहे उन के निकट ही चोर जाकर छिप रहे राजा के दूत उसके समीप ऋषि समेत चोरों को पकड़ कर राजा के पास ले गये राजा ने आज्ञा दी सब को शूली दे दो राजा की आज्ञा से चोरों को शूली पर चढ़ाना आरम्भ किया मांडव्य ऋषि की ओर जो देखा तो उनको ऋषि जान उतार लिया और दण्डवत प्रणाम कर अपना अपराध क्षमा कराया पीछे मांडव्य ऋषि धर्मराज के निकट जाकर ... तने मुझे कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बबूलके फूलका रस घोड़ेके मूत्रका अंजन नाखूना दूर करेगा
(तुला का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 2nd September 1973.

रा॰ भाद्रपद ९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ٤ شعبان ایک شنبہ
रविवार २ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ ५ सं. २०३०
घ॰ १।४१ स्वाती २२।४८ र॰ उ. ५।४२ र॰ अ. ६।१२
फ. १३८० म. भादरों १९ बं. भाद्रपद १७ ने. १७ गते

तब यमराज बोले कि महाराज आप बालकपन में टीड़ी को कुश के अग्रभाग से छेद कर खेले थे उसके बदले में शूली पर चढ़ाये गये यमराज का वह वचन सुन मांडव्य ऋषि ने यमराज को शाप दिया कि मैंने बाल अवस्था में अज्ञात से यह काम किया उसका तूने मुझे ऐसा भारी दण्ड दिया अब तू शूद्र हो जा यह वही विदुर जी हैं जा युधिष्ठिर राज्य पाकर पोते को कुलोद्धारक देख लोकपाल समान भ्राताओं सहित लक्ष्मी से परम आनन्दित हुये गृह के व्यापार में ऐसे आसक्त हो गये उन्हें विदित न हुआ कि परम दुस्तर काल का समय आ पहुँचा यह अभिप्राय जान कर विदुर जी ...... धृतराष्ट्र से बोले हे राजन् शीघ्र निकलो भयंकर भय आता है सो देखो हे प्रभो जिस काल के लौटाने का कोई उपाय नहीं है जो कहीं से कभी भी नहीं आ सकता सो यह भगवान् काल सबको हमको ऐसे हो आता है जिस काल से ग्रसा हुआ जीव अधिक प्रिय प्राणों से तत्काल वियोग पाता और धन पुत्रादिक की तो बात ही क्या है जब पिता भ्राता सुहृद पुत्र हैं वे तुम्हारे मारे गये सब आयु तुम्हारी हो चुकी देह को बुढ़ापे ने घेरी ... तो भी पराये घर में रहते हो बड़े आश्चर्य की बात है कि किस जीव जीवन की बड़ी आशा लग रही है सो तुमको भी है भीमसेन की दिये हुये टुकड़े श्वान की नाईं तुम खाते हो तुमने भी तो अपने ... के साथ कुछ कसर नहीं की लोहे के कोट में बन्द करके ... भाई लड़कों में बिष दिया उनकी स्त्री द्रौपदी को सभा में ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

... दिला हन ... में ...

२५८

दोनों भौंके बीच सोने से दागने पर मृगी नष्ट होती है
(वृश्चिक का चन्द्र ११।२) सोना चाँदी सम

Monday the 3rd September 1973.

रा॰भाद्रपद १० शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۵ شهریور ۱۲
सोमवार ३ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ ६ सं. २०३०
घ॰ ३।१ विशाखा २७।७ र॰ उ. ५।४२ र॰ अ. ६।१२
फ॰ १३८० प्र॰ भादों २० बं. भाद्रपद १८ ने. १८ गते

सूर्यषष्ठी ६, लोलार्क षष्ठी ६

अब उनका दिया अन्न खाकर शरीर पुष्ट करने से कुछ प्रयोजन नहीं निकलेगा कृपण पन से जीवने की इच्छा अच्छी नहीं है जो इच्छा भी है तो यह तुम्हारा जरा जीर्ण शरीर सब प्रकार क्षीण होगया है जैसे पुराने वस्त्र त्यागने होते हैं ऐसी तुम्हारे देह की गति है सो अब धैर्य धारो जो पुरुष विरक्त बन सब बन्धनों से मुक्त हो इस देह को त्यागे सो अविज्ञात गति स्वार्थ रहित धीर कहता है जो कोई आपने आप अथवा पराये उपदेस से आत्मा को पहिचान कर हृदय में परमेश्वर के चरणारविन्दों को धारण कर घर त्याग संन्यास धारण करते हैं वे ही मनुष्यों मे श्रेष्ठ हैं अपने सम्बन्धियों से छिपकर तुम उत्तराखण्ड को चलो इसके पीछे पुरुषों का गुण नाशक बहुत बुरा समय आ गया अजमीढ वंशी जन्मान्ध को इस भाँति छोटे भाई बिदुर जी ने जब समझाया तब तो धृतराष्ट्र अपना चित्त दृढ कर कुटुम्ब के लोगों से स्नेह त्याग बिदुर जी ने जो मुक्ति मार्ग बताया उसी पर आरूढ होकर कहा भाई तुमने सत्य कहा हमारे मन भी यही इच्छा है परन्तु हम दोनों स्त्री पुरुष नेत्रहीन हैं किस प्रकार उत्तराखण्ड को जांय धृतराष्ट्र की अधीनता के वचन सुन बिदुर जी बोले कि इस बात का आप कुछ सन्देह मत करें को आपने साथ डोरा पकड़कर ले चलूंगा तुम हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चम्पेका फूल और शहद खानेसे मन प्रसन्न रहता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सम

Tuesday the 4th September 1973.

श-भाद्रपद ११ शकः १८९५ ४ ।३१३ شعبان ٦ ستمبر
मंगलवार ४ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु० ७ सं० २०३०
घ० ६।३० अनुराधा ३२।२९ र० उ० ५।४३ र० अ० ६।११
फ० १३८० प्र० भादों २१ बं० भाद्रपद १९ ने० १९ गते

महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ १६ दिवसीय, राधाष्टमी ६

तब तक सब प्रकार दिनरात हम आपकी सेवा करेंगे पति के
जाने का समाचार सुन सुबल दुहिता पतिव्रता साध्वी गान्धा
री भी उनके संग चलने को उपस्थित हुई संन्यस्त दण्डवाले
को अति हर्ष देने वाले हिमालय को गये मनस्वी शूरों को जैसे
युद्ध में सुन्दर प्रहार प्यारे लगते हैं वैसे जाने राजा युधिष्ठिर सन्ध्या
वन्दन से निश्चिंत हो अग्निहोत्र कर तिल, गो, भूमि, सुवर्णदान दे ब्राह्मणों
को नमस्कार कर माता पिता को बन्दना करने के लिये उनके मंदिर
में गये वहां बिदुर धृतराष्ट्र गांधारी को न देखा उद्विग्न मन से बै
ठ गये और संजय से पूछा कि हे संजय हमारे चाचा वृद्ध नेत्रहीन
कहां चले गये पुत्रों के शोक से महा व्याकुल हमारी चाची भी नहीं
दिखाई देती जो आप को विदित हो तो कहो क्यों कि व्यास जी
महाराज की कृपा से तुम सब जानते हो मुझ बुद्धिहीन ने अपराध
विचार बन्धुओं के मारने से दुःखी होकर स्त्री सहित गंगा में तो नहीं
डूब मरे जब हमारे पिता परमधाम को चले तो हम सब को बालक
जान कर अनेक कष्टों से हमारी रक्षा की और पाला वह हमारे चा
चाचा यहां से कहां चले गये सूतजी बोले कि हे शौनक मुनि
संजय अपने ईश्वर युधिष्ठिर को महा दुखी देख आप भी दुखित
हो और मुख से कुछ नहीं कह सके दोनों हाथों से आंसू पोंछ
सावधान कर मन को धीरज दे प्रभु के चरणों का स्मरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५८

निर्मली शहद में रगड़कर लगाने से घुन्धुली जाती है

(धनु का चन्द्र ३८।३३) सोना चाँदी महंगा

Wednesday the 5th September 1973.

रा॰भाद्रपद १२ शकः १८९५ ४ ۷ شعبان ۱۳۹۳ھ

बुधवार ५ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ ८ सं. २०३०

घ॰ १०।५३ ज्येष्ठा ३८।२३ र॰ उ॰ ५।४४ र॰ अ॰ ६।१०

फ॰ १३८० प्र. भादरों २२ बुं. भाद्रपद २० जै. २० गते

कि हे कुरुनंदन तुम्हारे पिता के समाचार मैं कुछ नहीं जान
और गांधारी तुम्हारी चाची के जाने की भी मुझको कुछ
सुधि नहीं इन महात्माओं से बंचित हुआ हूं उसी समय का
से घूमते घामते नारद मी तुम्बरु गंधर्व को संग लिये आये
उनको देख भाइयों समेत उठ पूजा सत्कार प्रणाम कर
बोले कि हे भगवन् हमारे चाचा चाची न जाने कहाँ चले
गये पुत्रों के निधन होने से महा दुःखी हो तपस्वी नो गांध
कहैं गई और अपार शोक सागर में डूबे हुए को धैर्य रूपी केवट
कर नारद जी आप आ पहुंचे हे अज्ञान नाशक महा बुद्धिमान् सर्व
त्रिपुरहती सब की विपत्ति में आकर सहायक होते हो जो उनको
सिंह ब्याघ्र खा लिया अथवा कहीं कुएँ में डूब कर मर गये तो
दुर्नामता होगी किसी के सम्मुख मुख दिखाने का भी न रहूँगा
आप दिव्य दृष्टि हैं कृपा कर के बता दीजिये हम उनको विनय
कर उनको यहाँ लौटा लावेंगे क्योंकि भोजन शयन में
न्त दुखी होंगे युधिष्ठिर के वचन सुनकर मुनिसत्तम भगव
नारद जी बोले कि हे राजन् शोक संताप मत करो यह सब सं
ईश्वर के बस में है जो सब का ईश्वर है उसको अपने
लोक सहित सब लोग भेंट देते हैं वही परमात्मा सब जीवों
संयोग वियोग करता है जैसे बलवान बैल नाथ के व
कर अपने स्वामी का सब कार्य कर चलि देता है ऐ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरहर की पत्ती चबाने से जिनावा जाता है
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Thursday the 6th September 1973.

रा.भाद्रपद १५ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۸ پنجشنبه
गुरुवार ६ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु. ९ सं. २०३०
घ. १५।२० मूल ४५।२ र. उ. ५।४४ र. अ. ६।९
फ. १३८० प्र. भादों २३ बं. भाद्रपद २१ ने. २१ गते

धर्म रूप नाथ सबैले सब जीव परमेश्वर को बोलि देते हैं
जैसे खेलने वालों की इच्छा से सब जीवों का संयोग समझना चा
हिये लोक को ध्रुव मानो अथवा अध्रुव मानो वा दोनो मत
मानो मोह से स्नेह से सब प्रकार से शोक करना नहीं चाहिये हे
युधिष्ठिर यह जो अज्ञान पन की तुम्हारी व्याकुलता है इस को
त्यागो क्यों कि तुम कहते हो कि अज्ञान अनाथ कृपण अन्धे
तुम्ह विना बन में कैसे रहेंगे और उन के खाने की सुध कौन लेगा
यह सोच करना तुम्हारा सब वृथा है काल कर्म गुण इन के आधीन
यह पञ्चतत्त्व का बना हुआ देह है सो यह किस की रक्षा कर सकता
जैसे अजगर सर्प ग्रस्त जीव और को कैसे बचा सकेगा जार पग
वाले पशु आदि तृणादिक को खाते हैं हाथ जिनके हैं वे जीव और भी सूक्ष्म
वस्तु का भक्षण करते हैं ऐसे ही सब जीव मात्र जीवों का जीवन
चाते हैं परन्तु सब काल ग्रस्त हैं हे राजन् सर्व दृष्टा एक है सब
आत्माओं एक है भीतर बाहर जिस में नहीं भोक्ता और भोग्य रूप
कर माया से बहुत दीखते हैं इसलिये सजातीय विजातीय स्वगत
भेद शून्य यह भगवान् प्रकाश करता है हे महाराज सो भगवान्
भावन काल रूप ने सुर द्रोहियों के मारने के कारण पृथ्वी पर
जन्म अवतार धारण किया है देवताओं का तो सब कार्य कर चुके हैं
केवल यदुकुल को और बाट देख रहे हैं तब तक तुम भी यहां रहो
ईश्वर श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द यहीं रहें पीछे तुम भी चले
राजन् धृतराष्ट्र सहित गान्धारी को विदुर लिये
...के आश्रम में...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुर्गी के अंडे की जरदी भगन्दर में फायदा करती है
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Friday the 7th September 1973.

रा. भाद्रपद १४ शक: १८९५ ४ [illegible]
शुक्रवार ७ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु. १० सं. २०३०
घ. २१।१ पू. षा. ४१।२९ र. उ. ५।४४ र. अ. ०६।८
फ. १३८० प्र. भादरों २४ वं. भाद्रपद २२ गे. २२ गते

सबओर बहकर आप सात रूप हुई हैं सातों ऋषियों की प्रीति के
अर्थ सप्तस्रोत ऐसे विख्यात हैं वहाँ सदा स्नान कर यथावि
अग्निहोत्र कर वायु भक्षण के आश्रय रहकर अति शान्त मन
परमात्मा के चरणों में चित्त लगा सब कुटुम्ब से स्नेह तज
वास करेंगे आसन जीत श्वास जीत इन्द्रियों का प्रत्याहार करके
हरि भावना से दग्ध होकर राजस तामस सात्विक सब मल
जिनके भस्म हो गये विशेष ज्ञान मय व्यापक जिनकी देह
जीवान्तरयामी सर्वाधार बृहत्वादि गुण विशिष्ट चैतन्य ब्रह्म
में जीवात्मा का संयोग कर तद्रूप होकर परमात्मा में लीन होंगे
जैसे घट फूटने से घटाकाश महाकाश में लीन हो जाता है
माया गुणों की वासना जिनसे सर्वत्र दूर हो गई इन्द्रियें मन
ज जिनका शुद्ध हो गया है सब प्रकार के और जिन्होंने त्याग कि
खम्भ के सदृश्य अचल हो गये सब कर्म से संन्यस्त हैं उस
कोई विघ्न मत करना हे राजन् वे आज से पाँच दिन उपरान्त
अपना शरीर त्याग देंगे और देह आप ही भस्म हो जायगी
गो के तन से धृतराष्ट्र को मोक्ष प्राप्त होगा पर्णशाला में
जब देह भस्म हो जायगी तो गान्धारी उनकी स्त्री भी उस
अग्नि में प्रवेश करके सती हो जायगी हे कुरुनन्दन वि
जो यह आश्चर्य देखकर अति हर्ष शोक युक्त
हो जायगे ऐसे कह तुम्बरु गन्धर्व सहित नारद जी
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अजवाइन खाने से विष नष्ट होता है
(मकर का चन्द्र ४।२९) सोना चाँदी सम

Saturday the 8th September 1973.

रा॰भाद्रपद १९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شعبان ١٠ شنبه
शनिवार ८ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ ११ सं.२०३०
घ॰ २४।२४ उ. षा. २७।२७ र॰ उ. ५।४५ र॰ अ. ६।७
फ़॰ १३८० प्र. भादों २५ बं. भाद्रपद २३ ने. २३ गते

एका॰ ११ एकादशी व्रत सबका, डोल ग्यारस

भारत मे यह इतिहास इस प्रकार लिखा है किसी समय दुर्यो
धनने दुर्वासा मुनिको भोजन करवाया था दुर्योधन से
प्रसन्न हो दुर्वासमुनि बोले कि कुछ मांगो तब दुर्योधन
ने मन में बिचार किया कि दुर्वासा के शाप से पाण्डव कु
लनष्ट हो जाय तो अच्छा है तब दुर्योधन ने कहा कि युधिष्ठि
र हमारे कुल मे मुख्य हैं जब द्रौपदी प्रसाद पाले उस
समय तुम दश सहस्त्र शिष्यों को साथ ले उनके घर में
भोजन को जाना यह बचन सुन दुर्वासा ने वैसा ही किया
युधिष्ठिर ने दुर्वासा को देख अत्यन्त आदर सन्मान से मध्या
न्ह कृत्य कर दण्ड प्रणाम किया दुर्वासा बोले मुनि समूह पाप
नाश के अर्थ जल में स्नान करने को गये हैं भोजन करेंगे युधि
ष्ठिर ने कहा बहुत अच्छा यह बात सुन द्रौपदी ने चिन्ता से
आतुर होकर श्रीकृष्ण विश्वंभर का स्मरण किया कि हे दीनानाथ
आज धर्मराज की ओर मेरी लाज आपके हाथ है हे यदुपति
मेरी आपत्ति हुई तो आपको ही आपत्ति है श्रीकृष्णचन्द्र बनवारी
भक्त हितकारी तत्क्षण आकर उपस्थित हुए और द्रौपदी से
पूछा क्यों द्रौपदी बोली कि हे दीनबन्धु हे भक्तवत्सल हे
भगवान् आज दुर्वासा ऋषि शिष्यों सहित हमारे घर [illegible]
[illegible] यहाँ भोजन को कुछ सामग्री उपस्थित नहीं [illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरियाई नारियल गुलाबके साथ विषको नष्ट करता है

(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 9th September 1973.

रा॰भाद्रपद १६ शकः१८९५ ४ | ۱۳۹۳ شعبان ۱۱ | ایک‌شنبہ

रविवार ९ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ १२ सं. २०३०

वं. ३०।९ श्रवण ६०।० पू॰ उ. ३।४५ उ॰ अ. ६।६

फ. १३८० प्र. भाद्रों २६ बं. भाद्रपद २४ नै. २४ गते

महत्तांवबार व्रत, प्रदोष १२ व्रत, वामन द्वादशी १२

पीछे दुर्वासा को देखआया तब द्रौपदी अत्यन्त लज्जित
हुई और हाथ जोड़कर बोली कि हे स्वामी मेरे भोजन पर्यन्त
अक्षय अन्न बटलोई से निकलता है जब मैं इस में अन्न
का भोजन करलेती हूँ तब इसमें भोजन नहीं रहता सो हे
नाथ अब मैं भोजन कर चुकी इसमें कुछ भोजन नहीं रहा
फिर भगवान बोले कि उस बटलोई को यहाँ ले आओ यह
सुन वह बटलोई लायी उसके किनारे में कोई शाकान्न
रह गया था सो पाकर भगवान बोले कि इस शाकान्न से
विश्वात्मा भगवान प्रसन्न हों यह कह युधिष्ठिर से कहा
कि अब मुनि समूह को भोजन के लिये बुलाओ सो वे भोज
न करके सब भाग गये क्यों कि भगवानने तो उनके पेट
पहिले ही भरदिये थे दुर्वासा ऋषि ने कहा कि हमने
वृथा पाक बनवाया यह भयमान सब चेलों समेत दुर्वासाजी
वहाँ से भाग गये और यह बरदान दिया कि वासुदेव भगवान
तुम्हारी जय करें ॥

हे धर्मध्वज ब्रह्मा ने चार युग रचे सत्ययुग १ त्रेता २ द्वा
कलयुग ४ उनकी अवस्था का प्रमाण इस प्रकार किया
कि सतयुग १७२८००० सत्तरह लाख अट्ठाईस सहस्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेखी की रद्दी मलने से बाल निकलते हैं
(कुम्भ का चन्द्र ३४।४८) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 10th September 1973.

रा०भाद्रपद १७ शकः १८९५ । १३९३ شعبان ١٢ دوشنبه
सोमवार १० सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु. १३ सं. २०३०
घ. २३।२६ श्रवण २।४४ र. उ. ५।४५ र. अ. ६।१५
फ़. १३८० स. भादों २७ बं. भाद्रपद २५ ने. २५ गते

आरह लाख छियानबे सहस्र वर्ष राज्य किया फिर द्वापर का
प्रवेश हुआ उसने भी आनन्द सहित ८६४ आठ लक्ष चौसठ
सहस्र वर्ष राज्य कर लिया अब सब अपना अपना राज्य भोग चुके
अब मेरे राज्य करने का समय आया और ४३२००० चार
लाख बत्तीस सहस्र वर्ष की मेरी अवस्था है सो मुझको
भोगनी पड़ेगी और मुझे आप आज्ञा देते हैं कि तू हमारे राज्य से
निकल जा सो सात द्वीप नौ खण्ड में आप का राज्य है फिर मैं
कहाँ जाकर बसूँ और जो विधाता का लेख है वह किसी प्रकार मेट
नहीं सकता फिर मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ हे दीनदयालु आप मेरे
अवगुणों का तो विचार करते हैं परन्तु मेरे गुणों की ओर ध्यान
नहीं करते सो मुझमें एक गुण अत्यन्त उत्तम है वह आप से
निवेदन करता हूँ सतयुग में राजा के राज्य में एक मनुष्य
अपराध करता था तो समस्त राज्य भर के मनुष्य दण्ड पाते
थे त्रेता में एक मनुष्य के पाप करने से सब ग्राम का ग्राम दण्ड
का भागी होता था और द्वापर में जो कोई कुकर्म करता था उस
के सब कुटुम्ब को शासना दी जाती थी और कलियुग में
जो पुरुष अन्याय करता है वही अपने शरीर से भोगे
दूसरे से मुझको कुछ प्रयोजन नहीं और युगों में और
मनुष्यों को मन का भी पाप लगता था और उसका दण्ड
भोगना पड़ता था। सो मेरे राज्य में मन का पाप नहीं लगता
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भङ्ग का रस रखने से गंज रोग दूर होता है
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चांदी सम

Tuesday the 11th September 1973.

रा॰भाद्रपद १८ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۱۳ سه‌شنبه
मंगलवार ११ सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु॰ १४ सं. २०३०
घ॰ २५।३६ धनिष्ठा ६।५३ र॰ उ॰ ५।४६ र॰ अ॰ ६।४
फ॰ १३८० प्र॰ भादों २८ बं॰ भाद्रपद २६ ने॰ २६ गते

श्रीअनन्त चतुर्दशी १४ व्रत

राजा परीक्षित सन्तुष्ट न हुये और उनके मन में दया
आयी तो फिर कलियुग ने कहा हे दीनानाथ मुझमें एक
गुण और बड़ा लाभ दायक है सतयुग में जो कोई बैकुण्ठ
जाने के लिये दस सहस्र वर्ष जपतप संयम करता था तब
उसकी मनःकामना सफल होती थी त्रेता में जब मनुष्य
बहुत सा धन लगाकर सहस्र वर्ष तक अश्वमेध यज्ञ करते
थे तब उनका मनोरथ सिद्ध होता था द्वापर में सौ वर्ष
तक दान व्रत पूजा ध्यान भगवान वासुदेव का इच्छा पूर्ण
होती थी और मेरे राज्य में जो मनुष्य एक पल मात्र
भी एकाग्र चित्त करके सच्चे मन से परमेश्वर का भ
करे वा सच्चे मन से हृदय में ध्यान करे और उनकी क
वार्ता सुने वह अपने सर्वत्र कार्य को साध अनेक जन्म
पापों से छूट मोक्ष का भागी होता है जब कलियुग में
यह गुण सुना तब तो राजा परीक्षित कलियुग पर बहुत
[illegible] हुये तो कलियुग हाथ जोड़ कर बोला कि हे पृथ्वीनाथ
हे दया निधि हे दीन दयालु जो आप मुझपर प्रसन्न होते हो
तो मुझको प्राणदान दीजिये और जिस स्थान पर आप कहो
मैं रहने के लिये हो मैं वहीं निश्चित होकर रहूँ और
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन करने के बाद कुछ फल खाना लाभदायक है
(मीन का चन्द्र २६।१७) सोना चांदी सम
Wednesday the 12th September 1973.
रा०भाद्रपद २१ शाकः १८९५ ४ چہارشنبہ ۱۱ شعبان ۱۳۹۳
बुधवार १२सितम्बर सन् १९७३ भाद्रपद शु० १२ सं.२०३०
घ० २६।२१ शतभिषा ९।२७ र० उ० ५।५६ र० अ० ६।२
फ० १३८० प्र. भादरों २९ बं. भाद्रपद २७ ने. २७ गते

स्वामी वामन द्वादशी, महालयारम्भ

कलियुग के लिये स्थान बताने लगे - जहाँ जुआँ होता हो मदिरा बिकता हो, जहाँ वेश्या रहती हो और जहाँ जीव हत्या होती हो यह चार स्थान तुम को दिये तुम इन चारों स्थानों में वास करो तब बिनती करके कलियुग बोला कि मेरा कुटुम्ब बहुत है इन स्थानों में कैसे समायेगा तब राजाने कहा सोने में भी तुम रहो इसी प्रकार - झूठ, काम, रजोगुण, बैर यह पाँच स्थान तुम को और दिये राजा परीक्षित के दिये हुए उन्हीं पाँच स्थानों पर धर्मी कलि ने अपना वास किया जो पुरुष संसार में अपनी वृद्धि चाहे तो इन पाँचों बातों के निकट न जाय धर्मात्मा राजा लोक पति गुरु विशेष करके इनका सेवन नहीं करें धर्म रूपी वृष के तीन पद तप, शौच, दया जो नष्ट हो गये थे इनको अपने धर्म से रक्षा किया और पृथ्वी को भी धैर्य देकर शान्त किया सो यह राजा परीक्षित राजाओं के योग्य आसन पर बैठे जो राजा सिंहासन युधिष्ठिर और अर्जुन बन को जाते समय इनको दे गये थे अब वह राज्य कौरवों की शोभा बढ़ाने वाले हैं श्रीमद्भागवत चक्रवर्ती महा यशस्वी हस्तिनापुर में अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित का ऐसा प्रताप पृथ्वी का पालन करते हैं ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५८ त्रिफला से आंख धोनेसे आंखों को तरावट पहुँचती है
(सीन का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Thursday the 13th September 1973.

रा॰भाद्रपद २० शाकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان 10 پنجشنبہ
गुरुवार १३ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ॰१ सं. २०३०
घ. ३६।२ पू. भा. ११।४२ र. उ. ५।५७ र. अ. ६।१
फ. १३८० प्र. भादरों ३० वं. भाद्रपद २८ बे. २८ गते

श्रीमद्भागवत पितृपक्षारम्भ, फसली १३८१ प्रारम्भ स्कन्ध ३१

जिसका ब्राह्मणकुल में जन्म और जिनके मुखसे सर्वकाल वेद हो पर यदि अन्तः करण में कपट हो तो ऐसे पुरुषको दैव भी नहीं करता जैसे जातपक्ष पक्षी अण्डे को त्याग देते उसी प्रकार वेद भी अन्त समय पर ऐसे प्राणी का त्याग कर देते हैं फिर उस पुरुष की रक्षा दैव भी नहीं करता मदिरा पीने वाले का साथ १ बिना कारण क्रोध २ बहुत जनों से बैर ३ स्त्री पुरुष का वियोग ४ जाति में भेद डालना ५ सन्तों र ६ स्त्री पुरुष में बैर ७ खोटे मार्ग में चलना ८ आठ त्यागने योग्य हैं ऐसे ही हस्त रेखा का परीक्षक (सामुद्रिक शास्त्र को जानने वाला पंडित) १ तोल में कम तोलने वाला झूठ बोलने वाला व्यापारी २ जुवारी अथवा पाशा डालने वाले शकुनादिक कहकर दूसरों को ठगने वाले ३ धूर्त वैद्य इन चारों जनों का केवल दान का ही लोभ होता है इस लिये ये साक्षी नहीं हैं ऐसे ही पांचवें शत्रु को झूठे मित्र को साक्षी नहीं लेना क्योंकि शत्रु और मित्र का विश्वास नहीं है ५ मित्र को इस लिये निषेध किया है कि वह जो सत्य भी कहे तो भी लोग उसे झूठ समझेंगे ६ कुत्सित शीलवान् न जाने कि मुख से क्या निकाल बैठे ७ इन सातों को [illegible] [illegible] जानते हैं तभी तो [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधा सिरके दर्दपर अनारकी पत्ती मिर्च पीसकर पिलावे
(मीन का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Friday the 14th September 1973.

रा॰ भाद्रपद २३ शाकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۱۵ [illegible]
शुक्रवार १४ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.२ सं.२०३०
घ॰ ३४।२४ उ. भा. १२।१३ र॰ उ. ६।४७ र॰ अ. ६।०
फ़॰ १३८१ प्र. असौज २ बं. भाद्रपद २९ ने. २९ गते

१

मौनसाधन २ विद्याध्ययन ३ यज्ञ ४ ये चार सत्कर्म सुख देने वाले हैं परन्तु ये क्रोध से किये तो महाभयकारी हो जाते हैं। आग का लगाने वाला १ विष का देने वाला २ अपनी स्त्री के जारकर्म से उपार्जन किये हुए धन से उदर पूर्ति करने वाला ३ सोम का बेचने वाला ४ बाणादिक शस्त्रों का बनाने वाला ५ निन्दा करने वाला ६ मित्र द्रोही ७ परस्त्री गामी ८ गर्भनिपात ९ गुरुपत्नी से प्रसङ्ग करने वाला १० मद्य पीने वाला ब्राह्मण ११ विश्वासघाती १२ दुखी को दुःख देने वाला १३ परलोक को झूठा बताने वाला १४ वेदों की निन्दा करने वाला १५ राज्यसत्ता के बल से लोहे की सलाका मारकर थैले में से अन्न निकालने वाला १६ नियत समय पर यज्ञोपवीत न लेने वाला १७ निर्बल जीवों का हिंसक, शरणागत को मारने वाला १८ ये अठारह प्राणी ब्रह्महत्या करने वालों के समान हैं॥ तृण को आग से सुवर्ण को अग्नि से मद्र आचरण से साधु, भय उपस्थित होने पर सूरमा, अर्थ संकट (दुर्भिक्षकाल आदि में) धीरों [illegible] आपत्तिकाल में शत्रु और मित्र देखा जाता है॥ शस्त्री (शस्त्रधारी) मर्मी (भेद जानने वाला) समर्थ स्वामी, मूर्ख, धनवान्, वैद्य, भाट, कवि और रसोइया इन नौ व्यक्तियों से विरो[illegible] (कल्याण[illegible]) नहीं होता है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

 बिच्छू काटने पर स्प्रीट की मालिश करनी चाहिये
(मेष का चन्द्र १२।२४) सोना-चाँदी महँगा
Saturday the 15th September 1973.
रा० भाद्रपद २४ शकः १८९५ ١٣٩٣ شعبان ١٧ شنبه
शनिवार १५ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ. २ सं. २०३०
घ. ३१।३५ रेवती १२।२४ र. उ. ५।४७ र. अ. ५।५९
फ. १३८१ प्र. असौज २ बं. भाद्रपद ३० ने. ३० गते

श्रीगणेश ४ व्रत

नरलोक में ये आठ गुण स्वर्ग में लेजानेवाले हैं यज्ञ १ दान २ अध्ययन ३ तप ४ ये चार सत्पुरुषों से सम्बन्ध रखने के हैं और इन्द्रिय दमन ५ सत्य ६ शम ७ और दया ये सत्पुरुषों से सेवनीय हैं यह धर्म का मार्ग आठ प्रकार का कहा है यज्ञ १ दान २ वेदपाठ ३ तप ४ क्षमा ५ सत्य ६ दया है और निर्लोभ इन में चार पहिले धर्मों का पाखण्डार्थ सेवन करते हैं और पिछले चार धर्म लोभियों में नहीं रहते जिस सभा में वृद्ध का समागम नहीं वह सभा ही नहीं है जो वृद्ध धर्म का उपदेश न करे वह वृद्ध ही नहीं है जिस धर्म में सत्य नहीं वह धर्म ही नहीं है जिस सत्य में कपट है वह सत्य ही नहीं है सत्यरूप १ नम्रता २ शास्त्र ३ दुष्टदेवोपासना ४ कुलीनता ५ शीलस्वभाव ६ बल ७ धन ८ शूरता ९ विचित्रभाषण १० ये दस गुण स्वर्ग में ले जाने वाले हैं पाप करने वाला दुष्कीर्ति का भागी होता है दुःख ही भोगता है पुण्य करने वाला पुण्यकीर्ति होकर अनन्त सुख को ही भोगता है इसलिये प्रशंसनीय बुद्धि धारण करने वाला पाप न करे क्योंकि बारम्बार किया हुआ पाप बुद्धि को नष्ट करता है नष्ट बुद्धि पुरुष पाप करता है और पुनः पुण्य किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गायका घी और नमकका गर्म लेप बिच्छू काटनेपर लगावे
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Sunday the 16th September 1973.

रा॰भाद्रपद२५ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۱۸ ایک شنبه
रविवार १६ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.४ सं. २०३०
घ. २७|४८ अश्विनी ९|५२ र. उ. ५|४८ र. अ. ५|५८
फ. १३८१ प्र. असौज ४ बं. भाद्रपद ३१ ने. ३१ गते

दण्ड देनेवालेको शत्रु से कभी अचेत नहीं रहना चाहिये
देवता १ ब्राह्मण २ राजा ३ वृद्ध ४ बालक ५ रोगी ६ इनपर
क्रोध आवे तो उसको शान्त करना चाहिये जो धन स्त्रियों
के हाथ में गया उसको गया ही जानो आशा धैर्य का नाशकर
ती है काल पदार्थका नाशकरता है क्रोध लक्ष्मी का नाशकरत
है कृपणता कीर्ति का नाश करता है अपालन पशुओं का नाश
करता है और अकेले ब्राह्मण का क्रोध सब देश का नाश
करता है बकरी, घोड़ा, कांसी का पात्र, चाँदी, सोना, मध्य
विषयों की प्राप्ति, पक्षी, वेदपाठी, वृद्धजाति, पीड़ित ये सब
ये सदा आपके यहाँ हैं हे महाराज बकरी, वृष, चन्दन, वीणा
आदर्श, दर्पण, मधु, घृत, जलताम्रपात्र, शंख, शालिग्रा
म, चन्दनादिक, गन्धि ये सब धनदायक वस्तु घर में
रखने योग्य हैं देवता ब्राह्मण और अतिथिगण (जो अचानक आ
जाय चाहे पहिचान का हो अथवा न हो वह अतिथि है) पूजा के योग्य
हैं यह मनुजीने कहा है।

दोहा—श्रवण करत ही हरि कथा, सब अघ होत निपात।
जब यदुपति पद पद्म रति, का कहिबे की बात॥

जब श्रीमुरारी भक्त हित कारी के गुणानुवाद सम्पूर्ण कष्ट के
नाश करनेवाले हैं तो उनके चरणारविन्द के पराग में प्रीति
[illegible] के लिये लाभकारी हो तो आश्चर्य है अर्थात् अवश्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाज बन्द हो तो शीतलचीनी खानेसे फायदा होगा
(वृष का चन्द्र २१।३०) सोना चांदी सम

Monday the 17th September 1973.

रा.भाद्रपद २६ शक:१८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۱۹ شهریور ۲۶
सोमवार १७ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.५ सं.२०३०
घ. २३।१० भरणी ७।१० र. उ. ५।४८ र. अ. ५।५७
फ. १३८१ प्र. असौज ५ वं. भाद्रपद ३२ ने. १ गते

विश्वकर्मा पूजा

चौ. सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरे। सब बिधि घटब काज मैं तोरे॥

मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, कुलटा स्त्री, और कपटी मित्र ये चारों शूल के समान (पीड़ा देने वाले) हैं हे सखा मेरे बल पर अब चिन्ता छोड़ दो मैं सब प्रकार से तुम्हारे काम आऊँगा तुम्हारी सहायता करूँगा॥ (सुग्रीव को रामने कहा है)॥

चौ. नाइ चरन सिरु कह कर जोरी। नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी॥
अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटइ राम करहु जौं दाया॥

श्रीरघुनाथजी के चरणों में सिर नवाकर हाथ जोड़कर सुग्रीवने हे नाथ मुझे कुछ भी दोष नहीं है हे देव आप की माया अत्यन्त प्रबल है आप जब दया करते हैं हे राम तभी यह छूटती है॥

चौ. बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पावँर पसु कपि अति कामी॥
नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध तम निसि जो जागा॥

हे स्वामी देवता, मनुष्य और मुनि सभी विषयों के बस में हैं फिर मैं तो पामर पशु और पशुओं में भी अत्यन्त कामी बन्दर हूँ। स्त्री का नयन बाण जिसको नहीं लगा जो भयङ्कर क्रोध रूपी अँधेरी रात में भी जागता रहता है (क्रोधान्ध नहीं होता)

चौ. लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया॥
यह गुन साधन तें नहिं होई। तुम्हरी कृपाँ पावकोइ कोई॥

और लोभ की फाँसी से जिसने अपना गला नहीं [illegible] हे [illegible] मनुष्य आपही के समान है [illegible]
[illegible] कोई बिरले पाते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कसरत करने से शरीर में स्फूर्ति आती है
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Tuesday the 18th September 1973.
रा.भाद्रपद् २७ शाकः१८९५ ४ |٣١٣ شعبان ٢٠ ١٣٩٣
मंगलवार १८ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.६ सं.२०३०
घ. १७|५२ कृत्तिका ४|४ र. उ. ५|४८ र. अ. ५|५६
फ. १३८१ प्र. असौंज ६ बं. आश्विन १ ने. २ गते

शुम्लां ब्रम्ह बिचारसार परमां माद्यां जगद्व्यापिणीं ।।
बीणा पुस्तक धारिणीम् भयदां जाड्यां धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिक मालिकां बिदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
बन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम् ।।

यत्फलं कपिला दाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे ।
तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ बिप्राणां पाद शौचने ।।
विप्र पादोदक क्लीनां यावत्तिष्ठति बिमेदिनी ।
तावत्पुष्कर पात्रेण तृप्यन्तु पितरो जलम ।।
पुष्कर में पाण्डवों ने कार्तिक में गौ का दान किया। उस दान से जो फल पाण्डवों को मिला वही पैर धोने का मंत्र है (ब्राह्मण के पैर धोने से)

शिशुमार चक्र आत्म्याम् नमः (नाम लेने से पाप नष्ट होते है)

नारि सुभाव सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।।
स्त्री का स्वभाव सब सत्य ही कहते हैं कि उसके हृदय में आठ अवगुण सदा रहते हैं ।।
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ।।
साहस, झूठ, चञ्चलता, माया (छल), भय (डरपोकपन), अविवेक ... और निर्दयता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६०

श्रीमहालक्ष्मी ८ व्रत, जीवित पुत्रिका ८ व्रत

सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी।
तनु पोषक निंदक अघखानी ।जीवत सव सम चौदह प्रानी।

नित्यका रोगी, निरन्तर क्रोधयुक्त रहनेवाला, भगवान् विष्णुसे विमुख, वेद और संतोंका विरोधी, अपना ही शरीर पोषण करनेवाला, पराई निन्दा करनेवाला और पाप की खान (महान् पापी) ये चौदह प्राणी जीते ही मुरदे के समान हैं ।।

मरण समय में जैसा अभिमान होता है वैसी ही गति होती है यह बात श्रुति, स्मृति, पुराण और ज्ञानी पुरुष प्रमाण मानते हैं कि, "मरे या मतिः सा गतिः" सोई गीता में भी कहा है कि, "यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यंते कलेवरम् । तं तमेवैति कौंतेय सदा तद्भावभावितः ।। इसका अभिप्राय यह है कि, श्रीकृष्ण जी उपदेश करते हैं कि हे अर्जुन अन्त समय में जिस २ भाव को स्मरण करता हुआ पुरुष शरीर को त्यागता है तस भावना से तिस २ गति को ही प्राप्त होता है श्रुति में भी कहा है कि "तं विद्याकर्मणी समारभेते पूर्व प्रज्ञा च।" इसका भी अभिप्राय है और [illegible] बंध तथा मोक्ष अभिमान से होते [illegible] वास्तव में नहीं यह बात पहिले कह आये हैं [illegible] र शिष्य को बोध होने के अर्थ कहा है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमक और हींग की मालिश सूजन को दूर करती है
(मिथुन का चन्द्र) सोना चांदी तेज

Thursday the 20th September 1973.

रा.भाद्रपद २९ शकः १८९५ ४ | ۱۳۹۳ شعبان ۲۲ پنجشنبه
गुरुवार २० सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.८ सं.२०३०
घ. ५३|५२ आर्द्रा ३१|५८ र. उ. ५|४९ र. अ. ५|५४
फ. १३८१ प्र. असौज ८ वं. आश्विन ३ ने. ४ गते

मातृनवमी ९

कृपा निधान श्री रामजी ने कहा है कि हे सखे सुनो जिससे जै होती है (जीत) वह रथ दूसरा है ॥
सौरज धीरज तेहि रथ-चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। क्षमा कृपा समता रजु जोरे ॥
शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिये हैं। सत्य और शील (सदाचार) उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, दम (इन्द्रियों का वश में होना) और परोपकार ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं ॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥
ईश्वर का भजन ही (उस रथ का चलानेवाला) चतुर सारथि है वैराग्य ढाल है और सन्तोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥
निर्मल (पाप रहित) और अचल (स्थिर) मन तरकस के समान है शम (मन का बस में होना), (अहिंसादि) यम और (शौचादि) नियम ये [illegible] से बाण हैं ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है [illegible] विजय का दूसरा उपाय नहीं है ॥
[illegible] रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुलहठीका चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे ताकत आती है
(कर्क का चन्द्र ३३।२७) सोना चांदी सस

Friday the 21st September 1973.

रा•भाद्रपद ३० शकः १८९५ ४ ।३१३ شعبان ٢٣ ...
शुक्रवार २१सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.१० सं.२०३०
घ. ५३।५४ पुनर्वसु ४७।२० र. उ. ५।४७ र. अ. ५।५३
फ. १३८१ प्र. असौज ९ बं. आश्विन ४ ने ५ गते

हे सखे ऐसा धर्ममय रथ जिसके हो उसके लिये जीतने को कहीं शत्रु ही नहीं है ॥

दो• महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥

हे धीर बुद्धि वाले सखा सुनो, जिस के पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह बीर संसार (जन्म-मृत्यु) रुपी महान् दुर्जे शत्रु को भी जीत सकता है रावण की तो बात ही क्या है ॥

सुनि प्रभु बचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥

प्रभु के वचन सुन कर विभीषण ने हर्षित हो कर उनके चरणकमल पकड़ लिये और कहा - हे कृपा और सुख के समूह श्रीरामजी आपने इसी बहाने मुझे महान् उपदेश दिया ॥ लंकाकाण्ड ॥ में ८० दो. के पहिले

श्लोक - हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्या

कवित्त - आये को हर्ष नहीं गये का भी शोक नहीं, कै
निरद्वन्द्व भयो समझ की बात है। देह
नहीं मोह देरे नहीं मन ओ कहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानकेगांठपर एलुवाकत्थागुगुलसिरकामेंपीसगर्मलेपकरे
(कर्क का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 22nd September 1973.

रा॰ भाद्रपद ३१ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ شعبان ٢٤ شنبه
शनिवार २२सितम्बर सन्१९७३आश्वि.कृ.११ सं.२०३०
घ॰ ४८।१६ पुष्य ४४।० र॰ उ. ५।५० र॰ श्र. ५।५२
फ॰ १३८१ प्र. असौज १० वं. आश्विन ५ ने. ६ गते

इन्दिरा एकादशी ११ व्रत स्मार्तों का

समगात है ॥ लोकन की रीति नहीं काहू सों प्रीति नहीं हार नहीं जीत नहीं वर्ण है न जात है। ऐसे जब ज्ञान होत तब ही कछु ध्यान होत ब्रह्म के समान होत ब्रह्म में समात है

(कबित्त)

रामहीका नाम रटे बुद्धि बल प्रबल होय, रामहीका नाम रटे उत्तम कुल पावै है। रामहीका नाम रटे चक्रवर्ती राज्य मिलै, रामहीका नाम परम, धाम को दिखावै है रामहीका नाम रटे ऋद्धि और सिद्धि होत, रामहीका नाम इन्द्रासन पै बिठावै है। रामहीका नाम रटे निर्भय नर देह मिलै, राम राम रटत निर्बाणहू होय जावै है ॥

कबित्त—आदि है न अन्त है न आगम अनन्त है, पावन असंग औ अव्यक्त अप्रमान है। एक है प्रकाशक है महाकाश व्यापक हैं, निर्गुण निरंजन है चिदानन्द ज्ञान हैं ॥ दीन पै दयाल सदा अजर अविनाशी हैं, अलख अनीह औ अवा[illegible] बान हैं। बिश्व करतार भरतार जगहार प्रभु, वेद [illegible] बहारी भगवान हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७४

अलसीकेचूर्णकालड्डू बनाकरखानेसेंकसरकादर्ददूरहोगा
(सिंह का चन्द्र ४०।४६) सोना चाँदी सस्ता
Sunday the 23rd September 1973.
रा॰ आश्विन १ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شعبان ٢٥ ایک‌شنبه
रविवार २३ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ. १२ सं. २०३०
घ. ४३।८ श्लेषा ४०।४१ र. उ. ५।५० र. अ. ५।५१
फ. १३८१ प्र. असौज ११ वं. आश्विन ६ ते. ७ गते

इन्दिरा ११ एकादशी व्रत वैष्णवों का

हे तात जो उपनयन कराते हैं (जनेऊ) जो आचार्य बेद पढ़ाते हैं वे बेद की मूर्ति हैं, पिता प्रजापति की मूर्ति है, भ्राता मरुद्गणों की मूर्ति है और माता सक्षात् पृथ्वी मूर्ति है बहिन दया की मूर्ति है अतिथि साक्षात् धर्म की मूर्ति है, अभ्यागत पुरुष अग्नि की मूर्ति है और सब प्राणी इस की मूर्ति है अर्थात् सर्व प्राणियों में आत्म दृष्टि रखना उचित है ॥

॥ सवैया ॥

जो परनारि निहारि निलज्ज हँसै बिलसैं बुध होने बड़े।
जूंठन को जिमि पातल पीरव, खुशी उर कूकर होत घने।
जे जनकी यह टेव अहै तिनकी जगमें अपकीरति हैरे।
है परलोक विषे बिजलो, सुकरे शतखण्ड सुखाचल कौ।

श्रोत्रियं सुभगां गां अग्निं साग्निं गां धार्मिकं नदीम्।
प्रातरुत्थाय यः पश्येत आपद्भ्यः स प्रमुच्यते॥
पापिष्ठं दुर्भगामन्त्यं नग्नमुत्कृत्तनासिकम्
अप्रियं प्रातरुत्थाय पश्यन् कलिमवाप्नुयात्। [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
[illegible]

धारोष्ण दूध वीर्य को बढ़ाता है
(सिंह का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Monday the 24th September 1973.

रा.आश्विन २ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شعبان ٢٥ دوشنبه

सोमवार २४सितम्बर सन् १९७३ आश्विनकृ.१३सं.२०३०

घ. ३८|४३ मघा ३८|४ र. उ. ५।२१ र. अ. ५।४०,

फ. १३८१ म. असौज १२ बं. आश्विन ७ ने. ८ गते

सोम प्रदोष १३ व्रत, मास शिवरात्रि १३ व्रत

और नदी इनको प्रातः उठकर देखे तो आपत्ति से छूट जाते हैं। पापी, विधवा, चाण्डाल, नग्न, नककटा और अप्रिय (शत्रु)- इन्हें प्रातःकाल देखे तो कलह हो।

अजाश्व मुखतो मेध्यं गावो मेध्यास्तु पृष्ठतः।
ब्राह्मणाः पादतो मेध्याः स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः॥

अजा (बकरी) और अश्व (घोड़ा) का मुख पवित्र होता है। गौ की पीठ पूछ ब्राह्मणों का पाद (पैर) और स्त्री का सर्वाङ्ग शुद्ध होता है।

नास्ति यज्ञः स्त्रियाः किञ्चिन्नव्रतं नोपवासकः।
या तु भर्तरि शुश्रूषा तया स्वर्गं जयत्यसौ॥

स्त्रियों को यज्ञ, व्रत, उपवास आदि नियम के पालन की आवश्यकता नहीं है। केवल पति सेवा से ही वे स्वर्ग जा सकती हैं।

जो स्त्री पति के दिवङ्गत होने पर नियम से रहती है वह मरने पर ब्रह्मचारी की तरह स्वर्ग को प्राप्त करती है। जो स्त्री पति का अनुगमन करती वह मानव शरीर में साढ़े तीन करोड़ रोम होते हैं उतने वर्ष स्वर्ग में निवास करती है। जैसे सपेरा सर्प को बिल से बाहर [illegible] चलता है वैसे ही पतिव्रता स्त्री अपने पतिव्रत्य धर्म के बल पर पति का उद्धार कर स्वर्ग सुख भोगती है पृथक चिता पर जलकर [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूर दूधमें पीस घी मिला उबटन करनेसे झाँई दूर हो
(कन्या का चन्द्र ५१।५) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 25th September 1973.

रा० आश्विन ३ शकः १८९५ ४ । سہشنبہ ۲۷ شعبان ۱۳۹۳
मंगलवार २५सितम्बर सन् १९७३ आश्विनकृ.१४सं.२०३०
घ. ३५।७ पू. फा. ३६।१७ र. उ. ५।५१ र. अ. ५।४८
फ. १३८१ प्र. असौज १२ बं. आश्विन ८ ने. ९ गते

सती हेजातीहैं उसे स्वर्ग मिलताहै ॥
मथुरावासी श्रीकृष्ण और कंस का संबाद
देवक की लड़की लड़की देवकी सादी के लिये
उग्रसेन शादी के बाद बरात बिदा करने के लिये
उग्रसेन और देवक दोनो भाई आदि सब बरात पहुँचा-
ने को संग चले जब मथुरा से थोड़ी दूर बाहर बरात
निकली और देवकी के रथ के घोडों की बागडोर पकड़े
जो कंस हाँक रहा था उस समय कंस को आकास
वाणी हुई अरे मूर्ख जिसको हर्ष सो हित तू पहुँचाने
है उसी देवकी के आठवें गर्भ मे तेरे मारने वाला जन्म
होगा इस प्रकार आकाशवाणी को सुन वह अधम
भोजवंशियों के कुल को कलंक लगाने वाला कंस बहिन
के मारने के लिये तयार हुआ और खंग हाथ मे लिये
केश पकड़ देवकी को रथ से नीचे खींच लिया और
से दाँत पीसने लगा और दाँतों को चबा २ कर ओंठो को
फड़फड़ा फड़फड़ा कर कहने लगा कि जिस बृक्ष को
जड़ से उखाड़ डाले तो फिर उसमें फल फूल कहाँ लगेगा इस
लिये इसको मै मार ही डालूँ तो अच्छा है कि जिससे [illegible]
ने का संसय ही न रह जाय फिर निर्भय होकर [illegible]
[illegible] करूँ यह गति देख उस निंदनीय कर्म करने वाले
[illegible] कंस को [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायफल पानी के साथ लेप करनेसे झांई दूर होती है
(कन्या का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Wednesday the 26th September 1973.

रा॰आश्विन ४ शकः १८९.५ ४ ١٣٩٣ شعبان ٢٨ چہارشنبہ
बुधवार २६ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन कृ.३० सं.२०३०
घ. ३२।३२ उ. फा. ३५।३१ र. उ. ५।५१ र. अ. ५।४७
फ. १३८१ प्र. असोज १४ बं. आश्विन ९ ने. १० गते

सर्वपैत्री ३०, स्नानदान की अमावस्या ३०, पितृविसर्जन

स्तुति और युक्तियों से और करुणा भरे मधुर वचनों से
शान्त कर के बोले कि हे कंस तुम बड़े शूर वीर और योद्धा
ओं में प्रशंसनीय गुणयज्ञ और भोज बंस का सुयस
फैलाने वाले हो देखो इस समय बिवाह का समय
उत्साह दूसरे यह साध्वी जाति स्त्री अबला तीसरे तुम्हारी
प्यारी बहिन फिर इस बिचारी दीन अबला को मारना कौन
धर्म है बली कभी अबला पर शस्त्र नहीं डालते क्यों कि
स्त्रियों के मारने का शास्त्र में महा पाप लिखा है जो मृत्यु
के भय से इस बिचारी दीन को मारते हो तो मृत्यु तो किसी
प्रकार मिटती ही नहीं क्यों कि मृत्यु जन्म धारी मनुष्यों के
संङ्ग ही लगी रहती है जिस मनुष्य का जन्म होता है उसी
दिन मृत्यु भी संग जन्मती है और जो आप अपने जीवन के लिये
इसको मारते हो तो आज अथवा सौ वर्ष अनंतर देहधारी का
मरण निःसन्देह होगा और मनुष्य को उस समय पाप करना
भी उचित है जो शरीर छोड़ कर दूसरा धारण करना न पड़े सो
एकदापि हो नहीं सकता क्यों कि मरण समय में भी यह प्रा
णी अपने बस में नहीं रहता यहाँ कर्मों के अनुसार प्रथम दूसरे
को प्राप्त कर लेता है तब पीछे इस शरीर को त्यागता है॥
(ऐसा सुनके से देवकी...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजीठ शहद में पीस लेप करने से झांई दूर होती है
(तुला का चन्द्र ५१।२०) सोना चाँदी सम

Thursday the 27th September 1973.

रा०आश्विन ५ शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۲۹ پنجشنبہ
गुरुवार २७ सितम्बर सन् १९७३ आश्विन शु० १ सं.२०३०
घ० ३१।११ हस्त ३५।५५ र० उ. ५।५२ र० अ. ५।४६
फ. १३८१ प्र. असौज १५ वं. आश्विन १० ने. ११ गते

शारदीय नवरात्र आरम्भ

भजन — मृत्यु ने सब जग लीनो जीत। इससे जग में बचा न कोई, योगी यती अतीत ॥ रावण कुम्भकरण हनुमान जो जग थे अजीत। सो सब गये काल के मुख में, गर्व गयो सब बीत ॥ कबहूँ तो बन जात पित्त कफ, कबहूँ बन कर शीत। कबहूँ बन विशूचिका मारत, सब परिवार समीप ॥ इससे कोऊ बच न सकत है, पापी और पुनीत। शालिग्राम न राखत जग में, काहू से यह प्रीत ॥

जैसे चलने के समय मनुष्य अपना अगला पाँव सँभाल कर रख लेता है तब पिछले पैर को उठाता है जैसे जोंक चलते समय पहिले अगले तृण को पकड़ लेती है तब पिछले को छोड़ती है जैसे (जोंक भी ऐसा ही करती है) ऐसे यह देही जीवात्मा जिसमे अनेक प्रकार से संसकार लग रहे हैं पीछे पिछली देह दूसरे शरीर को प्रथम मां ग्रहण कर लेता है पीछे पिछली को छोड़ता है स्वप्न में मनुष्य जैसे देखे हुए और सुने हुए देह जिस में अनेक प्रकार से संसकार लग रहे हैं और मन के वश में वह मन उसी में बस देह का चिन्तन करता है और वह मनुष्य स्वप्न में वैसा नहीं देखता है और उसी भी ... अपना समझ कर ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूर के अंकु. का लेप झाँई दूर करता है
(तुला का चन्द्र) सोना चांदी सम

Friday the 28th September 1973.

रा॰ आश्विन ६ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شعبان ۳۰ جمعہ
शुक्रवार २८सितम्बर सन्१९७३ आश्विन शु॰२ सं.२०३०
घ॰ ३१।३ चित्रा २७।३४ र॰ उ. ५।२२ र॰ अ. ५।४५
फ॰ १३८१ प्र. असौज १६ बं. आश्विन ११ ने. १२ गते

ऐसे अपने आप को राजा और इन्द्रादिक के समान मानकर अभिमान करता है और जाग्रत देह की सम्पूर्ण स्मृति भूल जाता है फिर उसी संस्कार वाले मन से मनोरथ करते करते देह को भूलकर जाग्रत् में भी उसी प्रकार के मनोरथ देह को देह में देखता है और थोडी देर में कहने लगता है यह मैं हूँ यह शरीर मेरा है ऐसा मानता है और स्वप्न के देह की स्मृति कुछ भी नहीं रहती इसी प्रकार कर्मों के अधीन होकर पूर्व देह को छोड़ देता है और वैसा ही देह प्राप्त कर लेता है फल के देने वाले कर्मों से प्रेरित विकारों से भरा हुआ जो मन है सो माया रचित पञ्चमहाभूतों के बने हुये मनुष्य, पशु, पक्षी इत्यादिक जो शरीर है जिस जिसकी ओर दौड़ता है और अभिमान को बाँधता है उसी उस शरीर में जीव को संग लेकर जंम लेता है यह मन ही सब बात का करता हर्ता ठहरा तो मन को ही जन्म लेना चाहिये परंतु अकर्ता आत्मा क्यों जन्म लेता है आत्मा उस मन को यह करके मानता है कि मैं हूँ इस कारण आत्मा उस मन के साथ जन्म लेता है ॥ जैसे सूर्य चन्द्रमा आदिकों का ज्योतिर्मय पदार्थ जल के भरे घटा दि पात्रों में प्रतिबिम्ब रूप होकर पवन के वेग से कम्पाय मान प्रतीत होते हैं ऐसे ही पुरुष अपनी अविद्या रचित देह में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरम पानीका भाप गलेके भीतर लेनेसे लाभ होता है
(तुला का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 29th September 1973.

रा॰ आश्विन ७ शकः १८९५ ४ رمضان ١٣٩٣ شنبه
शनिवार २९सितम्बर सन् १९७३ आश्विन शु॰३ सं.२०३०
घ॰ ३२।१६ स्वाती ४०।२७ र॰ उ॰ ५।५२ र॰ अ॰ ५।४४
फ॰ १३८१ प्र॰ असौज १७ बं॰ आश्विन १२ ने॰ १३ गते

रमजान (रोजा) प्रारम्भ

आत्मा में देहादिक ~~को आत्मा की~~ प्रतीत होनेसे जैसे सुख है
और स्थूल देहादिक के धर्म आत्मामें दिखाई देते हैं दे
वैसे ही देहादिक में आत्मा की भ्रांति होने से प्रेमपात्र
आदि आत्मा के धर्म देहादिक में दिखाई देते हैं इसलि
इन्द्र और गर्दभादिक के तनु में प्रीति समान होनेसे मृत्यु
से बचने का प्रयत्न करना वृथा है इसलिये अपने
का कल्याण करनेवाले प्राणियों को चाहिये कि किसी पु
शत्रु भावना रक्खे क्यों कि शत्रुता करने वाले पुरुषों
दूसरे शत्रु और यम से भी भय होता है इसी लिये हे राजपु
यह तुम्हारी छोटी बहिन है और अभी बालक है दीन है
है देखो काठ की पुतली की नाई तुम्हारे आगे खड़ी
और तुम को परमेश्वर ने दीनहितकारी और स्वजन
भयहारी बनाया है यह मंगलरूप तो आपके मारने योग्य
नहीं है क्यों कि दीन को और पराधीन को मारने का बड़ा
है श्रीशुकदेवजी बोले कि हे कुरुवंशी राजा परीक्षित
ऐसे प्रिय वचन कहकर बसुदेवजी ने साम और
से समझाया तो भी आपही दुष्ट दूसरे राक्षसों का
तीसरे आकाशवाणी का भय उस में होकर कंस ने बसु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बार-बार थूकने से चेहरा पीला पड़ जाता है
(वृश्चिक का चन्द्र २८।२९) सोना चाँदी सस्ता
Sunday the 30th September 1973.
र॰ आश्विन ८ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ رمضان, ۴ اتوار
रविवार ३०सितम्बर सन् १९७३ आश्विन शु॰४ सं.२०३०
घ॰ ३४।२९ विशाखा ४४।३० र॰ उ॰ ५।५३ र॰ अ॰ ५।४२
फ॰ १३८१ प्र॰ असोज १८ बं॰ आश्विन १३ ने॰ १४ गते

श्री गणेश ४ व्रत

हठीला अपनी हठ को कभी नहीं छोड़ेगा ऐसा बिचार और देवकी की मृत्यु निकट आयी जान कर समय बिताने के लिये अपने मन में बिचार किया ।। चतुर लोगों को उचित है कि जहाँ तक अपना बल, बिद्या बुद्धि पहुँचे वहाँ तक मृत्यु दूर करने का उपाय करें जब इतने प्रयत्नों से भी मृत्यु से न बचे फिर पुरुष का कुछ दोष नहीं है इस लिये इस मृत्यु रूप कंस को देवकी के जो पुत्र होंगे उनके देने का बचन दे कर किसी प्रकार पहिले तो इस दीन देवी के प्राण बचाऊँ कदाचित कोई कहे कि पुत्र देकर देवकी
(बच्चे बचा तो नहीं सकते)
पुत्र न होगा उस समय देखा जायगा अभी तो किसी प्रकार यह जीती बचे न जानिये बालक के जन्म होने से पहिले यह दुष्ट कंस ही मर जाय तो फिर कुछ किसी बात का खटका ही न रहे कदाचित इसके पुत्र ही नहीं और जो पुत्र हो और कंस दया करके उसको न मारे तो अगर यही मेरा पुत्र कंस को मारेगा और जो यह उलटी बात न हो और कोई कहे कि तुम्हारा पुत्र बालक इस तरुण कंस को कैसे मार सकता है तो आप ही बसुदेव जी अपने बचन का समाधान करते हैं कि बिधाता की गति किसी के जानने में नहीं आती जो प्राणी मरने के योग्य हैं वे नहीं मरते हैं और जो मरने के योग्य नहीं वे मर जाते हैं जैसे बन में आग लगती है तो जो वृक्ष जलने वाले नहीं वे समीप के होते हैं वे जल जाते हैं
[illegible] जलने वाले दूर के होते हैं [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८२

कब्ज गरम पानी पीने से मिटता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 1st October 1973.

रा· आश्विन ९ शकः १८९५ ४ | ۱۳۹۳ رمضان ۳ شوال ۱۳۹۳

सोमवार १ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु· ५ सं.२०३०
घ· ३८।१२ अनुराधा ४९।४० र· उ· ५।२३ र· अ· ५।४२
फ. १३८१ प्र. असौज १९ बं. आश्विन १४ ने. १५ गते

उपाङ्ग ललिता ५ व्रत

जलजाते हैं श्री शुकदेवजी बोले कि हे राजा परीक्षित जहाँ तक अपनी बुद्धि पहुँची वहाँ तक बसुदेवजीनें विचार करके बडे प्यारसे कंसका आदर सतकार किया कंसको निर्दयता से दिखाने के लिये बसुदेवजी लोक रीतिके सदृस्य प्रफुल्लित मुखकमल से महाँ क्रूर निर्लज कंस के सामने बैठे मुशकरा कर बोले परन्तु मन तो अत्यन्त दुःखी था बसुदेवजी बोले कि हे सौम्य जो भय आपके चित्त में आकाशवाणी ने उत्पन्न किया है वह भय तुम किञ्चित मात्र भी मत करो क्योंकि देवकी से आपको कुछ भय ही नहीं हैं इस के पुत्र से कुछ भय है सो वह भय मैं आपका दूर किये देता हूँ कि पुत्र इसके होगा उसको मैं उसी समय आप को समर्पण कर दूँगा ||

इस बात पर एक मनोहर दृष्टान्त है- एक सेठजी मंदिर में बैठे हनुमानजी को पूजा कर रहे थे उसी नगर में आग लगी और घरों को फूँकती फाँकती सेठजी के निकट पहुँच गयी तब तो सबने सेठजी से कहा कि आग आपके घर के समीप आ गई है पूजा छोड़कर चलो कुएँ से पानी के दस बीस घड़े भर कर फेंके जब घर में आग आ गई तो पानी कहाँ सेठजी बोले कि [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालक मिट्टी में खेलने से ताकतवर होता है
(धनु का चन्द्र २२।३२) सोना चाँदी महँगा
Tuesday the 2nd October 1973.
रा॰ आश्विन १० शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رمضان ۱۰ شنبه
मंगलवार २ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰ ६ सं॰ २०३०
घ॰ ४२।२८ ज्येष्ठा २२।३२ र॰ उ॰ ६।२४ र॰ अ॰ ६।११
फ॰ १३८१ प्र॰ असौज २० बं॰ आश्विन १५ ने॰ १६ गते

गान्धी जयन्ती

सकता हमको कुछ प्रयोजन नहीं जिसका घर होगा वह आप बुझा लेगा जब उसका नाम पवन पुत्र तो क्या अपने पिता को नहीं समझा सकता जिसके लिये हम बरसों से तन मन लगा रहे हैं क्या वह एक घड़ी को हमारा काम नहीं कर सकता मुझको पूर्ण विश्वास है कि वह मेरा कार्य सिद्ध करेगा — कबित्त

लंक को जरायो और सीता को बचाय दियो, आच नहीं आयी विभीषन के मकान पे
लागते ही शक्ति के लखन गिरे पृथ्वी पे, औषधि को भेजो राम बीर बलवान को
भलो नासजीवन तो पर्वत उठाल्याये, लखन जियायो सिर नायो भगवान को
दुष्टन के भक्षक रक्षक हरि भक्त के, मोको तो भरोसो उन बीर हनुमान को ॥

उसी समय पुरवाई पवन [illegible] पछाहियाँ पवन हो गई और सेठ जी का घर छोड़ कर पवन पीछे को लौटी और सैकड़ों घर फूँक दिये देखो किस को आशा थी और कौन कौन से घर जल गये ऐसे ही प्राणियों के जन्म मरण का कारण भी बिचार में नहीं आता ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजन् बसुदेव जी के बचनों को सत्य मान कर कंस ने अपनी बहिन को मारने से छोड़ दिया और बसुदेव जी भी प्रसन्न हो कंस की बड़ाई कर के बरात समेत देवकी को लेकर अपने घर आये सब प्राणियों के आत्मा बासुदेव भगवान को पूजने वाली देवकी ने समय पाकर [illegible] एक एक वर्ष के उपरान्त उत्पन्न कि[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बांये करवट सोने से भोजन हजम होता है
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Wednesday the 3rd October 1973.

रा०आश्विन ११ शक:१८९५ ४ | چہار شنبہ ٥ رمضان ١٣٩٣
बुधवार ३अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु० ७ सं. २०३०
घ० ४७।४१ मूल ६०।० र० उ. ५।५४ र० अ. ५।४०
फ० १३८१ प्र. असौज २१ बं. आश्विन १६ ने. १७ गते

सरस्वती आह्वाहन

बड़े कष्ट से कंस के पास ले गये क्योंकि मिथ्या बोलने से बसुदेव जी बहुत डरते थे अपने बचनों का निर्वाह करने वाले पुरुष के ऐसी कौन सी बस्तु है जिसका सहन नहीं कर सकते देखो बसुदेव जी ने अपने पुत्र को अपने हाथ से मृत्यु के हाथ मे दे दिया एक परमेश्वर के सिवाय कोई पदार्थ सत्य नहीं है ऐसे समझने वाले पुरुषों को किसी बात की अभिलाषा नहीं रहती इसलिये बसुदेव जी ने पुत्र के लाड प्यार पहिले ही त्याग दिया क्योंकि बिद्वान पुरुषों को सिवाय सत्य के और किसी बस्तु की अपेक्षा नहीं रहती और बसुदेव यह भी नहीं समझा था कि मै पुत्र को आप ले जाऊँगा तो दया करके न मारेगा यह बात बसुदेव जी के मन में सैकड़ो कोसो तक नहीं थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी मचलने पर थोड़ा गरम पानी पीना चाहिये
(धनु का चन्द्र) सोना चांदी महंगा

Thursday the 4th October 1973.

रा॰आश्विन १२ शकः १८९५ ४ ।٣١٣ رمضان, ۱ پنجشنبه
गुरुवार ४ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰८ सं.२०३०
घ॰ ४२।२४ मूल २।१ र॰ उ. ६।२५ र॰ अ. ६।३९
फ. १३८१ प्र. असौज २२ वं. आश्विन १७ ने. १८ गते

दुर्गाष्टमी ८, अन्नपूर्णा परिक्रमा, महाष्टमी ८, ओली प्रा. जैन

ॐ :-
एक स्यार था और एक सियारिनी जब
सियारिनी का प्रसव काल होने
का आया तब सियारिनी अपने पति से
कहती है कि हे पतिदेव मेरे भोजन
का प्रबन्ध करो क्योंकि मैं गर्भ के भार
से कहीं नहीं जा सकती स्यार पत्नी की
बात को मानकर जब उसके लिये
मांस लेने के लिये जंगल में जाता
है तो धीरे धीरे कुरुक्षेत्र में पहुंच
जाता है। वहां पर एक मुर्दा मरा हुआ पड़ा
था जब उस मुर्दे से वह स्यार मांस लेने
लगता है तो उसी के पास एक आदमी
[illegible] था वह उससे कहने लगा कि ये क्या करते हो
स्यार [illegible] मेरी पत्नी के प्रसव के कारण कहीं जा [illegible]
[illegible] वह बड़ी भूखी है इस लिये मैं उसके लाने
[illegible] हूँ उस स्यार से आदमी ने कहा कि इसका
[illegible] नहीं है क्योंकि इसका कोई अंग पवित्र
[illegible] चल कर तीर्थ यात्रा नहीं [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८६

काला तिल उड़द दही खाने से रजोधर्म होता है
(मकर का चन्द्र २४।३) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 5th October 1973.
रा० आश्विन १३ शाकः १८९५ ४ १३९३ شعبان ٧
शुक्रवार ५ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु० ९ सं० २०३०
घ० २७।५१ पू० षा० ८।३१ र० उ० ५।५५ र० अ० ५।३८
फ० १३८१ प्र० असौज २२ वं० आश्विन १८ ने० १९ गते

महानवमी ९

इससे अपवित्र हैं हाथ मेन लगा तो कहा कि ये कभी अपने हाथ से शुभ कर्म नहीं किया दान नहीं किया कान कभी भगवान की कथा साधू महात्मा का सत्संग नहीं श्रवण कि आखें जो है वह भगवान की मुर्ती का दर्शन नहीं किया पेट है वह मस्त मछ खाने से अपवित्र है हृदय इसका हर वक्त साफ नहीं रहता मस्तक इस का ठीक नहीं मलि है दूसरे का भार अपने सिर पर कभी नहीं लिया इस से शरीर अंग भी अपवित्र है ॥ और बोला कि भाई भूख मिटाने का कुछ उपाय बताइये आदमी बोला इस उपाय मै बताता हूँ सुन आज के छवें रोज यहाँ कौरव पाण्डवों मे भीषण युद्ध होगा और बड़े बड़े योद्धा वीर मारे जायेगे तो आकर यहीं से मन चाहा माँ लेजाना ॥

दंडी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
पो० वाराणसी (काशी) उ० प्र०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोजर कान में जाने पर नमक का पानी कान में डाले
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता।

Saturday the 6th October 1973.

रा. आश्विन १४ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رمضان ٨ شنبه
शनिवार ६ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु. १० सं. २०३०
घ. ६०|० उ. षा. १४|४० र. उ. ५|५५ र. अ. ५|३७
फ. १३८१ प्र. असौज २४ बं. आश्विन १९ ने. २० गते

विजया १० दशमी, सरस्वती विसर्जन

एकादशी महात्म्य और व्रत-विधि

नास्ति गङ्गासमं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरुः।
नास्ति विष्णुसमं देवं तपो नानशनात्परम्॥
नास्ति क्षमासमा माता नास्ति कीर्तिसमं धनम्।
नास्ति ज्ञानसमो लाभो न च धर्मसमः पिता॥
न विवेकसमो बन्धुर्नैकादश्याः परं व्रतम्।

गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं है। माता के समान कोई गुरु नहीं है भगवान् विष्णु के समान कोई देव नहीं है और उपवास से बढ़ कर कोई तप नहीं है क्षमा के समान कोई माता नहीं है कीर्ति के समान कोई धन नहीं है विवेक के समान कोई बन्धु नहीं है ज्ञान के समान कोई लाभ नहीं है धर्म के समान कोई पिता नहीं है और एकादशी से बढ़ कर कोई व्रत [illegible] इस सम्बन्ध में [illegible] का कथन है ना. पूर्व. २३५.-३ [illegible] लव के एक नीतिकार सुन्दर बाल [illegible] उसका नाम था भद्रशील भद्रशील [illegible] कोन अवस्था हुई तब [illegible] बालक [illegible] [illegible] पूजा किया करता [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोजर के विष पर दिया का जला हुआ तेल लगावे
(कुम्भ का चन्द्र ५२।२२) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 7th October 1973.

रा॰आश्विन १५ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ رمضان ١ اتوار شنبه

रविवार ७ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰ १० सं.२०३०

घ॰ २।१२ श्रवण २०।८ र॰ उ॰ ५।५६ र॰ अ॰ ५।३६

फ॰ १३८१ प्र॰ असौज २५ वं॰ आश्विन २० ने॰ २१ गते

विजया दशमी (बंगाल) भरत मिलाप

और एकादशी व्रत करता था और अपने मित्रों को स
उपदेश भी देता था भद्रशील के सदुपदेश से प्रभावि
त होकर उसके मित्र बालक लक्ष्मी पति श्री वि
बिष्णु की मूर्ति बनाकर पुष्पादि से पूजा करते ने
भाग्यवान बालक भद्रशील के संग से श्री भगवान के
स्मरण चिन्तन में लग गये नवजलधर श्याम शंख
चक्र गदा पद्म धारी बिष्णु के चरणों में मन ही मन
प्रणाम करके विश्व कल्याण की कामना करता प्रभु
के ध्यान में तल्लीन हो जाता और एकादशी व्रत का आ
संकल्प करके करुण मूर्ति प्रभु को समर्पित कर देता है
बेटा भद्रशील अपने शिशु के अलौकिक आचरण से
कर अत्यंत आश्चर्य से एक दिन महामुनि गालव ने उस से
यह दुर्लभ सतसंग की प्राप्ति होने पर भी
... से ही मनुष्यों में भगवान ...
... किन्तु तुम्हारी बिष्णु भक्ति ...
... एवं सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति ...
... विस्मित होता है तुम्हें इस प्रकार
... में बुद्धि किस प्रकार ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाव पर बैंगन की पत्ती पीसकर लगावे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Monday the 8th October 1973.
रा॰आश्विन १६ शकः१८९५ ۱۳۹۳ رمضان ۱۰ دوشنبہ
सोमवार ८ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰११ सं.२०३०
घ॰ ५।२६ धनिष्ठा २४।२६ र॰ उ. ५।२६ र॰ अ. ५।२५
फ॰ १३८१ प्र. असौज २६ बं. आश्विन २१ ने. २२ गते

पापांकुशा ११ एकादशी व्रत सबका

है पिताजी जातिस्मर होने के कारण मुझे पूर्वजन्म का
स्मरण है अत्यन्त बिनय पूर्वक बालक भद्रशील ने अपने
पिता मुनिवर गालव को बताया पूर्वजन्म मे मै श्री दत्ता
त्रेय द्वारा दीक्षित चन्द्रबंशोत्पन्न धर्मकीर्ति नामक
नरेश था नौ सहस्र वर्ष तक शासन एवं पुण्य कर्म
करने पर भी मैने कुसंग मे पड़कर पतिव्रतामय एवं मंगल
मय वैदिक मार्ग को त्याग दिया और यज्ञो का विध्वंस
किया मेरा अनुकरण कर प्रजा भी पाप कर्म मे
प्रवित्त हो गई पापाचार परायण एवं दुरव्यसनों मे
आसक्त मै एक बार आखेट के लिये अरण्य मे प्रविष्ट
हुआ प्रचण्ड गर्मी थी मेरे सैनिक दूर छूट गये और मै
क्षुधा एवं तृषा से पुण्यतोया नर्मदा के तट पर पहुंचा
मैने नर्मदा मे स्नान किया क्षुधा से मै कष्ट पा रहा था
पर दिन भगवान अस्ताचल सिधारे और मै वहीं रह गया।
... एकादशी व्रत करने वाले नर्मदा तट निवासी
... मै भी उनके साथ भगवन्नाम कीर्तन सुनते हुए
... जागरण समाप्त होते ही मेरी मृत्यु हो
... के अकस्मात् नीय कष्ट कर मार्ग से
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाव पर जङ्गली गोहरे की राख तेलमें फेटकर लगावे
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Tuesday the 9th Ocober 1973.

रा॰आश्विन १७ शकः१८९५ ۱۳۹۳ رمضان، ۱۱ سہ شنبہ
मंगल. ९ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰ १२ सं.२०३०
घ॰ ७।५३ शतभिषा २७।२७ र॰ उ. ५।२७ र॰ अ. ५।३४
फ. १३८१ प्र. असौज २७ बं. आश्विन २२ ने. २३ गते

भौम प्रदोष १२ व्रत

पूछने पर चित्रगुप्त ने उत्तर दिया यद्यपि इसने जीवन मे अत्यधिक पापाचरण किया है किन्तु पवित्र एकादशी के दिन नर्मदा के तट पर निराहार रहकर जागरण करते हुए श्री भगवन्नाम कीर्तन सुनने से इसके सारे पाप ध्वंस हो गये है मै चकित था काँपते हुये यमराज ने मुझे सास्टाङ्ग प्रणाम किया और अपने दूतों से कहा दूतो जो मानव विष्णु की पूजा मे तत्पर संयमी कर्तव्य एकादशी व्रत परायण जितेन्द्रिय विश्वहितैषी जो नारायण अच्युत जनार्दन कृष्ण विष्णु कमलाकान्त शिव शंकर इत्यादि नामों का नित्य कीर्तन करते है उन्हे दूर से ही त्याग दिया करो उन पर मेरा शासन नहीं चलता यमराज की बातें सुनकर मै निन्दित कर्मों के लिये पश्चात्ताप करने लगा पश्चात्ताप एवं श्रेष्ठ धर्म का श्रवण ... सारे पाप वहीं नष्ट हो गये उसके बा... के प्रभाव से इन्द्रलोक मे पहुँचा वहाँ ... सम्मान करते थे दीर्घकाल तक ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनारके छालकी बुद्दी इन्द्रीमें लगानेसे गर्मी अच्छी होतीहै
(मीन का चन्द्र १४।३०) सोना चांदी सम
Wednesday the 10th October 1973.
रा॰आश्विन १८ शकः१८९५४ ۱۳۹۳ رمضان ۱۲ ...
बुधवार १०अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु॰१३ सं.२०३०
घ॰ ८।२९ पू॰ भा॰ ३०।१ र॰ उ॰ ५।२७ र॰ अ॰ ५।३३
फ॰ १३८१ प्र॰ असौज २८ बं॰ आश्विन २३ ने॰ २४ गते

लिया है पहिले विवशता पूर्वक व्रत करने से मुझे जब वैसा फल प्राप्त हुआ तब भक्ति पूर्वक एकादशी व्रत करने पर क्या दुर्लभ हो सकता है अब मैं एकादशी व्रत का पालन तथा प्रति दिन श्री विष्णु की पूजा करूँगा इस नश्वर जीवन में भगवत्प्राप्ति हो मेरी परमाकाङ्क्षा है। बेटा मेरा जन्म सफल एवं मेरा वंश पवित्र हो गया अपने नाति समर भक्त पुत्र भद्रशील की बातों से अत्यन्त प्रसन्न होकर मुनिवर गालवने कहा क्योंकि तुम्हारे जैसे विष्णु भक्त पुरुषने मेरे घर में जन्म लिया है इतना कह कर विप्रवर गालवने अपने प्राण प्रिय पुत्र भद्रशील को श्री भगवान की पूजा की विस्तृत विधि समझा दी। एकादशीव्रत की बड़ी महिमा है यह व्रत भुक्ति मुक्ति तथा सब अभीष्ट प्रदान करने वाला है पद्मपुराण के वचन है॥

वर्णानामाश्रमाणां च स्त्रीणां चैव वरवर्णिनि।
मुपवासस्तु कर्तव्यो नात्र संशयः॥
यदि वर्णो ब्रह्मचर्यादि चारो आश्रमों
लिये भी एकादशी उपवास अवश्य
...यच वासंयः सदा तं कुरुते नरः।
...[illegible] पक्षे देवी ...: स्थिता:

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्मी के घाव को भङ्गरे के रस से धोना चाहिये
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Thursday the 11th October 1973.

रा०आश्विन १९ शकः१८९५ ١٣٩٣ رمضان ، ١٣ پنجشنبہ
गुरुवार ११ अक्टूबर सन् १९७३ आश्विन शु० १४ सं.२०३०
घ० ७।३२ ऊ. भा. ३०।५० र० उ. ६।५८ र० अ. ६।३२
फ० १३८१ प्र. असौज २९ बं. आश्विन २४ ने. २५ गते

कोजागरी १५ व्रत, शरद्पूर्णिमा १५

जो मनुष्य सदा एकादशी व्रत का उपवास करता है
वह मरने पर उस परमधाम को जाता है जहाँ श्री
नित्य निवास करते हैं ।। सर्व समर्थ सर्वान्तर्या
श्री विष्णु को प्रसन्न करने के लिये यह एकादशी
व्रत अनिवार्य बतलाया गया है । पद्म पुराण में
।। वराहपुराण में ।।
यथा विष्णुः शिवश्चैव तथैवैकादशी स्मृता
हौ पुत्रवान गृहस्थ केवल शुक्ल एकादशी को
और वानप्रस्थ सन्यासी तथा विधवा दोनों व्रत
तो उत्तम होता है ।।
राजा रुक्माङ्गद एकादशी व्रत से प्रभाव से भूमण्
का राज्य भोगकर पुरवासियों सहित बैकुण्ठ लो
को पधारे थे इस महा महिमामय व्रत के प्राचरण से
महाबर अम्बरीष को कहीं भी प्रतिहत न होने वा
ब्रह्मशाप भी स्पर्श नहीं कर सका कुबेर
उत्पन्न कुष्ठ हेम माली का भी सा
के प्रभाव से नष्ट हो गया इस
व्रत के द्वारा महीजित नरेस को
... स्वर्ग बैकु...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८३

आंवला का चूर्ण नीबू लगाने से बाल काले होते हैं
(मेष का चन्द्र ३०।२८) सोना चांदी सम

Friday the 12th October 1973.

रा॰आश्विन २० शकः १८९५ ४ [illegible]
शुक्रवार १२अक्टूबर सन् १९७३आश्विन शु॰१५ सं.२०३०
घ॰ ६।५२ रेवती ३०।२८ र॰ उ. ६।२८ र॰ अ. ६।३१
फ॰ १२८१ म॰ असौज ३० वं. आश्विन २५ ने. २६ गते

स्नानदान की १५,ओली समाप्त(जैन),वाल्मीकि जयन्ती

इस व्रत के प्रभाव से राजा हरिश्चन्द्र पृथ्वी का राज्य भोग कर अन्त मे पुरवासियोंसहित श्री हरि के सुखद धाम में पहुंच गये सत्ययुग में राजा मुचुकुन्द का दामाद शोभन भारतवर्ष में एकादशी का उपवास करके उस के पुण्य प्रभाव से देवताओं के साथ मन्दराचल पर चला गया अन्त मे परम सती श्री राधा ने कहा गोपियो एकादशी को सम्पूर्ण तिथियों की परमेश्वरी समझो उसके समान कोई अन्य तिथि नहीं है ॥

मुक्ताभिमानी मुक्तो हि बद्धो बद्धाभिमान्यपि ।
किंवदंतीह सत्येयं या मतिः सा गतिर्भवेत ॥
बन्ध और मोक्ष – जिस पुरुष को गुरु की कृपा से यह निश्चय हो जाता है कि मै मुक्त रूप हूं वही मुक्त है और जिसके ऊपर सद्गुरु की कृपा नहीं होती है और वह यह जानता है कि मैं अल्पज्ञ जीव और संसार बंधन में बंधा हुआ हूं वही बद्ध है क्योंकि बद्ध और मोक्ष अभिमान से ही उत्पन्न होते हैं अर्थात् मरण समय में जैसा अभिमान होता है वैसी ही गति होती है यह बात प्रति. सर्व [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६४

पका अनार और मट्ठा कमर को पुष्ट करता है
(मेष का चन्द्र) सोना चांदी महंगा
Saturday the 13th October 1973.
रा० आश्विन २१ शकः१८९५ ४ ١٣٩٣ رمضان 10 شنبه
शनिवार १३अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.१ सं २०३०
घ. ४।१६ अश्विनी २८।१९ र. उ. ५।२९ र. अ. ५।३०
फ. १३८१ प्र. कत्तक १ बं. आश्विन २६ ने. २७ गते

कि, "मरणे या मतिः सा गतिः" सोऽद्गीत में भी कहा है कि, "यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः॥"

इसका अभिप्राय यह है कि, श्रीकृष्णजी उपदेश करते हैं कि हे अर्जुन अन्त समय में जिस जिस को स्मरण करता हुआ पुरुष शरीर को त्यागता है उस उस भावना से तिस तिस गति को ही प्राप्त है श्रुति में भी कहा है कि, "तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च" इस का भी यही अभिप्राय है अन्ततःगत्या मोक्ष अभिमान से होते हैं॥ स्मरात्मक [illegible]

(भस्म धारण की विधि)

"अग्नि रिति भस्म" इस मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे, 'मान स्तोमे' कह कर उसे धारण करे, जल से गीला करके 'त्र्यायुषं' मंत्र से सिर पर, ललाट, छाती, कन्धों पर 'त्र्यायुषं' 'त्र्यंबक' इन मन्त्रों से तीन रेखा करे। यह शाम्भव व्रत वेदों में वेदवासियों को बतलाया गया है क्यों कि इसके से फिर से जन्म नहीं लेना पड़ता। सनतकुमार ने प्रमाण पर बतलाया कि त्रिपुण्ड धारण के लिये तीन प्रकार की रेखा मध्य ललाट तक, नेत्रों तक भौंहों तक करे। उसकी प्रथम रेखा तीन [illegible] महादेव [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कद्दू का तेल सर दर्द को दूर करता है
(वृष का चन्द्र ४०।२६) सोना चाँदी सम
Sunday the 14th October 1973.
रा०आश्विन २२ शाकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ رمضان, ۱۷ یک_شنبه
रविवार १४ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ. २ सं.२०३०
घ० ५८।३७ भरणी २६।४२ र. उ. ६।१०. र. अ. ५।२९
फ. १३८१ प्र. कतक २ बं. आश्विन २७ ने. २८ गते

श्री गणेशायनमः॥ काशी मोक्ष निर्णय

काशी-मोक्ष-विचार

श्रीशंकर-पद-पद्म को, वन्दि सदा सुख-कन्द।
"काशी-मोक्ष-बिचार" यह, रचौं त्यागि जगद्वन्द ॥

शिव गीता—

गर्भजन्मजरामृत्युसंसार-भवसागरात् ।
तारयामि यतो भक्तं तस्मात्तारोऽहमीरितः ॥

अर्थ- शिवजी कहते हैं कि गर्भवास, जन्म, जरा और मृत्युरूपी संसार सागर से मैं भक्तों को तार देता हूँ इस लिये मेरा नाम तारक कहा गया है॥

अकारः प्रथमाक्षरो भवति, उकारो द्वितीयाक्षरो भवति, मकारस्तृतीयाक्षरो भवति, अर्धमात्रश्चतुर्थाक्षरो भवति बिन्दुः पंचाक्षरो भवति, नादः षष्टाक्षरो भवति, तदेव तारकं, ब्रह्म त्वं विद्धि ।

भस्म जाबालोपनिषद् —

त्रिशूलगां काशीमधिश्रित्य त्यक्त्वा सर्वेऽपि मय्येव संविशन्ति । एष एवादेशः एष एव उपदेशः । एष एव परमो धर्मः । अर्थ —भगवान् शंकर के त्रिशूल पर स्थित काशी पुरी में रहकर प्राण त्यागने पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२९८

इन्द्रायनकी जड़का लेप करने से स्वप्नदोष नष्ट होता है
(बुध का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Monday the 15th October 1973.

रा०आश्विन २३ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ رمضان ١٧ دوشنبه

सोमवार १५अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.४ सं.२०३०

घ. ५०।४८ कृत्तिका २३।२६ र. उ. ६।० र. अ. ५।२८

फ. १३८१ प्र. कतक ३ बं. आश्विन २८ ने. २९ गते

करवा चौथ ४, करक चतुर्थी ४, श्रीगणेश ४ व्रत

जीव मुक्त को ही पाता है। मेरा यही आदेश, यही उप-
श और यही परम धर्म है।

जाबालोपनिषद —

अत्र हि जन्तोः प्राणेषूत्क्रममाणेषु। रुद्रस्तारकं
ब्रह्म व्याचष्टे येनासाव मृतीभूत्वा मोक्षीभवति
तस्माद् विमुक्तमेव निषेवेत अविमुक्तं न विमुञ्चेत्
अर्थ— काशी में प्राण त्यागने के पहिले समय दुःख
को नाश करने वाले रुद्र भगवान 'तारक-मंत्र'
देते हैं। जिस मंत्र के प्रभाव से जीव जन्म मरण
रहित हो जाता है। अतः काशी-सेवन अवश्य करे
इस अविमुक्तपुरी का निवास कभी भी न छोड़े॥
रुद्रः-रु दुः खं द्रावयतीति रुद्रः, रुद्रमित्यप्युच्यते। तस्मा
च्छिवः परम कारणम्॥

प्राणाग्नि होत्रो पनिषद —

नारारणस्यां मृतो वापि इदं वा ब्रह्म यः पठेत्।
एकेन जन्मना जन्तुर्मोक्षं च प्राप्नुयादिति॥
अर्थ जो प्राणी श्री काशीजी में देह-त्याग करता अथवा
अन्त में तारकब्रह्म के मंत्र को पढ़ता है उसे एक
जन्म में मुक्ति [illegible] होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामला पर कड़वी तुम्बी का चूर्ण चावल भर नाश ल
(मिथुन का चन्द्र ४७|२७) सोना चाँदी महंगा

Tuesday the 16th October 1973.

रा॰आश्विन २४ शकः१८९५ ४ ۱۳۹۳ رمضان، ۱۸ سیشنبہ
मंगलवार १६अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ॰ ५ सं.२०३०
घ॰ ४५|४ रोहिणी ११|५८ र॰ उ. ६|० र॰ अ. ५|२७
फ़॰ १३८१ प्र॰ कतक ४ बुं. आश्विन २९ ने. ३० गते

मुक्ति हेतु कलिकाल में कठिन योग अभ्यास। सुखो साधन एक यहै, कीजै काशी बास॥

मुक्तिकोपनिषद् —

यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे स महेश्वरः।
जन्तोर्दक्षिणकर्णे तु मत्तारं समुपादिशत ॥
काश्यां तु ब्रह्मनालेऽस्मिन् मृतो मत्तारमाप्नुयात्।
पुनरावृत्तिरहितां मुक्तिं प्राप्नोति मानवः ॥

अर्थ — श्रीकाशीजी, विशेष करके ब्रह्मनाल के बीच में जो मरता है, वह मनुष्य जन्म मरण से रहित होकर मुक्त हो जाता है ॥

महाभारत अनुशासन पर्व —

कीटपक्षिपतङ्गानां तिरश्चामपि केशव।
महादेव प्रपन्नानां न भयं विद्यते क्वचित ॥

अर्थ — कीट, पक्षी, पतंग आदि तिर्यग्योनि के प्राणी भी यदि महादेवजी की शरण लेते हैं तो उनको जन्म मरण का भय नहीं रह जाता ॥

आत्म पुराण —

कृमि कीट पतङ्गो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः।
मृतश्चतुर्विधो जन्तुस्त्रिनेत्रत्व मुपैति हि ॥

अर्थ — काशी में मरने से कृमि, कीट, पतंग तथा विद्वान ब्राह्मण ये चारों प्रकार के प्राणी भगवान त्रिलोचन (शिवत्व) शिवत्व को प्राप्त होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर होने पर सूरन खाना चाहिये
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Wednesday the 17th October 1973.

रा०आश्विन २५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ رمضان، ۱۹ شنبہ
बुधवार १७ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.६ सं. २०३०
घ. ३९।८ मृगशिरा १९।५५ र. उ. ६।१ र. अ. ५।२६
फ. १३८१ प्र. कत्तक ५ बं. आश्विन ३० ने. १ गते

श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध —

क्षेत्राणाँ चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा
अर्थ— सूत जी ऋषियों से कहते हैं कि अनेक क्षेत्र हैं, पर उनमें काशी ही एक उत्तम क्षेत्र है ॥
दर्शनाद्देवदेवस्य ब्रह्महत्या प्रणश्यति ।
प्राणानुत्सृज्य तत्रैव मोक्षं प्राप्नोति मानवः ॥
अर्थ— देवों के देव महादेवजी के दर्शन से ब्रह्महत्या का भी पाप छूट जाता और काशी क्षेत्र में प्राणत्याग करने से मनुष्य मोक्षपद पाता है ॥

श्रीमत्स्वामी शंकराचार्यजी —

काशी धन्यतमा विमुक्तनगरी सालंकृता गंगया
तत्रेयं मणिकर्णिका सुखकरी मुक्तिर्हि तत्किंकरी
अर्थ— काशी जी धन्यतमा अर्थात् अत्यन्त पुण्य रूप नगरी है, जहाँ गंगाजी शोभायमान हैं। उसमें भी मणिकर्णिका उत्तम सुख देनेवाली है क्योंकि मुक्ति उसकी दासी है ॥

लिंगपुराण —

काश्यॉं यो वै मृतश्चैव तस्य जन्म पुनर्नहि ।
अर्थ— काशी में मरने वाले प्राणी फिर संसार में जन्म नहीं लेते क्योंकि वे सायुज्य मुक्ति पा जाते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टट्टी होते समय बायें पैर पर जोर देके बैठने से अजीर्ण नहीं होता
(कर्क का चन्द्र ४३।३८) सोना चांदी सस्ता

Thursday the 18th October 1973.

रा॰आश्विन २६ शकः१८९५४ ۱۳۹۳ رمضان، ۲۰ [illegible]
गुरुवार १८ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.७ सं.२०३०
घ. ३३।५ आर्द्रा ११।४२ र. उ. ६।१ र. अ. ५।२५
फ. १३८१ म. कतक ६ बं. कार्तिक १ ने. २ गते

अहोई अष्टमी ८ व्रत

शिव रहस्य—

जले स्थलेऽन्तरिक्षे वा यत्र कुत्रापि वा मृताः।
तारकं ज्ञानमासाद्य कैवल्यं पदभागिनः॥

अर्थ—श्री काशी जी में पृथ्वी, जल, आकाश आदि किसी जगह भी यदि मृत्यु हो तो वह प्राणी भगवान शिवजी के तारक मन्त्रोपदेश द्वारा मोक्षपद का भागी होता है॥

स्कन्द पुराण—

असी वरुणयोर्मध्ये पञ्चक्रोशं महत्तरम्।
अमरा मृत्युमिच्छन्ति का कथा त्वितरे जनाः॥

अर्थः—अस्सी और बरुणा के बीच में पञ्चकोश (काशी क्षेत्र) अतिशय श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें देवता लोग भी जन्म लेकर मृत्यु चाहते हैं। तब इतर मनुष्यों की कथा ही क्या है।

काशी खण्ड—

अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशी [illegible] प्राप्तिकराणि च।
काशीं प्राप्य विमुच्यन्ते नान्यथा तीर्थकोटिभिः॥
कीटाः पतङ्गा मशकाश्च वृक्षा जले
स्थले ये विचरन्ति जीवाः।
माण्डूक मत्स्याः कृमयोऽपि काश्यां
त्यक्त्वा शरीरं शिवमाप्नुवन्ति॥ —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

300

राधाजयन्ती ८, शहादते हजरत अली

अर्थ—अन्यान्य मुक्ति क्षेत्र केवल काशी को प्राप्त कराते हैं परन्तु काशी को पाकर प्राणी मुक्त होजाते हैं अर्थात् अन्य करोड़ों तीर्थों से बड़ी यह काशीपुरी है कीट, पतङ्ग, मच्छड़ बृक्ष जलचर औ थलचर आदि सभी प्राणी यहाँ अपने शरीर को छोड़कर कल्याणपद को प्राप्त होते हैं ॥

येनैक जन्मना मुक्तिर्यस्मात् करतले स्थिता ।
अनेकजन्म संसारबन्धनिर्मोक्षकारिणी ॥

अर्थ— श्रीकाशीजी में एक ही जन्म में मुक्त मुट्ठी में आजाती है क्योंकि यह अनेक बार जन्म देने वाले संसार बन्धन की नाशकारिणी है ॥

वायवीय संहिता —

मुक्तेश्च प्रापकं ह्येतच्चतुष्टय मुदाहृतम् ।
शिवार्चनं रुद्रजप उपोष्यंच दिनत्रयम् ।
वाराणस्यां च मरणं मुक्तिरेषा चतुर्विधा ॥

अर्थ—मुक्ति को देने वाले चार साधन हैं जैसे =(१) शिव पूजन (२) रुद्रजाप (३) उपवास और (४) काशी जी में शरीर त्याग ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुत्रचिच्च शुभं वर्धेत् कुत्र चित्पाप संक्षयः ।
सर्वेषां कर्मणां नाशो नास्ति काशीपुरीं विना ।।

अर्थ — कोई क्षेत्र पुण्य को बढ़ाता कोई पापों का नाश करता परन्तु काशीवास समग्र कर्मों का नाश करने वाला है । अर्थात् मुक्ति देने वाली केवल श्री काशी पुरी ही है ।।

शिवपुराण —

सर्वे वर्णा आश्रमाश्च बालयौवनवार्द्धकाः ।
अस्यां पुर्यां मृताश्चेत्स्युर्मुक्ता एव न संशयः ।।

अर्थ — सब और वर्ण आश्रम वाले बालक, बृद्ध तथा युवावस्था वाले प्राणी काशीजी में शरीर त्याग करने से मुक्त होते हैं । इसमें कोई संशय नहीं है ।।

मत्स्यपुराण —

एक एव प्रभावोऽस्ति क्षेत्रस्य परमेश्वरि ।
एकेन जन्मना देवि मोक्षं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।।

अर्थ — इस (काशीजी) की सब से बड़ी महिमा यह है कि यहाँ एक ही जन्म में जीव उत्तम मोक्ष पद को प्राप्त कर लेता है ।।

नारदपुराण —

योजनानां शतस्थोऽपि यो विमुक्तं स्मरेद्यदि ।
बहुपातकपूर्णोऽपि स पापैर्न प्रबाध्यते ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैर धोनेके पहले सिर धोनेसे दिमाग को फायदा होता है
(सिंह का चन्द्र ०।१०) सोना चांदी सम

Sunday the 21st October 1973.

रा॰आश्विन २९ शकः१८९५ ४ ایک شنبہ ۲۳ رمضان ۱۳۹۳
रविवार२१ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ. १० सं.२०३०
घ. १६।२८ श्लेषा जडें।१० र. उ. ६।३ र. अ. ५।२३
फ. १३८१ प्र. कतक ९ वं. कार्तिक ४ ने. ५ गते

अर्थ—यदि एक सौ योजन पर स्थित रहकर भी श्रीकाशीजी का स्मरण करे तो बहुत पाप कर्म पूर्ण होने पर भी वह प्राणी पापों से रहित हो जाता है।

कूर्म पुराण —

यत्र साक्षान्महादेवो देहान्ते स्वयमीश्वरः।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म तदेवाति विमुक्तिदम्॥

अर्थ — श्री काशीजी में साक्षात् शंकरजी जीव को मरण समय में तारकब्रह्म का उपदेश देते हैं। यह वही मोक्ष दायिनी काशीपुरी है॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण —

अविमुक्तं समासाद्य न त्यजेन्मोक्षकामुकः।
क्षेत्रन्यासं दृढं कृत्वा वसेद्धर्म परः सदा॥

अर्थ — अविमुक्त काशी क्षेत्र को पाकर मुक्ति की इच्छा रखनेवाला पुरुष क्षेत्र संन्यास को दृढ़ करके धर्मपरायण होकर काशीवास करे॥

पद्म पुराण —

तीर्थान्तराणि क्षेत्राणि विष्णुभक्तिश्च नारद।
अन्तःकरण संशुद्धिं जनयन्ति न संशयः॥
वाराणस्यपि देवर्षे तादृश्येव परन्तु सा।
[illegible]॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातःकाल हरी घास पर चलने से आयु बढ़ती है
(सिंह का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता
Monday the 22nd October 1973.
रा॰ आश्विन ३० शकः १८९५ ४ |१३९३ رمضان ٢٤ دوشنبه
सोमवार २२अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.११ सं.२०३०
घ॰ १२|१८ पू. फा. ५५|२४ र॰ उ. ६|३ र॰ अ. ५|२२
फ़॰ १३८१ प्र. कतक १० वं. कार्तिक ५ ने. ६ गते

पद्मा ११ एकादशी व्रत सबका, गोवत्स द्वादशी

अर्थ—अन्यान्य तीर्थ तथा विष्णुभक्ति आदि केवल अन्तःकरण की शुद्धि करती हैं इसमें सन्देह नहीं; परन्तु हे नारदजी काशी तारक ब्रह्म के उपदेश से 'मुक्तिपद' को प्रदान करती है ॥

काशीखण्ड —

उत्तरं दक्षिणं नापि अयनं न बिचारयेत् ।
सर्वोऽप्यस्य शुभः कालो ह्यविमुक्ते प्रिये यतः ॥

अर्थ—हे प्रिये काशी में मरण के लिये कोई समय या पर्व बिशेष की गिनती नहीं है। क्योंकि इस अविमुक्त क्षेत्र में जो मरता है, उसके लिये सब समय और दिन एक सा है ॥

सनतकुमार संहिता —

रथ्यान्तरे मूत्रपुरीषमध्ये चांडालवेश्मन्यथवा श्मशाने
कृतप्रयत्नोऽप्यकृतप्रयत्नो देहावसाने लभतेऽत्र मोक्षम् ।

अर्थ– इस पुरी की गलियों में, मूत्र, बिष्ठा से दूषित स्थान में, चांडाल के गृह में या श्मशान भूमि में कहीं भी बिधि से या अविधि से मरने पर जीव मोक्ष पद को प्राप्त करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कसरत करने से मुटाई दूर होती है
(कन्या का चन्द्र १०।८) सोना चांदी सस्ता
Tuesday the 23rd October 1973.
रा॰कार्तिक १ शकः १८९५ ४ १३९३ رمضان, २० शुक्र
मंगलवार २३ अक्टू. सन् १९७३ कार्तिक कृ.१२, सं.२०३०
घ. ८।३८ उ. फा. ५४।१९ र. उ. ६।४ र. अ. ५।२१
फ. १३८१ प्र. कतक ११ बं. कार्तिक ६ ने. ७ गते

भौम प्रदोष १२ व्रत, धन्वन्तरी जयन्ती १३, धनतेरस

काशी खण्ड —
संसार भय भीता ये ये बद्धाः कर्मबन्धनैः ।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ॥
श्रुति स्मृति विहीना ये शौचाचार विवर्जिताः ।
येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ॥
अर्थ — जो लोग सांसारिक भय से डरे हुये हैं अथवा जो कर्मपाश से बँधे हुए हैं और जिन्हें कहीं गति नहीं मिलती, उनके लिये काशी गति देने वाली है जो वेद शास्त्र नहीं जानते अथवा शौचादि नित्य क्रियाओं से रहित है और जिनकी कहीं गति नहीं उनके लिये भी यह काशी नगरी मोक्षदायिनी है

पद्मपुराण —
काश्यां मृतस्तु सालोक्यं साक्षात्प्राप्नोति सत्तमः ।
ततः सरूपतां याति ततः सान्निध्य मश्नुते ॥
ततो ब्रह्मैकतां याति न परावर्तते पुनः ॥
अर्थ — काशी में मरे हुए सज्जन साक्षात सालोक्य प्राप्त करके सारूप्य मुक्ति पाते हैं। फिर वे सान्निध्य मुक्ति का भी सुख भोगते हैं तत्पश्चात् ब्रह्मैकता को [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गर्मी के घाव को नीमके रस से धोना चाहिये

(कन्या का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Wednesday the 24th October 1973.

रा०कार्तिक २ शाकः १८९५ ४ چہارشنبہ، ۲۷ رمضان ۱۳۹۳

बुधवार २४ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ. १२ सं. २०३०

घ. ६।९ हस्त ५४।३२ र. उ. ६।४ र. अ. ५।२०

फ. १३८१ प्र. कतक १२ बं. कार्तिक ७ ने. ८ गते

मास शिवरात्रि १३ व्रत, नरक चतुर्दशी १४

ब्रह्मपुराण —

चतुर्धा वितते क्षेत्रे सर्वत्र भगवाञ्छिवः ।
व्याचष्टे तारकं वाक्यं ब्रह्मात्मैक्यप्रबोधकम् ॥

अर्थ — इस क्षेत्र में चारों ओर फैले हुए भगवान् शिवजी ब्रह्मैकत्व को बताने वाले 'तारक' मंत्र का उपदेश करते हैं ॥

रामायण —

मुक्तिजन्म महि जानि, ज्ञान खानि अघ-हानि कर।
जहँ बस शम्भु भवानि, सो काशी सेइय कस न ॥

अर्थ — मुक्ति का जन्म स्थान, ज्ञान की खानि और पापों को नाश करने वाली इस काशी पुरी में अन्नपूर्णा सहित श्री विश्वनाथजी निवास करते हैं ऐसी पुरी में कौन निवास किया जाय अर्थात् अवश्य काशी वास करना चाहिये।

गर्ग संहिता —

विश्वेश्वरस्य देवस्य काशीनाम्ना महापुरी ।
यत्र पापी मृतः सद्यः परं मोक्षं प्रयाति हि ॥

अर्थ — यह काशी भगवान श्री विश्वनाथजी की महान् पुरी है यहाँ पर प्राण छोड़ने वाला प्राणी उत्तम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हनुमज्जयन्ती, दीपावली, लक्ष्मीपूजा, महावीरनिर्वाण(जैन)

लघु आश्वलायन स्मृति —

यः कश्चिन्मानवो लोके वाराणस्यां त्यजेद्वपुः ।
स चाप्येको भवेन्मुक्तो नान्यथा मुनयो विदुः ॥
अर्थ—महर्षियों ने कहा है कि जो लोग मनुष्य लोक में
जन्म लेकर काशी में शरीर त्याग करते हैं वे मुक्त हो
जाते हैं ॥

पद्म पुराण पाताल खण्ड —

यूकाश्च दंशाश्चापि मत्कुणाश्च मृगादयः कीट पिपीलिका
सरीसृपा वृश्चिक सूकराश्च काशी मृताः शंकर मा पुनीत।
अर्थ- यूका (जूं) डाँस, खटमल, मृगादि जीव, कीट, चीं
तथा सर्पादि, बिच्छू और सूकर भी काशी में मरकर शिवत्व
प्राप्त होते हैं ॥

चालीस संस्कार —

१ गर्भाधान, २ पुंसवन ३ सीमन्तोन्नयन ४ जातक
५ नामकरण ६ अन्नप्राशन ७ चौल ८ उपनयन ९ ऋग्वेद
व्रत १० यजुर्वेद व्रत ११ सामवेद व्रत १२ अथर्ववेद व्रत १३ सम
वर्तन १४ विवाह पञ्च महायज्ञ १५ देवयज्ञ १६ पितृयज्ञ १७ मनुष्य
यज्ञ १८ भूतयज्ञ १९ ब्राह्मणयज्ञ सप्तपाकयज्ञ २० अष्टका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसी के पत्तीका रस कानमें छोड़नेसे दर्द दूर होता है
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 26th October 1973.

रा॰ कार्तिक ४ शकः १८९५ ۴ ۱۳۹۳ رمضان، ۲۸ [illegible]
शुक्रवार २६अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक कृ.३० सं.२०३०
घ॰ ४।२१ स्वाती ५८।१७ र॰ उ. ६।५ र॰ अ. ५।१८
फ. १३८१ प्र. कतक १४ वं. कार्तिक ९ ने. १० गते

अन्नकूट, बलिपूजा, गोवर्धन पूजा, आख़िरी जुम्मा

२१ पार्वण (स्थालीपाक) २२ श्राद्ध (मासिक) २३ श्रावणी (उपाकर्म) २४ आग्रहायण २५ शूलगव (चैत्री) २६ इद्रध्वजहोमसप्तहोमर्यज्ञ २७ आग्न्याधान २८ अग्निहोत्र २९ दर्शपौर्ण मास ३० आ[illegible]यण ३१ चातुर्मास्य ३२ निरुढपशुबन्ध ३३ सौत्रामणी सप्तसोमयज्ञ ३४ अग्निष्टोम ३५ अत्यग्निष्टोम ३६ उक्थी ३७ षोडशी ३८ वाजपेय ३९ अतिरात्र ४० अप्तोर्याम ॥

अगस्त्य की कथा —

एकबार देवर्षि नारद अनेक लोकों में पर्यटन करते हुए बिन्ध्य पर्वत पर पहुँचे। बिन्ध्यने उनका बहुत स्वागत किया और हाथ जोड़कर दर्शन देने की कृपा करने का कारण पूछने लगा। नारदने बहुत गम्भीर भाव से कहा कि हे पर्वतराज हिमालय सुमेरु आदि को अपने बड़प्पन का अभिमान है और वे अपने सामने सबको तुच्छ समझते हैं। मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती है कि तुम इतने उत्तम और सज्जन हो तिस पर भी वे लोग तुम्हें कुछ नहीं समझते। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसका प्रतीकार करना तुम्हारा कर्तव्य है॥ नारद अपना काम करके चल दिये। बिन्ध्य के मन में यह बात लग गई। उसने रातही भरमें अपनी कलेवर इतनी बढ़ाई कि दूसरे दिन सूर्य आदि सभी ग्रहों की [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुलसीपत्र के धूम्रपान से आमवात को लाभ होता है
(वृश्चिक का चन्द्र ४६।८) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 27th October 1973.

रा॰ कार्तिक ५ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال، ۲۱ [illegible]
शनिवार २७ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक शु॰१ सं.२०३०
घ॰ ६।१० विशाखा ६०।० र॰ उ॰ ६।६ र॰ अ॰ ५।१८
फ़॰ १३८१ प्र॰ कतक १५ बं॰ कार्तिक १० ने॰ ११ गते

विश्व के एक भाग में तो घोर गर्मी और प्रकाश हो गया और दूसरे भाग में घना अन्धकार हो गया संसार भर में हा हा कार मच गया यज्ञ, दान, तपश्चर्या सब बन्द हो गये सभी लोकों का नित्य कृत्य स्थगित हो गया। देवता लोग इसके उपाय की खोज में ब्रह्मा के समीप गए। उन्होंने बताया कि महर्षि अगस्त्य काशी में निवास करते हैं यदि वे चाहें तो विन्ध्य को समझा सकते हैं। देवता लोग झट पट उनके आश्रम जा पहुँचे और संसार की रक्षा करने की प्रार्थना की महर्षि अगस्त्य को यह जानकर कि काशी छोड़े बिना काम नहीं चल सकता बहुत ही दुःख हुआ अन्त में संसार की रक्षा के निमित्त वे दुःखित होते हुए काशी से चले और विन्ध्य के समीप जा पहुँचे। विन्ध्य उन्हें साष्टाङ्ग दण्डवत् करने के लिये पृथ्वी पर पड़ गया महर्षि ने कहा कि हे पर्वतराज मैं तुम्हारे ऊपर परम प्रसन्न हूँ। इस समय मैं दक्षिण की ओर जाना चाहता इस लिये तुम ऐसे ही झुके रहो मैं निकल जाऊँ और जब तक लौटकर न आऊँ इसी प्रकार लेटे रहना महर्षि अगस्त्य दक्षिण की ओर चले गये और आज तक न लौटे [illegible] विन्ध्य भी आज तक [illegible] प्रकार पड़ा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेला का फूल अतिसार की तृषा को नाश करता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 28th October 1973.

रा॰ कार्तिक ६ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال । ایک شنبه

रविवार २८ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक शु॰२ सं॰२०३०

घ॰ ८।३९ विशाखा २।५ र॰ उ॰ ६।७ र॰ अ॰ ५।१७

फ॰ १३८१ प्र॰ कतक १६ बं॰ कार्तिक ११ ने॰ १२ गते

काशीमें गोवर्धन पूजा, भइयादूज, यम द्वीतिया २, ईद

साधन-चतुष्टय —

१ नित्यानित्य वस्तु विवेक: — केवल परब्रह्म ही नित्य है और इसके अतिरिक्त सभी पदार्थ अनित्य हैं इस बात का ज्ञान रहना। २ इहामुत्रार्थ फलभोग विराग: — इस संसार के सुखों और स्वर्ग आदि के सुख के भोगने की इच्छा न होना।

यत्राचार्य स्त्रिपुर विजई साधनानां चतुर्णां
संपद्वासः सुलभमशनं स्वैरचारस्तपांसि।
श्रोतव्यस्य श्रुतिरपि तपः क्रूयते जन्मभाजां
काले काश्यां सुकृत धनिकास्तत्र वासं लभन्ते॥
(सनत्कुमार संहिता)

काशी पुरी में त्रिपुर को जीतने वाले साक्षात् शङ्कर भगवान् ही तारकमंत्र के उपदेश देने वाले आचार्य हैं मोक्ष के चारों साधन इस पुरी में सदा उपस्थित रहते हैं। भगवती अन्नपूर्णा की कृपा से भोजन आदि का मिलना यहाँ एक दम सुलभ है प्रतिदिन का चलना, फिरना, उठना, बैठना ही यहाँ तपस्या के समान है। साधारण जीव यहाँ जो कुछ सुनते हैं वही वेद के श्रवण के समान फल देता है। ऐसी [illegible] पुरी काशीमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीप का भस्म लगाने से दांत चमकते हैं
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता
Monday the 29th October 1973.
रा० कार्तिक ७ शकः १८९५ ४ १३९३ شوال ٢ دوشنبه
सोमवार २९ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक शु० ३ सं. २०३०
घ० १२।१९ अनुराधा ६।२८ र० उ. ६।७ र० अ. ५।१६
फ० १३८१ प्र. कतक १७ बं. कार्तिक १२ ने. १३ गते

श्रीगणेश ४ व्रत

जो बहुत ही पुण्यवान् होते हैं वै ही निवास करने का सौभा[ग्य]
पा सकते है ॥

जन्मान्तर सहस्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मभिः।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रासादात् परमेश्वरात् ॥
अर्थ—हजारों में मैने जन्मों पुण्य कर्म किए। वे धीरे धी[रे]
सञ्चित होते गये उन्हीं पुण्यों के फल से परमेश्वर का
प्रसाद हुआ और परम मनोहर काशी पुरी मिली ॥

ये काश्यां संशया विष्टा मुक्तौ तेषां शरी[र]—
पात प्रयाण समये प्रमाणं परमेश्वरः ॥
अर्थ—काशी में मरने से मुक्ति मिलती है या नहीं इस
बिषय में कुछ लोगों को सन्देह होता है परन्तु भगवान
शंकर प्रमाण मरने के समय प्रत्यक्ष दे देते हैं अर्थात् [जि]
समय जीव अपनी देह का परित्याग करता है उसी स[मय]
भगवान सदा शिव उसे तारक मंत्र के उपदेश के द्वारा मु[क्त]
कर देते हैं और उस जीव को काशी में मरने से मुक्ति मिल[ती]
है इसका प्रमाण मिल जाता है ॥

मोक्षस्य निर्णयः काश्यां नित्यमेकेन जन्मना।
सर्वेषामेव जन्तूनां प्रमाणैः प्रतिपादितः ॥
अर्थ—इस पुस्तक में श्रुति स्मृति, पुराण आदि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहिजन की छालका गरम लेप हड्डी को नरम करता है
(धनु का चन्द्र १२।४४) सोना चाँदी महंगा

Tuesday the 30th October 1973.

रा॰ कार्तिक ८ शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال ۳ سہ شنبہ
मंगलवार ३० अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक शु॰ ४ सं॰ २०३०
घ॰ १६।५२ ज्येष्ठा १२।४४ र॰ उ॰ ६।८ र॰ अ॰ ५।१५
फ॰ १३८१ प्र॰ कतक १८ बं॰ कार्तिक १३ ने॰ १४ गते

अनेक प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध कर दिया गया है कि सभी
स्थावरों और जङ्गमों को एक ही जन्म में काशी के सेवन से
मोक्ष मिल जाता है ॥ किं बहूक्तेन ॥
येन केनापि यः कश्चित् निमित्तेन परित्यजेत् ।
काश्यां प्राणान् सर्वजन्तुर्मुक्त इत्यवगम्यताम् ॥
बहुत बिस्तार न कर के संक्षेप में यह कह दिया जाता है
कि कोई भी जन्तु किसी कारण से काशी में शरीर का परित्याग
करे तो वह अवश्य मुक्त हो जायगा इसमें लेश मात्र संदेह नहीं है

तारकम् तारकः = प्रणवः । तारयतीति तारः (स्वार्थे कः प्रत्यये)
संसार सागरादुत्तारकं = तारकं च तद् ब्रह्म इति तारक ब्रह्म अर्थात्
अर्थ - ओंकार तारक है क्यों कि जो डूबते हुए का उद्धार कर के उसे
तार दे उसी को तारक कहते हैं । (तारक शब्द में 'तार' शब्द से
स्वार्थ में क प्रत्यय हुवा है अर्थात् जो अर्थ तार शब्द का
है वही अर्थ तारक शब्द का है अपार संसार सागर से तार
देने वाले तारक ब्रह्म का उपदेश भगवान् रुद्र करते हैं
प्रणव अर्थात् ओंकार को ही विद्वान लोग तारक ब्रह्म
कहते हैं इसमें अनेक वेद वाक्य प्रमाण हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगस्तकीपत्ती हींगमिलाकर सूँघनेसे चौथिया दूर होताहै
(धनु का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Wednesday the 31st October 1973. २६

रा• कार्तिक ९ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شوال ٤ چهارشنبه

बुधवार ३१ अक्टूबर सन् १९७३ कार्तिक शु.२ सं. २०३०

घ• २२।० मूल १९।२ र• उ. ६।८ र• अ. ५।१२

फ. १३८१ प्र. कतक १९ बं. कार्तिक १४ ने. १५ गते

ॐ मित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥गी

ॐ यह एकाक्षर मंत्र साक्षात् ब्रह्म है इस मंत्र को जपता हुआ और मेरा ध्यान करता हुआ जो मनुष्य देह का परित्याग करता है वह परम गति को प्राप्त होता है ॥ प्राणोत्क्रमणं न स्थावर विषयमिति चेत् न इत्याह: —

अर्थ — कुछ लोगों का मत है कि जरायुज, अंडज, स्वेदज इन तीन प्रकार के भूतों के प्राणों का आना जाना तो ठीक है पर वृक्ष लता आदि स्थावर भूतों के प्राणों का उत्क्रमण सम्भव नहीं इस मत के खण्डन करने के लिए श्रुतियों का प्रमाण देते हैं —

"औषधिवनस्पतियों यच्च किञ्च प्राणभृत्" इति श्रुतेः — श्रुति कहती है कि जड़ी बूटी, वृक्ष आदि जितने स्थावर हैं वे सब प्राणधारी भूत हैं।

"वरणायामस्यां च मध्ये प्रतिष्ठितः" इत्युवाच याज्ञवल्क्यः। (वरणायाम्, अस्याम् इत्यत्र विभक्तिव्यत्ययेन षष्ठी ज्ञातव्या)

अर्थ — परम विद्वान याज्ञवल्क्य ने कहा कि अविमुक्त अस्सी और वरुणा के बीच में है (वरणायाम और -

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यषष्ठी ६ व्रत, छठ व्रत (बिहार)

अस्याम् इन दोनों शब्दों में षष्ठी के अर्थ में सप्तमी का प्रयोग हुवा है) "का च वरणा भवति का चासी" इति अत्रिः पप्रच्छ ।

अर्थ — ऋषिवर्य अत्रि ने प्रश्न किया कि हे तपोनिधे आप किसे वरणा कहते हैं और किसे असी ॥

सर्वानिन्द्रियकृतान् दोषान् वारयतीति 'वरणा' भवति, सर्वानिन्द्रियकृतान् पापान् अस्यति तेन 'असी' इत्युवाच याज्ञवल्क्यः ।

अर्थ — याज्ञवल्क्य ने अत्रि मुनि के पूछने पर कहा कि पाँच कर्मेन्द्रिय १ पाँच ज्ञानेन्द्रिय २ और मन के द्वारा किए जाने वाले सभी दोषों को जो रोक दे अर्थात् इन इन्द्रियों को वे काम न करने दें उसका नाम 'वरणा' है। इन्द्रियों के द्वारा किए गये पापों को जो फेंक दे अर्थात् जीव को उन पापों से मुक्त कर दे उसी का नाम असी है वरणा तो जीव को नवीन पाप करने से रोकती है और असी उसके पूर्वकृत पापों को दूर कर देती है ॥

कतमच्चास्याः स्थानं भवति इति अत्रिः पप्रच्छ ।
महर्षि अत्रि ने प्रश्न किया कि इस पूर्वोक्त वाराणसी का स्थान कहाँ है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्नदोषमें काली तुलसीका बीज दूधके साथ खावे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 2nd November 1973.

रा० कार्तिक ११ शकः १८९५   ४ ١٣٩٣ شوال ५ [illegible]
शुक्रवार २ नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु० ७ सं.२०३०
घ० ३२।१९ उ. षा. ३१।५२ र० उ. ६।१० र० अ. ५।१२
फ. १३८१ प्र. कत्तक २१ बं. कार्तिक १६ ने. १७ गते

“भ्रुवोर्घ्राणस्य यः सन्धिः” इत्युवाच याज्ञ-
वल्क्यः अत्र घ्राण शब्देन घ्राणवायु प्रचारकं घ्राणमू-
मुच्यते। ज्ञाननिधि याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि दो
भौंहें और घ्राण का जो मिलने का स्थान है उसी का
नाम वाराणसी है। यहाँ घ्राण का अर्थ है घ्राण मूल
जहाँ से घ्राणवायु उठती है दोनों भौंहें और नासिका का
सब से उपरी हिस्सा ये तीनों जहाँ जाकर मिलते हैं उ-
का स्थान का नाम वाराणसी है इसमें आत्मा रूपी प्र-
को रखने से परम पद प्राप्त होता है इसके अन्य प्रमाण
दिए गये हैं ॥

वाराणसी भ्रुवोर्मध्यम विमुक्तं तयो र्भुवः।
अध्यात्मेवाति दिष्टं तद् भ्रुवोर्घ्राणस्य चान्तरम् ॥

अर्थ — दोनो भौंहों और नासिका के ऊर्ध्व भाग के मिलने
जगह का नाम वाराणसी या अविमुक्त है यह आध्यात्मि-
क काशी है। इस आध्यात्मिक काशी में निवास क-
से जीव को मुक्ति मिल जाती है अर्थात् आध्यात्मिक
में जो कि सब प्राणियों के शरीर में विद्यमान है चि-
दृढ़ करने से जीव को मुक्ति मिलती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोपाष्टमी ८

प्रत्येषामप्यशेषात्याम् गङ्गावगाहनदर्शनाभ्यां यज्ञदान तपोभिश्च यादृच्छिकैः पुरा कृतैः कर्मभिः सुकृतैः "ऊषरं पुण्यपापानां धन्या वाराणसी पुरी"
"इदं प्रिये क्षेत्रमतीव मे प्रियं संसारजीवोषरमूषराणाम्"
इति वचनाभ्यामूषरत्वेन प्रसिद्धस्य प्रभावेण चनष्टावशिष्ट पापकर्मणः काम्यस्य पुण्य कर्मणो मुक्तिरेकेन जन्मना इति मुक्तेरवश्यम्भावित्वात् ।

अर्थ – पहिले कहे गये जीवन्मुक्तादि से अतिरिक्त सभी साधारण काशीनिवासियों के परम पुण्य सलिला भगवती गंगा में स्नान करने से तथा उनके दर्शन करने से, यज्ञ, दान और तप करने से, संयोग बस पूर्व जन्म में किए गये पुण्य कर्मों के आचरण से तथा सभी पाप पुण्य के लिये ऊसर भूमि के समान इस काशी क्षेत्र के प्रभाव से सभी बचे हुए पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं और यही दशा काम्य कर्म और पुण्य कर्मों की भी होती है। इस नगरी में किए गये पाप कर्मों का न अशुभ फल होता है और न पुण्य कर्मों का शुभ फल। शास्त्र में कहा गया है कि "यह वाराणसी नाम की नगरी धन्य है क्यों कि यह क्षेत्र पाप और पुण्य कर्मों के लिये ऊसर भूमि के स[...]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमेहमें सिंघाड़े का चूर्ण मिश्री समान भागकर खावे
(कुम्भ का चन्द्र ९।५२) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 4th November 1973.

रा॰ कार्तिक १३ शकः १८९५ ४ ایک شنبہ ۸ شوال ۱۳۹۳
रविवार ४ नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु॰९ सं. २०३० ५१
घ॰ ४०।९ धनिष्ठा ४२।१४ र॰ उ. ६।११ र॰ अ. ५।१२
फ॰ १३८१ प्र. कतक २३ बं. कार्तिक १८ ने. १९ गते

अक्षय नवमी ९

है अर्थात् इसमे किए पाप और पुण्यों की फल देनेवा
शक्ति नष्ट होजाती है। यही बात श्रीभगवान शङ्कर पा
र्वती से कहते हैं कि हे प्रिये कि यह काशी क्षेत्र मुझे बहु
ही प्यारा लगता है। इसमें निवास करने वाले सभी जीवों
कर्म उसी प्रकार फल देने में असमर्थ होते हैं जिस प्रकार
कि ऊषर भूमि में बोए गए बीज [illegible] का तात्पर्य यह है
कि काशीपुरी मे चाहे पुण्य कर्म किए जावें चाहे पाप
परन्तु उनमें से एक का भी फल नहीं मिलता वे सब
काशी में शरीर परित्याग करतेही भैरवी यातना मे
ने पर भस्मीभूत होजाते हैं और इसी कारण एक ही ज
में जीव काशी में मर कर मुक्त होजाता है॥

एक जन्म में मुक्ति मिलने का प्रमाण दिया गया
"अत्युत्कटैः पुण्य पापैरिहैव फल मश्नुते"
इति वचनात् काश्यां कृतयोः पुण्य पापयोः उत्कटत्वात्
वर्तमान एव शरीरे भोक्तव्य नियमाच्छानयोः पुण्य पा
पयोः फलदत्वाय ॥ आमर्दयिष्यति भवांस्तुष्टो दुष्यत्
यतः॥ भगवान् शंकरजीने भैरवजी से कहा कि आप
[illegible] करने के लिए प्रसन्न होकर दुष्ट जीवों मे
ताड़न करोगे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु के सिर दर्द में सतलोहवान की नाश ले
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Monday the 5th November 1973.

रा॰ कार्तिक १४ शकः १८९५ ४ دوشنبه ۹ شوال ۱۳۹۳

सोमवार ५ नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु॰१० सं.२०३०

घ. ४२।३० शतभिषा ६२।५३ र॰ उ. ६।११ र॰ अ. ५।११

फ. १३८१ म. कतक २४ बं. कार्तिक १९ ने. २० गते

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ १८-६१ गी॰

हे अर्जुन ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में निवास करता है और उन सबको यन्त्र (मशीन) की तरह सदा चलाया करता है ॥ कथन है "प्रकृत को माया कहते हैं और उस प्रकृति के अधिष्ठाता महेश्वर को मायावान् अथवा मायावी कहते हैं" वे ही स[illegible] हृदय में निवास करने वाले मायावी भगवान् प्राणज[illegible]न के एक क्षण भर पहिले अपनी माया के बल से चिरकाल में किए गए शुभ और अशुभ कर्मों के फलों के भोगने के योग्य एक दूसरे शरीर में जीवात्मा का प्रवेश कराकर उसे स्वप्न के समान सुखद और दुःखद भोगों का अनुभव कराकर पीछे पहिले बताये गए नियम से तारक ब्रह्म का उपदेश देते हैं यह समझ लेना चाहिए ॥

सूत संहिता का वचन है कि —

ईदृशी परमा निष्ठा गुरोः साक्षान्निरीक्षणात् ।
कर्म साम्ये त्वनायासात् सिद्ध्यत्येव न संशयः ॥

अर्थ — आदि गुरु भगवान शिव के साक्षात् दर्शन करने से और तारक मंत्र के उपदेश के द्वारा कर्म का नाश हो जाने पर यह परम ज्ञान बिना किसी प्रयास के हो जाता है और जीव को मोक्ष मिल जाता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माजूफल घिसकर लगाने से निनार्वा जाता है
(?ीन का चन्द्र ३२।४१) सोना चाँदी सम

Tuesday the 6th Novembor 1973.

रा॰ कार्तिक१५ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شوال ١٠ سہشنبہ ·
मंगलवार ६ नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु॰ ११ सं. २०३०
घ॰ ४३।३३ पू. भा. ४८।१७ र॰ उ. ६।१२ र॰ अ. ५।१०
फ़॰ १३८१ प्र. कतक २५ बं. कार्तिक २० ने. २१ गते

प्रबोधिनी ११ एकादशी व्रत सबका

शैवागमेऽपि —
कपाल मिन्दुः करिचर्म नागाः काशीपुरी कण्ठगतस
मूर्छासु मूर्छासु परिस्फुरन्ति संज्ञासु तिरोभवन्ति ॥
अर्थ काशी पुरी मे जब जीव के प्रमाण गले तक पहुँच
हैं और वह मरने लगता है उस समय जब जब मूर्छा
(बेहोशी) आती है तब तब उसे शिव[illegible] का कपाल
उसके ललाट पर का चन्द्रमा, उनके [illegible]ढने का करिच
और उनके शरीर पर के शर्प दिखाई देते हैं और जब जब
मूर्छा दूर होती है तब तब सब आँख के ओझल हो जा
अर्थात् जब प्राण जाने के समय बेहोशी होती है उस समय
महादेव जी तारक मंत्र सुनाने के लिए आते हैं और उन
कपाल, चन्द्रमा आदि दिखाई देने लगते हैं परन्तु ज
फिर होश हो आता है तो वे सब चीजें फिर लुप्त हो जाती

काशी खण्डेऽपि —
कृत्वा कर्माण्यनेकानि कल्याणानीतराणि च ।
तानि क्षणात् समुत्सृज्य काशी संस्थो मृतो भवेत् ॥
अर्थ — अपने जीवन काल में जीव से अनेक प्रकार के पाप और
पुण्य हो जाते हैं। पर काशी में मरते ही वह उन सब कर्मों
[illegible] से मुक्त हो जाता है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके सब कार्य नष्ट हो जाते हैं ॥
प्रदोष १२ व्रत, तुलसी विवाह
पुराणों में ऐसी अनेक कथाएँ मिलती हैं जिनसे जान पड़ता है कि माया के बस में पड़कर बड़े बड़े ज्ञानी मानी मुनियों को भी अनेक प्रकार के भोगों का अनुभव करना पड़ा है देवर्षि नारद का मोह इस का ज्वलन्त उदाहरण है ॥
एक समय नारद ऋषि भगवान की माया में फँस गये। माया के वस से [illegible] या हो गए और उनका विवाह एक पुरुष से कर दिया [illegible]। अब उनके बाल बच्चे उत्पन्न होने लगे और अच्छी गृहस्थी जम गई। संसार के सभी सुख दुख झेलने पड़े बड़ी बड़ी आपत्तियाँ सिर पर आ पड़ीं चिरकाल तक अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़े। अन्त में यहाँ तक हुआ कि पति और पुत्रों की मृत्यु हो गई और इन्हें इस वियोग से इतना शोक हुआ कि उन्होंने मरने को सरोवर में डुबकी लगा दी। गोता मारते ही फिर नारद के नारद हो गये ॥
इसी प्रकार स्कन्द पुराण में एक मुनि की कथा कही गई है।
स्कन्द पुराणे — प्राचीन काल में परम पावनी गंगा नदी के तीर पर एक मुनि निवास करते थे वे किसी कारण से दैवी माया में फँस गए और एक किरात की कन्या हो गए समय आने पर उसका एक किरात के साथ विवाह
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रिय दमन से बुद्धि बढ़ती है
(मेष का चन्द्र ४९।१७) सोना चाँदी सस्ता
Thursday the 8th November 1973.
रा॰कार्तिक १७ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شوال ١٢ پنجشنبه
गुरुवार ८ नवम्बर सन्१९७३ कार्तिक शु॰१२ सं.२०३०
घ॰ ४१।४२ रेवती ४९।१७ र॰ उ. ६।१२ र॰ अ. ५।९
फ. १३८१ प्र. कृतक २७ बं. कार्तिक २२ ने. २३ गते

धीरे धीरे उसके कई एक पुत्र हुए और उन पुत्रों के
पुत्र हुए। उसका बड़ा कुटुम्ब बढ़ा।
एक दिन वह जल लाने के लिए गंगा किनारे गई और
अपने कपड़े उतारकर किनारे पर रख दिया और वहीं
पर अपना घड़ा भी रख दिया ये सब चीज़ें तीर पर रख
कर वह किराती गंगा में जा घुसी। घुसते ही उसकी
सूरत एक क्षण में बदल गई और उसका रूप [illegible]
का सा हो गया। किराती के [illegible] देर हुई तो
उसके घर के लोग बहुत घबड़ाए [illegible] उसे खोजने के
लिए गंगाजी के किनारे गए वहाँ उन लोगों ने उसके
कपड़े देखे और वहीं घड़ा रखा पाया। उस स्थान पर
किराती को न देखकर वे लोग समझ गए कि वह
गंगा में बह गई। वे वहीं हाहाकार मचाने लगे और
विलाप करने लगे। उन्हें रोते विलपते देखकर वे [illegible]
वहीं जा पहुँचे और कहने लगे कि तुम लोग क्यों रोते
और विलाप करते हो मैं ही किराती था गंगा में डुबकी
लगाते ही मेरा रूप बदल गया है और अब इस रूप में
हो गया है तुम लोग क्यों रोते बिलपते हो मुनि ने उन
को बहुत समझाया पर उनका शोक दूर नहीं हुआ तब
मुनि ने ज्ञान की बहुत सी बातें सुनाईं और अनेक [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अशोकके स्वरसमें समुद्रफेन घिसकर नाशलेने से मिर्गी दूर होती है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी मंहगा

Friday the 9th November 1973.

रा॰ कार्तिक १८ शकः १८९५ ४ ١٣٩١ شوال ١٣ [illegible]
शुक्रवार ९ नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु॰ १४ सं.२०३० ६५
घ॰ ३९।६ अश्विनी ४८।२ र॰ उ. ६।१४ र॰ अ. ५।९
फ॰ १३८१ प्र. कतक २८ बं. कार्तिक २३ ने. २४ गते

वैकुण्ठ चतुर्दशी १४

बहुत समझाने पर उनका शोक दूर हुआ और वे अपने घर गये।

इदं कलियुगं घोरं सम्प्राप्तं पाण्डुनन्दन।
गतिमन्यां न पश्यामि मुक्त्वा वाराणसीं पुरीम ॥

अर्थ — हे पाण्डुनन्दन यह घोर कलियुग आगया है इसमें वाराणसी पुरी को छोड़कर और कहीं मुक्ति मिलने का अवसर नहीं दिखाई दे रहा है ॥

जपध्यान विहीनानां ज्ञान विज्ञान वर्जिनाम्।
तपस्युत्साह हीनानां गतिर्वाराणसी नृणाम्

जो मनुष्य न तो जप करते हैं और न परमेश्वर का ध्यान ही करते हैं ज्ञान और विज्ञान से रहित हैं तप करने के लिए जिनके हृदय में लेशमात्र भी उत्साह नहीं ऐसे मनुष्यों की गति काशी में ही हो सकती है दूसरी जगह ऐसे मनुष्यों को मोक्ष मिलना अत्यन्त असम्भव है ॥

तीर्थानि सर्वाण्यपि मोक्षदानि श्रुतानि सर्वेष्व खिलेषु राजन्।
वाराणसी प्राप्ति फलानि शीघ्रं कालेन चातोऽप्यवधानवन्ति

अर्थ — हे राजन् सब शास्त्रों में जितने मोक्ष देनेवाले तीर्थ कहे गए हैं वे सब साक्षात मोक्ष नहीं देते किन्तु उसे —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊदसलीब गले में बांधने से मिर्गी दूर होती है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी मंहगा

Saturday the 10th November 1973.

रा॰ कार्तिक १९ शकः १८९५   ४ ۱۳۹۳ شوال ۱۴ شنبه
शनिवार १० नवम्बर सन् १९७३ कार्तिक शु॰ १५ सं. २०३०
घ॰ ३५।२७ भरणी ४६।० र॰ उ. ६।१५ र॰ अ. ५।८
फ़. १३८१ प्र. कतक २९ बं. कार्तिक २४ ने. २५ गते

गुरुनानक जयन्ती, कार्तिकी पूर्णिमा १५, रथयात्रा (जैन)

दूसरे जन्म में काशी पहुँचा देते हैं और वहाँ पहुँच
कर जीव शरीर का परित्याग करता और मुक्त हो
जाता है। अयोध्या, मथुरा आदि तीर्थों में मरने से
मोक्ष मिलने में एक जन्म का व्य[illegible] पड़ता है
परन्तु काशी में मरते ही मुक्ति [illegible] जाती है।
अयोध्या, मथुरा, माया, [illegible], अवन्ति
पुरी, द्वारावती चैव सप्तै[illegible]का:
अयोध्या, मथुरा, हरद्वार, [illegible] काञ्ची, अवन्तिका
और द्वारका ये सात मोक्ष देनेवाली पुरियाँ हैं।
काशीपुरी में त्रिपुर को जीतने वाले साक्षात् शङ्कर भ
गवान् ही तारक मंत्र के उपदेस देनेवाले आचार्य हैं मोक्ष के
साधन इस पुरी में सदा उपस्थित रहते हैं। भगवती
अन्नपूर्णा की कृपा से भोजन आदि का मिलना यहाँ स
हज सुलभ है प्रति दिन का चलना, फिरना, उठना बैठ
ना यहाँ तपस्या के समान है साधारण जीव यहाँ जो कुछ
सुनते हैं वही वेद के श्रवण के समान फल देता है।
उत्तम पुरी काशी पुरी में जा [illegible] पहुँचते ही पुण्यवान् होते
वहीं निवास करने का सौभाग्य पा सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंडमालमें रसल और अफीम बराबर घिसकर लगावे
(वृष का चन्द्र ०।१५) सोना चांदी सस्ता

Sunday the 11th November 1973.

रा॰कार्तिक २० शक:१८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال 10 ایک شنبہ
रविवार ११ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ॰१ सं.२०३०
घ॰ २०।५७ कृत्तिका ४३।२ र॰ उ॰ ६।१५ र॰ अ॰ ५।८
फ॰ १३८१ प्र॰ सघर १ बं॰ कार्तिक २५ ने॰ २६ गते

जन्मान्तरसहस्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मभिः।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रासादात् परमेश्वरात्॥
अर्थ-हजारों ... में मैंने जो पुण्य कर्म किए। वे धीरे धीरे संचित होते गए उन्हीं पुण्यों के फल से परमेश्वर का ...साद हुआ और परम मनोहर काशीपुरी मिली॥

...एक ... ...न्त पूर्वजन्म के किये पापों का

एक ... में एक साधु एक जंगल में नदी के किनारे घोर तप... ...हा था कि भजन करते करते उसके पूर्व जन्म के ... इतने अधिक थे कि जिसका बदला कई जन्मों में न दे सकता था उस तपस्या के प्रभाव से एक ही जन्म में एक ही दफे में बदला चुका दिया। पूर्व जन्म में साधु ने १० आदमियों के घर इसकदर उजाड़ा कि उनका साराधन ले लिया सारे परिवार वाले इतना दुःखी थे कि घर बार सब नष्ट भ्रष्ट कर दिया था यहाँ तक कि जान से सबको मार डाला था। किसी पुण्य... वजह से दूसरे जन्म मे मनुष्य का शरीर पाकर भगवान का भजन किया नदी के किनारे ... ... बैठा था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आँवले का चूर्ण ३माशेशहदकेसाथ चाटनेसेखुजलीजातीहै
(वृष का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Monday the 12th November 1973.

रा.कार्तिक २१ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شوال ١٥ دوشنبه

सोमवार १२ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.२ सं.२०३०

घ. २५।४६ रोहिणी ३९।२९ र. उ. ६।१६ र. अ. ५।७

फ. १३८१ प्र. मघर २ बं. कार्तिक २६ ने. २७ गते

कि इतने में जिन को पूर्वजन्म में सताया था
घर बार उजाड़ा था वो लोग दूसरे जन्म में दसो
आदमी मिल कर अपना पूर्व जन्म का बदला लेने
के लिये नदी के किनारे पर साधु के पास पहुंच गये
साधू भगवान के ध्यान में मग्न था इतने में
आदमियों ने उस साधू को पकड़ कर इस कदर मारा कि
चोट की वजह से बेहोस रात भर नदी के किनारे पड़ा
रहा दसो आदमी मार कर मरा हुवा जान कर चले गये
थे साधु को जब सुबह होश हुवा तब सोचने लगा कि
तो इस जन्म में किसी को न सताया हूँ न दुःख दिया
मुझे इतना घोर कष्ट क्यों मिला इतने में नारद भ
न कहीं से घूमते घामते साधू के पास जा पहुंचे
साधू ने सारा किस्सा दस आदमियों के मारने का
कह सुनाया। नारद ने ध्यान लगाकर साधू के
जन्म के किए हुये पापों को ज्ञात कर लिया नारद भ
न साधू से बोले कि आप पूर्व जन्म में इतना पाप
है कि दस आदमियों के धन, घर बार उजाड़ कर
को मार डाला था इसलिए दसों आदमी एक साथ
अपना बदला चुका लिया एक ही जन्म में नहीं
कई जन्म तक दुःख भोगना पड़ता। आप दूस
जन्म में इतनी ... कि पूर्व जन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुजली पर मिश्री घी सफेद चावल के साथ खावे
(मिथुन का चन्द्र ७।३०) सोना चाँदी महँगा

Tuesday the 13th November 1973.

रा॰ कार्तिक २२ शकः १८९५ ४ ।३९३ شوال ١٧ سہ شنبہ
मंगलवार १३ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.३ सं.२०३०
घ॰ २०।१२ मृगशिरा ३२।३१ र॰ उ. ६।१७ र॰ अ. ५।७
फ॰ १३८१ प्र. मघर ३ बं. कार्तिक २७ ने. २८ गते

श्रीगणेश ४ व्रत

पाप इस जन्म के भजन करने से सब दग्ध होगये है इस लिये दसो आदमियों से एक ही दिन में एक ही दफे में उनसे उद्धार हो गए हो भगवान् अपने भक्त का घोर पाप भी थोड़े समय में सब का नष्ट कर देते हैं भगवान के भजन तपस्या का प्रभाव बड़ा प्रबल होता है नारद भगवान इतना कहकर चले गए और साधू अपना उसी प्रकार फिर भजन में लग गए ॥

॥ कुछ संन्यास के नियम ॥

संन्यासो उपनिषद में

वाग्दण्डे मौनमातिष्ठेत्कायदण्डेत्व भोजनम् ।
मानसे तु कृते दण्डे प्राणायामो विधीयते ॥ ११६
संन्यासोपनिषत्

अर्थ - वाणी के दण्ड के लिये मौन रहे, काया को दण्ड देना हो तो उपवास और मन को दण्ड देना हो तो प्राणायाम करे

कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्याया च विमुच्यते ।
तस्मात्कर्म न कुर्वन्ति यतयः पारदर्शिनः ॥ ११६

अर्थ - प्राणी कर्मों से बन्धन में पड़ते हैं और विद्या से छुटकारा पाते हैं, इस लिये ज्ञानी संन्यासी कर्म से पृथक रहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कड़ुवा तेलकी मालिश करके सोनेसे मच्छड़ नहीं लगते
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी महँगा

Wednesday the 14th November 1973.

रा० कार्तिक २३ शकः १८९५ ४ [illegible]
बुधवार १४ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.४ सं.२०३०
घ. १४।१६ आर्द्रा ३१।२१ र. उ. ६।१७ र. अ. ५।७
फ. १३८१ मु. मघर ५ बं. कार्तिक २८ ने. २९ गते
बाल दिवस

संन्यासी किसी देवताके पूजनोत्सव को न देखने जाय
८४

स्वरूपानुसंधान व्यतिरिक्तान्य शास्त्राभ्यास उष्ट्रकुंकुमभारवद्व्यर्थः। न योगशास्त्र प्रवृत्तिर्न सांख्यशास्त्राभ्यासो न मंत्रतंत्र व्यापारो नेतरशास्त्र प्रवृत्तिर्यतेरस्ति, अस्ति चेच्छवालंकारवत्। चर्मकार विद्यादूरः। न परिव्राण्णाम संकीर्तन परः। यद्यत्कर्म करोति तत्तत्फलमनुभवति। एरण्ड तैल फेनवत्सर्वं परित्यजेत्। न देवता प्रसाद ग्रहणं न बाह्य देवाभ्यर्चनं कुर्यात् ॥८५ संन्यासोपनिषद्

अर्थ — संन्यासी के लिये स्वरूपानुसंधान के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों का अभ्यास ऊँट पर केशर लादने के समान व्यर्थ है। संन्यासी के लिये योग की प्रवृत्ति या सांख्य शास्त्र अभ्यास या मंत्र-तंत्र का व्यापार आदि किसी शास्त्र की वृत्ति वर्जित है। यदि कोई करता तो वह मृतक शव पर अलंकारों के समान है और संन्यास के कर्म और विद्या के प्रतिकूल है। संन्यासी नाम कीर्तन आदि में भी भाग नहीं लेना चाहिये, क्यों कोई भी कर्म करने से उसका फल भोगना ही पड़ेगा। उसे एरण्ड (रेंडी) के तेल के समान त्याग देना चाहिये। उसे न तो देवता का प्रसाद ग्रहण करना चाहिये और न बाह्य देवता की पूजा करनी चाहिये ॥८५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपत्तिकाल के सिवाय मार्ग के लिये संन्यासी को कुछ भी पास में नहीं रखना चाहिये यदि अन्न न मिले तो पक्वान्न ३ वर्ण के यहाँ (कर्क का चन्द्र १२।११) सोना चांदी सत्ता ग्रहण कर सकता है

Thursday the 15th November 1973

रा·कार्तिक २४ शकः १८९५ ४ ।٣٩٣ شوال ١٩ پنجشنبه
गुरुवार १५ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.५ सं.२०३०
घ· ८।१७ पुनर्वसु २७।८ र· उ. ६।१८ · र· अ. ५।६
फ़· १२८१ प्र. मघर ५ वं. कार्तिक २९, ने. ३० गते

(संन्यासी को भिक्षा ५ प्रकार की कही गई है)
संन्यासोपनिषद

१-असंक्लिप्त माधुकर २-प्राकप्रणीत, ३-अयाचित ४-तात्कालिक और उपपन्न। मन में संकल्प किये बिना किन्हीं तीन, पाँच या सात घरों से मधु मक्खी के समान भिक्षा ग्रहण करना असंकल्पित माधुकर है। प्रातः काल अथवा पहिले दिन कोई भक्ति पूर्वक प्रार्थना करे तो उसके यहाँ प्राकप्रणीत भिक्षा की जा सकती है भिक्षा के लिये फिरते हुये यदि कोई निमंत्रित करे तो संन्यासी को उसके यहां अयाचित भिक्षा है। भिक्षा के लिये निकलते समय यदि कोई ब्राह्मण आकर भोजन करने को कहे तो उस तात्कालिक भिक्षा को सदैव ग्रहण कर सकता है। यदि कोई ब्राह्मण मठ में ही तैयार भोजन ले आवे तो उसे मोक्षाभिलाषी साधु उपपन्न भिक्षा कहते हैं ॥ ८६-८९ ॥
देव पूजन न करे। सांसारिक प्रपंच को त्याग कर जीवन मुक्त आसन, पात्रलोप, संचय, शिष्य करना, दिन में सोना व्यर्थ की बातें करना ये छः बातें संन्यासी के लिये बन्धन कारी हैं वर्षा के अतिरिक्त जो स्थान हैं वह आसन कहलाता है संन्यासी के आहार के लिये जो तूँबा आदि बतलाये गये हैं उनके खो जाने पर दूसरे का ले लेना पात्रलोप है अपना दंड खो जाने पर दूसरे का ग्रहण कर लेना ... ग्रह है ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियमित आहार विहार बुद्धि को बढ़ाता है
(कर्क का चन्द्र) सोना चांदी सस्ता

Friday the 16th November 1973.

रा॰ कार्तिक २५ शकः १८९५ ४ १३९३ شوال ٢٠ ১৩৮০

शुक्रवार १६ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.८ सं.२०३०

घ॰ ५६/४ | ३५/२८ पुष्य २३/८ र॰ उ. ६/११ र॰ अ. ५/६

फ. १३८१ प्र. मघर ६ बं. कार्तिक ३० ने. १ गते

द्रव्यार्थमन्नवस्त्रार्थं यह प्रतिष्ठार्थमेव वा ।
संन्यसेदुभय भ्रष्टः स मुक्तिं नाप्तुमर्हति ॥ २०॥ मैत्रेय्युप
अर्थ—जो मनुष्य पैसा के, अन्न के, वस्त्रों के अथवा नामवरी के लोभ से संन्यास लेता है, वह दोनो तरफ से भ्रष्ट हुआ कभी भी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता ॥ २०॥ मैत्रेय्युपनिषत्

मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जीबन्धने ।
तृतीयं यज्ञदीक्षा द्विजस्य श्रुतिचोदनात् ॥१६९॥
श्रुति में वर्णित है कि ब्राह्मणगण माता से प्रथम जन्म लेते हैं, फिर यज्ञोपवीत हो जाने पर उनका दूसरा जन्म होता है और फिर ज्योतिष्टोमादि यज्ञ दीक्षा प्राप्त करते उनका तीसरा जन्म होता है ॥१६९॥ मनुस्मृति अ॰ २ में

नाभिव्याहारयेद् ब्रह्म स्वधानिनयनादृते ।
शूद्रेण हि समस्तावद्यावद्वेदे न जायते ॥१७२॥
उपनयन के पहिले श्राद्धीय मंत्रों के अतिरिक्त किसी वेद का पाठ नहीं कर सकते, जब तक ब्रह्म जन्म न हो, अर्थात् जब तक वेद पाठ न कर सके, तब तक ब्राह्मण शूद्र के समान होता है ॥१७२॥ मनुस्मृति अध्याय २ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहेड़ेकी भींगीशहदमें घिसकरलगानेसेंफूली नष्ट होतीहै
(सिंह का चन्द्र १९।३२) सोना चांदी सम

Saturday the 17th November 1973.

रा॰ कार्तिक २६ शकः १८९५ شنبه ۲۱ شوال ۱۳۹۳
शनिवार१७ नवम्बर सन्१९७३ मार्गशीर्ष कृ.८ सं.२०३०
घ॰ २१।५४ श्लेषा १९।३२ र॰ उ. ६।२० र॰ अ. ५।६
फ. १३८१ प्र. मघर ७ बं. मार्गशीर्ष १ ने. २ गते

११ कालभैरवी ८, लालालाजपतराय निर्वाण दिवस

दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते ।
अर्वाक् संचयनादस्थ्नां त्र्यहमेकाहमेव च ॥५९॥
सपिण्ड की मृत्यु होने पर ब्राह्मण का दश दिन तक अशौच (अशुद्धि) रहता है अथवा चार दिन (जो आहिताग्नि ब्राह्मण का अस्थिसंचय का समय होने से विहित है) अथवा तीन किंवा एक अहोरात्र मात्र अशौच विहित है। ब्राह्मण का वेदज्ञान और अग्निचर्या विचार कर अशौच काल का इस प्रकार तारतम्य होता है सर्व गुण रहित ब्राह्मण के पक्ष में ही दशाह (दस दिनका) अशौच विहित है ॥५९॥ मनुस्मृति अ॰ ५ में

सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते ।
समानोदकभावस्तु जन्मनाम्नोरवेदने ॥६०॥
ऊर्द्धतन की गणना से अथवा नीचे की गणना से हो सपिण्डता सात पुरुष (पीढ़ी) में शान्त होजाती है (किंतु जल सम्बन्ध वा समानोदक भाव बराबर रहता है केवल नाम और गोत्र अपरिज्ञात (मालूमनहीं) होने से ही शान्ति होती है ॥६०॥ मनुस्मृति अ॰ ५ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथेदं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते ।
जननेऽप्येवं मेव स्यान्निपुणं शुद्धिमिच्छताम् ॥
जिस प्रकार मृताशौच सपिण्ड गणों के पक्ष में विहित हुआ है जो सम्यक् प्रकार शुद्धि लाभ करने की इच्छा करते हैं उनके पक्ष में जननाशौच भी (जन्म होने का सूतक भी) इसी प्रकार जानना चाहिये ॥६१॥ मनुस्मृति अ॰ ५ में

मातुलांश्च पितृव्यांश्च श्वशुरानृत्विजो गुरून् ।
असावहमिति ब्रूयात्प्रत्युत्थाय यवीयसः ॥
यदि मामा, चाचा, श्वसुर ऋत्विज गुरु यय अवस्था में छोटे हों तो भी इनके आने पर उठ खड़ा हो और असौ अहम्, यह मैं हूँ – ऐसा कहे ॥१३०॥ मनुस्मृती

अत्युष्णं सर्वमन्नं स्याद्भुञ्जीरंस्ते च वाग्यताः ।
न च द्विजातयो ब्रूयुर्दात्रा पृष्टा हविर्गुणान् ॥
सारा अन्न पदार्थ अत्युष्ण (गरम गरम) होवे ब्राह्मण मौन भव से उनको भोजन करें। परोसने वाले (दाता) के द्वारा उनका गुणा गुण (अच्छा बुरा) पूछा जाने पर भी वे वचन द्वारा उसको कुछ उत्तर न दें इतना ही नहीं वरन मुख की चेष्टा (इशारे) से भी उसको प्रकट नहीं करें ॥२३६॥
मनुस्मृती अ॰ ३ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालू से सेकने से त्रिकसूल का नाश होता है
(कन्या का चन्द्र २९।३) सोना चाँदी सम
Monday the 19th November 1973.
रा०कार्तिक २८ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال ۲۳ دوشنبه
सोमवार १९ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ० १० सं० २०३०
घ० ४४।१४ पू० फा० १४।२२ र० उ० ६।२१ र० अ० ५।५
फ० १३८१ प्र० मघर ९ वं० मार्गशीर्ष ३ ने० ४ गते

यावदुष्णं भवत्यन्नं यावदश्नन्ति वाग्यताः ।
पितरस्तावदश्नन्ति यावन्नोक्ता हविर्गुणाः ॥२३७॥
जबतक अन्न गरम रहता है, जबतक ब्राह्मण गण मौन भाव धारण किये भोजन करते रहते हैं और जब तक भोजन का गुण अवगुण नहीं बखान जाता, तब तक पितर गण ब्राह्मणों के मुख द्वारा उस अन्न को भोजन करते रहते है ॥२३७॥
मनुस्मृती अ० ३ में ॥

यद्वेष्टितशिरा भुङ्क्ते यद् भुङ्क्ते दक्षिणामुखः ।
सोपानत्कश्च यद् भुङ्क्ते तद्वै रक्षांसि भुञ्जते ॥२३८॥
मस्तक पर वस्त्रादि (पगड़ी आदि) लपेटकर जो अन्न भोजन किया जाता है और दक्षिण की ओर को मुख करके जो भोजन किया जाता है और पादुका (इत्यादि) पहर कर भोजन किया जाता है, उस अन्न को राक्षस लोग ही भोजन करते हैं ॥२३८॥ मनुस्मृती में अ० ३ ॥

शोणितं यावतः पांसून् संगृह्णाति महीतलात् ।
तावतोऽब्दानमुत्रान्यैः शोणितोत्पादकोऽद्यते ॥१६८॥
शस्त्र द्वारा घायल हुये ब्राह्मण के देह से निकले रक्त से जितनी धूलि सनती है, शस्त्र चलाने वाला व्यक्ति परलोक में उतने ही वर्ष पर्यन्त गीदड़ कुत्ते इत्यादि से भक्षित होता है अर्थात् उसको गीदड़ और कुत्ते खाते है
१६८ मनुस्मृती में अ० ४ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति ॥१६२
भूमि पर बीज बोने पर वह जिसप्रकार तत्क्षण फल उत्पन्न नहीं कर सकता है, ऐसे ही इस संसार में अधर्माचरण का फल भी शीघ्रही नहीं मिलजाता है। किन्तु अधर्माचरण को करते समय पर ऐसा होता है कि, अधर्माचरणकर्ता का जड़ से नाश हो जाता है ॥१६२॥ मनुस्मृती अ.

यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु । मनुस्मृती
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः ॥१६३
अधर्म यदि अधर्म करने वाले न फल अर्थात् उसके धन तथा धनादि का नाश न होवे, तो उसका बेटा और नहीं तो उसका पोता ही निसन्देह उस अधर्म का फल भोगे। किन्तु किया हुवा अधर्म करने वाले को बिनाफल दिये कभी व्यर्थ नहीं होता ॥१६३॥ मनुस्मृती अ.४ में ॥

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति । अ.४
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥१६४॥
(अधर्म) मनुष्य अधर्म के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होता है भाँति भाँति के अभिलाषित फल पाता है वैरियों को भी विजय करता है किन्तु [illegible] जड़ मूल से नाश को प्राप्त होजाता है ॥१६४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूखा चमड़ा घिसकर लगाने से आँख साफ होती है
(तुला का चन्द्र ४३।२०) सोना चाँदी सम

Wednesday the 21st November 1973.

रा॰कार्तिक ३० शाकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ شوال ۲۵ چہارشنبہ
बुधवार २१ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ॰१२ सं.२०३०
घ॰ ४०।४४ हस्त १२।५१ र॰ उ. ६।२३ र॰ अ. ५।४
फ॰ १३८१ प्र. मघर ११ बं. मार्गशीर्ष ५ ने. ६ गते

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥१२१॥
मनुस्मृती अ॰ २ में है

अर्थ— जो युवा अभिवादनशील है अर्थात् जो वृद्धजनों के आने पर निरन्तर प्रणाम अभिवादन और उनकी सेवा किया करता है उसकी परमायु, विद्या, यश और बल इनकी नित्य वृद्धि हुआ करती है ॥१२१॥ मनुस्मृती अ॰ २ में ॥

मातृष्वसा मातुलानी श्वश्रूश्च पितृष्वसा ।
संपूज्या गुरुपत्नी वत्समस्ता गुरुभार्यया ॥१३१॥ अ॰ में

अर्थ— माता और पिता की बहिन, मामी तथा सास, इन सब को गुरु पत्नी के समान कहा गया है, इस वास्ते उनका सम्मान भी गुरुपत्नी की समान ही करना चाहिये ॥ मनुस्मृ

क्षत्री के लिये संन्यास वर्जित है ॥

अर्जुन क्षत्रिय है यातैं संन्यास आश्रम कूं धारण करि कै भिक्षा तितैं शरीर के निर्वाह करणे विषे तुम्हारा अधिकार है नहीं । काहेतैं श्रुति स्मृतियों विषे ब्राह्मण को ही संन्यास करणे का अधिकार कथन करा है । तहाँ श्रुति । " ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च लोकैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरंति " इति । अर्थ यह — पुत्र एषणा का तथा वित्त एषणा का तथा लोक एषणा का परित्याग करि कै वैराग्यवान् ब्राह्मण संन्यास पूर्वक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदोष १३ व्रत, मासशिवरात्रि १३ व्रत

भिक्षावृत्तिकूँ करै है इति। तहाँ स्मृति। "चत्वार आश्रमा ब्राह्मणस्य त्रयो राजन्यस्य द्वौ वैश्यस्य इति" अर्थ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चारि आश्रम ब्राह्मण के होवे हैं। और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, यह तीन आश्रम क्षत्रिय के होवें हैं और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ दो आश्रम वैश्य के होवे हैं॥ तहाँ अन्य स्मृति। "मुख जानामयं धर्मो वैष्णवं लिंगधारणम्। बाहुजातोरुजातानामयं धर्मो विधीयते"। अर्थ यह परमेश्वर के मुखतें उत्पन्न भये जो ब्राह्मण हैं तिन ब्राह्मणों का ही दंडादिक चिह्न धारण पूर्वक संन्यास धर्म है। परमेश्वर के बाहुतें उत्पन्न भये जो क्षत्रिय हैं। तथा जो परमेश्वर के ऊरुस्थलतें उत्पन्न भये जो वैश्य हैं तिन क्षत्रियवैश्योंकूँ यह लिंगसंन्यास विधान नहीं करा है इति। इत्यादिक अनेक श्रुतिस्मृतिवचनों विषे ब्राह्मणों को ही संन्यास आश्रम का कथन करा है क्षत्रिय वैश्यकूं संन्यास का अधिकार करा नहीं है या प्रकार के अभिप्राय करि कै ही श्रीभगवान्नें अर्जुन के प्रति युद्धादिक कर्मों तैं बिना तुम्हारे शरीर के भोजनपानादिक व्यवहारादिक भी सिद्ध नहीं होवेंगे यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बादामकेछिलके कीराखफिटकिरीकेमंजनसेदाँतसाफहोताहै
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Friday the 23rd November 1973.
रा॰ अग्रहायण २ शकः १८९५ ४ ...
शुक्रवार२३ नवम्बर सन्१९७३मार्गशीर्ष कृ॰१४सं.२०३०
घ॰ ४२।१८ स्वाती १६।६ र॰ उ॰ ६।२४ र॰ अ॰ ५।४
फ॰ १३८१ प्र॰ मुघर १३ बं॰ मार्गशीर्ष ७ ने॰ ८ गते

हे भगवन् "कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया च विमुच्यते"
अर्थ यह — यह जीव कर्मों करिके तौ संसार विषे बंधायमान होवै है। और विद्या करिकै ता संसारतें मुक्त होवै है इति। या स्मृति वचन करिकै तिन सर्व कर्मों विषे बंध की हेतुता ही सिद्ध होवै है याते मुमुक्षु जननें ते बंध के हेतु भूत कर्म करणे कूं योग्य नहीं हैं ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्रीभगवान् ता अर्जुन के प्रति काम्य कर्मों कूं ही बंध की हेतुता है ईश्वर अर्पण बुद्धि करिकै करे हुए कर्मों कूं बंध की हेतुता नहीं है या प्रकार का उत्तर कथन करै हैं—

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधनः॥
तदर्थं कर्म कौंतेय मुक्तसंगः समाचर॥९॥
(पदार्थः) हे अर्जुन यह लोक परमेश्वर के आराधन अर्थ कर्म तैं अन्य कर्म विषे ही कर्म करिकै बंधायमान होवै है याते तूं फल की इच्छा तैं रहित होइकै ता परमेश्वर आराधन अर्थ कर्म कूं भली प्रकार कर॥९॥ श्रीमद्भागवद्गीता...

यज्ञशिष्टाशिनः संतो मुच्यंते सर्व किल्बिषैः॥
भुंजते ते त्वघं पापा ये पचंत्यात्म कारणात्॥१३॥
श्रीमद्भगवद्गीता ... अध्याय ३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत के कीड़ों में कपूर को दांत में दाबे
(वृश्चिक का चन्द्र ३।४८) सोना चांदी सस्ता

Saturday the 24th November 1973.

रा॰अग्रहायण ३ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ شوال ٢٨ شنبه
शनिवार२४नवम्बर सन्१९७३मार्गशीर्ष कृ.३० सं.२०३०
घ. ४४।२५ विशाखा ११।३७ र. उ. ६।२५ र. अ. ५।४
फ. १३८१ प्र. मघर १४ वं. मार्गशीर्ष ८ ने. ९ गते

स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या ३०

अर्थ — जे पुरुष यज्ञ के शेष अन्न कूं भोजन करैं हैं ते
पुरुष सर्व पापोंनैं परित्याग परित्याग करते हैं तथा जे
पापात्मा पुरुष केवल अपने वास्ते ही अन्न कूं पकावें
हैं ते पुरुष पाप कूं ही भोजन करैं हैं ॥१३॥ वर्तमान
जे अधिकारी पुरुष ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ,
मनुष्य यज्ञ, भूतयज्ञ या पंच यज्ञों कूं करिके
परिशेषते रहे हुए अमृत रूप अन्न कूं भोजन करैं
ते पुरुष ही शिष्ट कहे जावें हैं काहे तें श्रद्धा भक्ति
वेदविहित कर्मों के करणे हारे पुरुष कूं ही शास्त्र
शिष्ट कहा है ऐसे शिष्ट पुरुष सर्व पापों नैं परि
करते हैं। तात्पर्य यह — प्रमाद करिके करे हुए
पाप हैं तथा पंचसूना रूप निमित्त तैं उत्पन्न हुए
पाप हैं तथा विहित कर्मों के न करणे करि प्राप्त
जो पाप हैं तिन सर्व पापों तैं ते पुरुष रहित होवें हैं
इतने कहने करि के तिन यज्ञादिकों के
करणे हारे पुरुष कूं पाप की प्राप्ति का अभाव कथन करा।
अब तिन यज्ञादिक कर्मों के नहीं करणे हारे पुरुषों
[illegible] कथन करें हैं (यजते तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बासी मुख पानी पीने से दस्त साफ होता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Sunday the 25th November 1973.

रा॰ अग्रहायण ४ शक: १८९५ ४ ا۹ شوال ۱۳۹۳ ایک شنبہ

रविवार २५ नवम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰ १ सं. २०३०

घ॰ ४८।४४ अनुराधा २४।१५ र॰ उ. ६।२५ र॰ अ. ५।४

फ॰ १३८१ प्र. मघर १५ बं. मार्गशीर्ष ९ ने. १० गते

पिछिया ज्ञ

तिन पंच महाँ यज्ञों कूं नहीं करते हुए जे पापात्मा पुरुष केवल अपने उदर के भरण करणे वासते ही अन्न कूँ पकावे हैं देवता अतिथि आदिकों के वासते अन्न कूं पकावते नहीं ते पुरुष केवल पाप कूं ही भोजन करे हैं अन्न को भोजन करते नहीं। यद्यपि तिन पापात्मा पुरुषों की दृष्टि करि के तथा देवतावों की दृष्टि करिके तो सो अन्न है तथापि शास्त्र की दृष्टि करि के तथा देवतावों की दृष्टि करि के सो अन्न पापरुप ही है इति।

इहाँ (पापा: अघं भुंजते) या वचन करि के यह अर्थ कथन करा जे पुरुष तिन पंचयज्ञों कूं न करि के केवल अपने उदर के भरण करने वासते ही अन्न कूं पकावे हैं ते पुरुष सर्व ही पंचसूनाकृत पाप वाले तथा प्रमादकृत हिंसा-जन्य पाप वाले हुए भी पुनः वैश्वदेवादिक नित्य कर्मों के नहीं करने जन्य दूसरे पाप को प्राप्त होवें हैं इति। तहाँ स्मृति "कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी। पंचसूना गृहस्थस्य ताभि: स्वर्गं न विंदति। पंचसूनाकृतं पापं पंचयज्ञैर्व्यपोहति ॥" अर्थ यह— गृहस्थ पुरुषों के गृह विषे जीवों की हिंसा होने के पंच स्थान होवें हैं एक तो ऊखल विषे अन्न के कूटणे तें जीवों की हिंसा होवै है और दूसरा पाषाण की चक्की विषे अन्न के पीसने ते जीवों की हिंसा होवै है ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंसा होवे है। और चौथा पात्रों विषे जलके भरनेते
घटोंची मे जीवों की हिंसा होवे है। और पंचमी मृत्ति
का जलादिकों सैं घर के मार्जन करने तैं जीवों की हिंसा
होवे है ता पंच प्रकार की जीव हिंसा करि के यह ग्रहस्थ
पुरुष स्वर्ग कूं प्राप्त होता नहीं। और तिन पंच हिंसास्था
नोंतैं उत्पन्न भये जो पाप हैं ते पाप पंच यज्ञों करि के निवृत
होवे हैं इति। ते पंच यज्ञ यह हैं - तहाँ श्लोक -
"ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं
च यथाशक्ति न हापयेत्" । अर्थ यह - यह ब्राह्मणादि
ग्रहस्थ पुरुष दिन दिन विषे ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ,
मनुष्य यज्ञ, पितृयज्ञ, यह पंच यज्ञ यथाशक्ति करै इन
पंच यज्ञों का परित्याग कदाचित् भी नहीं करै इति।
तहाँ वेद का पठन पाठन करना तथा संध्योपासन
याका नाम ऋषि यज्ञ है। और अग्निहोत्रादिकों का
याका नाम देवयज्ञ है। और बलि, वैश्वदेव कूं करना या
नाम भूत यज्ञ है। और ग्रह विषे प्राप्त हुए अतिथि का
अन्नादिकों करि के संतोष करना याका नाम मनुष्य यज्ञ
और श्राद्ध तर्पण कों करना याका नाम पितृयज्ञ है इति।
तिन यज्ञों के नहीं करने हारे ग्रहस्थ पुरुषों को दोषकी प्राप्ति
... स्मृति विषे भी कथन करी है। तहाँ श्लोक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यान्ति काकयोनिं व्रजंतिते। काष्ठभारसहस्रेण घृतकुंभशतेन च। अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः॥ २१
अर्थ यह—जे ब्राह्मणादिक ग्रहस्थ वैश्वदेव करने ते रहित हैं ते ~~पुरुष~~ तथा अतिथि के प्रति भोजन देने ते रहित हैं ते पुरुष मरि करिके नरक को प्राप्त होवें हैं तिसतैं अनंतर काकयोनि कों प्राप्त होवें हैं इति। किंवा जिस गृहस्थ पुरुष के गृह तैं अतिथि पुरुष अन्नादिकों की प्राप्ति तैं बिना निराशा चल्या जावे है गृहस्थ पुरुषने काष्ठों के सहस्र भारों करि कै तथा घृत के शतकुंभों करिकै करा हुवा जो होम है सो होम ता पुरुष कूं किंचित् मात्र भी फल की प्राप्ति करै नहीं इति। अतिथि का लक्षण पाराशरस्मृति विषे यह कहा है। तहाँ श्लोक। ❦ दूराध्वोपगतं श्रांतं वैश्वदेव उपस्थितम्। अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः॥ चौरो वा यदि चांडालः शत्रुर्वा पितृघातकः। वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोऽतिथिः सर्व संक्रमः॥ न पृच्छेद् गोत्रचरणे स्वाध्यायं च व्रतानि च। हृदयं कल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयो हि सः॥ २२ अर्थ यह—जो पुरुष दूर मार्ग तैं चलिकै आया होवै तथा थक्या होवै तथा वैश्वदेव के करने के काल विषे प्राप्त होवे ताकूं अतिथि जानना। और जो अपने पुरोहितादिक पूर्व ही तहां प्राप्त हैं ते पुरोहितादिक अतिथि नहीं होवें हैं ... कहिये हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैनायकी श्रीगणेश ४ व्रत

वैश्व देव करते के काल विषे ब्राह्मणादिक ग्रहस्थ पुरुषे
गृहविषे जोकोई अन्नार्थी-चौर आवै अथवा चांडाल
आवै अथवा शत्रु आवै अथवा पिताके हनन करने
हारा आवै सो अन्नार्थी पुरुष अतिथि जानना
तथा सर्व सत्संगादिकों का कारण जानना इति
किंवा यह गृहस्थ पुरुष गृह विषे प्राप्त हुए ता अन्नार्थी
अतिथि का गोत्र नहीं पूछै तथा वेद की शाखादि
भी नहीं पूछै तथा ऋग्वेदादिकों का अध्ययन भी नहीं
पूछै। तथा ब्रह्मचर्यादिक भी नहीं पूछै किन्तु सो
गृहस्थ पुरुष ता अतिथि विषे यह अतिथि सर्व देव
विष्णुरूप है या प्रकार की भावना करिकै ता अतिथि
अन्नादिक देवै इति। यातैं जे ब्राह्मणादिक ग्रहस्थ
पुरुष पूर्व उक्त पंचयज्ञों कूं न करिकै केवल अपने
उदर भरणे वासते ही अन्न कूं पकावै हैं ते पुरुष
रूप करिकै स्थित पाप कूं ही भोजन करै हैं ॥१३॥
किंवा केवल पूर्व उक्त प्रजापति के वचन मात्र तैं ही ते यज्ञादि
कर्म करणे कूं योग्य नहीं है किन्तु या जगत् रूप चक्र की प्रवृत्ति
हेतु होणे तैं भी ते यज्ञादिक कर्म करणे कूं योग्य हैं याकूं
भगवान् अर्जुन के प्रति तीन श्लोकों करिकै कथन करै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिङ्ग न्द्रीपररोजथोड़ाठंढापानीछोड़नेसेस्वप्नदोषनहींहोता
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Thursday the 29th November 1973.

रा॰अग्रहायण ८ शकः१८९५ ४ ।۳۹۳ ذى القعد ۳ پنجشنبه
गुरुवार २९ नवम्बर सन्‌१९७३ मार्गशीर्ष शु॰४सं.२०३०
घ॰ ४।२ उ. षा. ४८।५७ र॰ उ. ६।२८ र॰ अ. ५।४
फ॰ १३८१ प्र. मघुर १९ बं. मार्गशीर्ष १३ ने. १४ गते

अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ॥
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥
अर्थ—हे अर्जुन अन्न तैं शरीर उत्पन्न होवे है और ता अन्न
का जन्म जल की वृष्टि तैं होवे है और सा जल की वृष्टि
अपूर्व रूप धर्म तैं उत्पन्न होवे है और सो अपूर्व रूप धर्म
कर्म तैं उत्पन्न होवे है ॥१४॥ श्री मद्भगवद्गीता तृतीयअ॰
हे अर्जुन भोजन द्वारा पुरुष स्त्रियों के शरीर विषे प्राप्त होइ
के शुक्र शोणित रूप करि के परिणाम कूं प्राप्त भया जो
व्रीहि आदिक अन्न है तिस अन्न तैं ही सर्व मनुष्यादिक
प्राणियों के शरीर उत्पन्न होवें है। और ता व्रीहि यवादि के
अन्न की उत्पत्ति जल की वृष्टि तैं होवे है। यह वार्ता सर्व
प्राणियों कूं प्रत्यक्ष सिद्ध है और कारीरी इष्टि अग्निहोत्र
आदिकों तैं उत्पन्न भया जो धर्म है तिस धर्म कूं शास्त्र
विषे अपूर्व अदृष्ट या नाम करि के कथन करैं हैं।
ता धर्म रूप यज्ञ तैं सा जल की वृष्टि उत्पन्न होवे है।
तहाँ मनुस्मृति। "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपति-
ष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः" अर्थ
वैदिक अग्नि विषे प्रातः सायंकाल में श्रद्धाभक्ति पूर्वक
पाई हुई जो घृतादिक पदार्थों की आहुति है सा आहुति ...
रूप करि के ... आदित्य विषे स्थित होवे है सो ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीया नागपंचमी ५

आहुति विशिष्ट आदित्यतें मेघों द्वारा जल की वृष्टि उत्पन्न होवे है ता जल की वृष्टि तें व्रीहियवादिक अन्न उत्पन्न होवे हैं। और ता अन्नतें यह मनुष्यादिक शरीर उत्पन्न होवें हैं इति। और सो धर्मरूप यज्ञ अग्निहोत्र कारीरी इष्टि आदिक कर्मोंतें उत्पन्न होवे है ॥१४॥

श्लोक:-(कौपीनयुगलं वास: कंथां शीतनिवारणीम्। पादुके चापि गृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्य संग्रहम्॥)

अर्थ यह - यह संन्यासी दो कौपीनों कूं तथा कौपीन ऊपरि बाँधने वास्तैं दो कटि बस्त्रों कूं सीत के निवारण वासते कंबल आदिक कंथा कूं तथा पादुका का ग्रहण करे इस से अधिक द्रव्य आदिक पदार्थ का संग्रह नहीं करे इति। (द्वन्द्वातीतः इति) हे अर्जुन क्षुधा पिपासा शीत उष्ण बात नबो इत्यादि सर्व द्वन्द्वधर्मोंतें सो संन्यासी रहित है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपूर चंदन रगड़कर लगाने से दिमागमें ठंडक पहुँचती है
(कुम्भ का चन्द्र २७।१७) सोना चाँदी सम

Saturday the 1st December 1973.

रा॰अग्रहायण १० शकः १८९५ ४ ।३९३ ذی القعد ٥ شنبه
शनिवार १ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰६सं.२०३०
घ॰ १३।३२ धनिष्ठा २९।४७ र॰ उ॰ ६।३० र॰ अ॰ ५।४
फ॰ १३८१ प्र॰ मघर २१ बं॰ मार्गशीर्ष १५ ने॰ १६ गते

चम्पाषष्ठी ६

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
(तैत्ति॰ १-११-१)
सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय का कभी त्याग न
करो। आचार्य को गुरु दक्षिणा देकर प्रजा के सूत्र को न काटो
अर्थात् ब्रह्मचर्य ~~को गुरु दक्षिणा देकर~~ आश्रम का
पालन कर चुकने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो।
सत्य का कभी किसी अवस्था में भी त्याग न करो।
~~धर्म से विभूति~~ धर्म का कभी त्याग न करो।
कल्याणकारी कर्मों का त्याग न करो साधन कीजो
विभूति प्राप्त है उसे कभी मत त्यागो। स्वाध्याय और
प्रवचन में कभी प्रमाद न करो।
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव।
अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवि
तव्यानि। नो इतराणि।
देव कर्म (यज्ञ) और पितृ कर्म (श्राद्ध, तर्पण आदि) का
कभी त्याग न करो। माता को देव रूप से पूजो। पिता
को देवरूप से पूजो। अतिथि को देव रूप से पूजो जो कर्म
निन्दा रहित हैं उन्हीं को करो। अन्य (निन्दित कर्म) मत करो
हमारे (गुरु के) श्रेष्ठ आचरणों का अनुसरण करो, दूसरों का नहीं
जो ब्राह्मण अपने से श्रेष्ठ हों उन्हें तुरन्त बैठने के लिये आसन
दो जो ... करो श्रद्धा से ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान में पानी भर जावे तो समुद्रफेन का चूर्ण डाले
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Sunday the 2nd December 1973.

रा॰अग्रहायण११ शकः१८९५४ ।१३९३ ذی القعده ۷ یک شنبه ।
रविवार २ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰७सं.२०३०
घ॰ १६।५९ शतभिषा ६०।० र॰ उ. ६।३० र॰ अ. ५।४
फ॰ १३८१ प्र. मघर २२ बं. मार्गशीर्ष १६ ने. १७ गते

श्री के लिये दान करो, लक्ष्मी चंचल है, प्रभु की सेवा में उसे समर्पण नही करोगे तो वह तुम्हे त्याग कर चली जायगी लोक लाज के लिये ही दान करो शास्त्र से डर कर भी दान करो। दान करना उचित है। इस विवेक से दान करो। अपने किसी कर्म अथवा लौकिक आचार के सम्बन्ध में मन में कोई प्रश्न उठे, तो अपने समीप रहने वाले ब्राह्मण में जो वेदविहित कर्मों में विचारशील हों, समदर्शी हों, कुशल हों, स्वतन्त्र हों (किसी के दबाव में आकर व्यवस्था देने वाले न हों), क्रोध रहित अथवा शान्त स्वभाव के और धर्म के लिये ही कर्तव्य पालन करने वाले हों वे जिस प्रकार का आचरण करें उसी प्रकार का आचरण करो। यही आदेस है, यही उपदेस है, यही वेदों का रहस्य भाव है, यही आज्ञा है ऊपर बतलाई प्रणाली से ही मनुष्य को आचरण करने चाहिये इसी प्रकार आचरण करना चाहिये
(तैत्तिरीय उपनिषद्)

गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याऽभ्यागतो गुरुः
(हितोपदेश/उपनिषद्)

निह दाधा परान्नेन करे दाधे प्रतिग्रहात् मनो दोषात् ... सीहि कार्य सिद्धिः कथं भवेत् ॥ ऐसा है ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्या-
मनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्ववाक्यम्।
ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदाचनेति ॥१२॥
जो इस मंत्र के द्वारा श्री गणपति का अभिषेक करता है -
वह वाग्मी हो जाता है। जो चतुर्थी तिथि में उपवास
कर के जप करता है वह विद्यावान (अध्यात्म विद्या विशिष्ट)
हो जाता है। यह अथर्व - वाक्य है। जो ब्रह्मादि आवरण
को जानता है, वह कभी भयभीत नहीं होता है ॥

॥ काशी के पंडितों और कालिदास का ॥
॥ शास्त्रार्थ ॥

एक समय की बात है कि कालिदास काशी जी के
पंडितों से शास्त्रार्थ करने को आ रहे थे क्योंकि
सरस्वती जी के सिद्ध पुरुष थे इस लिये वे यहाँ
काशी) शास्त्रार्थ करने आ रहे थे कि हमें अब कौन
हरा सकता है अब हम तो सिद्ध पुरुष हैं। और इधर
काशी के पंडितों को भी माता सरस्वती का वरदान
था कि आप लोगों को कोई काशी से बाहर का
मनुष्य शास्त्रार्थ में हरा नहीं सकता है। तो अब ये
कालिदास [illegible] शास्त्रार्थ के लिये आ रहे थे तो
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होठ फटने पर सेंधा नमक और घी लगावें
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी मन्दा
Tuesday the 4th December 1973.
रा०अग्रहायण १३ शक:१८९५ ४ ।१३९३ ...
मंगलवार ४ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष कृ.९ सं.२०३०
घ. २०।१८ पू. भा. ६।२३ र. उ. ६।२२ र. अ. ५।४
फ. १३८१ प्र. मघुर २४ वं. मार्गशीर्ष १८ ने. १९ गते

बरदान दोनों को दे चुकी है कि शास्त्रार्थ में को
नहीं हरा सकता है। इस लिये कुछ उपाय करना चा
ये नहीं तो बरदान में बाधा पड़ेगी तो उन्होंने (सरस्व
तुरन्त ही कबि कालिदास के सामने छोटी सी बालि
का रूप लेकर (धारण) कर एक हाथ में सोने की
मणि (गुरिया) और एक हाथ में काँचे की और एक
ही सूत्र में गूँथने लगी तो कालिदास ने देखा
लड़की कैसी विचित्र है कि सोना और काँच एक
ही सूत्र में गूँथ रही है। इनको अलग अलग
क्यों नहीं गूँथती है। तो उन्होंने यह श्लोक क
कि। काचं मणीं काञ्चन मेक सूत्रे, ग्रथ्नासि
बाले किमिदं विचित्रम। अर्थ— हे बाले तुम काँ
और सोना को एक ही सूत्र में क्यों गूँथ रही हो
उस बालिका ने उस श्लोक का उत्तर इस प्रका
दिया कि। उत्तर— बिचारवान पाणिनरेक सू
श्वानं, युवानं मघवान माह। अर्थ— हे कालि
दास तुम मुझे इस प्रकार क्यों कह रहे हो पाणि
जी इतने बड़े बिद्वान और तपस्वी ने अपनी व्या
ण पुस्तक में कुत्ता इन्द्र और जवान लड़का
सूत्र के रूप में एक ही में सब मिला दिया तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खटाई खाने से दाँत कुन्द हो जाते हैं
(मीन का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता
Wednesday the 5th December 1973.
रा॰अग्रहायण १४ शकः १८९५ ४ ।٣١ ٣ ذی القعدہ ١ چہار شنبہ
बुधवार ५ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰१०सं.२०३०
घ॰ २०।२ उ. भा. ७।५० र॰ उ. ६।३३ र॰ अ. ५।४
फ॰ १३८१ अ. मघर २१ चं. मार्गशीर्ष १९ ने. २० गते

ऐसा क्यों कहते हो और इस सूत्र में कुत्ता को क्यों लगाया मनुष्य तो ठीक है पर मनुष्यों में कुत्ता को क्यों जोड़ा जो इतने विद्वान थे और मैं ऊँच और स्तना को एक ही में गूँथ रही हूँ तो आप मुझे क्यों इस तरह कह दिया तब कालिदास ने समझा कि अब हम जब इस बालिका से हार गये शास्त्रार्थ में तो वहाँ (काशी) के अन्दर अब न जायेंगे और लौट आये इस प्रकार से अपने शास्त्रार्थ घमंड को दूर किया अर्थात चले गये फिर कभी शास्त्रार्थ काशी के पंडितों से नहीं किया इस लिये काशी के पंडित अब भी बरदान युक्त होकर शास्त्रार्थ में बाहरी पंडितों से नहीं हारते हैं यह कथा कवि कालिदास तथा सरस्वती की है। यह श्लोक प्रश्न उत्तर एक ही मे मिलाने से इस प्रकार बना है ॥

देवकी सुत गोविन्द, वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

इस मन्त्र के जप से अवश्य सन्तान हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीपलकी चैली पानीमें खौलाकर पीनेसे प्यास,नहीं लगती
(मेष का चन्द्र ८।१) सोना चाँदी महंगा
Thursday the 6th December 1973.
रा॰अग्रहायण १५ शकः१८९५ ۱۳۹۳ ذی القعدہ ۱۰ پنجشنبہ
गुरुवार ६ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰११ सं.२०३०
घ॰ १८।३१ रेवती ८।१ र॰ उ॰ ६।३३ र॰ अ॰ ५।४
फ॰ १३८१ प्र॰ मघर २६ वं. मार्गशीर्ष २० ने. २१ गते
मोक्षदा एकादशी११ व्रत, गीताजयन्ती, मौनी एकादशी

॥ अरण्यकाण्ड ॥ रामायण तुलसी कृत

एक बार प्रभु श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मण जी गोदावरी के निकट पंचवटी में बैठे थे उस समय लक्ष्मण जी ने उनसे छल रहित सरल बचन कहे। हे देव मुझे समझा कर वही कहिये जिससे सब छोड़ कर मैं आप की चरणरज की ही सेवा करूं। ज्ञान, वैराग्य और माया का वर्णन कीजिये, और उस भक्ति को कहिये जिसके कारण आप दया करते हैं॥

दो॰ – ईश्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ॥

हे प्रभो ईश्वर और जीव का भेद भी सब समझाकर कहिये जिस से आप के चरणों में मेरी प्रीति हो और शोक, मोह तथा भ्रम नष्ट हो जायें॥

चौपाई – थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई। सुनहु तात मति मन चित लाई॥ मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया॥

श्रीरामजी ने कहा – हे तात मैं थोड़े ही में सब समझाकर कहे देता हूँ तुम मन, चित्त और बुद्धि लगाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाँझ ककोड़ेके जड़का लेप स्तन पीड़ाको नष्ट करता है
(मेष का चन्द्र) सोना चाँदी महंगा

Friday the 7th December 1973.

रा॰अग्रहायण १६ शक:१८९५ ४।१३१३ ذی القعدہ ۱۱ ...
शुक्रवार ७ दिसम्बर सन् १९७३ मार्गशीर्ष शु॰ १२ सं. २०३०
घ॰ १९।२३ अश्विनी ७।५ र॰ उ॰ ६।३४ र॰ अ॰ ५।१५
फ॰ १३८१ प्र॰ मघर २७ बं॰ मार्गशीर्ष २१ ने॰ २२ गते

अखण्ड द्वादशी

सुनो। मैं और मेरा, तू और तेरा - यही माया है जिसने समस्त जीवों को वश में कर रक्खा है॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥ तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। विद्या अपर अविद्या दोऊ॥
इन्द्रियों के विषयों को और जहाँ तक मन जाता है हे भाई। उस सब को माया जानना। उसके भी - एक विद्या और दूसरी अविद्या, इन दोनो भेदों को तुम सुनो
एक दुष्ट अतिसय दुख रूपा। जा बस जीव परा भव कूपा॥ एक रचइ जग गुन बस जाकें। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें॥
एक (अविद्या) दुष्ट (दोषयुक्त) है और अत्यन्त दुःख रूप है जिस के बस हो कर जीव संसार रूपी कुएँ में पड़ा हुआ है और एक (विद्या) जिसके बस में गुण और जो जगत की रचना करती है वह प्रभु से ही प्रेरित होती है उसके अपना बल कुछ भी नहीं है॥
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं॥ कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी॥ (ज्ञान वह है, जहाँ (जिसमें) मान आदि ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिशाचमोचनी १४, काशीमें पिशाचमोचन यात्रा

समान रूप से ब्रह्म को देखता है। हे तात उसी को परम वैराग्यवान कहना चाहिये, जो सारी सिद्धियों को और तीनों गुणों को तिनके के समान त्याग चुका है॥ (जिस में मान, दम्भ, हिंसा, क्षमा राहित्य, टेढ़ापन, आचार्य सेवा का अभाव, अपवित्रता, अस्थिरता, मन का निग्रहीत न होना, इन्द्रियों के विषय में आसक्ति, अहंकार, जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधिमय जगत् में सुख बुद्धि, स्त्री-पुत्र-घर आदि में आसक्ति, ~~अहंकार~~ तथा ममता, इष्ट और अनिष्ट की प्राप्ति में हर्ष शोक, भक्ति का अभाव, एकान्त में मन न लगना विषई मनुष्यों के संग में प्रेम - ये अठारह हों और नित्य अध्यात्म (आत्मा) में स्थित तथा तत्व ज्ञान के अर्थ (तत्वज्ञान के द्वारा जानने योग्य) परमात्मा का नित्य दर्शन हो, वही ज्ञान कहलाता है। देखिये गीता अध्याय (१३।८ से ११ तक) है॥

दो॰ - माया ईस न आपु कहुं जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छ प्रद सर्बपर माया प्रेरक सीव॥१५॥
माया, ईश्वर को और अपने स्वरूप को नहीं जानता,
...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्भालूकी दातून करने से खून बन्द होता है
(वृष का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Sunday the 9th December 1973.

रा॰अग्रहा॰ १८ शकः१८९५ ४ | ایک شنبہ ۱۳ ذی القعدہ ۱۳۹۳

रविवार ९दिसम्बर सन्१९७३ मार्गशीर्ष शु॰१४सं.२०३०

घ॰ ७।४८ कृत्तिका ३/२६।१६/५ र॰ उ. ६।३५ र॰ अ. ५।५

फ॰ १३८१ प्र. मघर २९ बं. मार्गशीर्ष २३ ने. २४ गते

व्रतकी पूर्णिमा १५, दत्तात्रेय जयन्ती १५

और मोक्ष देनेवाला, सबसे परे और माया का प्रेरक है वह ईश्वर है ॥

(मोच्छप्रद)

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना॥
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई॥

धर्म (के आचरण) से वैराग्य और योग से ज्ञान होता है तथा ज्ञान मोक्ष का देनेवाला है — ऐसा वेदों ने वर्णन किया है और हे भाई जिससे मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ, वह मेरी भक्ति है जो भक्तों को सुख देने वाली है ॥

सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना॥
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला॥

वह भगति स्वतंत्र है, उसको (ज्ञान विज्ञान आदि किसी) दूसरे साधन का सहारा (अपेक्षा) नहीं है। ज्ञान और विज्ञान तो उसके आधीन हैं। हे तात! भक्ति अनुपम एवं सुख की मूल है, और वह तभी मिलती है जब संत अनुकूल प्रसन्न होते हैं ॥

भगति कि साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी॥
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज धर्म निरत श्रुति रीती॥

अब मैं भक्ति के साधन विस्तार से कहता हूँ यह सुगम मार्ग है, जिससे जीव मुझको सहज ही पा जाते हैं। पहिले तो ब्राह्मणों के चरणों में अत्यन्त प्रीति हो और वेद की रीति से अपने-अपने [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्नानदान की पूर्णिमा १५

एहि कर फल पुनि बिषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा॥ श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं॥

इसका फल, फिर विषयों से वैराग्य होगा। तब वैराग्य होने पर मेरे धर्म (भागवत धर्म) में प्रेम उत्पन्न होगा तब श्रवण आदि नौ प्रकार की भक्तियाँ दृढ़ होंगी और मन में मेरी लीलाओं के प्रति अत्यन्त प्रेम होगा॥

संत चरन पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेमा॥ गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा॥

जिस का संतों के चरणकमलों में अत्यन्त प्रेम हो, मन वचन और कर्म से भजन का दृढ़ नियम हो और जो मुझ को ही गुरु, पिता, माता, भाई पति और देवता सब कुछ जाने और सेवा में दृढ़ हो॥

मम गुन गावत पुलक शरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा॥ काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें॥

मेरा गुण गाते समय जिसका शरीर पुलकित हो जाय वाणी गदगद हो जाय और नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का जल बहने लगे और काम, मद और दम्भ आदि जिसमें न हों हे भाई, मैं सदा उसके बस में रहता हूँ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँत साफ रखने से मुंह की बीमारी नहीं होती
(मिथुन का चन्द्र) सोना चाँदी तेज

Tuesday the 11th December 1973.

रा॰अग्रहायण २० शक:१८९५ | ١٣٩٣ ذی القعدہ 10 | سہ شنبہ
मंगलवार ११ दिसम्बर सन् १९७३ पौष कृ॰ २ सं.२०३०
घ॰ ५१।१६ आर्द्रा ५१।१ र॰ उ. ६।३७ र॰ अ. ५।५
फ़॰ १३८१ प्र. पूस १ बं. मार्गशीर्ष २५ ने. २६ गते.

दो॰ बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ॥१६॥
जिनको [illegible], कर्म बचन और मन से मेरी ही गति है, और जो निष्काम भाव से मेरा भजन करते हैं, उनके हृदय कमल में सदा विश्राम किया करता हूँ ॥

योग वाशिष्ठ की कुछ बातें

एक समय बिश्वामित्र दसरथ जी के पास गये राम लक्ष्मण को लेने के लिये यज्ञ की रक्षा करने को। तब राजा दशरथ ने कहा कि इस वक्त श्रीराम जी परम चिन्ता में मग्न हैं किसी पदार्थ आश्चर्यवान नहीं होते न किसी पदार्थ से उनको हर्ष होता न किसी से शोक होता है किसी बड़ी चिन्ता में मग्न हैं पर उस चिन्ता के निवारण करने की किसी में सामर्थ्य नहीं देखते हे राजन् यह चिन्ता हम को लग रही है। तब बिश्वामित्र जी ने कहा कि श्री राम जी को हमरे पास लावो हम उनका दुःख निवृत्त करेंगे [illegible] का पुत्र विवेक और वैराग्य को प्राप्त हुआ है तुम्हारे पुत्र को परम पदवी प्राप्त करेंगे और सभी सब दुःख [illegible] मिट जावेंगे हम और वशिष्ठादि एक युक्ति से उपदेश करेंगे उससे उनको आत्म पद की प्राप्ति होगी तब [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सुवर्ण को समान जानेंगे और जो कुछ तुम्हारे स्वामी की प्रकृति का आचार है सो करेंगे और हृदय में प्रेम से उदासी होंगे और इससे तुम्हारा कुल कृत कृत्य होगा तुम रामजी को शीघ्र बुलावो इतना कह कर बालमीकजी बोले हे भारद्वाज ऐसे मुनीन्द्र के बचन सुनके राजा दशरथ ने मंत्री और नौकरों से कहा कि रामजी और लक्ष्मण और शत्रुघ्न को साथ ले आवो तब मंत्री और भृत्यों ने रामजी के पास जाके कहा तो रामजी आये और राजा दशरथ और वशिष्ठजी, विश्वामित्र को देखा। वहाँ रामजी ने आकर राजा दशरथ जी के चरण पर मस्तक लगाकर नमस्कार किया फिर राजा दशरथ ने रामजी को गोद में बैठा कर मस्तक चूमा और बहुत प्रेम से पुलकित हो रामजी से कहा हे पुत्र केवल विरक्तता से परम पद की प्राप्ति नहीं होती वशिष्ठ जी गुरु के उपदेश की युक्ति से परम पद की प्राप्ति होगी। वशिष्ठ जी बोले हे रामजी तुम धन्य हो और बड़े शूरों के विषय रूपी शत्रु तुमने जीते हैं विश्वामित्र जी बोले हे कमल नयन राम अपने अन्तःकरण की चपलता को त्याग के जो कुछ तुम्हारा अभिप्राय हो वह प्रकट करके कहो कि तुम को मोह कैसे हुआ और किस कारण हुआ कितना है और जो अब कुछ तुमको वांछित हो सो [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकष्टी श्री गणेश ४ व्रत

ऊँस में दुःख कदाचित् न हो जैसे आकाश को चूहा काट नहीं सकता तैसे तुमको पीड़ा कदाचित् न होगी हे रामजी तुम्हारे सम्पूर्ण दुःख नाश कर देंगे तुम संसय मत करो जो कुछ तुम्हारा वृत्तान्त हो सो हम से कहो इतना कहकर वाल्मीकि जी बोले हे भारद्वाज मेघ को देख के मोर प्रसन्न होते हैं तैसे बिश्वामित्र के वचन सुनकर रामजी प्रसन्न हुये और अपने हृदय में निश्चय किया कि अब मुझ को अभीष्ट पद की प्राप्ति होगी श्रीरामजी बोले हे भगवन् जो बृत्तान्त है सो तुम्हारे सम्मुख क्रम करके कहता हूँ (मैं राजा दशरथ के घर में उत्पन्न होकर क्रम करके बड़ा हुआ फिर चारो वेद पढ़कर ब्रह्मचर्य आदि ब्रत धारण किया तदनन्तर घर में आया तो मेरे हृदय में बिचार हुआ तीर्थाटन करूँ और देव द्वार में जाकर देवों के दर्शन करूँ पिता की आज्ञा ले कर तीर्थ में गया और गंगा आदि संपूर्ण शालिग्राम और केदार आदि ठाकुरों के विधि संयुक्त दर्शन करें फिर उत्साह हुआ कि प्रातःकाल उठके स्नान संध्या आदिक कर्म कर के भोजन करता जब इस प्रकार से कुछ दिन व्यतीत हुये तब मेरे हृदय में एक विचार उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बादाम पीसकर दूधमें मिलाके पीनेसे ताकत आती है
(सिंह का चन्द्र ३९।०) सोना चाँदी सम

Friday the 14th December 1973.

रा॰अग्रहायण २३ शकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ذیقعدہ ١٨ हि॰
शुक्रवार १४ दिसम्बर सन् १९७३ पौष कृ॰ ५ सं. २०३०
घ॰ ३४।१० श्लेषा ३९।० र॰ उ. ६।३९ र॰ अ. ५।६
फ॰ १३८१ प्र. पूस ४ वं. मार्गशीर्ष २८ ने. २९ गते

जैसे नदी के तट पर तृण बल्ली होती है उसको नदी का प्रवाह खींच ले जाता है तैसे मेरे हृदय रूप जो कुछ जगत की आस्था रूप बल्ली थी उसको विचार रूपी प्रवाह खींच ले गया तब मैंने जाना कि राज्य करके क्या है और भोग्य से क्या है और जगत क्या है सब भ्रम मात्र है इसकी बासना मूर्ख रखते हैं यह स्थावर जंगम जगत सब मिथ्या है हे मुनीश्वर जितने कुछ पदार्थ हैं वह मन के हैं सो मन भी भ्रम मात्र है मन दुखदाई हुआ है मन जो पदार्थों को सत्य जान कर दौड़ता है और सुखदायक हो सो मृगतृष्णा के जलवत है जैसे मृगतृष्णा को देखकर मृग दौड़ते हैं पर जल है नहीं सो मृग दौड़ते २ थक कर गिर पड़ते हैं तौ भी जल उनको प्राप्त नहीं होता तैसे मूर्ख जीव पदार्थों को सुखदाई जान कर भोग की इच्छा करते हैं और शान्ति को नहीं पाते हे मुनीश्वर इन्द्रियों के भोग सर्पवत हैं जिनका मारा हुआ जन्म मरण पाता है और जन्म से जन्मान्तर पाता है भोग और जगत सब भ्रम मात्र हैं उनमें जो आस्था करते हैं वह मूर्ख हैं ऐसा मैं विचार करके जानता हूं कि सब भ्रम मात्र है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे जिस पदार्थ का नाश न हो वह पदार्थ पाने
योग्य है इसी कारण से मैंने भोग का त्याग किया है हे
मुनीश्वर जितने सम्पदा रूप पदार्थ भासते हैं वह सब
आपदा है इनमें रंचक भी सुख नहीं जब इनका बियोग
होता है तब कंटक की नाईं मन में चुभते हैं जब इन्द्रियों
को भोग प्राप्त होता है तब जीव राग द्वेस से जलता है
और जब नहीं प्राप्त होता तब तृष्णा से जलते हैं इससे
भोग दुःख रूप है जैसे पत्थर की शिला में छिद्र नहीं
होता तैसे भोग रूपी दुःख शिला में रंचक भी सुख रूपी
छिद्र नहीं होता हे मुनीश्वर बिषय की तृष्णा में बहुत काल
जलता हूं जैसे हरे बृक्ष के छिद्र में रंचक अग्नि धरी हो तो
धुँवाँ होय थोड़ा थोड़ा जलता रहता है तैसे भोग रूपी अग्नि
कर के मन जलता रहता है बिषय में कुछ भी सुख नहीं
और दुःख बहुत है इतनी इच्छा करनी मूर्खता है जैसे खाई
के ऊपर और तृण और पात होते हैं और उससे खाई आच्छा-
दित हो जाती है उसको देख के हरिण कूद के दुःख पा-
ता है तैसे मूर्ख भोग को सुख रूप जान के भोगने की इच्छा
करता है जब भोगता है तब जन्म से जन्मान्तर रूपी खाई
में पड़ता है और दुःख पाता है हे मुनीश्वर भोग रूपी चोर
अज्ञान रूपी रात्रि में आत्मा रूपी धन लूट जाता है उसके
बियोग से जीव महा दीन रहता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जिस भोग के निमित्त यह यत्न करता है वह दुःखों
जिस शरीर का अभिमान कर के खुशी होता है वह शरीर
क्षण भंगुर और असार है जैसे सूखे बाँस के छिद्र में पवन
जाता है और उसके वेग से शब्द होता है तैसे मनुष्य की
बासना है जैसे थका हुआ मनुष्य मार्ग चलने की इच्छा
नहीं करता तैसे दुःख जान कर मैं भोग की इच्छा नहीं
ता हूँ और यह लक्ष्मी परम अनर्थ कारी है जब तक इस
प्राप्ति नहीं होती तब तक उसके पाने का यत्न होता है और
अनर्थ कर के प्राप्त होती है तब सब गुण अर्थात् शीतलता
संतोष धर्म, उदारता, कोमलता, वैराग्य, दया आदिक
का नाश करती है, तब ऐसे गुणों का नाश हुआ तब सुख
कहाँ से हो परम आपदा प्राप्त हुई होती है इसको
परम दुःख का कारण जान कर मैंने त्याग किया है
हे मुनीश्वर इस जीव में गुण तब तक हैं जब तक लक्ष्मी
नहीं प्राप्त हुई जब लक्ष्मी प्राप्त हुई तब सब गुण नाश
हो जाते हैं, जैसे बसंत ऋतु की मंजरी तब तक ही रहती
है, जब तक ज्येष्ठ आषाढ़ नहीं आता, जब ज्येष्ठ आषाढ़
तब मंजरी जल जाती है तैसे जब लक्ष्मी की प्राप्ति
तब शुभ गुण जल जाते हैं और मधुर बचन तब तक
बोलता है जब तक लक्ष्मी की प्राप्ति नहीं है, जब लक्ष्मी
हुई तब कोमलता का अभाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अष्टका श्राद्ध ८

जैसे जल पतला तबतक रहता है जबतक शीतलता का संयोग नहीं और जब शीतलता का संयोग होता है तब बरफ होकर कठोर दुःखदायक होजाता है तैसे यह जीव लक्ष्मी से जड़ हो जाता है हे मुनीश्वर जो कुछ सम्पदा है वह आपदा का मूल है क्योंकि जब लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तब बड़े सुख भोगता है और जब उसका अभाव होता है तब तृष्णा करके जलता है और जन्म से जन्मान्तर पाता है लक्ष्मी की इच्छा ही मूर्खता है यह तो क्षण भंग है इससे भोग उपजते और नाश होते हैं जैसे जल से तरङ्ग उपजते और मिट जाते हैं और बिजली स्थिर नहीं होती तैसे भोग भी स्थिर नहीं रहते और पुरुष में शुभ गुण तब तक हैं जबतक तृष्णा का स्पर्श नहीं जब तृष्णा हुई तब शुभ गुणों का अभाव होजाता है जैसे दूध में मधुरता तब तक है जब तक उसे सर्प ने स्पर्श नहीं किया जब सर्प ने स्पर्श किया तब वही दूध विषरूप होजाता है श्रीरामजी बोले हे मुनीश्वर लक्ष्मी देखने मात्र ही में सुन्दर है जब इसकी प्राप्ति हुई तब सद्गुणों का नाश कर देती है जैसे विष की बेलि देखने मात्र सुन्दर है और स्पर्श किये से मार डालती है तैसे लक्ष्मी की प्राप्ति हुये से [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जीव महाँ दीन हो जाता है जैसे किसी के घर में चिन्तामणि देबी हो और उसको खोद कर लेता नहीं तब तक दरिद्री रहता है तैसे अज्ञान से ज्ञान विना महा दीन रहता है और आत्मा नंद को पा नहीं सकता आत्मा नंद पाने की नाश करने वाली लक्ष्मी है इसके प्राप्ति से जीव महा अन्ध हो जाता है ॥ जो पुरुष शास्त्र पढ़ता है और उसने अपने योग्य पद नहीं पाया तो शास्त्र उसको भार रूप है जैसे [illegible] गृहस्थी भार होता है तैसे पढ़ने का भी भार है और पढ़के विचार-चर्चा करते और तिसके सार को नहीं ग्रहण करते तो यह विचार-चर्चा भी भार है यह मन आकाश रूप है जो मन में शान्ति न आई तो मन भी उसको भार है और जो मनुष्य शरीर को पाकर उसका अभिमान नहीं त्यागता तो यह शरीर भी उसको भार है इस शरीर का जीना तब ही श्रेष्ठ है जब आत्म पद को पावै अन्यथा उसका जीना व्यर्थ है और आत्म की प्राप्ति अभ्यास से होती है जैसे जल पृथ्वी [illegible] से निकलता है तैसे अभ्यास से आत्म पद की प्राप्ति होती है और जो आत्म पद से विमुख हो [illegible] में फसे हैं वह संसार में भटकते रहते हैं [illegible] अनेक काल से उत्पन्न होके नष्ट हो जाते [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२ पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)

जो अभिमान करता है सो मूर्ख है जैसे बिल्ली चूहे को पकड़ने को पड़ी रहती है तैसे लक्ष्मी उनको नरक में डालने के लिये घर में पड़ी रहती है जैसे अंजली मे जल नहीं ठहरता तैसे लक्ष्मी नहीं ठहरती ऐसी क्षणभंग लक्ष्मी और शरीर को पाके, जो भोग की तृष्णा करता है वह महाँ मूर्ख है जह मृत्यु के मुख में पड़ा हुआ जीने की आशा करता है जैसे सर्प के मुख मे मूर्ख मेढ़क पड़के मक्षर खाने की आशा करता है इच्छा करता है (तैसे यह पुरुष) मृत्यु के मुख में पड़ा हुआ भोग की वांछा करता है वह महाँ मूर्ख है और युवा अवस्था नदी के प्रवाह की नाईं चली जाती है फिर वृद्धावस्था प्राप्त होती है उसमें महा दुःख प्रकट होते हैं और शरीर जर्जर हो जाता है फिर मरता है एक क्षण भी मृत्यु इसको नहीं बिसारती और जैसे महाँ कामी पुरुष को सुन्दर स्त्री मिलती है तो उस के देखने का त्याग नहीं करता तैसे मृत्यु मनुष्य को देखे बिना नहीं रहता है मूर्ख पुरुष का जीना दुःख के निमित्त है जैसे वृद्ध मनुष्य का जीना दुःख का कारण है तैसे ज्ञानी का जीना दुःख का कारण है उसके बहुत जीने से दुःख ही मिलता है पुरुष ने मनुष्य देह पाकर के आत्म पद पाने का यत्न नहीं किया जैसे पंख से बहुत उड़ता और जैसे ... [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान की सनसनाहट पर कपूर का पानी कान में डाले
(तुला का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Thursday the 20th December 1973.

रा॰अग्रहा॰ २९ शक॰ १८९५ ४ پنجشنبہ ۲۴ ذی القعد ۱۳۹۳
गुरुवार २० दिसम्बर सन् १९७३ पौष कृ॰ ११ सं॰ २०३०
घ॰ १८।२२ स्वाती ३४।१४ र॰ उ॰ ६।४२ र॰ अ॰ ५।९
फ॰ १३८१ प्र॰ पूस १० बं॰ पौष ५ ने॰ ५ गते

सफला ११ एकादशी व्रत सबका

पशुओं को मारने दौड़ता है तैसे चित्त युवावस्था से विषय की ओर धावता है जैसे पर्वत के शिखर दूरसे सुन्दर और रंग माला सहित भासते हैं और निकट से असार है पत्थर ही पत्थर दिखते है तैसे स्त्री वस्त्र और भूषणसे सुन्दर भासती है और जो अंग को भिन्न भिन्न विचारकर देखो तो सार कुछ नहीं जैसे नागिन के अंग बहुत कोमल होते हैं परन्तु उसका स्पर्श करे तो काट के मार डालती है तैसे अज्ञानी का चित्त रूपी हाँथी काम रूपी जंजीर से बँधा हुआ स्त्री रूपी एक स्थान में स्थिर रहता है वहाँ से कहीं जा नहीं सकता और जब हाँथी को महावत अंकुस का प्रहार करता है तब भी बन्धन को तोड़कर निकल जाता है तैसे यह चित्तरूपी मूर्ख हाथी काम रूपी स्त्री की कांक्षा करता है स्पर्श करता है उनको वह मार डालती है उनको नाश कर डालती है जैसे विष की बेल देखने मात्र सुन्दर लगती है परन्तु स्पर्श किये से मार डालती है स्त्री रूपी अग्नि तो स्मरण मात्र से जलाती है स्त्री रूपी चिन्तवन करते ही भीतर से आप ही विष चढ़ जाता है, जैसे ब्याधा जाल फैलाकर मछली को फँसाता है तैसे कामी पुरुष स्त्री के ... सुन्दर स्त्री रूपी जाल देख के फँसाता है और ... कामी पुरुष ... जाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गधी का दूध हृदयको बलवान बनाता है
(वृश्चिक का चन्द्र २१।४१) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 21st December 1973.

रा० अग्रहायण ३० शक: १८९५ ४ ।۳۹۳ ذوالقعده ١٥ ...
शुक्रवार २१ दिसम्बर सन् १९७३ पौष शु० १२ सं० २०३०
घ० २०।२८ विशाखा ३७।३० र० उ० ७।३३ र० अ० ५।९
फ० १३:८१ प्र० पूस ११ बं० पौष ६ ने० ६ गते

प्रदोष १२ व्रत

फिर तृष्णा रूपी छुरी से काम मार डालता है ऐसे दुःख के देने वाली स्त्री की मुझको इच्छा नहीं और काम रूपी व्याधि है वह राग रूपी इन्द्रियों से जाल बिछाय कामी पुरुष रूपी पुरुष को आसक कर डालता है और स्त्री की स्नेह रूपी डोरी है उससे कामी पुरुष रूपी मृगों को आशक कर डालता है और स्त्री की स्नेह रूपी बेली है उससे कामी पुरुष रूप बेलि से बँधा है और स्त्री का मुख रूपी चन्द्रमा देख कर कामी पुरुष (कमल) रूपी कमलनी खिल आती है जैसे चद्रमुखी चन्द्रमा को देख कर ~~कामी पुरुष रूपी कमलनी खिल आती है~~ प्रसन्न होते हैं और सूर्य्य मुखी नही होते तैसे यह कामी पुरुष भोग से प्रसन्न होते और ज्ञान वान प्रसन्न नही होते हैं जैसे नेवला सर्प को बिल से निकाल के मारता है तैसे कामी पुरुष को स्त्री आत्मा नंद में से निकाल के मार डालती है जैसे सूखे तृण और घृत अग्नि भस्म कर डालती है तैसे कामी पुरुष को स्त्री भस्म कर डालती है, जो स्त्री रूपी खड्ग के प्रहार से युवा संग्राम में से बचा है वह पुरुष धन्य है स्त्री का ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्याज का रस पीने से हैजा दूर होता है
(वृश्चिक का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 22nd December 1973.

रा. पौ.ष १ शकः १८९५ ४ |१३९३ ذی القعدہ ۲۶ شنبه
शनिवार २२ दिसम्बर सन् १९७३ पौष कृ. १२ सं. २०३०
घ. २३|१४ अनुराधा ४१|२४ र. उ. ६|४३ र. अ. ५|१
फ. १३८१ प्र. पूस १२ वं. पौष ७ ने. ७ गते

आत्म तत्त्व और
[illegible]

॥ बार बार जन्म लेने का कारण ॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् । ऐसा क्यों होता है । न साम्परायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्त मोहेन मूढम् ॥ धन के मोह से मोहित प्रमाद में रत रहने वाले मूर्खों को परलोक या कल्याण का मार्ग दीखता ही नहीं, वह तो केवल—अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वश मापद्यते मे ॥ यही मानता है कि स्त्री - पुत्रादि भोगों से भरा हुआ एक मात्र यही लोक है इसके सिवा और परलोक कोई नहीं है इसी मान्यता के कारण उसे बारं बार मेरे मृत्यु के आधीन होना पड़ता है आत्मा नित्य प्रकाश रूप जीव रूप से हृदय में विराजमान है सहज में इसके दर्शन नहीं होते क्यों कि यह अत्यन्त ही सूक्ष्म है यह अत्यन्त ही गूढ़ है। समस्त जीवों के शरीर में [illegible] विष्ट है बुद्धि रूपी गुफा में छिपा हुआ है। राग द्वेष आदि द्वन्द्व मय स्थित है विराजमान है। धर्म [illegible] इस सूक्ष्म आत्मा को जड़ शरीरादि से पृथक समझ कर प्राप्त कर [illegible] गया है। वही आनंद धाम को पाकर अतुल आनंद में [illegible] [illegible] ऐसा साधारण भी [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयभीत करने पर हिचकी रुक जाती है
(धनु का चन्द्र ४७।१९) सोना चाँदी महंगा
Sunday the 23rd December 1973.
रा. पं.प २ शाकः १८९५ ४ ।३९३ ذی القعدہ ۲۷ ایک شنبہ
रविवार २३ दिसम्बर सन् १९७३ पौष कृ. १४ सं.२०३०
घ. २७।२० ज्येष्ठा ४७।१९ र. उ. ६।४४ र. अ. ५।१०
फ़. १३८१ प्र. पूस १३ वं. पौष ८ ने. ८ गते

यह चैतन्य स्वरूप आत्मा न जन्मता है न मरता है यह अजन्मा है नित्य है और सनातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मरता है। मरना और मारना सब शरीर के धर्म हैं आत्मा न कभी मरता है न उसे कोई मार सकता है। शस्त्रादि से देह कट जाने से भी देह में स्थित यह आत्मा ~~ज्यों का~~ ज्यों का त्यों बना रहता है। जिस प्रकार मकान के नष्ट होने से उसमे स्थित आकाश नष्ट नहीं होता इसी प्रकार देहादि के नाश से आत्मा का नाश नहीं होता यह आत्मा अणोरणीयान महतो महीयानात्मस्य जन्तोर्नि हितो गुहायाम। जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर है और जो महान से भी महान है जीव की हृदय गुफा में छिपा हुआ है इसे वही देख पाता है जो कामनावों से रहित है जो कर्मो की सिद्धि असिद्धि मे समचित्त है जो सुत वित दार के उत्पति या इनके विनाश से हर्ष या शोक को नहीं प्राप्त होता जो प्रत्येक अवस्था में परमात्मा को एक अनंत सत्ता को उपलब्ध करता हुआ शान्त और स्थित रहता है परन्तु जो इस प्रकार का नहीं है उसे आत्मा के दर्शन नहीं होते क्यों कि यह आत्मा निश्चल होने पर भी दूर तक पहुँच जाता है। सोया हुआ भी सर्वत्र चला जाता है। यह समस्त अनित्य शरीरों में रहते हुए भी शरीर रहित है समस्त अस्थिर पदार्थों में ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हुये भी सदा स्थिर है इस नित्य और महान विभु आत्मा को जो धीर पुरुष जान लेते हैं वही शोक से निवृत हो जाता है यह एक ही आत्मा सब मे व्यापक है।
सो जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥
आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥ इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्। आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥ शरीर रथ है आत्मा रथ का स्वामी (रथी) है बुद्धि सारथि है और मन लगाम है ऐसा समझो श्रोतादि इन्द्रियाँ घोड़े है, शब्दस्पर्शादि विषय ही उनके दौड़ने का मैदान है और शरीर, इन्द्रियाँ तथा मन से युक्त आत्मा को भोक्ता कहते है घोड़े से ही रथ चलता है, परन्तु उस रथ को चाहे जिस तरफ ले जाना हाथ में लगाम पकड़े हुए बुद्धिमान सारथि का काम है। इन्द्रियरूपी बलवान और प्रमथनकारी घोड़े विषयरूपी मैदान में मन माना दौड़ना चाहते है, परन्तु यदि बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को जोर से खींच कर उन्हें अपने वश में रखता है तो घोड़ों की ताकत नही कि वे मन रूपी [illegible] जिस तरफ दौड़ने लगें [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रिसमस डे (बड़ा दिन)

इन्द्रियाँ वास्तव में विषय को ग्रहण तभी कर सकती हैं जब मन उनके साथ हो घोड़े उसी ओर दौड़ते हैं जिस ओर लगाम का सहारा होता है परन्तु इस लगाम को ठीक रखना सारथि केवल, बुद्धि और मार्ग के ज्ञान पर निर्भर करता है यदि बुद्धि रूप सारथि विवेक पूर्ण स्वामी का आज्ञाकारी लक्ष्य पर सदा स्थिर, बलवान् और इन्द्रिय रूपी दुष्ट घोड़े उनके बस में न रह कर लगाम को अपने बस में कर लेते हैं और परिणाम में वे रथ को रथी और सारथि समेत चाहे जैसे बुरे स्थान में ले जाकर पटक देते हैं। परन्तु —

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥(कठ-१-३

जिसकी बुद्धि में विवेक होता है जिसका मन एकाग्र और शान्त होता है उसकी इन्द्रियाँ अच्छे घोड़ों की तरह बुद्धि रूप सारथि के वश रहती हैं। जिसका मन निग्रह रहित है जो अविवेकी है और जो सदा अपवित्र है ऐसे रथी को कभी अपने लक्ष्य परम पद की प्राप्ति नहीं होती। उसे बारंबार कष्ट मय जन्म मरण रूप संसार में ही भटकना पड़ता है परन्तु :—

यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः।
स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद् भूयो न जायते ॥ कठ [illegible]

जो विवेकी है जिसका मन निगृहीत है जो सदा [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह ऐसे परम पद को पाता है जहाँ से लौट कर फिर जन्म ग्रहण नहीं करना पड़ता। जिस का बुद्धि रूप सारथि विवेकी है जिसकी मन रूप लगाम स्थिर है जिस की इन्द्रिय रूपी घोड़े लगाम के साथ ही साथ विवेक मई बुद्धि के बश में हैं वह इसी रथ की सहायता से संसार सागर के उस पार अपने लक्ष्यस्थान पर अनायास ही जा पहुँचता है और वही :——

तद्विष्णोः परमं पदम्

—'बिष्णु का परम पद है।'

इन्द्रियों से उनके बिषय श्रेष्ठ हैं, बिषयों से मन श्रेष्ठ है मन से बुद्धि श्रेष्ठ है और बुद्धि से महत् श्रेष्ठ है, महत् से अव्यक्त श्रेष्ठ है और अव्यक्त से पुरुष श्रेष्ठ है। बस, इस पुरुष से परे और कोई नहीं है ॥

मृत्यु के बाद जीव का क्या होता है सो तुम सुनो जिस के जैसे कर्म और जैसी बासना होती है, जिसका जैसा ज्ञान होता है उसी के अनुसार कोई तो मृत्यु के बाद माता के गर्भ में जाता है और कोई मृत्यु के पश्चात् वृक्ष पाषाण स्थावर योनि को प्राप्त होता है। जब समस्त प्राणी निद्रा ग्रस्त रहते हैं तब जो एक निर्गुण ज्योतिर्मय [illegible] रूप से जाग्रत रह कर समस्त विषयों को [illegible] है [illegible] है वही [illegible] है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांचनिकलनेपरकेतकीकारस और तिल्लीका तेल लगावे
(मकर का चन्द्र) सोना चाँदी सम
Thursday the 27th December 1973.
रा० पौष ६ शकः १८९५ ४ ۱۳۹۳ ذی القعدہ | پنجشنبہ
गुरुवार २७ दिसम्बर सन् १९७३ पौष शु० ३ सं. २०३०
व० ४७।४४ उ. षा. ६।२६ र० उ. ६।४५ र० अ. ५।१२
फ. १३८१ प्र. पूस १७ बं. पौष १२ ने. १२ गते

उसीका नाम अमृत है उसके सिवा और कोई छिपा हुआ ब्रह्म नहीं है। पृथ्वी आदि सभी लोक इसी में अवस्थित है उसका अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव। कठ०
एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च॥ (२-२-९)
वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।
एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च॥

अग्नि एक ही है, परन्तु जैसे सम्पूर्ण भुवन में प्रवेश करने पर वही भिन्न भिन्न वस्तुओं में भिन्न भिन्न रूप में दीखता है इसी प्रकार समस्त प्राणियों में रहने वाला आत्मा एक ही है, परन्तु सब में भिन्न भिन्न रूप में दीखता है। आकाश की तरह निर्विकार होने के कारण बाहर भी वही रहता है। जैसे एक ही वायु लोक में प्रवेश कर भिन्न भिन्न रूप से दीखता है इसी प्रकार सब प्राणियों में व्यापक एक ही आत्मा भिन्न भिन्न रूप में दीखता है तथा बाहर भी रहता है। अग्नि और वायु के दृष्टान्त में केवल यही अन्तर है कि अग्नि तो प्रकाश स्वरूप होकर लोक में प्रवेश करता है और वायु प्राण स्वरूप होकर प्रत्येक देह में प्रवेश करता है।

सूर्यो यथा सर्व लोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः॥
जैसे एक ही सूर्य सब लोकों की आँख है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्याज मुसब्बर से चोट का दर्द दूर होता है
(कुम्भ का चन्द्र ४२।१) सोना चाँदी सस्ता

Friday the 28th December 1973.

रा॰ पौष ७ शाकः १८९५ ४ ١٣٩٣ ذي الحجة

शुक्रवार २८ दिसम्बर सन् १९७३ पौष शु॰ ४ सं. २०३०

ब॰ ५२।१० श्रवण १२।२७ र॰ उ॰ ६।४५ र॰ अ॰ ५।११

फ॰ १३८१ प्र॰ पूस १८ बं॰ पौष १३ ने॰ १६ प॰

वैनायकी श्री गणेश ४ व्रत

अच्छी बुरी सभी वस्तुओं का प्रकाश सूर्य से होता है तथापि वह बाह्य दोषों से लिप्त नहीं होता। इसी प्रकार वह आत्मा सर्वव्यापी होने पर भी जगत के दुःखों से लिप्त नहीं होता अतः बाहर रहता है।

समस्त भूत प्राणियों के अंदर शक्ति रूप से रहने वाला वह आत्मा एक ही है। वही सब का नियन्ता है वह एक ही अनेक रूप में दिखाई देता है। जो धीर पुरुष इस प्रकार आत्मा को जानते हैं उनको ही —

तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।

नित्य सुख प्राप्त होता है, दूसरों को नहीं।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनाना-
मेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा-
स्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्॥ कठ॰ २-२-१३

जो नित्यों का भी नित्य है, जो चेतनों का भी चेतन है और एक ही अनेकों कामनाएँ पूर्ण करता है उस शरीरस्थ आत्मा का जिनको अनुभव होता है वे ही नित्य शान्ति को प्राप्त होते हैं, दूसरे नहीं। जिसको सूर्य प्रकाशित नहीं कर सकता, चन्द्रमा और तारागणों से प्रकाशित नहीं होता, बिजली [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान की पीड़ा पर माँ का दूध गरम कर कान में डाले
(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सस्ता

Saturday the 29th December 1973.

रा॰ पौ॰ष ८ शकः १८९५ ४ ।३१३ في القعده ٣ شنبه

शनिवार २९ दिसम्बर सन् १९७३ पौष शु॰ ५ सं.२०३०

घ॰ ५५।३० घनिष्ठा १७।४४ र॰ उ. ६।४६ र॰ अ. ५।१२

फ़. १३८१ प्र. पूस १९ बं. पौष १४ ने. १४ गते

तो क्या प्रकाशित करे। जिसके प्रकाश से ही सबका प्रकाश होता है, उसी परिपूर्ण प्रकाश की दिव्य ज्योति से समस्त विश्व प्रकाशित हो रहा है। इस दृश्यमान संसार के समस्त पदार्थ उस परब्रह्म से निकल कर उसी की सत्ता से सदा काँपते हुए अपने अपने काम में लगे रहते हैं। क्यों कि वह उठे हुए वज्र के सदृश महाँ भयङ्कर है।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥ कठ. २।३।३

अग्नि उसी के भय से तपता है, सूर्य उसी के भय से तपता है, तथा इन्द्र, वायु और पञ्चम मृत्यु उसी के भय से दौड़ते हैं। जो पुरुष इस शरीर के नाश होने से पूर्व ही उस आत्मा को जान लेता है वही मुक्त होता है नहीं तो —

सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते ॥

— इन जन्म मरण शील लोकों में उसे फिर जन्म ग्रहण करना पड़ता है। जब मनुष्य की सारी कामनायें नष्ट हो जाती हैं, जब मन सब प्रकार की मलिनता को त्याग कर अत्यन्त विशुद्ध बन जाता है और जब अन्तःकरण की समस्त वासनाएँ सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जाती हैं तब यह —

अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते। कठ. मरणशील मनुष्य अमृत बन कर यहीं पर ब्रह्म को इसी जन्म में प्राप्त हो जाता है इस प्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुखार में पारिजात की पत्ती काली मिर्च पीसकर पं...

(कुम्भ का चन्द्र) सोना चाँदी सम

Sunday the 30th December 1973.

रा॰ पौ.ष ९ शक: १८९५ ४ ।३९३ ...

रविवार ३० दिसम्बर सन् १९७३ पौष शु॰ ६ सं. २०३...

घ॰ ५७।४८ शतभिषा २१।५४ र॰ उ. ६।४६ र॰ अ. ५।...

फ॰ १३८१ प्र. पूस २० बं. पौष १५ ने. १५ ग...

~~Q. C. R.~~ X

~~श्री जी. सी. भार्गव~~

~~६०/२०२~~

X ~~सनातन धर्म की गली~~

~~मन मनमोहन पार्क~~

X ~~पुरानी कचहरी~~

~~स्वास्थ्य~~

उसके हृदय की ('मैं' और 'मेरे' की) समस्त ग्रन्थियाँ टूट जाती हैं और वह अमृत बन जाता है। बस—

एतावदनुशासनम्।

— यही शास्त्र का उपदेश है इससे परे और कुछ भी नहीं है ॥

कठोपनिषद् के आधार पर

ॐ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन बातें —

॥ सद्गुरु की शिक्षा ॥

बेद का अध्ययन कर चुकने पर गुरु अपने शिष्य को नीचे लिखे वेद-धर्म का उपदेश करते हैं —

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय का कभी त्याग न करो। आचार्य को गुरु दक्षिणा देकर प्रजा के सूत्र को न काटो अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन कर चुकने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो। सत्य का कभी मत त्यागो (किसी अवस्था में भी त्याग न करो) धर्म का कभी त्याग न करो। कल्याण कारी कर्मों का त्याग न करो। साधन की जो विभूति प्राप्त है, उसे कभी मत त्यागो। स्वाध्याय और प्रवचन में कभी प्रमाद न करो।

मातृदेवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानी इतराणि। (तैत्ति. १-११-२)

देव कर्म (यज्ञ) और पितृ कर्म (श्राद्ध, तर्पण आदि) का कभी त्याग न करो। माता को देव रूप से पूजो। पिता को देव [illegible] पूजो। आचार्य को देव रूप से पूजो। अतिथि को [illegible] पूजो जो कर्म निन्दा रहित हैं इन्हीं को करो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२ ... निन्दित कर्म न करो हमारे (गुरु के) श्रेष्ठ आचरणों का अनुसरण करो, दूसरों का नहीं जो ब्राह्मण अपने से श्रेष्ठ हों उन्हें तुरन्त बैठने के लिये आसन दो। जो कुछ दान करो श्रद्धा से करो श्री के लिये दान करो, लक्ष्मी-चंचल है, प्रभु की सेवा में उसे समर्पण नहीं करोगे तो वह तुम्हें त्याग कर चली जायगी लोकलाज के लिये ही दान करो। शास्त्र से भी डर कर दान करो दान करना उचित है इस विवेक से दान करो। अपने किसी कर्म अथवा लौकिक आचार के सम्बन्ध में मन में कोई शङ्का उठे, तो अपने समीप रहने वाले ~~याद्दाश्त फरवरी~~ ब्राह्मणों में जो वेदविहित कर्मों में विचारशील हों समदर्शी हों कुशल हों, स्वतंत्र हों (किसी के दबाव में आकर व्यवस्था देने वाले न हों) क्रोध रहित अथवा शान्तिस्वभाव हों और धर्म के लिये ही कर्तव्य पालन करने वाले हों वे जिस प्रकार का आचरण करें उसी प्रकार का आचरण तुम भी करो। यही आदेश है, यही उपदेश है यही वेदों का भाव है यही आज्ञा है ऊपर बतलाई हुई प्रणाली से ही आचरण करने चाहिये।

... इसी प्रकार आचरण करना चाहिये।

(तैत्तिरीय उपनिषद)

के आधार पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

याददाश्त मार्च

तुलसीकृत रामायण की चौपाई की कुछ शंकायें ॥

१ड़ित (बाल काण्ड)

बाल्मीकि नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही भित होती ।

१ बालमीक जी ने श्री राम जी से कहा कि मैं किरातों के साथ चोरी-बटमारी करता था । एक बार सप्तर्षियों के दर्शन हुए उनके उपदेस से आपका उलटा नाम 'मरा-मरा' जपने से मैं इस परम गति को प्राप्त हुआ कि आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थान को पधारे ।

२ देवर्षि नारद ने व्यास जी से कहा कि मै पहिले दासी पुत्र था किन्तु साधुओं की सेवा और जूठन खाने से मुझे देवर्षितत्व प्राप्त हुआ ~~[illegible]~~ यह सत संगति का प्रभाव है । इससे अब तुम कुछ भगवत यश कहो तो संतोष हो तब व्यास जी ने श्रीमद्भागवत बनाया ।

३ अगस्त मुनि ने श्री शिवजी से कहा कि मेरे पिता मित्र व बरुण तप करते थे कि आकाश मार्ग मे उर्वसी श्रृंगार किये जाती थी । जब उनकी दृष्टि उस पर पड़ी तो वे उस पर मोहित हुए और उनका बीर्य पात हो गया । वह एक घड़े में रक्खा उससे मेरी उत्पत्ति हुई और घटज नाम पड़ा किन्तु सत्संग के प्रभाव से मुझे मुनीश्वर पद प्राप्त हुआ ।

तेज कृसानु रोष महिषेसा । अघ अवगुन धन धनी धनेसा ।

महिषासुर प्रथम कल्प में दैत्यों का स्वामी था । इसने देवताओं के स्वामी इन्द्र से सौ वर्ष तक युद्ध किया । [illegible] देवताओं को जीत कर आप ही इन्द्र बन बैठा और [illegible] कार अपने हाथ में कर लिया । [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो शंकर जी के पास गये, उनका समाचार सुनकर शंकर जी बड़े क्रोधित हुए और अपने मुख से एक बड़ा तेज निकाला और फिर उनको देखा देखी और देवताओं ने भी तेज निकाले फिर सब तेजों के समूह से दुर्गा भवानी प्रकट हुई। उन्होंने महिषासुर का वध किया और सब देवताओं को पूर्ववत् अधिकार मिल गया।

पुनि प्रनवउँ प्रथुराज समाना, पर अघ सुनइ सहस दस काना।
राजा पृथु को बर था कि वह ईश्वर का यश दो कान से १००० कान के समान सुने।

सुधा सुधाकर सुरसरि साधू, गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू।
कर्मनासा एक नदी है जिस में नहाने से सब शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।

~~याददाश्त जून~~

उघरहिं अंत न होइ निबाहू, कालनेमि जिमि रावन राहू।
हनूमान के ठगने के लिए कालनेमि ऋषि बना २ सीता जी को हरने के लिये रावण यती बना ३ मोहिनी रूप भगवान को धोखा देने के लिए राहु देवता बना, पर भेद खुल जाने पर अन्त में तीनों मारे गए।

सिय निंदक अघ ओघ नसाए, लोक बिसोक बनाइ बसाए।
एक रजक (धोबी) की स्त्री पति की आज्ञा के बिना पिता के घर चली गई। जब वह लौट कर आई तब धोबी ने कहा — तू यहाँ से जा, मै तुम्हे अपने घर नहीं रखूँगा, मै रामजी नहीं हूँ के सीता रावण के घर में ११ महीना रही फिर भी उसे घर में रहने दिया। इस प्रकार व्यंग बचन कहकर स्त्री को निकाल दिया। जब रामजी ने रजक के व्यंग बचन दूत से सुने तो सीता जी को तपोबन में भेज दिया और अयोध्या के बसने [illegible] धोबी [illegible] सीता जी [illegible] में बसाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद्दाश्त जुलाई

महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ।

१ कथा गणेसजी की पुराणों में कथा है कि एक बार ब्रह्मा जी ने देवताओं से पूछा कि आप लोगों में सर्व श्रेष्ठ कौन है इसपर सब देव गण अपने अपने को श्रेष्ठ बताने लगे। तब ब्रह्मा ने कहा जो सृष्टि रूप विराट-श्री भगवान् की परिक्रमा कर सब से पहिले हमारे पास आवेगा उसे ही हम प्रथम पूज्य पद देंगे। यह सुन सब देवता अपने अपने बाहनो पर सवार हो सृष्टि की प्रदक्षिणा करने चले परन्तु गणेशजी मूषक बाहन होने से पीछे रह गये और बड़े व्याकुल हुए। तब नारद जी उनको मिले और इनके परिताप का कारण सुन कर कहा कि तुम पृथ्वी में राम का नाम लिख कर प्रदक्षिणा करो और ब्रह्मा के पास चले जाओ। तब गणेशजी ने राम नाम को ही बिराट पुरुष समझ, भूमि मे लिख, उसकी परिक्रमा कर ब्रह्मा जी के पास आकर निवेदन किया ~~याद्दाश्त अगस्त~~ ब्रह्मा जी ने राम नाम की महिमा समझ गणेशजी को प्रथम पूज्य पद दिया।

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेईं पिय संग भवानी ।

आदि कवि बालमीकि जी राम नाम के प्रताप को जानते हैं जो उल्टा नाम जप कर पवित्र हो गये शिवजी इस बचन को सुन कर कि राम नाम विष्णु सहस्र नाम के समान है पार्वती जी ने राम नाम जप कर पति के साथ भोजन किया।

१ शिव पुराण में लिखा है कि पार्वती जी बिष्णु सहस्र नाम का पाठ कर के भोजन करती थी। एक बार शिवजी ने उन्हें अपने साथ भोजन करने को बुलाया तो गौरी ने कहा - प्रभो आप भोजन कीजिए मै सहस्र नाम का पाठ कर के भोजन करूँगी। शिवजी ने हँस कर कहा। राम रामेति रामेति रमे रामे मनो रमे। सहस्र नाम तत तुल्यं राम नाम वरानने

है वरानने ... राम ... [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा शिवजी की वाणी से सुन विश्वास पूर्वक पार्वती जी ने राम राम ऐसा जप कर अपने प्रियतम के साथ भोजन किया। इस प्रकार पार्वती जी की राम नाम पर अनन्य प्रीति और अपने बचनों में विश्वास देखकर शिव जी अत्यन्त हर्षित हुए और उन्होंने पार्वती जी को स्त्रीजाति का भूषण समझ कर अपना कंठ हार बनाया इससे पूर्व सती तन त्याग ने और कामदेव को भस्म करने के बाद शिवजी ने उन्हें हृदय से नहीं लगाया था। अगली चौपाई में गोसाईं जी कहते हैं—

नाम प्रभाउ जान शिव नीको, कालकूट फलु दीन्ह अमी को।

राम नाम के प्रभाव को शिव जी भली भाँति जानते हैं जिसके कारण कालकूट विष ने उनको अमृत का फल दिया।

२ जब बिष्णु ने कच्छपावतार लेकर समुद्र को मथा तब उसमें से १४ रत्न निकले। देवताओं ने अपनी इच्छानुसार १३ रत्न बाँट लिये और चौदहवाँ रत्न कालकूट अर्थात् हलाहल बिष महादेव के लिए लाए और कहा महाराज इससे बचाइये नहीं तो यह अपनी ज्वाला से त्रिलोकी को भस्म कर देगा महादेव जी ने राम शब्द उच्चारण कर उसे पान

कर कंठ में धारण किया। इसी नाम के प्रभाव से विष ने अमृत का फल दिया और तभी से उनका नाम नीलकंठ हुआ। १

नाम [illegible] प्रभु कीन्ह प्रसादू, भगत शिरोमनि भे प्रहलादू।

१ प्रहलाद के पिता का नाम हिरण्य कशिपु और माता का नाम कयाधू था। देवर्षि नारद ने कयाधू को अनेकों उपदेश किए जिन्हें कयाधू तो भूल गई परन्तु गर्भ में रहने वाले बालक प्रह्लाद ने याद कर लिया। हिरण्यकशिपु देवताओं को जीत कर स्वयं त्रिलोकी का स्वामी बन बैठा। प्रह्लाद गुरुकुल में जाकर अध्ययन करने लगे। बचपन से ही वे राम नाम की महिमा गाते और भगवान की लीला करते थे [illegible] और उनकी दृष्टि ही न जाती थी गुरुओं ने और स्वयं हिरण्यकशिपु ने बड़ी ताड़ना की परन्तु उन्होंने किसी की बात [illegible] मानी। उन्हें काले नागों से डसाया [illegible] [illegible] दिया गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनका बाल भी बाँका न हुआ। पुरोहितों ने कृत्या राक्षसी को उत्पन्न किया परन्तु उससे पुरोहितों की ही मृत्यु हुई फिर प्रह्लाद ने भगवान से प्रार्थना करके उन्हें जीवित किया प्रह्लाद की बुआ जो आग से नहीं जलती थी इस विचार से इन्हें गोद में लेकर आग में बैठ गई कि ये जल जाँय पर प्रह्लाद नहीं जले वह स्वयं जल गई हिरण्यकशिपु स्वयं मारने दौड़ा और उससे पूछा कि तुम्हारे भगवान कहाँ है प्रह्लाद ने कहा वे सर्वत्र है तुम में तुम्हारे खड्ग में और खम्भे में भी उसने कहा इस खम्भे में भी है प्रह्लाद ने कहा हाँ उसने बड़े जोर से उस पर घूँसा मारा। घूँसे की आवाज से साथ ही भयंकर शब्द करते हुए नृसिंह भगवान् प्रकट हुए और हिरण्यकशिपु का उद्धार किया और प्रह्लाद की रक्षा की और भक्तों का शिरोमणि बनाया।

[illegible] ध्रुव [illegible] पायउ अचल अनूपम ठाऊँ।

२ कथा - स्वायम्भुव [illegible] शतरूपा के पुत्र राजा उत्तानपाद थे राजा उत्तानपाद के दो स्त्री थीं बड़ी रानी के पुत्र ध्रुव थे जिस समय राजा छोटी रानी के पास बैठे थे उस समय ध्रुव जाकर उनकी गोद में बैठ गया। यह देखकर रानी ने उसे गोद पर से उतार दिया और कहा कि मेरे पेट से जन्म लेते तो इस गद्दी के अधिकारी होते। ध्रुव इस ग्लानि से तप करने को चले तो राजा ने उसे बहुत समझाया राज्य देने को कहा परन्तु वे नहीं लौटे उन्हें मार्ग में नारद जी मिले और उपदेश दिया वही मंत्र जपकर ध्रुव को अचल अनुपम स्थान (ध्रुवलोक) प्राप्त हुआ।

[illegible] "गजु गनिका उ, भए मुकुत [illegible]"

नीच अजामिल, गज और गणिका भी हरि के नाम के प्रभाव से मुक्त हो गए। अजामिल बड़ा पापी था एक दिन जब वह घर नहीं था तब उसके यहाँ साधु आये उनकी [illegible] उनकी बड़ी सेवा की स्त्री को गर्भ [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

चलती समय कहा कि तुम्हारे पुत्र होगा और तुम उसका नाम नारायण रखना उसने पुत्र होने पर वैसा ही किया अजामिल अपने पुत्र को बहुत प्यार करता था जब अजामिल का अन्त समय आया तब वह यमदूतों को देखकर डरा और अपने पुत्र नारायण को पुकारा नारायण का नाम लेने से भगवान के पारखद आए और उसे मुक्ति प्राप्त हुई।

२ गजेन्द्र और ग्राह में बहुत दिन तक युद्ध हुआ ग्राह गजेन्द्र को पकड़कर जल में डुबाने लगा जब गज की थोड़ी सी सूंड जल के ऊपर रह गई तब उसने एक कमल का फूल तोड़ ईश्वर के निमित्त कर भगवान को पुकारा उसी समय भगवान ने आकर उसे छुड़ाया ॥३ पिंगला गणिका श्रृंगार किए हुये आधी रात तक बैठी रही परन्तु कोई बिजई पुरुष उसके यहाँ नहीं आया तब वह जाकर पलंग पर लेट रही और मन में विचार करने लगी कि जितना मैने बिजई पुरुष के लिए मन लगाया उतना भगवान का स्मरण करती तो संसार से पार हो जाती। इस प्रकार भगवान का स्मरण करने से उसे दत्तात्रेय के दर्शन से ज्ञान प्राप्त हुआ और वह संसार से पार हो गई ॥

राम कथा कलि पंनग भरनी¹, पुनि विवेक पावक कहुँ अरनी

१ भरनी एक प्रकार का पक्षी होता है वह सर्प को देखकर गोल मटोल हो जाता है तब पेख फैलाकर उसका नाश करती है ॥

कुल जमा		कुल खर्च	

राम नाम सुंदर मति रग जमुना सी, [illegible] हेतु जनु [illegible]

यम दूतों के मुख पर कालिख पोतने के लिए यह जगत में यमुना जी के समान है। और जीवों को मुक्ति देने [illegible] काशी है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

१ यमुना सूर्य की पुत्री है और यम पुत्र हैं। यमुना ने यम से वर माँग लिया था कि जो मुझमें स्नान करे उनको तुम्हारे दूत दंड न दें।

ब्रह्म सभाँ हम सन दुखु माना, तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना।
एक बार ब्रह्मा की सभा में हमसे अप्रसन्न हो गए थे उसी से वे अब भी अपमान करते हैं।

१ शिवजी बोले कि हे प्रिये एक दिन मैं और विष्णु आदि सब देवता ब्रह्मा की सभा में बैठे थे वहाँ तुम्हारे पिता दक्ष आए उन्हें देख कर सब उठे पर मैं और विष्णु दोनों नहीं उठे इस बात पर उन्होंने मुझसे बुरा माना और मुझे श्राप दिया कि तुम्हें यज्ञ का भाग न मिलेगा वे तभी से ईर्षा मान कर मेरा मान भंग करने में लग रहे हैं और इसी से उन्होंने मुझे यज्ञ में नहीं बुलाया है।

दोहा

सुनत बचन बिहसे रिषय, गिरिसंभव तव देह। (बाल कांड)
नारद कर उपदेसु सुनि, कहहु बसेउ किसु गेह ॥ १०२

: दच्छ सुतन्ह उपदेसेन्हि जाई। तिन्ह फिर भवनु न देखा आई।
चित्रकेतु कर घरु उन घाला। कनककसिपु कर पुनि अस हाला।

दक्ष प्रजापति ने एक हजार पुत्र उत्पन्न करके उनको आज्ञा दी की तुम सृष्टि रचना करो। जब वे सृष्टि रचना कर रहे थे, नारदजी ने उन्हें ऐसा उपदेस दिया कि वे सब विरक्त हो गये। दक्ष ने फिर एक हजार पुत्र उत्पन्न करके भेजे नारद ने उनकी भी वही दशा की तब दक्ष ने कन्या उत्पन्न किया रचना की और नारद को शाप दिया कि तुम दो घड़ी से अधिक कहीं न ठहर सकोगे ॥

कुल जमा | कुल खर्च | बाकी रोकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

राजा चित्रकेतु के एक करोड़ रानियाँ थीं पर पुत्र रत्न हीन था पीछे दैव योग से किसी मुनि के आशीरबाद से छोटी रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जब बालक वर्ष दिन का हुआ तो उसकी सौतेली माँताओं ने उसे बिष देकर मार डाला क्यों कि राजा छोटी रानी को अधिक प्यार करते थे तब उस मृत पुत्र को गोद में लेकर राजा बिलाप करने लगा उस समय नारद मुनि आकर राजा को संतोष देस दिया परन्तु राजा को ज्ञान न हुआ तब नारद जी ने अपने योग बल से लड़के को जिला दिया। लड़का जी कर पिता से बोला राजन् मैं पूर्व जन्म में तपस्या करता था मुझे एक स्त्री ने १ फल दिया जिस में अगणित चींटियाँ थीं मैंने बिना जाने उस फल को भून डाला जिससे वह सब चींटियाँ जल मरीं वे ही सब आप की एक करोड़ रानियाँ हैं जिन्होंने बिष देकर मुझसे पूर्व जन्म का बदला लिया और फल देने वाली मेरी माता हुई। न आप मेरे पिता न आप का मैं पुत्र। यह सब माया का प्रपंच है ऐसा कह कर लड़के की आत्मा ने फिर शरीर छोड़ दिया और राजा बिरक्त होकर त्याग बन को चला गया ॥

हिरण्यकसिपु की स्त्री कयाधू जब गर्भिणी थी नारद जी ने उसे उपदेस दिया। उपदेस का प्रभाव स्त्री पर न होकर गर्भ स्थित बालक पर हुआ। उसने प्रहलाद होकर जन्म लिया और पिता का कहना न मान कर बिरोध किया अंत में प्रहलाद के हठ से ही बिष्णु भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकसिपु का पेट फाड़ डाला ॥

कुल जमा		कुल खर्च	

तब जनमेउ षटबदन कुमारा, तारक असुर समर जेहिं मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना, षन्मुख जन्मु सकल जग जाना
[illegible] समय [illegible] की प्रेरणा से पारबती जी ने शिव जी से
[illegible] से तप करना [illegible] किया [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रैल सन् १९७२ ई०

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

तारक नाम के राक्षस ने बड़ा कठिन तप करके ब्रह्मा जी से
बर पाया और सब देवताओं को दुःख देने लगा तब सब इन्द्रादि
देवता ब्रह्मा जी के पास गये और निवेदन किया कि हे भगवान्
आप ने तारकासुर को ऐसा बर दिया है कि उसने तीनों लोक कँपा
रक्खा है। आप उसके नास का उपाय सोचिए। यह सुन कर ब्रह्मा
जी बोले हमने ही उसे बर दिया है हम नहीं मारेंगे। उसको सिवाय
शिव जी के पुत्र के कोई नहीं मार सकता है। आज कल शिवजी के पाने
की इच्छा से पार्वती तप कर रही हैं। उनको वहाँ भेजो जब शिव जी
प्रसन्न होकर पार्वती को वरें और पुत्र उत्पन्न करें तब आप की चिन्ता
दूर हो यह सुन कर इन्द्र ने काम देव को शिवजी के पास भेजा
उसने बसंत की सहायता से शिवजी का आसन डिगा दिया। ज्यों ही
शिव जी की समाधि खुली और काम देव को सम्मुख पुष्पों का
धनुष बाण चढ़ा देखा त्यों ही उसे तीसरे नेत्र से भस्म कर दिया
उसे भस्म हुआ देख पार्वती आशा छोड़ कर घर गईं, पर जब ऋषि
ने फिर आशा बँधाई तब फिर अति कठिन तप करने लगीं और
सब खान पान त्याग दिया। जब बहुत काल बीत गया तब
शिवजी प्रसन्न हुए और बर दिया कि तुम्हारा मनोरथ पूरा हुआ
होगा और सप्त ऋषियों द्वारा हिमवान से विवाह का प्रस्ताव
करा कर यथाविधि ब्याह किया। फिर इनसे स्वामिकार्तिक
उत्पन्न हुए और उन्होंने उस असुर को मार कर त्रिलोकी का
भार उतारा तब देवता प्रसन्न होकर पुष्पों की बरषा
करने लगे। जमाइ इनकी सम्पूर्ण कथा शिवपुराण
में है॥

बाकी रोकड़

सुनत स्रवन बारिधि बंधाना, दसमुख बोलि
उठा अकुलाना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामुद्र पर सेतु का बाँधा जाना कानों से सुनते ही रावण घबड़ा और दसों मुखों से बोल उठा
मई सन् १९७३ ई०

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

रावण एक मुख से बात किया करता था इस समय घबड़ा कर दसों मुखों से समुद्र के दस नाम कहने लगा। इस लिये रावण के लिए दस मुख का प्रयोग हुआ है॥ ^कंपति

दो॰ बाँध्यो बननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु बारीस। सत्य तोयनिधि कंपति, उदधि, पयोधि, नदीस॥

१ बननिधि, जलनिधि, जलधि, सिंधु, बारीश, तोयनिधि, कंपति, उदधि, पयोधि, नदीश को क्या सचमुच बाँध लिया

दशरथ जी के मर जाने के बाद में कौशिल्या को अधिक दुःखी देख कर वशिष्ठ जी ने कौशिल्या का शोक निवारण के लिये कहा कि हे कौशिल्या। दुःख सुख तो भाग्य के अनुसार सभी भोगते हैं इस लिये तुमको भी दुः न करना चाहिए। मृत्यु किसी को कभी नहीं छोड़ती मैं उनका इतिहास सुनाता हूँ। उसके सुनने से तुम्हारा अज्ञान दूर हो जायगा देखो, राजा मरुत कैसे धर्मात्मा थे। उनका यश इन्द्र ...

कुल जमा | कुल खर्च | बाकी रोकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

भूमि शस्य से परिपूर्ण होती थी। उनको भी
कराल काल ने न छोड़ा। फिर देखो कि अंग देस का
राजा बृहद्रथ कैसा पुण्य शाली और उदार था। एक बार
इसने बड़ा धूम धाम से यज्ञ किया था और इसकी दक्षिणा
में १० लक्ष श्वेत घोड़े लक्ष कन्याओं सम्पूर्ण आभूषण
सहित दस लक्ष हाथी सुवर्ण की संकलों से शोभित,
एक कोट बैल, और सहस्र गौ इत्यादि दिये थे। उनको
भी मरना पड़ा। राजा शिबि सारे भूमण्डल का राजा था
कि जिसने यज्ञ में अपना सर्वस्व दान कर दिया था
राजा भरत कि जिसने हजार अश्वमेध और सौ राज
सूय यज्ञ किये थे और दक्षिणा में असख्य धन करव
ऋषि को दिया था। राजा भगीरथ जो गंगा जी को लाये
और जिन्होंने दस लक्ष कन्यादान अतुल धन और सुवर्ण
सहित किये थे। राजा दिलीप कि जिन्होंने सरबू
पृथ्वी दान की थी, पुरोहित को दक्षिणा में सहस्र हाथी
दिये थे। जिसके यज्ञ में गन्धर्व गान करते थे उन्हें भी काल
नहीं छोड़ा। राजा सुहोत्र के राज्य में इन्द्र ने सुवर्ण
की वर्षा की थी, सारी नदियों में जीव जन्तु सब सुवर्ण के
थे, जिनको उसने यज्ञ में ब्राह्मणों को दक्षिणा में दिये
वह राजा दसरथ से भी यशस्वी था उसको भी मृत्यु
ने न छोड़ा। हनुमान वाला [illegible] में पृथ्वी
जीती थी सौ अश्वमेध सौ राजसूय यज्ञ किये थे और
बाकी रोकड़
ब्राह्मणों को दस योजन लम्बी और एक योजन चौड़ी
सुवर्ण की महली दान की थी उनको भी मरना पड़ा
राजा ययाति ने दो प्रधान यज्ञ तथा सो वाजपे[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

कर दक्षिणा में तीन सुवर्ण के पर्वत दिये थे और अन्त में पुत्र को राज्य दे बन को चले गये। अम्बरीष प्रजापालन शील धर्म मूर्ति थे, जिन्होंने ब्राह्मणों को यज्ञ की दक्षिणा में १० लक्ष राजाओं का दान दिया था। राजा शशिबिन्दु के १० लक्ष पुत्र थे और बड़े दानी थे। राजा गय ने हजार वर्ष तक दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्य तथा अश्वमेध किये थे और दस व्याम लम्बी २० व्याम चौड़ी पृथ्वी सुवर्ण से भर कर ब्राह्मणों को दक्षिणा में दी थी और करोड़ों गोदान किए थे इसी वंश के सगर का यश-धर्म स्वर्ग तक छा रहा है। और राजा पृथु बड़े प्रजाशील थे। उनके समय में पृथ्वी पर धन धान्य, पुष्प, पत्र स्वयं उत्पन्न होते थे वे जब जल में यात्रा करते तो समुद्र नदी स्थमित हो जाते थे। उन्होंने यज्ञ में सुवर्ण के २१ पर्वत दान किये थे। दूसरे ऐसे ऐसे राजा जिन की साक्षी देने वाली पृथ्वी वर्तमान है न जाने मर कर कहाँ गये। शरीर के संग नाश है। सम्पत्तियों में दुःख भरा है। संग के साथ ही वियोग है। जो उत्पन्न हुआ है उसका अवश्य नाश है। यह शरीर क्षण क्षण में घटता है पर दीखता नहीं है। यौवन, धन, ऐश्वर्य, पुत्रादि में कदापि मोह न करना चाहिए। यह तो जैसे नदी में दो काठ के लड़े अपने आप बहते हुए मिल जाते हैं फिर अलग हो जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य का स्त्री, पुत्रादि के साथ मिलना है। जैसे कोई पथिक ही मार्ग में छाया के आश्रय से बैठ जाता है। फिर विश्राम करके जाता है वैसे ही प्राणियों का संसार में।

कुल जमा | कुल खर्च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया

समागम है। दूसरे, यह देह पंच तत्व से बनी फिर मर कर फिर उसी में मिल जाती है। इस का पछतावा ही क्या है मनुष्य जितना स्नेह बढ़ाता है उतने ही शोक के शंकु हृदय में जमते हैं। जैसे नदी के प्रवाह जाते हैं और फिर लौट कर नहीं आते हैं। जिस दिन प्राणी गर्भ में आता है उसी दिन से वह मृत्यु के पास सरकता जाता है इस लिए अब इस शोक की बार बार याद न करना यही इसका औषधि है। अब दशरथ जी के शोक को छोड़कर परमेश्वर में चित्त लगाओ। बशिष्ठ जी दशरथ के मरने पर कौशिल्या को समझा रहे है ॥

(गर्भ में ये ५ बातें ईश्वर लिख देते हैं
जाने) आयुर्दाय - विद्या - विभव - कर्म - मरण ॥
आयुर्दाय विद्या विभव कर्म मरण पाँच
जीव गर्भ में रहत जब लिखे
जात है साँच ॥

कुल जमा		कुल खर्च	

बाकी रोकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया
कुल जमा		कुल खर्च	

दंडी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
५, वाराणसी (काशी) उ०प्र०

बाकी रोकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्टूबर सन् १९७३ ई०

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया
कुल जमा		कुल खर्च	

बाकी रोकड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवम्बर सन् १९७३ ई०

तारीख	जमा रुपया	तारीख	खर्च रुपया
कुल जमा		कुल खर्च	

बाकी रोकड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिसम्बर सन् १९७२ ई०

तारीख	जाम रुपया	तारीख	खर्च रुपया
~~२८~~	२६९७२ ३२५०		
कुल जमा		कुल खर्च	

बाकी रोकड़

0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

सन् १९७३ सालभर के जमा खर्च का लेखा

जमा रु.	पैसे	तारीख	खर्च रुपया	पैसे
		शुरू रोकड़	× ×	×
		जनवरी		
		फरवरी		
		मार्च		
		अप्रैल		
		मई		
		जून		
		जुलाई		
		अगस्त		
		सितम्बर		
		अक्टूबर		
		नवम्बर		
		दिसम्बर		
× ×	× ×	बाकी रोकड़		
		कुल जोड़		

बाकी रोकड़

आदर्श प्रेस, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दंडी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
वाराणसी (काशी) उ०प्र०

दंडी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
५, वाराणसी (काशी) उ०प्र०

0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGan

दंडी स्वामी
मौनी श्री कृष्णेश्वरानन्द तीर्थ
मु० मुमुक्षु भवन अस्सी
वाराणसी (काशी) उ० प्र०

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango

-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGang

C-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGango